ASHIKA'S

Chandrika

SUPER CHARIOT AGARBATHI

50

(22 GMS)

చంద్రిక சந்திரிகா ചന്ദ്രിക

चंद्रिका

SUPER CHARIOT AGARBATHI

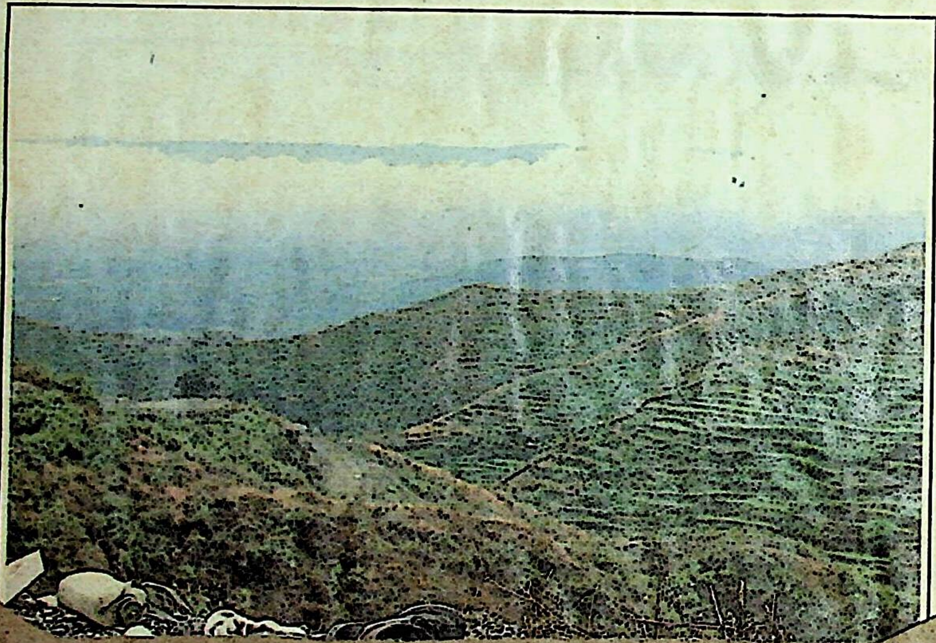
50

(22 GMS)



Ashika Incense Inc., NO. 883, 6TH CROSS, BANASHANKARI 1ST STAGE, BANGALORE-560 050

पहाड़ पर कूड़े का अंबार



रामचरितमानस का

विशुद्ध संस्करण इसमे संमति
एव परीक्षित प्रक्षेपतथा प्राचीन
प्रतियोका प्रणेता अध्यन पाठान्तर

तुलसीदास

घटाव बढाव आदि अनेक पुस्तको
से संग्रहीत है



सर्वभारतीय काशिराजन्यास

संपादक

विश्वनाथप्रसाद मिश्र

काशिराज संस्करण

प्रकाशक
रमेशचंद्र देव
मंत्री, सर्वभारतीय काशिराज न्यास,
रामनगर दुर्ग,
वाराणसी ।

प्रथम संस्करण
२१०००
कागद की जिल्द ६.५०
कपड़े की जिल्द ८.००
राजसंस्करण २५.००
Rs 25 P 00

मुद्रक
पृथ्वीनाथ भार्गव,
भार्गव भूषण प्रेस,
वाराणसी ।

प्रकाशकीय

सर्वभारतीय काशिराज न्यास के उद्देश्यों में एक यह भी है कि प्राचीन महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का आधुनिक प्रणाली से संपादन कराकर प्रकाशन किया जाय। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए न्यास ने पुराणों के संपादन-प्रकाशन का कार्य आरंभ किया है। संप्रति मत्स्यपुराण का संपादन डा० वी० राघवन् तथा वामनपुराण का संपादन डा० वासुदेवशरण अग्रवाल कर रहे हैं। पुराणवाङ्मय के संबंध में ज्ञातव्य अनेक महत्त्वशाली विषयों से पाठकों को अवगत कराने तथा न्यास की गतिविधि सूचित करने के लिए न्यास ने 'पुराणम्' नाम की अर्द्धवार्षिक पत्रिका का प्रकाशन करना भी आरंभ किया है। अब तक इसके सात अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इसका छठा अंक व्यास-पूर्णिमा-विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है।

संवत् २०१४ में न्यास को उसके अध्यक्ष तत्रभवान् महाराज काशीनरेश डा० श्रीविभूतिनारायणसिंह ने 'रामलीला शती समारोह निधि' सहित उसके तत्त्वावधान में होनेवाले रामचरितमानस के समीक्षात्मक काशिराज संस्करण का भी कार्य सौंप दिया।

भारतीय संस्कृति की जैसी अभिव्यक्ति प्राचीन काल में व्यासप्रणीत पुराणों में हुई है और जिसके विवेचन-विश्लेषण का महनीय कार्य न्यास के पुराणविभाग द्वारा हो रहा है उसी संस्कृति की वैसी ही अभिव्यक्ति मध्यकाल में तुलसीदासप्रणीत रामचरितमानस में भी हुई है। न्यास में हो रहे पुराणसंबंधी अनुसंधान का पूर्ण संवादी 'नानापुराणनिगमागमसंमत' रामचरितमानस के पाठानुसंधान का कार्य भी है इसलिए न्यास में होनेवाले पाठ-समीक्षासंबंधी कार्यों की प्रस्तावना रामचरितमानस के काशिराज संस्करण के सर्वप्रथम प्रकाशन से की जा रही है।

मानस के 'काशिराज संस्करण' का महत्त्वपूर्ण प्रकाशन करते हुए हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है। काशी राज्य ने अतीत में मानससंबंधी अनेक महनीय कार्य किए हैं और वर्तमान में भी उसके द्वारा तत्संबंधी अभिनंदनीय कार्य हो रहे हैं। महाराजा श्रीचेतसिंह द्वारा प्रदत्त भूमि पर तुलसी-मंदिर (तुलसीघाट, वाराणसी) निर्मित है। महाराज श्री उदितनारायणसिंह ने रामनगर में रामलीला का शुभारंभ किया तथा मानस की विशिष्ट टीका रामायणपरिचर्या-परिशिष्टप्रकाश का प्रशंसनीय कार्य महाराज श्रीईश्वरीप्रसादनारायणसिंह के समय में हुआ और उन्हीं की प्रेरणा से मानस के पाठानुसंधान का कार्य भी काशी राज्य में उपलब्ध विशिष्ट हस्तलिखित प्रतियों तथा अन्यत्र से अत्यंत प्रयासपूर्वक संकलित प्राचीन महत्त्वपूर्ण प्रतियों के आधार पर वर्गप्रणाली से आरंभ किया गया था। पश्चिमी देशों में वर्गप्रणाली की जिस समय उद्भावना भी नहीं हुई थी उस समय काशी राज्य में मानस के पाठानुसंधान का कार्य वर्गपद्धति से किया जा रहा था यह अत्यंत विस्मयकारक है और उक्त महाराज की सूझबूझ का ज्वलंत उदाहरण है। मानस की पाठसमीक्षा का वह महत्कार्य अज्ञात कारणों से केवल आरंभ होकर ही रह गया। महाराज श्रीप्रभुनारायणसिंह के समय में उन्हीं के आदेश से रामायणपरिचर्यापरिशिष्टप्रकाश प्रकाशित किया गया। काशी राज्य के वर्तमान महाराज ने

अपने पूर्वजों का पदानुसरण करते हुए मानस के पाठशोध का कार्य विधिवत् पूर्ण कराने का संकल्प किया। उसी का फल है प्रस्तुत काशिराज संस्करण। महाराज के व्यक्तिगत पुस्तकालय सरस्वतीभंडार (रामनगर दुर्ग) के महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों, मुद्रित संस्करणों, ग्रंथों आदि का यथेप्सित उपयोग करने की सुविधा मिल जाने से कार्य वांछित रूप में सुसंपन्न किया जा सका। सर्वभारतीय काशिराज न्यास के न्यासरक्षकों के हम अत्यंत आभारी हैं जिन्होंने इसके प्रकाशन का निश्चय किया और तत्संबंधी समस्त आयोजन को स्वीकृति प्रदान की।

तुलसी-साहित्य के अद्वितीय मर्मज्ञ आचार्य पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र के हम सबसे अधिक ऋणी हैं जिन्होंने संवत् २०१० से इसके संपादन में अपना अमूल्य समय लगाया और जो पिछले छह मास से अहोरात्र अथक परिश्रम करके इस संस्करण को प्रकाश में ले आए। मानसविभाग के उनके सहायकों को भी धन्यवाद जिन्होंने चूडांत श्रम का योगदान किया और इस कार्य के समय से समापन का प्रयास किया। विभागीय व्यवस्थापक और मिश्रजी के प्रमुख सहायक श्रीरामादास शास्त्री को विशेष धन्यवाद जिन्होंने कार्य को यथावत् सुसंपन्न करके अपने सुयोग्य गुरुवर्य का शिष्यत्व भली भाँति निभाया। काशी विश्वविद्यालय के अधिकारियों विशेषतः कुलपति श्रीनटवरलाल हीरालाल भगवती तथा कुलसचिव श्रीशिवनंदनलाल दर से भी हम उपकृत हैं जिन्होंने मिश्रजी की सेवाएँ उन्हें अध्यापन-कार्य से अवकाश देकर न्यास के लिए सुलभ कर दीं।

कलकत्ते के सुप्रसिद्ध सेठ श्रीरतनलाल सुरेका को भी इस अवसर पर धन्यवाद देना कर्त्तव्य है जिन्होंने 'श्रीठाकुरदास सुरेका दातव्य निधि' द्वारा निर्मित हो रहे श्रीसत्यनारायण मानसमंदिर (दुर्गाकुंड, वाराणसी) में संगमरमर की शिलाओं पर 'काशिराज संस्करण' को उत्कीर्ण कराने का सत्संकल्प किया और उसका श्रीगणेश भी कर दिया है। स्वर्गीय श्रीनागेशजी उपाध्याय ने अपना सं० १७६३ का हस्तलेख ही मानस-संपादन कार्य के निमित्त कृपापूर्वक अर्पित कर दिया। हम उनके अत्यंत कृतज्ञ हैं। पेनसिलवानिया विश्वविद्यालय, अमेरिका एवम् ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन के अधिकारियों से भी हम उपकृत हैं जिनकी कृपा से महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों की वांछित माइक्रोफिल्म यथासमय उपलब्ध हो सकी। इस संस्करण की विशिष्ट छपाई का सारा श्रेय भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी के स्वामी श्रीपृथ्वीनाथ भार्गव को है जिन्होंने वांछित मुद्रण की सारी कठिनाइयों का निराकरण किया तथा यथासमय ग्रंथ प्रकाशित करने में पूरा योग दिया। इसके लिए हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं। अंत में हम उन सभी व्यक्तियों और संस्थाओं के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने महत्त्वशाली हस्तलेख देकर इस कार्य को सुसंपन्न करने में सहायता पहुँचाई। हम उन सभी के आभारी हैं जिन्होंने इसमें किसी प्रकार का योगदान करके हमारा हाथ बँटाया।

१ जनवरी, १९६२

रामनगर दुर्ग, वाराणसी

रमेशचंद्र देव

मंत्री

सर्वभारतीय काशिराज न्यास

आत्मनिवेदन

रामचरितमानस के **काशिराज संस्करण** की अपेक्षा क्यों हुई सर्वप्रथम इसी पृच्छा का समाधान विधेय है। तत्रभवान् महाराज काशिराज को संवत् २०१० में जिज्ञासा हुई कि क्या मानस के पाठसंपादन की समस्या सर्वतोभावेन सुलझ गई या अभी उसमें कुछ अवकाश-अंतराल शेष है। जिज्ञासा का हेतु यह था कि काशी राज्य की ओर से बृहत् संभार-पूर्वक रामायणपरिचर्यापरिशिष्टप्रकाश का प्रकाशन महाराज के पूर्वज करा चुके थे और उसकी प्रति अनुपलब्धप्रायं थी। महाराज के स्वकीय सरस्वतीभंडार पुस्तकालय में उसकी जो प्रति है वह भी जीर्ण-शीर्ण है और उसके कुछ पत्र त्रुटित हैं। हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति अभिरुचि होने से उसके संवर्धन की उत्कंठा उनके मन में सहज ही उठ खड़ी हुई थी। रामनगर में जो विश्वविख्यात रामलीला होती है उसमें परंपरा से काशिराज नैत्यिक योगदान करते आए हैं। रामलीलादर्शन के समय स्वयम् महाराज के समक्ष मानस की जो प्रति रहती है वह रामायणपरिचर्यापरिशिष्टप्रकाश है। रामलीला में मानस का पाठ प्रारंभिक रूप में होता है और पाठानंतर लीला, तदंगभूत संवाद आदि होते हैं। लीला में पाठकर्ताओं के अतिरिक्त व्यास भी होते हैं। पाठकर्ताओं के संमुख मानस की जो प्रति रहती है, व्यासों के पास उसकी जो पारंपरिक हस्तलिखित प्रति होती है तथा काशिराज के समक्ष जो उक्त प्रति रहती है सबमें पाठों की एकरूपता न होने से महाराज के मानस में मानस के पाठैक्य का संकल्प जगा और उपर्युक्त जिज्ञासा स्फुरित हुई। हिंदीशिक्षणजन्य संपर्क और मानसमनीषी स्वर्गीय लाला भगवानदीन तथा तुलसीवाङ्मय के आलोचकमूर्धन्य स्वर्गीय पं० रामचंद्र शुक्ल के अंतेवासी के रूप में ख्यात होने के कारण यह शुक्ल जिज्ञासा मुझ दीन से की गई। मैंने इसके निर्णय के लिए तीन मास का समय माँगा। तीन महीने महाराज के पुस्तकालय में सुरक्षित मानस के हस्तलेखों, विविध प्रकाशन-संस्थाओं, संपादकों द्वारा प्रकाशित-संपादित मानस के पाठानुसंधायी विशिष्ट मुद्रित संस्करणों का शिष्यमंडल की सहायता से आलोड़न करता रहा। इस कार्य में मेरी सहायता के लिए महाराज ने श्रीचंद्रधरप्रसादनारायणसिंह (भानुजी) को भी नियोजित कर दिया। शिष्यों के अथक श्रम एवम् भानुजी की विस्मयकारिणी स्मृति, लक्ष्यैकचक्षुता और अनुपम प्रज्ञोपज्ञा के साहाय्य से मानसवाङ्मय के आलोड़नावगाहन का कार्य यथावांछित समय में ही पूर्ण हो गया। हम सबने निष्कर्ष महाराज के संमुख उपस्थित किया और 'मानस-मूलपाठ के क्षेत्र में शोधन करने का अवकाश है' यह मत व्यक्त किया।

सं० २०१० की विजयदशमी से मानस के पाठशोध का कार्य आरब्ध हुआ। काशिराज के स्वकीय पुस्तकालय में संधान के क्रम में देखा गया कि सं० १९०३ में लिखित हस्तलेख पर मानस के पाठशोध का कार्य वर्गप्रणाली से आरंभ किया गया था। यह अत्यंत आश्चर्य का विषय है कि पाठानुसंधान के लिए आधुनिक वर्गप्रणाली (ग्राफपद्धति)

का जो चलन वैज्ञानिक तथा समीक्षात्मक पाठशोध के नाम से पश्चिम की देन के रूप में भारत में ग्रहण किया जा रहा है उसी के समतुल्य वर्गपद्धति पर उक्त पाठशोध का कार्य अतीत में काशी राज्य में करने का प्रयास किया गया। पाठानुसंधान का प्रवर्तनकाल पश्चिमी देशों में विक्रम की बीसवीं शती के द्वितीय चरण के पूर्व नहीं जाता। यह कार्य उसके पूर्व ही आरब्ध हो गया था। इसमें 'रामायणपरिचर्या' आधारग्रंथ के रूप में गृहीत है। 'रामायणपरिचर्यापरिशिष्टप्रकाश' सं० १९५५ में खड्गविलास प्रेस, पटना से प्रकाशित हुआ। इसलिए 'परिचर्या' की हस्तलिखित प्रति का ही इसमें उपयोग किया गया होगा। जिस उक्त प्रति पर कार्य हुआ उसकी अभिधा सरस्वतीभंडार में 'क्रोड़पत्रीय' है। यह नाम कदाचित् इसलिए पड़ा कि इसमें हस्तलेख मध्य (क्रोड़=गोद=मध्य) में रखकर उसके तीन ओर कागद चिपकाकर वर्गाकार चारखाने बनाए गए और प्रतियों का नाम लिखा गया। क्रोड़पत्रीय में जिन प्रतियों को आधार बनाया गया उनका नामोल्लेख यों किया गया है—

			संक्षिप्त नाम
१—अनंत श्रीचरण हस्ताक्षर की पोथी	...		अ०
२—रामायणपरिचर्या	...	"	रा० प०
३—बनवारीदास महंथ श्रीगोसाईंजी के मंदिर के पोथी १७०४ साल की	...	"	ब०
४—जमादार चिथरूसिंह	...	"	ज०
५—चित्ररामायण	...	"	चित्र०, चि०
६—केदार तेवारीजी की लिखी एक जिल्द में	...	"	के०
७—गुटिका	...	"	गु०
८—पंडित रामगुलामजी के पाठ की	...	"	पं०
९—महंथ रामचरणदास की टीका की	...	"	म०
१०—भाई संतसिंह ज्ञानी के टीका की	...	"	भा०
११—राजा गोपालसरणसिंह	...	"	रा०
१२—मानसदीपिका	...	"	मा०
१३—गिरधारी तेवारी के हाथ की लिखी	...	"	गि०
१४—चौधरी इंद्रदत्तसिंहजी की पोथी	...	"	चौ०
१५—खेदूलाल की पोथी १७७१ साल की	...	"	खे०

'अ०' से तात्पर्य काष्ठजिह्वा स्वामी के स्वाक्षरों में लिखी पोथी से है। स्वामीजी बहुत बड़े महात्मा थे। ये रामनगर में रहते थे और इनका काशिराज पर विशेष अनुग्रह था। ये देवतीर्थ स्वामी और देव स्वामी के नाम से भी ख्यात हैं। वाक्साधना के लिए इन्होंने जिह्वा को काष्ठ से वेष्टित कर रखा था, इसी से काष्ठजिह्वा स्वामी कहे जाते थे। ये शाक्त थे और अत्यंत सिद्ध पुरुष थे। ये तत्कालीन काशीनरेश श्रीईश्वरीप्रसाद-नारायणसिंह के गुरु (तीर्थ) थे। तुलसीदास के मानस (रामायण) पर यथापेक्षित स्थलों पर इन्होंने 'परिचर्या' के नाम से कुछ टिप्पणियाँ लगाई थीं, इसी से इनकी टीका-टिप्पणी

'रामायणपरिचर्या' नाम से प्रसिद्ध हुई। उक्त क्रोड़पत्रीय में 'रा० प०' से तात्पर्य इसी टीका-अंश से जान पड़ता है। 'रामायणपरिचर्या' को 'परिशिष्ट' नाम से उपबृंहित किया देवतीर्थ स्वामी के सुयोग्य शिष्य काशिराज महाराज श्रीईश्वरीप्रसादनारायणसिंह ने। प्रतीत होता है कि 'परिशिष्ट'-अंश सहित 'रामायणपरिचर्या' का उपयोग इसमें नहीं किया गया। 'रामायणपरिचर्यापरिशिष्ट' पर 'प्रकाश' नाम से विस्तृत टीका परमहंस श्रीहरिहरप्रसाद ने लिखी। सबको एकत्र करके महाराज श्रीप्रभुनारायणसिंह ने इसे संवत् १९५५ में खड्गविलास प्रेस से प्रकाशित कराया। महात्मा देव स्वामी ने किस प्रति को आधार बनाकर स्वकीय हस्तलेख प्रस्तुत किया इसका पता नहीं चलता। पर जो भी हस्तलेख आधार रहा हो वह सं० १९०३ के पूर्व का ही रहा होगा। स्वामी देवतीर्थ ने रामायण (मानस) पर 'परिचर्या' नाम्नी जो टिप्पणी जोड़ी उसमें मानस के जिस प्राचीनतम हस्तलेख का आधार लिया गया होगा उससे प्राचीन किसी हस्तलेख के आधारभूत होने की संभावना 'अ०' के लिए नहीं प्रतीत होती। इसलिए 'रा० प०' के आधारभूत हस्तलेख संबंधी विचार में ही इसके आधारभूत हस्तलेख का विचार भी गतार्थ समझना ही समुचित है। देव स्वामी संस्कृत के उद्भट पंडित थे, इसलिए उनके स्वाक्षर में लिखित पोथी में संस्कृतीकरण की प्रवृत्ति स्थान स्थान पर दृग्गोचर होती है।

'रा० प०' का आधारभूत हस्तलेख कौन सा हो सकता है, इसे लेकर रामनगर के मानसप्रेमियों एवम् मानसमर्मज्ञों में मतभेद रहा है। तुलसीदास के पितृतुल्य संरक्षक एवम् आश्रयदाता भगवान् ब्राह्मण के स्वाक्षर में लिखी पदावली (विनयपत्रिका) की सं० १६६६ की लिखी प्राचीनतम उपलब्ध प्रति रामनगर के जिन स्वर्गीय चौधरी छुन्नीसिंह के पास थी, जिन्होंने भगवान् ब्राह्मण के पुत्र श्रीकृष्णदत्त मिश्र लिखित 'गौतमचंद्रिका' से तुलसीदास का वृत्तांत तीन हस्तलेखों के आधार पर बड़ी विषम परिस्थितियों में संकलित कर रखा था, जिन्हें मानस पूरा का पूरा मुखाग्र था, जो बड़े ही मानसमर्मज्ञ और अध्ययनशील व्यक्ति थे उन्होंने मुद्रित 'रामायणपरिचर्यापरिशिष्टप्रकाश' के निम्नलिखित कवित्त के सहारे यह मान रखा था कि 'परि'* में जिस प्रति का उल्लेख किया गया है वह सं० १७०० की लिखी हुई है—

हनुमंत जन्म दिन गोसांई जी के मंदिर जाइ पूजा करी जाग्रत श्री रामजंत्रराज की।
तहां मरुतनंदन की अर्चा किई तैसी श्रीमहाराज लछमनदास साध सिरताज की।
मुदित मन आज्ञा भई सुद्ध खास पोथी मिली **सतरह सय** साल की लिखी बड़े काज की।
साधु चरन कमल धूरि सीस धरि तिलक करौं संवत युग अंक आठ एक मिती आज की॥

उनकी स्थापना थी कि गोसाईंजी के मंदिर से जो पोथी मिली सो श्रीलक्ष्मणदास साधु से। इधर क्रोड़पत्रीय में १७०४ की जिस पोथी को आधारभूत प्रतियों में स्थान दिया गया है वह श्रीवनवारीदास महंत के नाम से अभिहित की गई है। अतः मानस के दो प्राचीन हस्तलेख पृथक् पृथक् हैं—एक १७०० का और दूसरा १७०४ का। मुद्रित 'परि' में जो पाठ बहुत्र गृहीत है वह १७०४ की प्रति से मेल खाता है। कहा जा सकता

* नामसंकेत के लिए देखिए आगे पृष्ठ ४६०।

है कि १७०० तथा १७०४ वाली प्रतियों में पाठों की बहुत कुछ एकरूपता रही होगी। उक्त कवित्त में 'सुद्ध खास' विशेषण आया है। काशिराज के सरस्वतीभंडार में १७०४ वाली प्रति 'शुद्ध खास' नाम से ही अंकित है। इसलिए प्रतीत यही होता है कि उक्त कवित्त में १७०० साल की जिस पोथी का संकेत है वह १७०४ वाली ही है। मुद्रित 'परि' में कई स्थलों पर पाठ १७०४ से मेल नहीं भी खाता। इसलिए मतभेद के लिए किंचित् अवकाश देख चौधुरी साहब के प्रीत्यर्थ 'परि' की आधारभूत प्रति को १७०० का ही मानकर उसे इस संस्करण में १७०४ वाली प्रति में गतार्थ नहीं किया गया है। यों स्पष्ट है कि 'अ०' १७०० से पूर्व की लिखित किसी प्रति की अनुलिपि नहीं है।

'ब०' प्रति सं० १७०४ की लिखी है। इसके लिखक श्रीरघु तिवारी हैं। इस प्रति के संबंध में रामनगर में किंवदंती है कि काशिराज ने जब मानस के पाठशोध का कार्य कराना चाहा तो घोषणा की कि जो तुलसीदास के स्वाक्षर में लिखी पोथी लाकर देगा उसे प्रति तोलकर सुवर्ण दिया जाएगा। कहते हैं कि उक्त प्रति तुलसीदास के स्वाक्षर की लिखी बताकर महाराज के संमुख उपस्थित की गई। किंतु छानबीन करने से पता चल गया कि हस्तलेख कर्ता के स्वाक्षर का नहीं है। १७०४ वाले उक्त हस्तलेख के अयोध्याकांड की पुष्पिका में 'लिखितं तुलसीदास' करने के लिए फेरफार किया गया है। पहले पुष्पिका थी 'संवत १७०४ समए अगहन सूदि प्रतिपदा लिखितं रघु तिवारी काश्यां'। इसे यों परिवर्तित किया गया—'संवत १६६१ समए अगहन सूदि प्रतिपदा लिखितं तुलसीदाश'। इस प्रकार दो स्थलों पर हरताल लगाकर परिवर्तन किया गया। एक संवत् के अंकों में दूसरे लिखक के नाम एवम् स्थान पर। दूसरी बार इसमें फिर संशोधन हुआ और पारमार्थिक स्थिति पुनः लाई गई। '१६६१' का फिर '१७०४' बनाया गया और 'तुलसीदाश' को 'रघु तीवारी' किया गया। इन प्रयासों में कैथी वर्तनी का प्रयोग है। प्रतीत होता है कि पहले तुलसीदासलिखित हस्तलेख कहकर केवल अयोध्याकांड ही उपस्थित किया गया। भेद खुल जाने पर पुस्तक तो लौट गई, पर प्रामाणिकता की छाप छोड़ती गई। पुस्तक गोसाईंजी के मंदिर के महंत की थी। कदाचित् कोई सुवर्णलोभी शिष्य चुपके से उक्त कांड उड़ा ले आया। उसी ने सारा फेरफार किया—पहले 'तुलसीदाश' फिर 'रघु तीवारी'। कैथी लिपि का अभ्यस्त व्यक्ति सँभालकर तुलसी तो लिख गया पर 'दास' के बदले 'दाश' लिख बैठा। इस हस्तलेख में कुछ मूल पत्रे नहीं हैं। बालकांड में पत्रसंख्या १, ५२–६६, १०८, १४२–१७५, १८०, १८४, १९०, २०४, २१५–२१९ सब मिलाकर ५५ पन्ने नए हैं, लंकाकांड का आरंभिक पन्ना मात्र नवीन है। उत्तरकांड में प्रारंभिक पन्ना और अंत में ४३–७२ पन्ने नवीन हैं। इस प्रकार ६७३ पन्नों में ८७ पन्ने नवीन हैं। सातो कांड मानस की उपलब्ध प्रतियों में यह सबसे प्राचीन है। इसमें तीन त्रुटियाँ हैं—एक बीच बीच में नए पन्नों से पूर्ति, दूसरी अरण्यकांड में आठ अर्धाली के अनंतर नियमपूर्वक दोहा रखने के प्रयास के कारण प्रक्षिप्ति और तीसरी लंकाकांड में प्रमुख रूप से दोहों में परिवृत्ति। दोहे के विषम चरणों में सामान्यतया १३–१३ मात्राएँ रखी जाती हैं। पर उसका लघु रूप विषम चरणों में १२–१२ ही मात्राएँ लेता है। मलिक मुहम्मद जायसी ने पदमावत में तथा दोहे-चौपाई में रचना करनेवाले हिंदी के अन्य सूफी कवियों

ने दोहे का यह लघु रूप लिया है। इस पर ध्यान न जाने से हिंदी के आलोचकों ने कल्पना की कि जायसी पढ़े-लिखे नहीं थे इसलिए उन्होंने छंदसंबंधी स्खलन किए हैं। एक यह कि चौपाई के चार चरणों का विचार न करके दो दोहों के बीच सात अर्धालियाँ रखीं होनीं चाहिए आठ। दूसरे दोहे के विषम चरणों में १३–१३ मात्राओं के बदले १२–१२ मात्राएँ रख दीं। तुलसीदास को उन्होंने इन अपराधों से मुक्त कर दिया। पर परमार्थतया ऐसा नहीं है। एक तो चौपाई क्या, इसी प्रकार के अन्य छंदों में भी केवल अर्धाली ही पर्याप्त समझी जाती है। चार चरणों से नहीं दो चरणों से, 'अर्ध' से, ही छंद की पूर्णता मान ली जाती है। मानस के अयोध्याकांड में नियमपूर्वक आठ अर्धाली के अनंतर एक दोहा रखने का प्रयास करने पर भी कहीं कहीं सात और कहीं कहीं नौ अर्धालियाँ रखनी पड़ी हैं। फिर अन्य कांडों की क्या कथा। विषम चरणों में १३–१३ मात्राएँ मानस में वहुत्र आई हैं। सांकर्य भी हैं। पहले चरण में १३ और तीसरे में १२, या इसका विपर्यास है। 'सोरठिया दोहे' या 'सोरठे' के दूसरे-चौथे चरण में मानस में १३–१३ ही मात्राएँ मिलती हैं। इससे निष्कर्ष निकला कि १२ मात्रा वाले दोहे या दोहरे के चरणों से पलटकर सोरठा नहीं वनाया जा सकता। लंकाकांड में 'दोहरे' (विषम चरण में १२ मात्रावाले दोहे) को 'दोहा' (विषम चरणों में १३ मात्रावाला) वनाया गया है।* पर जहाँ सोरठे हैं वहाँ कोई परिवर्तन नहीं है। लंकाकांड में चौपाइयों में भी क्वचित् संशोधन है। जहाँ नवीन पन्ने हैं वहाँ पाठ प्राचीन नहीं है। इस प्रति के संवंध में विचार करने में एक और स्थिति की ओर ध्यान आकृष्ट करना है। मानस की कोई संपूर्ण प्रति बहुत प्राचीन नहीं मिलती। एक एक सोपान या कांड प्राचीनतम अवश्य उपलव्ध होते हैं। इसलिए प्रतीत होता है कि जिस प्रति को इस प्रति के लिखक ने आधार बनाया उसमें विभिन्न कांडों का पाठ पृथक् पृथक् कांडों के प्राचीन हस्तलेखों से आकलित किया गया होगा या स्वयम् रघु तिवारी नें ही ऐंसा किया होगा।

प्रश्न होता है कि गृहीत संशोधन कहीं स्वयम् तुलसीदास के ही किए न हों। अरण्य-कांड में जसी परिवृत्ति और उसकी जैसी भाषा है वह तुलसीदास की नहीं हो सकती। लंकाकांड में हुआ संशोधन वैज्ञानिक पाठानुसंधायक तुलसीदास का ही मानते हैं। उनकी उपलब्धि है 'कि कवि ने मानस में स्वयम् छह वार संशोधन किया। यदि मानस के अन्य सोपानों में कहीं कम मात्रावाले दोहरे न होते तो माना जा सकता था कि लंकाकांड में उनका रहना ठीक नहीं है। पर जव अन्य कांडों में भी छिटफुट रूप में 'दोहरे' मिलते हैं तब विशेष कठिनाई आ खड़ी होती है। यदि लंकाकांड में हुए संशोधन के लिए प्रामाणिक आधार नहीं मिलता तो उसे स्वयम् कवि का किया संशोधन मानने में बाधा है। यह अवश्य सत्य है कि सं० १७०४ के पूर्व ही मानस में संशोधन-परिवर्तन-परिवर्धन हो चला था। सब कुछ होते

---

* दोहरा=विषम चरणों में १२-१२ मात्राएँ, दोहा=विषम चरणों में १३-१३ मात्राएँ, दोही=विषम चरणों में १५-१५ मात्राएँ—

दोहा के तेरहनि में द्वै द्वै कला वढ़ाइ। कीजै **दोही, दोहरा** एकै एक घटाइ ॥

—भिखारीदास, छंदार्णव ७।७।

हुए भी यह कहने में कोई संकोच नहीं कि इस प्रति के पाठ अन्य स्थलों पर अधिकतर पूर्ण विश्वसनीय हैं। मानस की कोई प्रति प्राचीनतम है या नहीं इसके लिए यह प्रति कसौटी है। पर स्वयम् इस प्रति के लिए भी कसौटी अपेक्षित है।

'ज०' प्रति सं० १८२४ की लिखी है। इसके लिखक स्वयम् चिथरूसिंह हैं।

'चि०' काशी राज्य की बहुमूल्य प्रति है। काशिराज के मानसानुराग का यह ज्वलंत उदाहरण है। इसका लिपिकाल सं० १८५१ है और लिखक 'रामचरन' हैं। बाईं ओर मूल पाठ सुलेखित है और दाहिनी ओर मूल में आए प्रसंगों के चित्र अंकित हैं। इसे प्रस्तुत कराने में उस समय लक्षाधिक द्रव्य व्यय किया गया था। मानस के सचित्र संस्करण कई मिलते हैं। पर चित्ररामायण का दूसरा दृष्टांत नहीं है। रामनगर के मानसप्रेमी मानस की तीन प्रकार की टीकाएँ मानते हैं--एक अर्थमय, दूसरी चित्रमय और तीसरी लीलामय।* काशी राज्य के तीनो ही प्रयास अनुपम हैं। 'परि' परम मर्मोद्घाटिनी टीका है और श्रेष्ठ प्रामाणिक टीकाओं में से है। चित्ररामायण अनन्यसाधारण है ही। विस्तृत क्षेत्र और पुष्कल व्यय से होनेवाली रामलीला भी अद्वितीय है। 'चि०' के पाठ सं० १७१४ वाली परंपरा के हैं। १७०४ की परंपरा से इसके पाठ नहीं मिलते।

'के०' किसी अन्य नाम से पुस्तकालय में चढ़ गई है। 'गु०' की भी वही स्थिति है।

'पं०' महत्त्वपूर्ण प्रति है। श्रीरामगुलामजी ने तुलसीदास के प्रामाणिक ग्रंथों के संबंध में अच्छा ऊहापोह करके जो निर्णय किया वही बहुमान्य हुआ। ये मानस के बड़े अच्छे व्यास थे। 'पं०' सं० १७१४ की प्रति की अनुलिपि है और स्वयम् इन्हीं की लिखी है। अरण्यकांड की पुष्पिका से यह स्पष्ट है--'लिखितं रामगुलामेन स्वात्मारार्थं परार्थमिति'। अयोध्याकांड की पुष्पिका उस प्रति का उल्लेख करती है जिससे यह उतारी गई--'लिपी संवत् १७१४ की पोथी पर अब संवत् १८७५'। इस प्रति की वर्तनी में चंद्रबिंदु का समुचित व्यवहार है। यह अत्यंत प्रामाणिक और सुलिखित है। सं० १७२१ की जिस परंपरा का ग्रहण भागवतदास छत्री ने अपनी बहुमान्य एवम् बहुप्रचलित प्रति में किया है उसी की प्राचीन पूर्ववर्ती परंपरा इसमें सुरक्षित है।

'म०' हस्तलेख सं० १८७० से १८८६ के बीच लिखा गया है। महंतजी हिंदी के प्रसिद्ध टीकाकार हैं। इसके पाठ परवर्ती परंपरा के हैं। 'भा०' मानस की ख्यात टीका है। इसका हस्तलेख सं० १८७५ से ८९ के बीच का लिखा है। भाईजी ने मानस में क्षेपक मिलाने को अनुचित कहते हुए भी 'गंगोत्पत्ति प्रसंग' क्षेपक रोचक होने से ले लिया है। इसके भी पाठ परवर्ती परंपरा के हैं। 'रा०' हस्तलेख सं० १९१५ का है और लिखक स्वयम् राजाजी हैं। यह भी परवर्ती परंपरा का है। 'मा०' मानस की टीका है, टीकाकार रघुनाथदास वैष्णव हैं। यह महाराज श्रीउदितनारायणसिंह के कनिष्ठ अनुज के आदेशानुसार मुद्रित कराई गई थी। इसके भी पाठ अच्छे हैं। 'गि०' में लिपिकाल नहीं है। पर है यह परवर्ती ही।

---

* पहिलो तिलक रामलीला वर। जिहि लखि परत न तिमिर कूप नर।
दूजो तिलक सकल मन भायो। रामायन सह चित्र लिखायो॥
--ईश्वर कवि, 'मानसदीपिका' भूमिका।

'क्रोड़पत्रीय' के आरंभिक दो पृष्ठ.



हस्तलेख के पाठ भी परवर्ती ही परंपरा के हैं। 'चौ०' भी किसी अन्य नाम से पुस्तकालय में चढ़ी हुई है। 'ज०' सं० १८२४ की लिखी है। जमादार साहब ही इस प्रति के लिखक हैं।

'खे०' कैथी लिपि की प्रति है। इसके लिखक श्रीमनसाराम हैं जिन्होंने बड़ी सावधानी से हस्तलेख प्रस्तुत किया है। इसके कांडों के लिपिकाल इस प्रकार हैं—सं० १७६८ में किष्किंधा-सुंदर, १७६९ में लंका, १७७० में वाल, १७७१ में उत्तर-अयोध्या। कैथी लिपि में मानस का इतना शुद्ध दूसरा हस्तलेख देखने में नहीं आया। मानस के पाठशोध के लिए कैथी के प्राचीनतम हस्तलेखों का उपयोग अनिवार्य प्रतीत होता है। मानस के जितने पाठानुसंधायी संस्करण प्रकाशित हुए हैं किसी में कैथी के प्राचीन या परवर्ती हस्तलेख को आधाररूप में स्वीकृत नहीं किया गया है। क्रोड़पत्रीय में कैथी के हस्तलेख का उपयोग बुद्धिमत्ता का द्योतक है।

इस विश्लेषण से स्पष्ट है कि अठारहवीं शताब्दी के प्रथम चरण से लेकर बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण तक के हस्तलेखों को इसमें आधार बनाया गया था। काशी राज्य के हस्तलेखों का आलोड़न करते समय यह भी पता चला कि यहाँ श्रावणकुंज के बालकांड का प्रसिद्ध हस्तलेख और राजापुरवाला अयोध्याकांड का हस्तलेख भी कदाचित् इसी समय मँगाया गया रहा होगा। यहाँ जिसकी अभिधा 'सखाजी की प्रति' है वह श्रावणकुंज के बालकांड की अनुलिपि है। बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में जो व्यक्ति श्रावणकुंज स्थान के महंत थे वे 'सखाजी' के नाम से ख्यात थे। इसमें 'कुंज'* के संशोधित पाठ गृहीत हैं। 'कुंज' में कब तक संशोधन हुआ यह संशोधित पाठरूपों की मूल परंपरा से स्पष्ट हो जाता है, जो १७१४ वाली है। 'कुंज' में आरंभिक ४ पन्ने और पन्ना ९७ सब मिलाकर ५ पन्ने नवीन हैं। 'राजा'* के यहाँ आने के कई प्रमाण हैं। क्रोड़पत्रीय में हरताल लगाकर इसके अनुसार सर्वत्र संशोधन किया गया है। उस समय 'राजा' के कुछ पृष्ठों के फ़ोटो भी लिए गए थे। उनका उपयोग सर्वप्रथम खड्गविलास प्रेस (बाँकीपुर) से सन् १८८९ (सं० १९४६) में प्रकाशित होनवाले संस्करण में हुआ। फिर लाला सीताराम ने 'राजा' की अनुलिपि मुद्रित कराते समय उनका प्रयोग किया। लाला साहब का संस्करण सन् १९२१ (सं० १९७८) में प्रकाशित हुआ। काशी राज्य में उन दस पृष्ठों के फ़ोटो-नेगेटिव अब भी हैं।

'राजा' के यहाँ आने का दूसरा प्रमाण यह है कि मानस की पूर्वोक्त 'शुद्ध ख़ास' ('रघु*') पर जो वेष्टन है वही 'राजा' का प्रधान वेष्टन है। उस पर स्वामी देवतीर्थ का तुलसीदास की प्रशस्ति में लिखा निम्नलिखित 'पद' कढ़ा हुआ है—

असरन को सरन एक तुलसी के चरन हैं।
रामभक्तिदायक औ ग्यानमान हरन हैं।
भाषा में रामचरित किए ललित बरन हैं।
अगम अरथ सुगम कियो पढत बरन बरन हैं।
बालमीक ब्यास बचन जदपि फलित फरन हैं।
येतनो रस तहाँ कहाँ चुअत परन परन हैं।

* नामसंकेत के लिए देखिए आगे पृष्ठ ४६०।

देवरिषि कि आदि कबि कि बेद रूप धरन हैं।
इनके बस राम सिया लषन तारातरन हैं।।

'राजा' के संबंध में ग्रंथस्वामी ने यह जनश्रुति बताई कि यहाँ मानस की संपूर्ण प्रति थी। चोर उसे चुराकर भागे। चोरों का पीछा किया गया। वे उसे यमुना में फेंक भाग खड़े हुए। प्रति को निकालने के सारे प्रयत्न विफल होने पर काशीनरेश के माध्यम से मछली फँसानेवाला बड़ा जाल मँगवाया गया, जिससे केवल अयोध्याकांड ही सुरक्षित निकाला जा सका, शेष कांड गल गए। अनुश्रुति में सार इतना ही है कि 'राजा' के कारण काशी राज्य से संपर्क हुआ। जनश्रुति यह भी कहती है कि राजापुर में यमुना के क़गारे पर का मंदिर (जिसमें तुलसीदास की प्रस्तरमूर्ति है) काशीनरेश का ही बनवाया है।

क्रोड़पत्रीय में पाठशोध का उक्त महनीय कार्य आरब्ध तो हुआ पर अज्ञात कारणों से १०–११ पृष्ठों से अधिक पाठचक्र अंकित नहीं किया जा सका।

प्रकृतमनुसरामः। प्रस्तुत संस्करण पर आइए। मानस-हस्तलेखावगाहन के क्रम में देखा गया कि यों तो पाठवृद्धि और प्रक्षेप की प्रवृत्ति बहुत पहले से है किंतु अतिप्रक्षेप सं० १७८५ से हुआ और सं० १८२० तक पराकाष्ठा पर जा पहुँचा। निश्चय हुआ कि यथाशक्य १७८५ के पूर्ववर्ती हस्तलेखों का ही उपयोग हो। छूट केवल प्राचीन परंपरा सूचक प्रतियों को ही दी जाय। साथ ही कैथी की इसी सीमा के अंतर्गत की प्रतियों का भी अवश्य विनियोग हो। स्थूल रूप में मानसप्रणेता के अवसानकाल के अनंतर एक शतक तक के उत्तरवर्त्ती हस्तलेखों का नियोजन हो और मानस के सर्जनकाल (१६३१) से १७८५ तक संभव हो तो प्रत्येक दशक का एक हस्तलेख अवश्य हो।

मानस के अनुसंधायकों का कहना है कि उसके निर्माण में लगभग तीन वर्ष लगे होंगे। जब उसकी अनुलिपियाँ तीन तीन वर्ष का समय ले लेती हैं तब सृष्टि ने कितना समय लिया होगा, राम जाने। निश्चयपूर्वक यही कहा जा सकता है कि १६४१ विक्रमी के आसपास मानस सर्वजनसुलभ हो गया था। बिहार के बड़इया (पटना) जनपद में मानस के हस्तलेखों की प्राचीन परंपरा संरक्षित की गई है। वहाँ अनेक हस्तलेख हैं और अधिकतर एक ही प्रवाह के हैं। अनुलिपियों में 'अनु, तदनु' का भी उल्लेख है। इनमें सबसे पहली अनुलिपि सं० १६४१ की कही गई है। मानस की यह परंपरा कोदोरामवाली मानी जाती है—

ब्रह्म किसोरीदत्त को ग्रंथकार ही दीन। अल्पदत्त पढ़ि ताहि सों चित्रकूट मो लीन।।
रामप्रसादहि सो दई लहि ता तें सिवलाल। दत्तफनीसहि जानि निज सो दीनी सुखमाल।।

दोहे शिवलाल पाठक के 'मानसमयंक तिलक' के हैं। किशोरीदत्त की १६४१ वाली परंपरा का विशेष माहात्म्य होने से बड़इया की किसी महत्त्वपूर्ण अनुलिपि का उपयोग अनिवार्य प्रतीत हुआ। मूल के सर्जनानंतर यह हुआ **प्रथम दशक** का। द्वितीय दशक का कोई हस्तलेख या उसकी परंपरा नहीं प्राप्त है। पर मानस की **'प्रेमरामायण'** नाम्नी पद्यबद्ध संस्कृत टीका श्रीरामू द्विवेद ने स्वयम् अपने गुरु तुलसीदास के सांनिध्य में की, जिसके सुंदरकांड का अनुलेखन सं० १६६२ में हुआ। द्विवेदजी के ही शब्दों में सुनिए—

भाषारामायणस्यैषा टीका **नीका** मया कृता। नीरसस्य परं **फीका** यो **ही का** कुटिलः सदा।।

संस्कृत-कांचन में हिंदी-शब्दमणि का योग दर्शनीय है। 'शब्दमुक्ता' को 'मानस' से मिलाइए—

निज कवित्त केहि लाग न **नीका**। सरस होउ अथवा अति **फीका**।।
प्रभुपद प्रीति न सामुझि **नीकी**। तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि **फीकी**।।

इसके कर्ता की घोषणा है—

'वंदेहं तुलसीदासं निवासं जानकीपतेः।
यत्प्रसादेन रामूको मूकोपि कवितां गतः।।

रामू (रामूक) सेवक लिखते हैं—

रामकिंकरेण भाषया कृतं यदद्भुतं काव्यमस्य **सेवकेन** रामुणापि पद्धतिः।

'रामकिंकर' विशेषण तुलसीदास के लिए प्रयुक्त है। यह पद इस ग्रंथ के सर्गों की पुष्पिकाओं में बहुत्र है—कहीं विशेष्य, कहीं तुलसीदास का और कहीं रामू का विशेषण। क्या 'रामकिंकर' विशेषण-विशेष्य किसी संप्रदाय विशेष की भी सूचना देता है। इसका विचार फिर कभी।

रामूक वंश का परिचय यों देते हैं—

तातः ख्यातमतिर्मुकुंद इति यो विष्णुद्विवेदानुजो, माता यस्य च देवकी सुविदिता धर्मेन्नपूर्णोपमा।

'प्रेमरामायण' किसके लिए और कहाँ लिखा गया इसका संकेत यों है—

शुद्धेंदुस्वच्छकीर्त्तिर्दशरथतनयस्यावबंधप्रबंधं काश्यां दासस्तुलस्या विवृतिमपि तुलारामनाम्नो हिताय।
चक्रे रामूद्विवेदस्तनुमतिरतनुश्लोकबद्धामुपांतेयोध्याकांडे व्यरंसीद्भरतसुचरितेत्रैकविंशोपि सर्गः।।

काशी में तुलाराम के लिए यह लिखा गया।

सुंदरकांड में अनुलिपिकाल यों है—

पुनर्वसुत्रिमस्तकाब्धिषट्सुधांशु (१६६२) संमिते सुवत्सरेथ कार्त्तिके सितेर्कसंमिते तिथौ।
दले लिलेख सुंदरं तुलाभिधो महेशितुः पुरे हि कांडकं नवं रवेर्दिने द्विजः स्वयम्।।

पुनर्वसु=२*, त्रिमस्तकाब्धि=६, षट्=६, सुधांशु=१; ('अंकानां वामतो गतिः' से) १६६२ कार्त्तिक मास के सित (उज्ज्वल=शुक्ल) दल (पक्ष) में अर्क (सूर्य=१२) तिथि (द्वादशी) को तुला नाम के द्विज ने महेश के पुर (काशी) में यह नया कांड (सुंदरकांड) रविवार को स्वयम् लिखा। जब अनुलिपिकाल १६६२ है तब ग्रंथ इसके पूर्व अवश्य बन गया होगा। अयोध्याकांड को छठे तथा किष्किधा-सुंदर को सातवें दशक का ही मानें तो सत्रहवीं शती के चतुर्थ दशक में निर्मित हुए ग्रंथ के हस्तलेख एवम् भाषांतर इस प्रकार क्रमशः **पाँचवें, छठे** और **सातवें दशक** के मिल जाते हैं।

इस प्रेमरामायण के केवल तीन ही कांड मिलते हैं—अयोध्या, किष्किंधा और सुंदर। अयोध्याकांड की तीन प्रतियों का पता चला है। एक काशिराज के पुस्तकालय में है। दूसरी रायल एशियाटिक सोसायटी (कलकत्ता) में और तीसरी लंदन के इंडिया आफिस में।

*पुनर्वसु नक्षत्र में विभिन्न मतों के अनुसार २ से ४, ५, ६ तक तारे माने गए हैं। पाणिनि के अनुसार वेद में ही इस शब्द का एकवचन होता है, अन्यत्र नित्य द्विवचन रहता है—छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम् १।२।६१, तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विवचनं नित्यम्। १।२।६३

सोसायटीवाले हस्तलेख में ५७ पन्ने हैं जिनमें से १-१०, १२-२०, ४१-४७, ४८ संख्यक पन्ने नहीं हैं। श्रीहरप्रसाद शास्त्री ने हस्तलेख को ईसाई सत्रहवीं शती का माना है।

प्रेमरामायण में सर्गबद्ध रचना है। प्रत्येक कांड में सर्गों की संख्या यों हैं—अयोध्या-२१, किष्किंधा६, सुंदर-६। रामू द्विवेद ने सर्गबद्ध रचना क्यों की, इस पर इतना ही कहना पर्याप्त है कि जो 'मानस' को महाकाव्यपद्धति का ग्रंथ 'सप्त प्रबंध सुभग सोपाना' से सोपान को ही सर्ग समझकर नहीं मानते वे भ्रम में हैं। ऐसे ही भ्रम के निवारणार्थ कर्ता (तुलसीदास) ने सप्तम सोपान (उत्तरकांड) में काकभुशुंडि द्वारा 'तेरिज रामायण'* का कथन करा दिया है, जहाँ का एक एक प्रसंग मानस के सर्ग का सूचक है। तेरिज रामायण के उन्हीं प्रसंगों या सर्गों से रामू द्विवेद के इन सर्गों को मिला देखिए।

प्रेमरामायण की परंपरा इस प्रकार बताई गई है —

प्रेमरामायणं पूर्व्वं यत्कृतं वायुसूनुना लिखित्वा नखटंकैस्तत्कटकेषु महीभृतां।
नाटकं श्रावयामास मुनिं प्राचेतसं मुदा नाभिनंदि तदा तेन निजग्रंथविलोपनात्।
न्यक्षिपन्मारुतिः सिंधौ पर्व्वतान्सर्व्ववर्ज्जितः तदेव तुलसीदासरूपिणा वायुसूनुना।
सुदेशभाषया सर्व्वं निबद्धं पुनरद्भुतं श्रीरामचरणांभोजप्रेमदं क्षेमदं नृणां।
तस्येयं तन्यते टीका तनुश्लोकैर्यथामति भाषावबोधविधुरां विदुषां बोधकारिणी।

हनूमानजी ने रामचरितमूलक जो नाटक बनाया वह 'हनमन्नाटक' है। उसे रामायण के कर्ता वाल्मीकि ने सराहा नहीं। कहीं मेरा ग्रंथ इसके सामने ठहर न सके, विलुप्त न हो जाय, इस आशंका से। नाटक पर्वतों पर लिखा गया था। इस उपेक्षा के कारण हनूमान ने नाटक (गिरिखंडों) को समुद्र में डुबो दिया। वायुपुत्र हनूमान ही तुलसीदास के रूप में जन्मे और सुंदर देशभाषा में उसे पुनः अद्भुत रूप में निबद्ध किया। नाभादास ने 'कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भयो' से तुलसीदास को वाल्मीकि का अवतार कहा है। उसके आधार पर मानस के 'यद् रामायणे निगदितम्' को 'वाल्मीकीय रामायणे निगदितम्' समझा जाता रहा है। स्वयम् कर्ता ने 'यद् रामायणे' का संकेत यों दिया है—

'यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशंभुना दुर्गमम्'।

रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा।
ता तें रामचरितमानस बर। धरेउ नाम हिअँ हेरि हरषि हर॥

तुलसीदास को हनूमान का अवतार कहने में भी कुछ रहस्य है, जिस पर विचार फिर कभी। रामू ने उनकी 'रहनि' का भी वर्णन किया है —के—

गौरं 'रा'पदमात्रसंश्रवणतोप्युद्भूतरोमांकुरं वक्षः श्रीतुलसीप्ररूढगुटिकामालं पटीशालिनं।
वारंवारमिदं पदं 'भरतु भे ठाढ़े'ति गाढं स्वरं गायंतं नररूपिणंकमपि तं वंदेनवद्ये हितं॥

उनका वर्ण गौर है। वे 'राम' शब्द के 'रा' मात्र उच्चारण से पुलकित हो जाते हैं। वक्षःस्थल पर तुलसी की बड़ी बड़ी गुरियों की माला धारण करते हैं, कौपीन पहनते हैं और 'भरतु भे ठाढ़े' पद गाढ़े स्वर में बारंबार पढ़ते हैं। 'भरतु भे ठाढ़े' गीतावली का पद (२।७०) है —

---

*'प्रथमहि अति अनुराग भवानी' (७।६४।७) से 'जो मैं तुम्ह सन कही भवानी' (७।६८।७) तक। तेरिज=सार-संकलन।

भरतु भए ठाढ़े कर जोरि ।
ह्वै न सकत सामुहें सकुचवस समुझि मातुकृत खोरि ।
फिरिहैं किधौं फिरन कहिहैं प्रभु कलपि कुटिलता मोरि ।
हृदय सोच जल भरे विलोचन नेह देह भइ भोरि ।
वनवासी पुरलोग महामुनि किए हैं काठ के से कोरि ।
दै दै स्रवन सुनिबे को जहँ तहँ रहे प्रेम मन वोरि ।
तुलसी रामसुभाव सुमिरि उर धरि धीरजहि वहोरि ।
वोले वचन विनीत उचित हित करुनारसहि निचोरि ॥

मानस के केवल पंचम सोपान (सुंदरकांड) की हस्तलिखित प्रति दुलही (लखीमपुर) की सं० १६७२ की है। इसका उपयोग गीता प्रेस वाले संस्करण में सर्वप्रथम किया गया है। तुलसीदास के जीवनकाल का हस्तलेख होने से इसका महत्त्व निर्विवाद है। डा० माताप्रसाद गुप्त ने इसे परित्यक्त कर दिया है, क्योंकि लिपिकाल में केवल संवत् का उल्लेख है, मास-तिथि-वार का नहीं, जिससे जाँच हो सके। मानस का प्राचीन हस्तलेख होने की कसौटी १७०४ का हस्तलेख है, यह कहा जा चुका है। दोनो के पाठ में अत्यधिक साम्य है, कुछ स्थलों को छोड़कर। इसलिए यह हस्तलेख निश्चय ही सत्रहवीं शती के **अष्टम दशक** का है।

राजापुर के अयोध्याकांड में कोई पुष्पिका नहीं हैं। पर परंपरा से वह प्राचीन माना जाता है। है भी प्राचीन। किंतु किस समय का है यह निर्णीत नहीं है। अनेक दृष्टियों से विचार करने पर यह ख्याति मान्य नहीं हो सकती कि वह कवि के स्वाक्षर में है। मानस के प्राचीनतर हस्तलेखों में उत्तरवर्ती अपभ्रंश के निकट के शब्दरूप मिलते हैं। परवर्ती हस्त-लेखों में क्रमशः प्राचीन शब्दरूपों का लोप होता गया है। उक्त हस्तलेख में प्राचीन रूप सर्वापेक्षा अधिक सुरक्षित हैं। अतः यदि वह कवि के जीवनकाल का नहीं तो उसकी मृत्यु के वहुत वाद का भी नहीं हो सकता। इसलिए उसे **नवम दशक** का माना जा सकता है।

श्रावणकुंज अयोध्या में सुरक्षित मानस के प्रथम सोपान की प्रति यद्यपि सं० १६६१ की कही जाती है तथापि जाँच से वह १६९१ की ठहरती है। इसमें '९' के नीचे कटोरी लगाकर '६' वनाया गया है और '१६' के निछत्र '६' को सछत्र किया गया है। उसी हस्त-लेख में छत्रधारी '६' कहीं लिखित नहीं है।

अठारहवीं शती के **प्रथम** एवम् **द्वितीय दशक** के दो (१७०४ वाले और १७१४ की परंपरा वाले) महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों का उल्लेख पहले किया जा चुका है। **तृतीय दशक** का महत्त्वपूर्ण हस्तलेख सं० १७२१ का है, जो भारत कलाभवन (काशी विश्वविद्यालय) में आरक्षित है। इसका उपयोग नागरीप्रचारिणी सभा (वाराणसी) से प्रकाशित और श्रीशंभुनारायण चौबे द्वारा संपादित संस्करण में भरपूर किया गया है। हस्तलेख संप्रति अयोध्याकांड विरहित है। अतः चौवेजी ने इसके संपूर्ण रूप की अनुलिपि (सं० १७६२) का उपयोग किया है। बहुत प्रयास करने पर भी तीसरे दशक का कोई हस्तलेख नहीं प्राप्त हो सका और भारत कलाभवन से भी उक्त प्रति 'निष्क्रमणं निषिद्धं' से संपादनार्थ अनुपलब्ध ही रही। **चतुर्थ दशक** (१७३७) की प्रति राजस्थान पुरातत्त्वमंदिर (जोधपुर) की है और

उत्तरकांड मात्र है। **पंचम दशक** की विशिष्ट प्रति की पुष्पिका यों है—'संवत् १७४३ वैशाष शक्ले द्वादशी वालगोविंद सर्म्मनेन निज तनय रामनारायनस्य पठनार्थं षडमासेन संपूर्ण लिखितमिती'। इससे विदित है कि १७४२ की कार्तिक शुक्ला प्रबोधनी एकादशी से पुत्र-प्रबोधनार्थ यह लिखी जाने लगी थी। इसमें बाल और अयोध्या कांड संक्षिप्त किए गए हैं। अयोध्याकांड की समाप्ति अरण्य का आरंभिक अंश गृहीत करके की गई है। यह प्रति अन्य प्रतियों से भिन्न परंपरा की है। इसमें बालकांड की वंदना 'वंदौं प्रथम महागुरचरना' से चली है। इस परंपरा की कई प्रतियाँ उपलब्ध होती हैं, सबका विस्तृत विचार इस लघुकाय निवेदन में कथमपि संभव नहीं। **षष्ठ दशक** की कई प्रतियाँ हैं। एक सरस्वतीभंडार (उदयपुर) की, दूसरी मथुरा की, तीसरी पेनसिलवानिया विश्वविद्यालय (अमेरिका) की, चौथी मयाशंकर याज्ञिक संग्रह (नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी) की।* पहली प्रति प्राचीन परंपरा की है, इसमें अयोध्याकांड के आरंभ में 'ब्रह्माविनय' प्रसंग वाला छोटा सा क्षेपक भी है। दूसरी प्रति अत्यंत भ्रष्ट है। ग्रंथस्वामी ने मूल प्रति आग्रहपूर्वक लौटा ली, अतः उसकी माइक्रोफिल्म से कार्य किया गया। इसकी लिपिभ्रष्टता और माइक्रोफिल्म की अस्पष्टता स्थान स्थान पर संदेहार्थ अवकाश करती रही है। तीसरी प्रति के लिखक 'गुरू अलहबकस' हैं। इन्होंने प्रति लिखी 'अमल श्रीपातिसाह औरंगसाह आलमगीर जागीर साहजादे रफी अलहदा फौजदार नवाब बिराहिम (इब्राहीम ?) मोकाम नग्रे सहसाराउ' में।

यह पुष्पिका इस तथ्य का प्रमाण है कि मुसलमान बंधुओं की भी मानस के प्रति अभिमुखता थी। पुस्तक के पन्ने अस्तव्यस्त हैं, यत्र तत्र खंडित भी हैं। प्रति प्राचीन परंपरा की है और नागराक्षर में यथासाध्य शुद्ध लिखी है। चौथी प्रति याज्ञिकसंग्रह की है और लंकाकांड मात्र है। १७०४ वाली परंपरा से इसका पूरा मेल है। **सप्तक दशक** की भी कई प्रतियाँ हैं। पहली प्रति तुलसीसंग्रहालय (रामवन, सतना) की है। इसमें दो ही कांड हैं। यह १७०४ वाली प्राचीन परंपरा की है। दूसरी प्रति स्वर्गीय पं० नागेश उपाध्याय को अचानक मिल गई थी। प्रति भदैनी (वाराणसी) के हयग्रीवमंदिर की है। दीपावली के गृहपरिष्कारजन्य त्याज्य अंश के साथ प्रति गंगालाभ करने जा रही थी, पर उपाध्यायजी की तीक्ष्ण दृष्टि ने इसे उबार लिया। इसमें अरण्यकांड नहीं है। अनुश्रुति के अनुसार मानस के दो तीन हस्तलेख अठारहवीं शती के सप्तम दशक में गोसाईंजी के मंदिर के पास लोलार्ककुंड (भदैनी, वाराणसी) में लिखे गए थे। कदाचित् उन्हीं में से एक यह भी है। इसमें क्षेपक रखे तो गए हैं पर मूल छंदसंख्या को आहत नहीं किया गया। इसमें पूर्ववर्ती और परवर्ती दोनों परंपराओं का मेल है। तीसरी प्रति कैथी लिपि की है, जिसका संक्षिप्त विवरण ऊपर खेदूलाल की पोथी के अंतर्गत दिया जा चुका है। **अष्टम दशक** के अंतर्गत आनेवाली छह प्रतियाँ हैं। इनमें से पहली-दूसरी रामनगर की ही हैं। ये दोनों पूर्ववर्ती परंपरा की हैं। तीसरी नागरीप्रचारिणी सभा (वाराणसी) के हस्तलिखित ग्रंथों के खोजविभाग की है। प्रति प्राचीन परंपरा की है। चौथी सरस्वतीभंडार, काँकरौली की है और संपूर्ण है।

---

*प्रतियों के लिपिकाल आदि का संक्षिप्त विवरण आगे पृष्ठ ४६० पर देखिए।

इसमें गाढ़ी हरताल लगाकर बहुत्र संशोधन किया गया है। कुछ समयानंतर प्रति लौट गई और माइक्रोफिल्म से पाठशोध किया गया। अतः संशोधन के पूर्व के हरताल से ढके कई पाठ अगृहीत ही रह गए। पाँचवीं रामवन (सतना) की है। परंपरा प्राचीन है। छठी कैथी लिपि की विशिष्ट प्रति है। इसके लिखक ने स्थान स्थान पर लेखनप्रमाद अवश्य किया है, पर इसमें विवदमान प्राचीन पाठों की अच्छी रक्षा भी है। प्रति ब्रिटिश म्यूजियम लंदन की है। लिखक पटनीमल गुरहटा (गंगातट, पटना) के हैं। **नवम दशक** की केवल एक ही प्रति है और कैथी लिपि में है। इसमें कैथी लिपि की परंपरा के विरुद्ध ह्रस्व इकार की मात्रा और दंत्य 'स' का भी व्यवहार है।

इस प्रकार कर्ता के साकेतवास से लगभग एक सौ वर्ष पश्चात् तक के हस्तलेखों को लक्ष्य किया गया है। तीन आधारभूत प्रतियों को उनकी विशेषता के कारण ही परवर्ती होने पर भी गृहीत किया गया है। उन्हें अपवाद ही समझना चाहिए। मानस के लेखन से इस प्रकार लगभग डेढ़ सौ वर्ष की सीमा के हस्तलेखों की परंपरा इसमें आधाररूप में रखी गई है। इस सीमा के जितने भी हस्तलेख किसी प्रकार प्राप्त हो सके, संपादनार्थ संकलित किए गए। संकलनार्थ कृत आयास का सौभाग्य एवम् दुर्भाग्य पूर्ण विवरण देकर सुखदुःख के द्वंद्व में ग्रहीताओं को डालना अनर्थक और अप्रयोजनीय है। सात समुद्र पार की प्रतियों की प्राप्ति और पड़ोस की प्रतियों की अप्राप्ति के विरोधाभास द्वारा चाकचिक्य उत्पन्न करना अकांडप्रथन ही होगा। केवल मलीहावाद की प्रति के संबंध में 'दो बोल' अपेक्षित हैं। इसके लिए कई बार और कई माध्यमों से प्रयास किया गया। पर उसके दर्शन तक न हो सके। इसे बंधुवर श्रीनंददुलारे वाजपेयी ने गीता प्रेस वाले संस्करण का संपादन करते समय देखा था। उन्होंने बताया कि प्रति परवर्ती है और क्षेपकों से अलंकृत है।*

मानस का अध्ययन-मनन प्रणेता के जीवनकाल में ही विस्तृत क्षेत्र में फैल गया था। इसका मुख्य कारण यह था कि स्वयम् कर्ता ने इसके प्रचार-प्रसार के लिए दो प्रकार के सुदृढ़ साधन निकाले। एक मानस की कथा के अनुसार रामलीला का आयोजन और दूसरे उसकी कथा का श्रवण सत्संग के रूप में। भारतीय साहित्य की परंपरा में वाल्मीकि और व्यास दो विशिष्ट प्राचीन साहित्यस्रष्टा हुए। तुलसीदास ने 'ब्यास आदि कबिपुंगव नाना। जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना' कहते हुए व्यास का उल्लेख वाल्मीकि से भी पहले वंदना के प्रसंग में किया है। व्यासप्रणीत और शुकमुखोद्गीरित श्रीमद्भागवत के द्वारा होनेवाले हरिचरितश्रवण की जो परंपरा व्यासों द्वारा चली उसके अनुगमन पर उन्होंने मानसकथाश्रवण का आरंभ, हो सकता है, पहले किया हो और मानस के आधार पर होनेवाली रामलीला का प्रवर्तन तदनंतर। मानस की रामलीला की जो पद्धति सुप्रचलित है उसमें मानस का पाठ पहले होता

---

* आइ एम नाट प्रिपेयर्ड टु अटैच एनी ग्रेट इंपार्टेंस टु इट, इट बीइंग रिपोर्टेड दैट इट कंटेंस मेनी क्षेपकज़ (इंटरपोलेशंस) [मैं इसे कोई बड़ा महत्त्व देने को प्रस्तुत नहीं। यह विवरण पहले दिया जा चुका है कि इसमें अनेक क्षेपक हैं]।

—श्यामसुंदरदास, खोजरिपोर्ट (काशी नागरीप्रचारिणी सभा), सन् १९०१, पृष्ठ २।

है और पाठानुसारिणी लीला एवम् संवाद तदनंतर। यहाँ भी उसका पाठ्यत्व या श्रव्यत्व प्रथम है, दृश्यत्व तदनंतर। मर्मी सज्जनों को यह बताने की आवश्यकता नहीं कि मानस की रामलीला का अनुधावन वाल्मीकि के पदानुगमन पर ही है। वाल्मीकि का रामायण लव-कुश द्वारा गाया और अभिनीत किया गया था। अनुसंधायक तो इस सीमा तक पहुँचे हैं कि 'लव-कुश' नामों के व्यत्यय और ईकार के अंतःपात से 'कुशीलव' शब्द बना, जो अभिनय-कर्ता नटों का प्रसिद्ध पर्याय है। कदाचित् मानस की सर्वप्रथम कथा स्वयम् रचयिता ने व्यासरूप में कही और मानस की रामलीला भी स्वयम् ही सर्वप्रथम कराई। पौराणिक प्रवाह के अनुसार वाराणसी के दो विभाग हैं—केदारखंड और काशीखंड। दक्षिणी का नाम केदारखंड और उत्तरी का काशीखंड है। केदारखंड की रामलीला के प्रवर्तक स्वयम् तुलसीदास कहे जाते हैं और काशीखंड की रामलीला के स्थापक मेघा भगत। भगतजी इनके मित्र थे और वाराणसी के कमच्छा स्थान में रहा करते थे।* जनश्रुति है कि भगतजी पहले वाल्मीकीय रामायण के अनुसार लीला कराते थे। तुलसीदास के अनुरोध पर मानसानुसारी लीला प्रचारित की। मेघा भगत वाली लीला चित्रकूट (वाराणसी) की रामलीला के नाम से विख्यात है, जिसका भरतमिलाप अत्यंत समारोहपूर्वक होता है और जिसमें काशीनरेश भी दर्शनार्थ गजारूढ़ सपरिकर उपस्थित रहते हैं।

मेघा भगत के लिए मानस की अनुलिपि अवश्य कराई गई होगी। अनुमान से यह अनुलिपि कैथी में हुई होगी। भगतजी के लिए वही लिपि अधिक सुवाच्य रही होगी। तुलसीदास की निजी प्रति नागरी लिपि की थी, यह निःसंदिग्ध है। इस प्रकार लेखक के जीवनकाल में ही मानस के दो प्राचीनतम हस्तलेख हो गए होंगे। इन्हीं दोनो प्राचीन हस्तलेखों की परंपरा आगे चली। कैथी के हस्तलेखों पर से भी नागरी के हस्तलेख लिखे जाते थे और नागरी के हस्तलेखों पर से भी कैथी के हस्तलेख उतरते रहते थे। इससे दोनो लिपियों की वर्तनी का सांकर्य हो गया। कैथी की वर्तनी ने कई महत्त्वपूर्ण पाठांतरों को जन्म दिया।

स्वयम् तुलसीदास के स्वाक्षर का हस्तलेख क्या हुआ। इस प्रश्न का उत्तर कठिन नहीं है। किसी प्राचीन कवि के स्वाक्षर के हस्तलेख नहीं मिलते। सुलेख लिखनेवाले लिखक उस समय लेखन का व्यवसाय ही किया करते थे। सुलिखित हस्तलेख ने कर्तालिखित पांडु-लिपि की उपेक्षा कराई और वह लुप्त हो गई। यह मानस ही नहीं, हिंदी की किसी भी प्राचीन कृति के लिए कठोर सत्य है।

दूसरा प्रश्न यह होता है कि तुलसीदास ने मानस लिखने के अनंतर उसमें कोई संशोधन फिर किया या नहीं। १६३१ से १६८० के दीर्घ अंतराल में संशोधन की संभावना दुरूह नहीं है। पर यह भावना कि उन्होंने मानस में छह वार संशोधन किया अतर्क्य प्रतीत होती है। सिद्ध कवियों की वाणी इतने वार संशोधन का अवकाश देती ही नहीं। कर्तांकित संशोधन की संभावना के लिए दो-तीन स्थल चुने जा सकते हैं। राजापुर की प्रति में 'तापस-

---

* कमछा के मेघा भगत करि सुरधुनी नहान। तुलसीचरन पखारि गृह भजत राम धनुबान॥
—गौतमचंद्रिका, नागरीप्रचारिणी पत्रिका, सं० २०१२।

पंचनामा

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

द्विश्शरन्नाभिसंधत्ते द्विस्स्थापयति नाश्रितान् ।। द्विर्द्ददाति न चार्थिभ्यो रामो द्विर्नैव भाषते ।।१।।

तुलसी जान्यो दशरथहिं धरमु न सत्य समान ।। रामु तजे जेहि लागि बिनु राम परिहरे प्रान ।।१।।

धर्म्मो जयति नाधर्म्मस्सत्यं जयति नानृतं ।। क्षमा जयति न क्रोधो विष्णुर्जयति नासुराः ।।१।।

[शीर्ष पर तुलसीदास के स्वाक्षर में लिखित मंगलवचन]

प्रसंग' गृहीत पद्धति के विपरीत और प्रवहमान कथा के बीच जोड़ा हुआ है। तुलसीदास के प्रत्यक्ष शिष्य रामू द्विवेद के प्रेमरामायण में भी इस प्रसंग का अनुवाद प्राप्त है। इसलिए इसकी प्राचीनता को देखते संभावना होती है कि स्वयम् कर्ता ने ही इसे जोड़ा होगा। प्रस्तुत संस्करण में यह अंश दो तारों (*) के मध्य दिखाया गया है और इसके दोहे की संख्या हस्तलेखों के साक्ष्य पर पृथक् नहीं दी गई है। मानस के प्राचीन हस्तलेखों में जहाँ कोई प्रक्षेप आया है वहाँ मूल की दोहासंख्या अनाहत ही रखी गई है। उक्त प्रसंग में जो 'तापस' आया है उसे कोई अग्नि, कोई उपासक भरत और कोई तुलसीदास मानता है। उसे तुलसीदास मानने की कल्पना ही अधिक सटीक जान पड़ती है। दूसरा स्थल सुंदरकांड के आदि में आई मारुतिवंदना का श्लोक है। इसमें 'दुलही'* का पाठ दो अंशों में अकेला है—एक 'हिमशैल' और दूसरे 'रघुपतिप्रियभक्तं'। दोनों अंशों के पाठ अन्यत्र सर्वत्र क्रमशः 'स्वर्णशैल' और 'रघुपतिवरदूतं' हैं। 'हिमशैल' को 'स्वर्णशैल' कर देने से 'स श' के अनुप्रास का चमत्कार बढ़ता है। 'रघुपतिप्रियभक्तं' में 'संयुक्ताद्यं दीर्घम्' की नीति से 'रघुपतिप्रियभक्तं' पढ़ना पड़ेगा। 'दुलही' के स्वामी ने पहली भेंट में स्वतः बताया कि इस प्रति में स्वयम् तुलसीदास ने अन्यों के सुझाव पर परवर्ती संशोधन किया था, ऐसी पूर्वजों की परंपरागत अनुश्रुति है। पर 'रघुपतिप्रियभक्तं' में 'संयुक्ताद्यं दीर्घम्' की वैकल्पिक स्थिति छंदोमंजरी की साखी पर मानी जा सकती है—

'प्रह्ले वा' इति पुनः पिङ्गलमुनेर्विकल्पविधायकं सूत्रम्। उदाहरणं यथा कुमारे
सा मङ्गलस्नानविशुद्धगात्री गृहीतप्रत्युद्गमनीयवस्त्रा।
निर्वृत्तपर्जन्यजलाभिषेका प्रफुल्लकाशा वसुधेव रेजे॥

इस प्रकार छंदःशास्त्र इसे दोषमुक्त कर देता है। पर 'दुलही' के अतिरिक्त सर्वत्र संशोधित ही पाठ है। अतः संभावना यही है कि कर्ता को ही किसी कारण संशोधन करना पड़ा। 'राजा' के मंगलाचरण में 'शंकरप्रार्थना' के आदि में 'यस्यांके' एकल पाठ है। अन्यत्र सर्वत्र 'वामांके' है। ऐसा परिवर्तन प्राचीन प्रतियों को मान्य करते हुए तुलसीदासकृत माना जा सकता है। पर पुष्ट प्रमाण के अभाव में बलपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। तुलसीदास-लिखित होने की ख्याति और उनके ही द्वारा संशोधन की प्रसिद्धि 'कुंज' के संबंध में रही है। प्राचीन प्रतियों की महत्ता का द्योतन करने के लिए ऐसी कितनी ही वार्ताएँ बहुत प्रचलित हैं। तुलसीदास के स्वाक्षर में लिखा एक ही अंश माना जा सकता है। वह 'पंचनामा' के शीर्ष पर लिखित मंगलवचन है। तुलसीदास का प्रिय सिरनामा 'श्रीजानकीवल्लभो विजयते' भी यहाँ दर्शनीय है। उन्होंने वाल्मीकीय रामायण की प्रतिलिपि की थी यह भी प्रवाद ही प्रवाद है। सरस्वतीभवन (वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय) वाले हस्तलेख की पुष्पिका एक तो मूल के अक्षरों से भिन्न अक्षरों में है दूसरे उसमें लिखक के 'आदिलशाह' के आश्रित होने का स्पष्ट उल्लेख है—

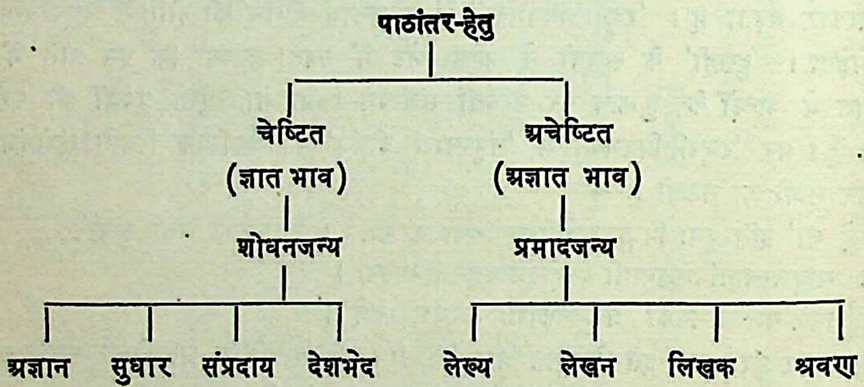
श्रीमद्येदिलशाहभूमिपसभासभ्येंद्रभूमीसुरश्रेणीमंडनमंडलीदयादानादिभाजिप्रभुः।
वाल्मीकेः कृतिमुत्तमां पुररिपोः पुर्यां पुरोगः कृती दत्तात्रेयसमाह्वयो लिपिकृतेः कर्मत्वमाचीकरत्॥

---

* नामसंकेत के लिए देखिए आगे पृष्ठ ४६०।

प्राचीन काल में जीविकार्थ लेखनकार्य करनेवालों के अतिरिक्त श्रद्धा या आदर बुद्धि से विशिष्ट जन भी प्रतिलिपि या अनुलिपि करते थे। पर 'तुलसीदास' नाम और समय की अनुकूलता मात्र से किसी प्रति का लिखक उन्हें नहीं माना जा सकता।

सामान्यतया किसी स्वलिखित कृति में समर्थ कर्ता भी दीर्घायु होने पर बारंबार संशोधन किया करता था यह धारणा प्रमाणाभाव में पूर्ण सत्य नहीं हो सकती। पाठांतर अधिकतर अन्यों के द्वारा नानाविध हेतुओं से होते या हो जाया करते थे। अनुलिपि करने में दो इंद्रियाँ प्रधान रहती हैं—नेत्र और कर। कभी कभी एक व्यक्ति आधारप्रति से पाठ बोलता चलता है। ऐसी स्थिति में श्रवण की भी सहायता लेनी पड़ती है। कुछ पाठांतर जान-बूझकर किए जाते हैं, कुछ अनजाने हो जाते हैं। अधिकतर पाठांतर प्रमादजन्य होते हैं। पाठांतर के हेतु का बड़ा विस्तार है। थोड़े में उसकी रूपरेखा यों खींची जा सकती है—



आकार-सीमा का प्रतिबंध इन सबके उदाहरणों का आगमन और लेखनी का गमन रोकता है। जब कोई विस्तार ही नहीं तो 'अलमतिविस्तरेण' कैसे कहा जाए।

मानस के संपादित पूर्ववर्ती संस्करण वर्तनी में प्रायः एकरूपता लाने का प्रयास करते रहे हैं। पर विभिन्न स्थलों पर तुकांत में आए एक ही शब्द के दो भिन्न रूप कहते हैं कि कर्ता को वर्तनी की एकरूपता का आग्रह नहीं था। हिंदी में अधुना वर्तनी पर जितना ध्यान दिया जाता है उतना कोई लेखक पहले नहीं रखता था। अतः एकरूपता-संपादन का प्रयास न करके प्राचीन हस्तलेखों के प्रति संमानप्रदर्शन और वैज्ञानिक प्रणाली के पूर्ण अनुधावन की दृष्टि से एक ही शब्द की भिन्न वर्तनी ज्यों की त्यों गृहीत की गई है। कुछ विभेद तो केवल उच्चारण से ही अभेद हो जाते हैं। ऐसा करने से साहित्य, धर्म, विज्ञान की समन्विति का लाभ तो है, पर ग्रहीता की कोई हानि नहीं है। कुछ विभेद ऐसे हैं जिनका अभेद हिंदी-उच्चारण कर देता है। पुरानी हिंदी में 'मागत' और 'माँगत' में रूपभेद है, उच्चारणभेद नहीं। हस्तलेखों के आलोड़न और विश्लेषण के आधार पर कुछ शब्दरूपों एवम् कुछ स्थितियों में विकल्प मानकर वर्तनी रखी गई है। मानस में प्रयुक्त कुछ शब्द ऐसे हैं जिनकी मात्राओं का उच्चारण पूर्वी की सरणि के अनुरूप नहीं है। 'चलै' और 'चलइ' में रूपभेद है,

उच्चारणभेद नहीं। पश्चिमी पद्धति से 'कौन' और 'कवन' की भी ऐसी ही स्थिति है। 'कौन' का पूर्वी उच्चारण 'कउन' होगा। मानस में चाहे 'कौन' लिखा हो, पढ़ना 'कवन' होगा। यह और कुछ नहीं--'औ' के दो प्रकार के उच्चारणों का भेद है। अवधी या पूर्वी में 'औ' का या इसकी मात्रा का उच्चारण 'अउ' है। पर पश्चिमी भाषा में 'अव' है। यही स्थिति 'ऐ' या उसकी मात्रा की है। इस संस्करण में हस्तलेखों के अनुगमन पर रूप ज्यों का त्यों रखा गया है। यहाँ केवल दस शब्दों के उच्चारण दिङ्निर्देशार्थ दिए जाते हैं--

नैन=नयन। बैन=बयन। बैर=बयर। बैस=बयस। मैना=मयना। सैन=सयन। आरौ=आरव। और=अवर। कौन=कवन। जौन=जवन।

अयोध्याकांड के ११५ वें दोहे में 'अयन, नयन' है, पर तुकांत के अनुरोध से 'ऐन नैन' होना चाहिए। यहाँ 'अयन, नयन' के उच्चारण का रूप बताने के ही लिए कर्ता ने तथा हस्तलेखों ने ऐसा लिखा है। प्रस्तुत संस्करण में मूर्धन्य 'ष' का ग्रहण 'ख' उच्चारण के लिए है। पर 'ष' वहीं रखा गया है जहाँ संस्कृत मूल शब्द में मूर्धन्य 'ष' है। पुरानी हिंदी में तालव्य 'श' नहीं है। मूर्धन्य 'ष' भी नहीं है। तालव्य का उच्चारण हिंदी में दंत्य 'स' है। पर मूर्धन्य 'ष' के दो उच्चारण हैं—'ख' और 'स'। जहाँ इसका 'स' उच्चारण अभिप्रेत है वहाँ 'ष' रेखांकित है—'ष़'। संस्कृत शब्द के संयुक्त वर्ण में मूर्धन्य 'ष' का उच्चारण हिंदी पाठ में 'स' ही होगा—दृष्टि=दृस्टि, विष्णु=विष्नु=विस्नु इति दिक्। मूर्धन्य 'ष' युक्त संस्कृत शब्दों से बने क्रियारूपों में भी मूर्धन्य 'ष' रहने दिया गया है। मानस में √बरष से बनी क्रिया के 'बरषहिं' और 'बरिसहिं' दो रूप मिलते हैं। इससे स्पष्ट है कि जहाँ दंत्य 'स' उच्चारण है वहाँ रूप में विकार भी हुआ है। मानस के ही नहीं हिंदी के अन्य प्राचीन हस्तलेखों में भी एक समस्या और है, जिस पर अभी किसी का ध्यान पूरा पूरा नहीं गया है। 'दच्छ' दो रूपों में लिखा मिलता है— एक 'दच्छ', दूसरे 'दछ'। 'दछ' का उच्चारणानुयायी रूप अन्यों ने 'दच्छ' लिया है। मानस में या अन्यत्र भी संस्कृत के जो अल्पप्राण-महाप्राणसंयुक्त शब्द ज्यों के त्यों लिए गए हैं (जैसे बुद्धि, क्रुद्ध आदि) उनके अतिरिक्त प्राचीन हस्तलेखों में उन शब्दों में अल्पप्राण का प्रयोग नहीं मिलता, दुहरे महाप्राण का प्रयोग अवश्य है। 'लषन' के 'ल' पर बल देने से 'लष्षन' होता है। इसे 'लषन' या 'लष्षन' दो रूपों में लिखा गया है। जहाँ केवल 'लषन' या 'दछ' रहने पर ठीक उच्चारण नहीं हो सकता वहाँ एक चिह्न का प्रयोग किया गया है जिसे उदात्तसूचक नाम दिया गया है। हस्तलेखों में इसके स्थान पर प्रायः बिंदी सी लिखी मिलती है। ७।१२२।४ पर शब्द के दो पाठ मिलते हैं—कुपथ्य और कुपंथ। यहाँ 'कुपंथ' पाठ और कुछ नहीं 'कुपथ्य' है। इसे 'कुप॑थ' रूप में व्यक्त किया गया है।

संस्कृत छंदों और स्तुतियों में संस्कृत की वर्तनी रखी गई हैं। पर हस्तलेखों के साक्ष्य पर 'परसवर्ण' का नियम नहीं रखा गया है, अनुस्वार से ही काम लिया गया है।

हस्तलेखों में सानुनासिक स्थिति के बोध के लिए बिंदु (ं) और चंद्रबिंदु (ँ) दोनो का व्यवहार है। 'पंचनामा' में तुलसीदास के स्वाक्षर में लिखे दोहे में चंद्रबिंदु का ही व्यवहार है। अतः प्रस्तुत संस्करण में चंद्रबिंदु का ही प्रयोग किया गया है। मानस में अपभ्रंश की परंपरा

के कारण तृतीया और सप्तमी के लिए बहुधा सानुनासिक रूप गृहीत हैं। परवर्ती हस्तलेखों में यह सानुनासिकता क्रमशः हटते हटते बहुत कुछ हट गई है। 'पंचनामा' के 'दशरथहिं' में सानुनासिकता बतलाती है कि तुलसीदास की वर्तनी व्याकरणसंमत प्राचीन रूपों के पक्ष में है। चंद्रबिंदु उन्होंने पहले 'थ' पर लगाया, जो तत्त्वतः 'थ' पर लगाने के लिए नहीं था, मात्रा पर ही लगाने के लिए था। नियम है कि ह्रस्व इकार की मात्रा के आगे बिंदु या चंद्रबिंदु लगाते थे और दीर्घ ईकार की मात्रा पर पहले। 'हि' पर पहले ही चंद्रबिंदु लगा देना लेखनप्रणाली के विरुद्ध होने से उसे स्थानांतरित किया गया है। अस्तु। किसी शब्द में सानुनासिकता व्याकरणगत कई स्थितियों की द्योतक होती है। हस्तलेखों के कर्ता बिंदियाँ गिनकर मनमानी भी लगा दिया करते थे। मानस के प्राचीन हस्तलेखों में अपेक्षाकृत ऐसी स्थिति कम है। क्रिया के बहुवचनांत रूप विभिन्न हस्तलेखों का आधार लेकर ठीक कर दिए गए हैं। पर तृतीया और सप्तमी जन्य सानुनासिकता वहीं रखी गई है जहाँ हस्तलेखों में मिल गई है। इस संस्करण में सारा आधार हस्तलेखों का है, केवल आधुनिक रूप में सुवाच्य-सुपाठ्य करने का ही आयोजन किया गया है। उच्चारणसौकर्य के लिए ही कुछ चिह्नों का प्रयोग किया गया है, अन्यथा मूल में आधुनिक विरामचिह्न कहीं नहीं लगाए गए हैं।

हिंदी को अधिक समास रुचिकर नहीं है। इसलिए अधिकतर षष्ठी तत्पुरुष और अपेक्षित होने पर छोटे बहुव्रीहि समास को समस्त पद के रूप में व्यक्त किया गया है। शब्दों को कहीं कहीं अनिवार्यतया मिलाना था, नहीं तो 'सदा सिव' और 'सदासिव' में कैसे भेद होता। पाठ को सुबोध करने और अर्थबोधक स्थिति में लाने के जितने विनियोग किए गए उन सबका आख्यान विस्तृत विवरण की आकांक्षा करता है। इसलिए विराट् रूप के संवरण के अतिरिक्त यहाँ कोई गति नहीं है।

अपभ्रंश के अकारांत पुंलिंग शब्दों में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में लगनेवाली 'उकार' की मात्रा* और तृतीया-सप्तमी के लिए सानुनासिक † रूपों का व्यवहार अनुलिपिकर्ताओं के लिए कष्टद रहा है। परवर्ती काल में धीरे धीरे इनका अधिकतर परित्याग कर दिया गया। तुलसीदास के स्वाक्षर में लिखे 'पंचनामा' के दोहे से स्पष्ट है कि वे उकारांत रूपों के ग्रहण के पक्ष में थे। अतः इन रूपों का चयन और ग्रहण किया गया है। संपादक ने अपनी ओर से कुछ नहीं किया। जो हस्तलेखों में मिला उसी का व्याकरणसंमत होने पर संग्रह किया गया। शब्दों, विशेषणों आदि को उकारांत रूप में रखने की कर्ता की पद्धति विश्लेषणसापेक्ष है। उसका विस्तार यहाँ परित्यक्त किया जाता है। पर जब कोई कहता है कि तुलसीदास 'गुरु' शब्द को 'गुर' नहीं लिख सकते और जब कोई धमकाता है कि यदि 'राम' को 'रामु' लिखा जाएगा तो 'जान आदिकवि नामप्रतापू। भयेउ सुद्ध करि उलटा जापू' से संगति न होगी, क्योंकि 'राम' का ही उलटा तो 'मरा' होगा, 'रामु' से तो 'मुरा' हो जाएगा, तब कहनेवालों का अतिचार उचित नहीं लगता। 'राम' प्रातिपदिक रूप से ही प्रयोजन है, संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश-हिंदी सर्वत्र; 'रामः' या 'रामु' सुबंत रूप से नहीं। यह रामु भी तो 'रामः'

---

* स्यमोरस्योत्—सिद्धहेमशब्दानुशासन, ४।४।३२। † आट्टो णानुस्वारौ—वही, ४।३४२।

का ही विकास है—'रामः' का 'रामो', फिर 'रामु'। यदि संस्कृत 'रामः' का उलटा किया जाए तो 'मःरा=महरा' उच्चारण होगा, मरा नहीं। देश्य भाषा का शब्दरूप 'गुर' ही है, जो 'निगुरा' में देश्य रूप में ही उपस्थित है। प्राचीन हस्तलेखों के अनुसार मानस में 'गुरु' शब्द प्रथमा और द्वितीया में 'रामु' की भाँति प्रयुक्त है।

अंत में गृहीत पाठ के आधार के विवेचन पर आइए। बालकांड में 'कुंज' और 'रघु' मुख्य आधार हैं। जहाँ इन दोनो में से किसी में नवीन पन्ने हैं वहाँ शेष प्रतियों के सहारे पाठ का चयन एक ही से किया गया है। अयोध्याकांड में 'राजा' और 'रघु' के सहारे निर्धारण किया गया है। विवदमान पाठों के लिए प्रेमरामायण की सहायता ली गई है। अरण्यकांड में 'रघु' की 'बढ़ोतरी' परित्यक्त की गई है, पर वर्तनी के लिए वही प्रति प्राचीनतम रूप वाली दिखी। यही स्थिति 'किष्किधा' की है। 'सुंदर' में 'रघु' और 'दुलही' का योग है। 'लंका' में आधारभूत प्रतियों में प्राचीनतम होने पर भी १७०४ ('रघु') का परित्याग कर १७१४ की परंपरा ('राम') के पाठ लिए गए हैं। इस कांड में 'रघु' में दोहों में ही नहीं अन्यत्र भी संशोधन भासित होता है। पाठ और वर्तनी के निर्धारण में 'बाल, नाग, मन' को सहायक रखा गया है। उत्तरकांड के अंत में भी 'राम, बाल, नाग, मन' के सहारे कार्य किया गया है, क्योंकि 'रघु' में वहाँ नवीन पन्ने हैं।

पहले कहा जा चुका है कि मानस के हस्तलेख पूर्ववर्ती और परवर्ती परंपरा के हैं। जहाँ पूर्ववर्ती परंपरा में किसी चौपाई का अभाव है और परवर्ती परंपरा में उसका सद्भाव, वहाँ उसे बड़े कोष्ठक '[ ]' से घेरकर मूल के साथ ही रखा गया है। ऐसा उन्हीं स्थलों पर किया गया है जहाँ छूट जाने की अधिकाधिक संभावना है और 'बढ़ोतरी' परंपरा की अधिकतर विशिष्ट प्रतियों में उपलब्ध है। अन्यत्र की बढ़ोतरी मूल में संनिविष्ट नहीं की गई है।

संक्षेपार्थ हस्तलेखों के नामसंकेत की पद्धति संप्रति अधिकतर अंकों (१, २, ३, ४ आदि) और अक्षरों (क, ख, ग, घ आदि) की है। इनमें से अंकों वाली पद्धति अपेक्षाकृत विशेष अशुद्धिविधायिनी है। तुलसीदास ने जो 'अंक अगुन आखर सगुन' कहा है सो यहाँ भी ठीक है। अगुण की अपेक्षा सगुण का ग्रहण ही श्रेयोमार्ग है। पर इस 'प्रपंच' में केवल 'अक्षर' से कार्यसिद्धि नहीं होती। नाम के बिना रूपबोध नहीं होता—'रूप बिसेष नाम बिनु जानें। करतलगत न परहिं पहिचानें'। अतः नाम के आदि या अंत के प्रायः दो अक्षर लेकर नाम-संकेत बनाए गए हैं। नाम किसका रखा जाए। इसमें थोड़ी भावुकता से काम लिया गया है। जिन लिखकों ने वर्षों परिश्रम करके मानस के हस्तलेख लिखे, संकेत में सर्वप्रथम उनके नाम का उपयोग समुचित जान पड़ा। मानस के प्राचीनतम हस्तलेख कोरे लिपि-जीवियों के लिखे नहीं हैं। जहाँ लिखक का नाम नहीं वहाँ ग्रंथस्वामी का नाम चुना गया। प्रसिद्धि होने पर स्थान विशेष का नाम भी गृहीत हुआ है।

'परिशिष्ट' में आधारभूत प्रतियों के 'संक्षिप्त पाठभेद' के अतिरिक्त बढ़ोतरी, अभाव-सूचक सारणी और प्रक्षेपों का संकलन है। मूल के स्रोतों का समावेश फिर भी नहीं किया जा सका। पाठांतर में हस्तलेख के रूप को यथासाध्य ज्यों का त्यों व्यक्त किया गया है। पर कैथी और नागरी की प्रतियों की लेखशैली में भिन्नता होने के कारण विवदमान रूपों

के अतिरिक्त दोनों वर्तनियों की एकवाक्यता मान ली गई है। कैथी में दंत्य 'स' को 'श' लिखते हैं। उसमें दीर्घ और ह्रस्व इकार की मात्रा के लिए दीर्घ का ही व्यवहार होता है। दीर्घ और ह्रस्व उकार की मात्रा के लिए ह्रस्व का ही प्रयोग करते हैं। 'माया' को 'माआ', 'लज्जा' को 'लज्या' आदि लिखने का चलन है। 'य' के लिए 'ऐ' होता है–

इ, ई	=	इ	उ, ऊ	=	ऊ
ए, ऐ	=	ऐ	ि, ी	=	ी
य	=	ऐ, अ	ु, ू	=	ु
या	=	आ			

प्रक्षेपों में सुझाव बड़े कोष्ठकों '[ ]' के भीतर रखे गए हैं। पाठ के अधिक शब्द छोटे कोष्ठक '( )' से आवृत हैं।

अब इस संस्करण की प्रयासजन्य उपलब्धियों का दिङ्निर्देश मात्र कर देना शेष है। मानस के पाठशोध के लिए किए गए कई स्तुत्य प्रयास हैं—

संस्करण		संवत्
भागवतदास, सरस्वती यंत्रालय, काशी	...	१९४२
रामदीनसिंह, खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर	...	१९४६
कोदोराम, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई	...	१९५२
रामायणपरिचर्यापरिशिष्टप्रकाश, खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर		१९५५
नागरीप्रचारिणी सभा, इंडियन प्रेस, प्रयाग	...	१९५९
तुलसीग्रंथावली (प्रथम भाग), श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस, काशी		१९८०
रामदास गौड़, वणिक् प्रेस, कलकत्ता	...	१९८०
मानसपीयूष, श्रीसीताराम प्रेस, काशी	...	१९८१
विजयानंद त्रिपाठी, लीडर प्रेस, इलाहाबाद	...	१९९३
गीता प्रेस, गोरखपुर	...	१९९७
शंभुनारायण चौबे, हितचिंतक प्रेस, काशी	...	२००५
माताप्रसाद गुप्त, हिंदीसाहित्य प्रेस, प्रयाग	...	२००६

इनमें से अधुनातन चार ही प्रयासों के संबंध में किंचिन्मात्र कहकर संतोष किया जाता है, क्योंकि प्राचीन ग्रंथों के संपादन में इधर जिस विशेष प्रकार की सरणि का अनुसरण किया जाने लगा है उसका अल्पानल्प स्पर्श इन्हीं चारो में दृगोचर होता है। विशेष प्रकार की आधुनिक सरणि पर संपादित ग्रंथों के ऐसे संस्करण को 'वैज्ञानिक और समीक्षात्मक संस्करण' नाम से अभिहित किया जाता है। संस्कृत के प्रसिद्ध महाग्रंथों वाल्मीकीय रामायण और महाभारत के ऐसे संस्करणों का संपादन-प्रकाशन हो रहा है। देखादेखी हिंदी में भी इस प्रकार के संस्करणों के संपादन-प्रकाशन का उन्मेष होने लगा है। रामचरितमानस-ऐसे हिंदी सर्वोत्कृष्ट माने जानेवाले ग्रंथ के ऐसे संस्करणों के संपादन-प्रकाशन की ओर हिंदीवालों का ध्यान आरंभ में ही जाना स्वाभाविक है। नागरीप्रचारिणी सभा (वाराणसी) द्वारा प्रकाशित और श्रीशंभुनारायण चौबे द्वारा संपादित संस्करण में संपादक ने सं० १७२१ में लिखित मानस

के हस्तलेख को प्रमुख स्थान दिया है। चौबेजी ने 'मक्षिकास्थाने मक्षिका' रखने का प्रयास किया है। श्रीविजयानंद त्रिपाठी द्वारा संपादित संस्करण में पाठ को संपादित करने और उसमें एकरूपता लाने का भी कुछ प्रयत्न है। गीता प्रेस के संस्करण में एकरूपता-संपादन का भरपूर उद्योग है। इसमें बाल और अयोध्याकांड के अतिरिक्त अन्य कांडों में सं० १७२१ वाली परंपरा का ही प्रधानतया ग्रहण है। डा० माताप्रसाद गुप्त ने स्वकीय संस्करण में वर्तमान वैज्ञानिक पद्धति का पूर्णतया सहारा लिया है और शाखाभेद का उल्लेख करते हुए पाठांतर दिए हैं। मानस के पाठों के संबंध में इन्होंने एक पुस्तक ही प्रकाशित की है।

हिंदी के प्राचीन ग्रंथों के संपादन में संस्कृत-ग्रंथों के संपादन के अनुभव सर्वत्र सहायक नहीं हो सकते। हिंदी की कुछ समस्याएँ संस्कृत से भिन्न हैं। हिंदी की सबसे बड़ी समस्या है मात्रिक छंद की। संस्कृत में छंद वर्णवृत्त हैं। वहाँ छंद में नियत आरोह-अवरोह होता है। इसलिए एक शब्द के स्थान पर दूसरा शब्द रख देने पर अन्यत्र प्रायः परिवर्तन करने की अपेक्षा पाठ-परिवर्तनकर्ता को नहीं हुआ करती। पर हिंदी में किसी शब्द को परिवर्तित करने में प्रवाह पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए बहुत से स्थलों पर पुष्कल परिवर्तन कर देना पड़ता है। अन्य समस्या हस्तलेखों के प्राप्त करने की है। संस्कृत के उक्त दो महाग्रंथों के संपादन में जैसा संभार किया गया है वैसा हिंदी के किसी ग्रंथ के संपादन के लिए आज तक नहीं हो सका और न निकटभविष्य में होने की संभावना है। मानस के काशिराज संस्करण के संपादन में वर्तमान काशीनरेश के व्यक्तिगत प्रभाव से प्राचीनतम दुर्लभ हस्तलेख मूलरूप में, प्रतिच्छायारूप में, अनुलिपिरूप में, जिस रूप में भी मिल सके, उपलब्ध किए जा सके। इसलिए हिंदी में सर्वाधिक संभार से सर्वप्रथम यही संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

मानस के वैज्ञानिक या अवैज्ञानिक संपादन में अभी तक एक बात पर अधिक ध्यान नहीं रखा गया है। किसी प्राचीन हस्तलेख में यथास्थान संशोधन भी होते हैं। संशोधन दो प्रकार के होते हैं। एक तो मूल हस्तलेख के लिखिया या लिखक द्वारा किया गया और दूसरा परवर्ती काल में किसी अन्य द्वारा किया गया। जहाँ संशोधन के पूर्व का पाठ स्पष्ट है वहाँ तो संपादकों ने उसका ठीक उपयोग किया है, अन्यत्र उन्होंने परवर्ती संशोधित पाठ को भी मूल मान लिया है। ऐसा करने में मानस का मूल पाठ उपलब्ध करने में यथास्थान यथेप्सित लाभ नहीं हुआ। अतः मानस के संपादन की अपेक्षा इन संस्करणों के प्रकाशित होने पर भी बनी हुई थी।

यहाँ यह उल्लेख भी कर देना है कि प्राचीन हस्तलेखों में बहुधा कुछ पन्ने किसी कारण लुप्त हो जाते हैं। उनके स्थान पर नए पन्ने जोड़े जाते हैं। इन पन्नों में पाठ परवर्ती ही रखे जा सकते थे। पिछले संस्करणों में इस पर भी ध्यान नहीं दिया गया है। मानस के संपादन में इसी प्रकार की जो अन्य अनेक समस्याएँ हैं उन सबका विस्तृत विवेचन इस अल्प निवेदन में संभव नहीं। यहाँ इतना ही कहा जा सकता है कि कोरी वैज्ञानिक प्रक्रिया से मानस क्या, हिंदी के किसी ग्रंथ का ठीक संपादन नहीं हो सकता। उसके लिए साहित्यिक संपादन की सरणि का परित्याग अहितकर है। वैज्ञानिक प्रक्रिया भारतीय दार्शनिक दृष्टि से विज्ञान होने से जड़ है। साहित्यिक प्रक्रिया दर्शन होने से चेतन है। मूल ग्रंथ के लेखक से लेकर संपादक

तक सभी चेतन प्राणी होते हैं। जड़ की गतिविधि जितनी व्यवस्थित होती है उतनी चेतन की नहीं। अतः चेतन का प्रयास सर्वत्र नियत नहीं होता। वैज्ञानिक प्रक्रिया शब्द पर अधिक ध्यान देती है और साहित्यिक प्रक्रिया शब्द पर ध्यान देते हुए भी अर्थ पर विशेष दृष्टि रखती है। साहित्य शब्द और अर्थ का संपृक्त रूप होता है। अतः शब्द और अर्थ दोनो पर समान दृष्टि ही प्राचीन ग्रंथों के संपादन में उपयोगी हो सकती है। वैज्ञानिक सरणि के नियम का इतना ही सदुपयोग या पालन हो सकता है कि संपादक किसी शब्द को हस्तलेखों में न मिलने पर अर्थबल पर बदल न सके। हिंदी में प्राचीन ग्रंथों के संपादन की साहित्यिक सरणि के प्रवर्तक काशी विश्वविद्यालय के दिवंगत प्राध्यापक आदरणीय लाला भगवानदीन, पंडित रामचंद्र शुक्ल और बाबू श्यामसुंदरदास थे। इनके संपादित ग्रंथों में कुछ ऐसी अच्छाइयाँ हैं जो वैज्ञानिक संपादनों में नहीं रह गई हैं। अतः दोनो सरणियों के तुल्यबल संयोजन से ही सर्वोत्तम कार्य हो सकने की अधिक संभावना है। प्रस्तुत संस्करण में इसी का विनियोग किया गया है।

अब दो-चार उपलब्धियों पर आइए। प्रथम सोपान में दुर्जनों की शंसा या अभिशंसा करते हुए लिखा गया है—

बायस पलिअहिं अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा॥

अर्धाली के 'बायस' के बदले प्राचीन हस्तलेखों में संशोधन के पूर्व का पाठ 'पायस' है। यद्यपि इस अर्धाली में 'बायस' और 'कागा' से होनेवाली द्विरुक्ति का परिहार करने के लिए पर्यायवाची शब्दों का व्यवहार है तथापि यहाँ दो बार उल्लेख की कोई आवश्यकता है नहीं। अनुराग से पालने में 'निरामिषत्व' का ग्रहण दूरारूढ़ है। 'पायस' (खीर) के द्वारा 'निरामिष' की प्रतिद्वंद्विता ठीक ठीक होती है। 'पायस' और 'पलिअहिं' में 'प' का अनुप्रास भी है जिसकी दाद अलंकारप्रेमी देंगे, सो अलग ही। उक्त चारो संस्करणों में 'बायस' ही पाठ गृहीत है। जिन प्राचीनतम हस्तलेखों को उन्होंने आधार बनाया उन्हीं में संशोधन के पूर्व उक्त पाठ है, जिस पर ध्यान नहीं गया।

कैथी लिपि के कारण मानस की निम्नलिखित अर्धाली के दो पाठ हो गए—

तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी। **धिग** धर्मध्वज **धंधक** धोरी॥

प्राचीन पाठ 'धीग धरमध्वज धंध्रक धोरी' है। 'धीग' को कैसे 'धिग' पढ़ लिया गया यह कैथी लिपि बता देगी। वहाँ 'धीग' को 'धीग' और 'धिग' दोनो पढ़ सकते हैं। जिसने 'धीग' को 'धिग' पढ़ा उसने मानस के नियम के विरुद्ध 'धर्मध्वज' को भी पढ़ा। मानस में संस्कृत के दो शब्दों के समस्त होने पर 'संयुक्ताद्यं दीर्घम्' का नियम हिंदी पाठ में नहीं है। 'धंध्रक' शब्द के 'र' को अनावश्यक समझकर 'धंधक' कर दिया गया। इसके अर्थ में आज भी मतभेद है। यह 'धँधरक' का खिंचा रूप है, जिसका दूसरा रूप पूर्वी भाषाओं में 'ढँगरच' चलता है। 'ढंग' या 'ढोंग' रचनेवाला इसका अर्थ होता है। केवल श्रीविजयानंद त्रिपाठी ने अर्थानुसारी पाठ 'धँधरच' रखा है, शेष में 'धंध्रक' का 'र' भी हट गया है। इसका कारण यह है कि बालकांड की सबसे प्राचीन उपलब्ध प्रति 'कुंज' में परवर्ती संशोधित पाठ 'धंधक' है। उसी में संशोधन के पूर्व का पाठ 'धंध्रक' ही है। 'धंधक' का अर्थ झगड़ा, बखेड़ा, द्वंद्व करनेवाला लगाया गया है।

मानस-रूपक में मानसर के चारो ओर की अमराई का उल्लेख करते हुए उसमें होनेवाले 'फूल फल' तथा 'आस्वाद' का रूपक इस प्रकार बाँधा गया है—

सम जम नियम फूल फल ज्ञाना । हरिपद रति रस वेद बखाना ।।

इस अर्धाली के 'रति रस' के स्थान पर 'कुंज' में केवल 'रस' है। इस प्रकार उसमें दो मात्राएँ कम हो गई हैं। 'रघु' में 'रस वर' है। 'रस' मात्र से पूर्ति न होते देख ऐसा किया गया। यह विचार किया ही नहीं गया कि इससे रूपक खंडित हो रहा है। 'कुंज' में पहले संशोधन में यही परवर्ती पाठ (रस बर) लिया गया। सं० १७१४ के आसपास इस पाठ पर फिर विचार हुआ तो उसका संशोधन 'रति रस' किया गया। संशोधक ने रूपक का विचार कर 'रति' शब्द बढ़ाया। 'कुंज' में 'रस' के पहले 'रति' शब्द भी बढ़ा दिया गया। इस प्रकार उसका दूसरा संशोधित पाठ हुआ 'हरिपंद रति रस बर वेद बखाना'। इस प्रकार दो मात्राएँ बढ़ गईं । सं० १७४३ के लगभग इस पर ध्यान जाने पर फिर संशोधन किया गया और रूपक का ध्यान नहीं रखा गया। संशोधक ने दो 'र' कम कर दिए। वहाँ पाठ हो गया 'हरिपद रति सब वेद बखाना'। इसमें संदेह नहीं कि इन सबमें सर्वोत्तम पाठ 'हरिपद रति रस' ही है। पर मूल लेखक का यह पाठ नहीं है। ऐसी धारणा लेखनसरणि पर विचार करने से प्रतीत होती है। 'कुंज' में संशोधन के पूर्व जो पाठ है उसमें लिखक ने सामान्यतया होनेवाली एक भूल कर दी है। यदि कहीं एक ही आकार-प्रकार के दो शब्द होते हैं तो लिखक भूलकर उनमें से एक ही का ग्रहण करता है। एक ही आकार-प्रकार के शब्द दो बार लिखना लोगों को अभी तक कम पसंद है, लाघव की प्रक्रिया के लिए अब भी 'धीरे धीरे' के बदले 'धीरे २' लिखा जाता है । हस्तलेखों में भी कहीं कहीं दूसरी विधि से यही सरणि अपनाई जाती है। जिस शब्द को दो बार पढ़ना होता है उस पर कोई द्विरुक्तिबोधक चिह्न लगा देते हैं । यहाँ मूल पाठ 'हरिपद रस रस वेद बखाना' जान पड़ता है। दो बार 'रस' शब्द आ जाने से एक 'रस' छूट गया अथवा द्विरुक्तिबोधक चिह्न लगाना लिखक भूल गया । 'रस' का अर्थ प्रेम होता ही है। दो बार 'रस' शब्द से यमकालंकार की जो छटा आती है उसकी प्रशंसा किए बिना साहित्यशास्त्राभ्यासी नहीं रह सकते। इस पाठ के पक्ष में यह भी कहा जा सकता है कि दो बार 'रस' कहने में कथ्य पर जितना बल पड़ता है उतना 'रति रस' कहने से नहीं। वैज्ञानिक पद्धति 'रस रस' ग्रहण के पक्ष में नहीं हो सकती। क्योंकि यह पाठ किसी हस्तलेख में नहीं है। बहुत पहले ही किसी प्रकार यह पाठ छूट गया। प्रस्तुत संस्करण में उक्त संभाव्य पाठ नहीं लिया गया। उसका यहाँ केवल सुझाव ही दिया जा रहा है ।

राम के विवाह में जानेवाली बरात में हाथियों के प्रस्थान पर यह अर्धाली है—

चले मत्त गज घंट बिराजी । मनहु सुभग सावन घनराजी ।।

इस अर्धाली में 'घंट बिराजी' व्याकरणविरुद्ध है। 'बिराजी' क्रिया 'घंटि बिराजी' पाठ चाहती है । पर हाथी के गले में 'घंटी' ! किसी किसी ने मात्राधिक्य का विचार न कर 'घंटा' पाठ भी धर दिया है। संशोधन के पूर्व दो प्राचीनतम प्रतियों में 'घय' पाठ है। इसी 'घय' को न समझने के कारण 'घंट' संशोधन किया गया। उपरिलिखित पाठ उक्त सभी अधुनातन संस्करणों में गृहीत है। यहाँ वास्तविकता क्या है उस पर दृष्टि जाते ही प्रकृत

पाठ सामने आ जाता है। संशोधन के पूर्व 'कुंज' एवम् 'रघु' में 'घय' है। संशोधन के पूर्व का 'घय' पाठ तत्वतः लिखावट की त्रुटि है। मूल पाठ 'घटा' है। 'टा' लिखने में 'ट' की टाँग आकार की पाई से जा मिली और 'घटा' के साथ दुर्घटना घटित हो गई। 'घय' को अनर्थक समझकर 'घंट' बनाया गया। व्याकरण के घटाटोप पर भी किसी ने ध्यान नहीं दिया। संस्कृत में गजघटा-घनघटा का यगपत् वर्णन अनेकत्र है। तुलसीदास ने उसी का अनुग्रहण किया है। यह पाठ तीन ही हस्तलेखों में मिलता है। ये तीनों वाराणसी क्या, उत्तरप्रदेश के वाहर के हैं।

तुलसीदास द्वारा प्रयुक्त संस्कृत शब्दों को ठीक से न समझने से भी परिवर्तन किया गया है। पार्वती सप्तर्षियों से कहती हैं—

देखहु मुनि अविवेकु हमारा। चाहिअ **सदासिवहि** भरतारा ॥

'शिव' का एक नाम 'सदाशिव' भी है। इस शब्द का प्रयोग मानस में अन्यत्र है—

बिनती सुनहुँ सदासिव मोरी।

'सदा' शिव से पृथक् होकर 'भरतारा' से संवद्ध हो गया। अतः अर्थ को सुस्पष्ट करने के लिए पाठभेद करके व्यत्यय कर दिया गया और नया पाठ हो गया—'चाहिअ सिवहि सदा भरतारा'। पूर्ण वैज्ञानिक संपादन ने यही पाठ ठीक माना है।

कुछ विचार छंदःशुद्धि पर भी। अन्यत्र कलियुगवर्णन में एक चरण अर्थ न बैठने के कारण छंदोविरुद्ध रखा गया है—

वहु दाम सँवारहिं धाम जती। विषया हरि लीन्हि रही बिरती ॥

गीता प्रेस और मानसपीयूष ने 'रही' के वदले 'न रहि' पाठ लिया है। इससे छंदोभंग होता है। छंद 'तोटक' है जिसमें चार 'सगण' होते हैं। 'रही' का अर्थ ठीक नहीं लगाया गया। यहाँ 'रही' का अर्थ 'रह गई' नहीं है, 'थी' है। जो 'विरति थी' उसे 'विषय' ने हर लिया। रही सही विरति भी जाती रही।

इसी प्रकार संस्कृत रूपों को वनाए रखने से भी छंदोवाधा उपस्थित हुई है। सामान्यतया निम्नलिखित में कोई वाधा नहीं जान पड़ती—

राम मार्गन गन चले लहलहात जनु ब्याल। (६।९१।१४)

'मार्गन' (भगण) रूप के पढ़ने से काम वन जाता है। पर 'मार्गन' के बदले रेफरहित 'मागन' जैसा रूप रखा जाए तो प्रवाह खंडित होने लगता है। इसलिए यहाँ 'राम मारगन गन' पढ़ने से ही काम चलेगा। यही 'कार्मुक' (६।९३।५) की भी स्थिति है। पूरी मात्रा 'कारमुक' पढ़ने से ही बैठेगी। 'न यावद् उमानाथपादारविंदं' को 'न यावदुमानाथपादारविंदं' लिखने से वर्णन्यूनता होती है।

मानस का काशिराज संस्करण पहले केवल संक्षिप्त पाठांतर सहित ही प्रकाशित होनेवाला था। कार्य एक वर्ष में समाप्त हो गया था। महत्त्वपूर्ण अन्य प्रतियों के संधान ने लगभग एक वर्ष का अवरोध ला दिया। प्रतियों के मिल जाने पर सारा संपादन नए सिरे से करना पड़ा, जिसमें ५–६ महीने लग गए। कार्य समाप्त होते न होते विस्तृत पाठचक्र की पद्धति पर चलने का निश्चय किया गया। संवत् २०१३ से नवीन सरणि से पाठसंकलन होने लगा।

पहले यह कार्य 'रामलीलाशतीसमारोह निधि' के अंतर्गत हो रहा था। सं० २०१४ में काशीनरेश ने सर्वभारतीय काशिराज न्यास को निधिसहित सब कुछ सौंप दिया। उसी समय विस्तृत रूप में संस्करण प्रकाशित करने की योजना बनी।

पाठसंग्रह हो जाने पर सं० २०१८ के मध्य निर्णय किया गया कि मानस का मूल पाठ, और हो सके तो वृहत् पाठांतर वाला खंड भी, प्रकाशित कर दिया जाए। पाठांतरों का यथावांछित संकलन करके उस खंड को प्रकाशित कर देने में बाधा यह खड़ी हुई कि पर्याप्त पाठसंग्राहक ही उपलब्ध नहीं हो सके। इसलिए निश्चय हुआ कि मानस का मूल पाठ संक्षिप्त भमिका, संक्षिप्त पाठभेद, वढ़ोतरी, अभावसूचक सारणी और आधारभूत हस्तलेखों के प्रक्षेपों सहित प्रकाशित हो। इसी अंतिम निश्चय के अनुसार छह मास में ही सारा कार्य समेटना पड़ा। वढ़ोतरी और प्रक्षेप के पाठभेदों का संग्रह संनिविष्ट नहीं किया गया। मुद्रण के लिए यथालब्ध अपेक्षित चिह्न आदि की व्यवस्था कर मूल पाठ मुद्रित किया जाने लगा। नियुक्त अक्षरशोधक ने प्रतिश्रुत होने पर भी मुद्रणारंभ के अवसर पर उत्तरदायित्व का भार वहन करने में निःसंकोच असमर्थता व्यक्त कर दी। मानसविभाग के कार्यकर्ताओं को यह बोझ भी सभालना पड़ा। कार्यकर्ताओं के मुद्रणसंबंधी पूर्वानुभवराहित्य ने भी समिन्विति-साहित्य का जैसा संघटन कर दिया उसमें हुई कठिनाइयों के लिए यही कहा जा सकता है कि 'जानें वेई दिन राति बखाने तें जाय परैं दिन राति को अंतर'।

भारतीय परंपरा में कृतज्ञताज्ञप्ति परम धर्म है। आब्रह्मस्तंवपर्यंत सभी के उपकारों के लिए कृतज्ञताप्रकाशन यहाँ प्रमुख कर्तव्य माना जाता रहा है। प्रस्तुत लघुकाय निवेदन में नामोल्लेखपूर्वक सबके प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति की पूरी समाई न होने से विवशता यहाँ भी संक्षेपसरणि का ही अवलंबन कर रही है। सर्वप्रथम मानसप्रणेता तुलसीदास को शतशः प्रणतियाँ, जिनके लोकहृदयाह्लादकारक दिव्य प्रणयन ने ही ऐसा सत्कार्य करने-कराने का सुअवसर समुपस्थित किया। तदनंतर आधारभूत हस्तलेखों के उन लिखकों के प्रति निष्कपट विनति जिन्होंने प्रतियों को शुद्ध रूप में प्रस्तुत करने में धर्मबुद्धि की प्रेरणा से यथासामर्थ्य कोई कोर-कसर नहीं रहने दी। जिन सज्जनों एवम् संस्थाओं ने संपादन-यज्ञ की पूर्णाहुति के लिए वांछित प्रतियाँ प्रदत्त की उन्हें अनेकानेक धन्यवाद।

महाराज काशीनरेश श्रीविभूतिनारायणसिंह सर्वाधिक साधुवाद के भाजन हैं जिन्होंने अपने पूर्वजों के मानसानुराग का रिक्थ योग्यतापूर्वक सँजोया है। श्रीचंद्रधरप्रसादनारायणसिंह (भानुजी) परमाशीर्वाद के पात्र हैं जिनके मानसाभिनिवेश के कारण होनेवाली बाधाओं की अँधियाली निर्बाध ज्योत्स्ना में परिणत होती रही है। मानसविभाग के उपस्थापक प्रिय शिष्य श्रीरामादास शास्त्री एम० ए० अनंताशीर्वादार्ह हैं, जिन्होंने छाया की भाँति अनुगमन करते हुए स्वकीय श्रमशीलता से निरुपाधिक 'लिखक' से सोपाधिक 'सहायक' होकर संपादनकाल की कठिनाइयों की दुष्कृति से परित्राण किया। वर्तमान संपादन-सहायक सर्वश्री भर्ग्यनाथ दुबे एम० ए०, साहित्याचार्य श्रीनरेश झा काव्यतीर्थ, गंगाप्रसाद वाजपेयी पाठशास्त्री तथा भूतपूर्व संपादन-सहायक एवम् पाठसंग्राहक सर्वश्री रामनरेश वर्मा (प्राध्यापक, हिंदीविभाग, काशी विश्वविद्यालय), कृष्णकुमार वाजपेयी साहित्यान्वेषक, रामवली पांडेय एम० ए०, श्रीप्रसाद

एम० ए०, साहित्याचार्य चंद्रशेखर मिश्र एम० ए०, साहित्य-वेदांताचार्य कृष्णाचरण चौधरी एम० ए०, चंद्रभूषण मिश्र बी० ए०, स्वर्गीय चंद्रशेखर शुक्ल बी० ए० आदि सभी साधुवादार्ह हैं जो सत्यशीलता, निःस्पृहता, परानुरक्ति एवम् दत्तचित्तता से दत्त कार्य सुसंपन्न कर मानस-संपादन-सागर में तरणतारण सुयश के भागी हुए। अंत में काशिराज न्यास के कुशल मंत्री श्रीरमेशचंद्र देव को उनके परिकर सहित पुष्कल धन्यवाद, जिनकी विमुग्धकारिणी व्यवस्था ने संपादनकाल में सकंटकता से मार्ग को सतत निरवरोध रखा।

इसमें अज्ञात रूप से घटित स्खलनों, प्रमादों एवम् अपराधों के लिए संस्कारार्थी, परिष्कारार्थी और क्षमार्थी हूँ। यदि इस संस्करण से ग्रहीताओं का तोष-परितोष-संतोष हुआ तो मैं आश्वस्त, कृतकार्य और सफलकृत्य होऊँगा।

विवाहपंचमी, आग्रहायण,
सं० २०१८ वैक्रम,
वाणी-वितान भवन,
ब्रह्मनाल, वाराणसी।

विश्वनाथप्रसाद मिश्र

परिशिष्ट

आधारभूत प्रतियों का नाम-संकेत

बड़ बड़इया (पटना) की संवत् १६४१ की परंपरा की प्रति। प्राप्तिस्थान—श्रीरामजानकी मंदिर, गंगाकिनार, बड़इया। लिपिकाल—सं० १८७१, सातो कांड। हस्तलिखित।

दुलही दुलही ग्राम (लखीमपुर खीरी) निवासी पं० गंगाधर शर्मा की प्रति। लिपि० —१६७२, सुंदरकांड।

राजा राजापुर, बाँदा की सुप्रसिद्ध अयोध्याकांड की प्रति। लिपिकाल अनुल्लिखित। हस्तलिखित।

कुंज श्रावणकुंज, अयोध्या की प्रति। लिपि०—सं० १६६१, बालकांड। हस्तलिखित।

रघु रघु तिवारी, लिखक। प्राप्ति०—सरस्वतीभंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी। लिपि०—सं० १७०४, सातो कांड।

परि परिचर्या परिशिष्ट प्रकाश, संवत् १७०० की प्रति के आधार पर सं० १६५५ में मुद्रित। प्रकाशक—खड्गविलास प्रेस, पटना।

राम रामगुलाम रामायणी की प्रति। प्राप्ति०—सरस्वतीभंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी। सं० १७१४ की प्रति की सं० १८७५ में हुई अनुलिपि, सातो कांड।

बलि बलिभद्र, लिखक। प्राप्ति०—राजस्थान पुरातत्त्वमंदिर, जोधपुर। लिपि०—सं० १७३७। उत्तरकांड। हस्तलिखित। माइक्रोफिल्म।

बाल बालगोविंद शर्मा, लिखक तथा संक्षिप्तकर्ता। प्राप्ति०—श्रीकन्हाईप्रसादसिंह, महमदा (बिहार)। लिपि०—सं० १७४३, सातो कांड। बाल और अयोध्या कांड संक्षिप्त। हस्तलिखित।

बाग बागजी माराजा (महाराजा) की प्रति। प्राप्ति०—सरस्वतीभंडार, उदयपुर (राजस्थान)। लिपि०—१७५०, अयोध्याकांड। हस्तलिखित। माइक्रोफिल्म।

जवा जवाहरलाल चतुर्वेदी, मथुरा की प्रति। लिपि०—सं० १७५७, बालकांड। हस्तलिखित। माइक्रोफिल्म।

अल अलहबकस, लिखक। प्राप्ति०—पेनसिलवानिया विश्वविद्यालय, अमेरिका। लिपि०—सं० १७५९। खंडित। हस्तलिखित। माइक्रोफिल्म।

मया मयाशंकर याज्ञिक संग्रह। प्राप्ति०—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। लिपि०—सं० १७५९, लंकाकांड। हस्तलिखित।

राय कोदूराय चतुर्वेदी, लिखक। प्राप्ति०—तुलसीसंग्रहालय, रामवन, सतना। लिपि०—सुंदरकांड सं० १७६२, अरण्यकांड सं० १७६५। हस्तलिखित।

नाग नागेश उपाध्याय, वाराणसी द्वारा प्राप्त। प्राप्ति०—सरस्वतीभंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी। लिपि०—सं० १७६३, अरण्यकांड रहित। हस्तलिखित।

मन मनसाराम, लिखक। प्राप्ति०—सरस्वतीभंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी। लिपि०—सं० १७६८–७१। सातो कांड। हस्तलिखित। कैथी लिपि।

उद उदयपुर (राजस्थान) के सरस्वतीभंडार की प्रति। लिपि०—सं० १७७१, सातो कांड। हस्तलिखित। माइक्रोफिल्म।

नर नरोत्तमदास, लिखक। प्राप्ति०—सरस्वतीभंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी। लिपि०—बालकांड सं० १७७५, अयोध्याकांड सं० १७८०। हस्तलिखित।

काशी काशी राज्य के सरस्वतीभंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी के कार्यकर्ता श्रीमार्कंडेय मिश्र द्वारा प्राप्त। लिपि०—सं० १७७६, सुंदरकांड। हस्तलिखित।

खोज खोज द्वारा उपलब्ध। प्राप्ति०—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। लिपि०—सं० १७७७, अयोध्याकांड। हस्तलिखित।

ब्रज ब्रजभूषण महोदय के लिए लिखी गई प्रति। प्राप्ति०—सरस्वतीभंडार, काँकरौली (राजस्थान)। लिपि०—सं० १७७७, सातो कांड। हस्तलिखित। माइक्रोफिल्म।

प्रह प्रहलादराइ कायस्थ, लिखक। प्राप्ति०—तुलसीसंग्रहालय, रामबन, सतना। लिपि०—सं० १७७८, किष्किंधाकांड। हस्तलिखित।

पट पटनीमल कायस्थ, लिखक। प्राप्ति०—ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन। लिपि०—सं० १७७८, सातो कांड। हस्तलिखित। माइक्रोफिल्म। कैथी लिपि।

नाथ रघुनाथ, लिखक। प्राप्ति०—श्रीवराहमिहिराचार्य पुस्तकालय, हीरानंद शाह लेन, चौक, पटना सिटी। लिपि०—सं० १७८३, सातो कांड। हस्तलिखित। कैथी लिपि।

संकेतचिह्न

÷ प्रथम अंकित (संशोधन के पूर्व का) पाठ।

\+ मूल लिखक से भिन्न व्यक्ति द्वारा प्रथम संशोधित पाठ।

± मूल लिखक द्वारा प्रथम संशोधित पाठ।

±± मूल लिखक द्वारा द्वितीय संशोधित पाठ।

++ मूल लिखक से भिन्न व्यक्ति द्वारा दुबारा संशोधित पाठ।

— मूल लिखक से भिन्न व्यक्ति द्वारा प्रति को पूर्ण करने के लिए जोड़े गए पत्रे का पाठ।

✓ आधारपाठ से साम्य रखनेवाला पाठ।

× पत्रा लुप्त होने अथवा त्वरित या कीटदष्ट होने के कारण अनुपलब्ध पाठ।

⊙ अभावसूचक।

ꞁ व्यत्यय का द्योतक।

? संदिग्ध स्थिति का सूचक

V वृद्धिबोधक

अन्य संकेत

श्लो श्लोक

मं मंगलाचरण

सो सोरठा

दो दोहा

उच्चारण-संकेत

ॲ ए
ॲै ऐ
ऐ अइ
औ अउ
ऎ ह्रस्व या लघु 'ए'
ॆ ह्रस्व या लघु 'ए' की मात्रा
ै ह्रस्व या लघु 'ऐ' की मात्रा
ॊ ह्रस्व या लघु 'ओ' की मात्रा
ौ ह्रस्व या लघु 'औ' की मात्रा
। गुरुत्वबोधक या उदात्तसूचक
ष हिंदी पाठ (दोहे, चौपाई, छंद आदि) में कवर्गीय 'ख', संस्कृत पाठ में मूर्धन्य 'ष'।
ष़ स
च्छ हिंदी पाठ में छ, छ्छ या च्छ, संस्कृत में संयुक्त वर्ण 'क्+ष'।
ज्ञ ग्य या ग्यँ
श्र स्र

पाठभेद-प्रणाली

१—आदि की प्रथम संख्या दोहे की और दूसरी पंक्ति की है। काले बड़े अक्षरों में इस संस्करण का स्वीकृत पाठ है। काले छोटे अक्षरों में नामसंकेत कैथी लिपि की सूचना देते हैं।
२—संक्षेप के लिए विभिन्न प्रतियों की लिपिजन्य या प्रमादजन्य ह्रस्व दीर्घ की मात्राओं में अभेद मानकर पाठ का अंकन किया गया है।
३—कैथी लिपि की वर्तनी संमिश्रित पाठ में नागरी लिपि में गतार्थ की गई है। जहाँ कैथी लिपि का ही पाठ दिया गया है वहाँ उसकी वर्तनी ज्यों की त्यों है।

(१) संक्षिप्त पाठभेद

प्रथम सोपान (बालकांड)

मं सो १ **जो;** जा (नर); जेही (पट, नाथ)। **करौ;** करो (कुंज–, नाग, उद); करहु (नर)।
४ **कुंद;** कंत्रु (बाल, उद)। **इंदु;** कुं× (बाल); कुंद (उद)।

दो २।५ **सरिस;** चरित (कुंज–, राम, जवा÷, नाग, मन, पट)। **कृपासू;** कृपासू (नाग); प्रकाशु (पट); सुपासु (नाथ)।

२।११ **साज;** राज (कुंज–, परि, मन, व्रज, पट, नाथ); साधु (उद)।

३।१२ **मनिगन गुन;** मनि गुन गन (कुंज—+, नाथ); मनि ग××न (जवा); मनि थान गुन (पट)।

४।१ **दाहिनेहु;** दाहिने (बड़÷, कुंज—+, परि, जवा+, मन÷, पट, नाथ); दाहिनहु (रघु, व्रज)।

५।२ **पायस;** ✓(कुंज÷, रघु÷, जवा÷, उद, नर, नाथ÷); वायसु (बड़); ×येश (मन); वायस (अन्यत्र)।

५।३ **संत;** संतत (कुंज+, रघु÷)। **असज्जन;** अंज्जन (कुंज÷, रघु÷); असज्जन (कुंज+, रघु+); असंतन (रघु++); × ज्जन (जवा); अशज्यन (मन); अशजन (पट, नाथ+); असन (नाथ÷)।

६।८ **कविनासा;** क्रमनासा (कुंज+, जवा, नर); कर्मनासा (नाग, व्रज+, नाथ); कम्रनाशा (मन); कविनासा (उद); कवीलाशा (पट)। **मरु;** मारु (जवा+, नाग, मन÷, पट)। **मारव;** मालव (राम, जवा, नाग, मन, व्रज); मगषग (पट); मरीव (नाथ)। **गवासा;** गवा× (मन); गघासा (उद); गरासा (पट)।

७।३ **हरिजन;** हरिनल (कुंज÷, रघु÷, मन÷, उद, नर÷); हरितन (कुंज++, परि)।

७।१४ **सुलखन;** सुलछन (कुंज+, मन, पट); सुलक्षण (राम); सुच्छन (जवा); सुलछान (नाग); सुंदरपन (उद); सुलछिन (नर); सुलखन (नाथ)।

८।३ **कृपाकर;** कृपा करि (बड़, जवा, नर, व्रज, पट, नाथ); क्री× (मन)।

८।१३ **सर सरि;** ⌝ (जवा, नाग); सुर सरि (मन÷, नर÷, व्रज, पट+, नाथ); शुर (पट÷)।

८।१४ **सकृत;** सुकृत (कुंज÷, नाथ); सकृति (नाग, पट); शुक्रीती (मन÷)।

९।२ **हंसहि;** हंसहिं (बड़, नाथ+); हँसहि (रघु+); हंसिहंहि (जवा, नाथ÷); हसहि (नाग, पट)। **बक;** ते बक (रघु+); ते बग (उद)। **गादुर;** दादुर (बड़, कुंज+, जवा, उद, नाथ); गादुरहि (नर); चदुर÷, ✓± (पट)। **चातकही;** चातकहीं (बड़, परि); मोर चातकही (नाग, मन+); चातकहि (उद, मन÷?); चातकी (नर); चांतकही (पट)। **हँसहिँ;** हंसहि (परि); हसहि (राम+, उद, नर, व्रज); रूसहि (राम÷, नाग, मन, पट); हिसही÷, हंसहिं+ (जवा); चुसीहहि÷, हसीहहि+ (नाथ)। **खल;** षग (परि)।

९।११ **कागर;** कागद (बड़, कुंज+, परि, जवा, नर, व्रज+, नाथ); कागज (मन+); कागल (उद); कादग (व्रज÷); कागत (पट)।

१०।८ बड़त्तनु; वडापनु (वड़); वडप्पनु (कुंज+); वड़प्पन (परि); बडपनु (राम, व्रज); ×नु (जवा); बडतनु (नाग, मन+); बडेतनु (मन÷); बडंतन (पट); वडपन (नाथ)।
१०।११ रघुनाथ; रघुनाक (कुंज÷); र× (जवा); रघुवीर (नाग, मन, पट, नाथ)।
११।७ लगत; लाग (परि); लगति (राम, नाग, पट, नाथ); लागि (जवा); लागती (मन)।
१२।४ धीग; धिग (परि, राम, नाग, नर±, व्रज); ध्रीग्र÷, ध्रिगा+ (जवा); धांग (उद); ध्रीग (नाथ)। धंध्रक; धंधक (वड़, कुंज+, राम, उद, व्रज, नाथ); धंधरच (रघु+, परि); धुंध्वक (जवा); धंध्वक (नाग); धंक (मन); धंधुक (नर); वंधक (पट)।
१३।८ सुफल; सफल (परि, जवा); शुपहर (पट)।
१४।३ पूरहुँ; पूरवहु (कुंज+); पुरवहु (परि, जवा, मन+नर, पट, नाथ); फूरवहूं (व्रज)।
१४।१२ ⊙ (कुंज÷, ++, रघु, मन, नाथ)।
१४।१६ करउँ; कहीँ (राम, नाग, मन+, पट, नाथ)।
१५।७ सो; ✓ (कुंज÷, रघु÷, जवा, मन+, व्रज); होउ (राम÷, नाग, मन÷, पट); सोइउ (उद); सोउ (अन्यत्र)। उमेस; ✓ (कुंज÷, रघु÷); मेहेस (वड़, रघु+); महेसु (उद); महेस (अन्यत्र)।
१७।७ जो; सो (कुंज+)।
१८।११ कहिअत; देखिअत (वड़, राम, नाग, पट, नाथ÷)।
१९।५ प्रतापू; प्रभाऊ (राम); प्रभाउ (नाग, मन÷, पट, नाथ)।
२०।३ सुमिरत; समुझत (राम, जवा, नाग, मन, पट, नाथ)।
२३।२ मोरेँ; मोरे (वड़, जवा, नर); हमरे (राम, नाग, पट, नाथ); मरे (मन)।
२३।३ प्रौढ़ि; प्रौढ (कुंज+, राम); प्रोढ (जवा); पौढी (पट); पैठी (नाथ)। जनि; ज (जवा÷); जन (कुंज+, जवा+, नर+, पट, नाथ)।
२६।७ अपरु; ✓(कुंज÷, रघु); जपत (वड़); अपतु (कुंज+, उद); अपर (मन÷, नर); शुपच (मन+); अपत (कुंज++, अन्यत्र)।
२६।१० भाँग; भां (नाग); भांगि (नर); भाग (व्रज, पट)।
२७।३ परितोषत; परितोषन (नाग, मन, नर, व्रज, पट, नाथ)।
२७।७ भगति; धर्म (कुंज+; नर±); भगत (उद, व्रज)।
२८।११ मलिनमति; मलिनमन (वड़, राम, जवा, नाग, मन, पट, नाथ)।
२९।८ रामसभाँ; राजसभा (वड़, कुंज+, परि, राम, जवा, मन±, उद, नर, नाथ)।
३०।१ सुहाई; सुनाई (नाग, मन÷)। सुनाई; सुसुनि कलि कलुप नसाइ हाई (नाग÷); सुहाई (नाग+, मन÷)।
३१।१६ विहारु; वीचारु (पट)।
३२।२ धरम; धरनी (पट)।
३२।३ भीम; भीर (जवा, पट, नाथ); भीरु (मन+)।
३२।१२ धन; धर (कुंज÷, रघु)।
३५।१० कुलि; कलि (परि, मन±, नर); ⊙ (उद); कुल (पट)।

३६।८ **सकिलि;** सकल (नाग, मन÷, पट, नाथ); सिमिटि (व्रज)।
३७।२ **अबाधा;** अगावा (नाग); अवराधा (पट, नाथ)।
३७।१४ **सम जम;** संजम (बड़, वाल, जवा, व्रज, नाथ)। **रति रस;** रस वर (कुंज+, रघु); रस÷, रति रस वर++ (कुंज); रति सव (वाल)।
३९।६ **सर मज्जनु;** मज्जन सर (राम, नाग, मन, नाथ); जल मज्जन (जवा, पट)।
३९।७ **भाऊ;** चाऊ (राम, नाग, मन÷, नाथ)।
४१।२ **पट्ठु;** षटु (बड़÷); बटु (मन); बट्÷, षट्+ (नर); पढु (पट, नाथ)।
४१।४ **सुबद्ध;** सुवंध (राम, मन, उद, नर, व्रज, नाथ); सुवुद्ध (जवा); शुवन (पट)।
४५।७ **बेदतत्व;** ? (राम, जवा, नाग, मन); भेद तत्व (उद); तत्व शव (पट)।
४६।८ **लहेउ;** सहेउ (बड़); भएउ (जवा); लहे (व्रज)।
४७।१ **मोर;** मोह (राम, जवा, नाग, मन, पट)।
४७।६ **कालिका;** कलिका (रघु+, व्रज); कलिकाल (परि, नर÷, पट); कालिकाल (नाग); कलीकाक (मन÷); √(नर±)।
४८।११ **परमु;** √(कुंज÷, रघु÷); मरमु (बड़, कुंज+, रघु+, परि, उद, व्रज); मरम (अन्यत्र)।
५२।१० **नरभूप;** √÷, ++, शुरभूप+ (मन)।
५३।३ **सबदरसी;** समदरसी (परि, जवा, मन+, उद, व्रज, नाथ)।
५३।७ **निज;** हरि (परि, राम, जवा, नाग, मन, पट)।
५५।९ **महेस तब;** तव शिव पहुँ (राम); महेश तह (नर); तव शीव पहुँ (पट, नाथ)।
५६।९ **पुनीत;** प्रेम (बड़, परि, राम, नाग, मन÷, नर, पट); प्रीति (जवा, नाथ); पीग्र (मन+); स्नेह (व्रज)। **न जाइ तजि;** नहिं जाइ तजि (बड़, नर); तजि जाइ नहिं (परि, राम, जवा, नाग, मन, पट, नाथ)।
६३।७ **अवमाना;** √ (कुंज, रघु÷, उद, नाथ); अपमाना (अन्यत्र)।
६६।८ **गिरि;** विधि (बड़, राम, जवा, नाग, मन, नर, पट, नाथ)।
६७।६ **सुमिरि;** सकल (जवा); समिरित (उद); सुलभ (नर÷); सुमरि (नर±, पट)।
६९।६ **हिसिषा;** इसिषा (राम÷, नाग, मन÷); √(राम±, नर÷, ±±); ईसिष (जवा); हीन्शा (मन+); हिसिषी (उद); सिषा (नर±, पट); सीष (व्रज, नाथ)।
७०।१० **यह;** √(कुंज, रघु, उद, व्रज); यहि (बड़); इंहि (नर); अव (अन्यत्र)। **अब;** सव (परि, राम, जवा, नाग, मन, पट, नाथ)।
७१।४ **रहउ;** रहइ (बड़, राम, जवा, नाथ); रहत (पट)।
७१।९ **सबु;** सब (बड़, नर, व्रज); अब (राम, जवा, नाग, मन, पट, नाथ)।
७३।८ **भए;** भएउ (बड़, राम, जवा, नाग, मन, नर)।
७४।६ **बेलवाती;** बेलपात (बड़, मन, नर±); बेलपाति (परि, राम±, जवा); बेलपति (राम÷); बेलवाति (नाग); फलवाती (उद), बेलबतिय (नर÷); बेलपाती (व्रज); बेलपात (नाथ)।

७५।४ **तुम्हहिं;** जवहि (राम±, जवा, नाग, मन, पट, नाथ); अबहि (राम÷); तुमहिं (नर)। **जब;** अब (राम, जवा, नाग, मन); तुअ (पट); तोहि (नाथ)।

७५।१० **अभिराम;** आरामु (बड़); आराम (राम, जवा, नाग, मन, पट); कल्यांन (नर); सुषषान (नाथ)।

७८।४ ⊙ (कुंज÷, रघु)।

७८।७ **सोइ;** सव (परि); हम (राम, जवा, नाग, मन, पट, नाथ); सो (नर)।

७८।८ **सदासिवहिं;** सिवहि सदा (बड़, राम, जवा, नाग, मन, नर, पट, नाथ)।

८३।८ **विषमवान झषकेतू;** विषम बारिचरकेतू (रघु–, मन+); बान विषम झषकेतू (जवा); बीषमवान बीषकेतु (मन÷); बीषमवान जलकेतु (पट); विषमबांन झकेतु (नाथ)।

८६।३ **जग;** ✓(कुंज, रघु–, परि); सब (अन्यत्र)।

८६।६ **तरुराजि;** तरुजाति (बड़, नाग, मन+, उद, व्रज); तरुराज (रघु–, परि, नर); तरु सषा (राम, पट, नाथ); तरुसाषा÷; तरुराजा+ (जवा); तरु जाती (मन÷)।

८७।८ **समुझि कामसुखु;** काम समुझि सुष (जवा); सो समुझि कांमसुष (उद)।

८९।५ **बिधि बिनय;** बिध वचन (रघु–); प्रभु बीनय (पट)।

९१।४ **सोचाई;** सुचाई (राम, उद); सोषाई (जवा); सुहाई (नर, पट, नाथ)।

९१।७ **अज;** तेहि (रघु–, परि); विधि (राम, पट, नाथ); अस (जवा, मन, उद, नर, व्रज); अ (नाग)।

९१।८ **कलस;** ✓(कुंज, रघु–, परि); सकल (अन्यत्र)।

९१।१० **सुभद;** सुषद (बड़, रघु–, परि); शुभग (राम, जवा); शुभ (पट, नाथ)।

९४।६ **गए;** आएउ (रघु–, परि, नर÷); आए (नर±)। **तुहिनाचल;** हिनाचल (बड़÷); तुहिमाचन (कुंज÷); तुहिमाचल (कुंज+, नाग+); हिमाचल (रघु–); हिमांचल (परि, जवा, नर); नुहेमाचल (उद); सहिमाचल÷, रितुहिमाचल+ (व्रज); हेमाचल (पट); हींमाचल (नाथ)।

९५।८ **बसह;** ✓(कुंज); वरद (अन्यत्र)।

९६।१४ **बिलापु;** ✓(कुंज, परि); विलाप (रघु–, व्रज+); कलाप (अन्यत्र)।

९७।१४ **तुहिनगिरि;** गिरि÷, हिमगिरि+ (जवा); तुहिमगिरि (मन÷, व्रज+); तुहितिगिरि (उद); तुहिगिरि (व्रज÷); तवहीगीरी (पट); आतुर गीरि (नाथ)।

१००।३ **बिरंचि;** विरचि (बड़); विचित्र (रघु–, परि)।

१००।७ **भामा;** वामा (रघु–, परि, मन+, पट, नाथ); ? (व्रज÷)।

१०१।७ **बिभागा;** विधाना (जवा÷?, नाग, मन)।

१०१।१३ **सम;** प्रिय (परि, राम, पट, नाथ)।

१०४।८ **देखाई;** दिषाई (बड़, उद, नर, नाथ±); दृढ़ाई (परि, नाथ÷)।

१०७।५ **अनुमानी;** ✓(कुंज, रघु, परि, वाल); मन माँहीं (राम, नाथ); उनमानी (व्रज); मनमानी (अन्यत्र)।

१०९।९ **बंदौं पद धरि धरनि सिरु;** वार वार करुणानिधि (वाल)।

११४।४ गुन; विधि (राम, पट, नाथ)।
११५।७ बिचारे; सम्हारे (परि); पिआरे (जवा); शंभारे (पट, नाथ)।
११६।२ बस; √(रघु, जवा, नाग, मन÷, व्रज÷); वसें (कुंज÷); बसउ (उद); सब (अन्यत्र)।
१२२।४ स्वमति; सुमति (बड़, नर, पट, नाथ)।
१२२।६ अधम; अधरम (कुंज÷, रघु, व्रज); अधर्म (उद)।
१२५।७ असि; अति (बड़, जवा, नर, नाथ); हुती (पट)।
१२६।३ बढ़ावनिहारी; जगावविहारी (जवा, नाग, मन); चढांवनहारी (उद)।
१२६।४ नवीना; प्रवीना (उद, व्रज÷, पट, नाथ)।
१२६।६ मन मयन; ी (कुंज÷, रघु, नर); हिय मयन (व्रज+); मएैन (पट); भएे सैंन÷, भएें मैंन± ? (नाथ)।
१२७।३ मुनि; सुनि (कुंज÷, रघु, मन+, व्रज)।
१२९।५ उखारी; उपारी (राम, मन, पट, नाथ)।
१३०।३ नीति; सील (बड़, जवा, नाग, मन, नर)।
१३१।८ हे बिधि; हैं विधि (कुंज, रघु); है विधि (राम, नाग); हा विधि (बाल, नाथ); हो बिधि (जवा); जिहि विध (उद); कहै विधि (व्रज÷); दैवी (पट)।
१४०।३ पुनीत; विचित्र (परि, राम, पट, नाथ)। प्रबंध बनाई; मुनीसन्ह गाई (बड़, कुंज÷, रघु÷, जवा, उद÷, नर); बंध बनाई (नाग); मुनिसन पाई (उद+, व्रज÷)।
१४१।७ मुसुकानी; हरषानी (राम, पट, नाथ)।
१४५।६ बरु; वर (परि); धुनि (राम, मन, पट); नृप (जवा, नर); बुरु (नाग); धरु (उद); पुनि (नाथ)।
१४७।१ दर; रद (कुंज÷, रघु, परि, नाग, मन÷, पट, नाथ)।
१५१।१ बचरचना; बर रचना (बड़, कुंज+, राम÷, जवा, मन+, व्रज); बर बचना (मन÷); रुची रचना (पट); रव रचना (नाथ)।
१५७।४ मृग; मग (कुंज+, पट, नाथ); द्रु (उद)।
१५९।१२ आपुनु आवै; आपु न आवै (बड़, जवा+, मन, नर, व्रज, नाथ+); आप न आवे (परि); ताहि ले आवै (राम, जवा÷); आपु न वै (उद)।
१६२।२ सिधि लोक; सिधि लोग (राम, नाथ); बीधी लोग (पट)।
१६३।६ महीस; महीप (जवा, नर, पट)। जहँ तहँ; ⊙ (कुंज÷)।
१६४।८ असोकी; बिसोकी (परि, राम, पट, नाथ)।
१६५।४ बस बिधि; सब विधि (कुंज, रघु, नाग, मन÷, पट); √(मन±); अवसि बिध (उद); बसि विधि (व्रज)।
१६५।१० त; तौ (बड़, मन, पट, नाथ); तहं (कुंज, रघु); तह (नाग, उद); तो (व्रज)।
१६६।२ मम; मन (कुंज÷, रघु, परि, जवा, नाग, उद); ×(मन)।
१६८।३ मन तन; मन क्रम (राम, नाग, मन, व्रज); ी (जवा); मन कर्म (पट, नाथ)।
१७२।२ अनभएँ; अनुभैंऐ (बड़); अनभएउ (परि, राम+, नर, पट, नाथ); अनुभयउ (राम÷); मनभए (उद)।

१७५।४ **धाए;** आए (जवा, मन, नर, व्रज, पट)।

१७६।१ **मुनि सुतु;** सुनि सुतु (कुंज÷, रघु÷, पट); ✓(कुंज+, रघु±); सुनि सुनि (जवा÷, नाथ); सुनि मुनि (जवा+); मुनि पुनु÷, ✓±(मन); सुनि (उद); पुनि सुनु (व्रज)।

१७६।२ **बरिबंडा;** वरचंडा (राम); परचंडा (जवा+, पट, नाथ); ⊙ (जवा÷); वरदंडा (व्रज)।

१८१।७ **कहैँ;** करौं (कुंज÷, रघु); कहौ (जवा, मन); ×(नाग); कहों (उद, व्रज); कहेउ (पट); कहउं (नाथ)। **अब सोई;** सब कोई (नर, पट)।

१८२।८ **पचारी;** प्रचारी (वड़; रघु+, परि, राम, जवा+, मन, पट)।

१८२।१० **धनधारी;** धनुधारी (वड़, परि, जवा, पट, नाथ)।

१८३।५ **बेद;** विश्व (वड़); देव (उद, पट, नाथ)।

१८४।३ **सब;** सम (वड़, परि, राम, व्रज, नाथ)।

१८४।४ **ग्लानी;** हानी (वड़, परि, राम÷, मन, उद)।

१८४।६ **लोक;** लोका (कुंज, परि, राम, नर, व्रज, पट, नाथ)।

१८४।१० **सोक;** सोका (कुंज, परि, राम, नर, व्रज, पट, नाथ)।

१८५।२ **पयनिधि;** प्रभु पयनिधी (जवा)। **बस प्रभु;** वस (कुंज÷, रघु÷, उद, व्रज); मन वस (रघु+); महं प्रभु (परि); वंस (जवा)।

१८६।८ **गुनगन;** हरिगुन (परि); गुनजन (जवा)।

१८६।११ **गंजन;** पंडन (वड़, कुंज+, रघु, परि); ⊙ (कुंज÷); ⊙ ÷, ✓±(नाग)।

१८६।१२ **जानी;** बाणी (वड़); यानी (कुंज÷, रघु, नाग, उद); बानी (कुंज+, परि, राम, जवा, मन)।

१८६।१३ **सारद;** सादर (कुंज÷, रघु, जवा, नाग, मन, उद, पट)।

१८७।११ **धरि महि;** धरि धरि महि÷, धरिनी महु+ (कुंज); धरनि महु (रघु, परि)।

१८८।५ **रहे;** रहनि तहाँ÷, रहेनि तहाँ+(राम); रहे तहा (पट)। **निज निज;** निजनि (जवा÷, व्रज)। **अनीक;** अनीकर (रघु, उद, व्रज÷); ⊙ (राम, पट); अनेन (जवा÷); अनेक (नाथ)। **रचि;** रुचि (कुंज+, उद, व्रज, नाथ); ✓(कुंज÷, ++); रूचि (रघु); रूवि (नाग); रुच (मन, पट)।

१९१।७ **गहगहि;** गहगह (वड़, कुंज–, नाथ); गहगहे (व्रज); गहीगह (पट)।

१९२।१ **परम दयाला;** दीनदयाला (वड़, कुंज–, वाल, जवा, नर)।

१९४।२ **लोई;** कोई (वड़, वाल, जवा, मन, नर)।

१९४।६ **प्रगटेउ सुषमाकंद;** प्रगटेउ प्रभु सुषकंद (वड़, नाग, मन, नर); प्रगटेउ सुषकंद (कुंज÷, रघु÷, उद, व्रज÷, पट); प्रगटे सुषमकंद (कुंज+,); प्रभु प्रगटेउ सुखकंद (राम, नाथ); प्रगट भएे सुखकंद (वाल); प्रगटे प्रभु सुषकंद (जवा)।

१९५।७ **जनु सानी;** सुख साँनी (वाल); अनुमानी (मन+); पुर सानी (नाथ)।

१९५।१० **कवन;** कवनि (वड़, परि, राम); कौन (वाल); कहा (पट, नाथ)। **बिधि;** ते (पट, नाथ)।

१९६।५ **मगन मन;** सकल रस (वड़, राम, नाथ)।

१९८।६ सुखसागर; सुषसादर (कुंज÷, रघु, मन÷)।

१९९।१० ✓; ✓(वाल, जवा, उद, व्रज, नाथ); ⊙ (अन्यत्र)।

२००।४ बस कै; सव के (कुंज÷, रघु, नाग±, मन); वस करि (परि, व्रज); वसि करि (जवा+, उद); वसि कै (वाल, जवा÷, पट, नाथ); सव के राचर सवके (नाग÷)।

२०४।२ इन्ह सन; इन्ह सर (कुंज, रघु÷); एहि रस (वाल); इन सन (जवा); इन्ह सन्ह (नाग); इन्ह कर (उद); इन रस (नर±); इन कर÷, इन सर+? (व्रज)।

२०६।७ देखौं पद जाई; देखौं प्रभुपद जाई (वड़); मैं देखौं पद जाई (राम÷, पट, नाथ); देखौं पद पंकज जाई (राम+); देषौ पद जाइ ÷, देषौ प्रभुपद जाइ+ (जवा); देषौं पद पंकजा जाई (नाग); देषुं हरिपद जाइ (उद); देषौं प्रभुपद जाई (नर+); देषों हरिपद जाई (व्रज)।

२०६।१० सरऊ; सरजू (वड़, परि, राम÷, पट, नाथ); सारउ (जवा); ? (व्रज÷)।

२०८।५ प्रीय प्रान की; मोहिं प्रिय प्राण कि (वड़); प्रिय प्रान की (कुंज, रघु); प्रिय मम प्रान कि (परि); प्रिय मोहि प्राण कि (राम, मन+); प्रिय्र प्राणन्ह की (वाल); पृया प्रान की (जवा); प्रीय प्रान कै (पट); मोरे प्रान की (नाथ)।

२०९।१ जलज; जलल÷, ✓± (कुंज); जलद (जवा, नर); ज (उद)। तनु; जनु (कुंज÷); तन (परि, राम, जवा, पट, नाथ)।

२०९।४ निति; नित (वड़); निमिति (जवा); हित (उद, व्रज); लगि (नर)।

२१०।३ क्रोही; कोही (परि, राम, वाल, जवा, नर, नाथ); क्रोद्धी (नाग)।

२१०।५ मारा; ✓(कुंज, रघु, जवा, मन÷); जारा (अन्यत्र)।

२११।११ भोरी; थोरी (वाल, मन÷); वारि (जवा÷)।

२११।१७ दयाल; कृपाल (वड़, परि, राम÷, नर); ✓(राम±)।

२१८।५ डर; उर (परि, राम, पट, नाथ)।

२२६।४ जप; विधि (परि, राम, जवा, पट, नाथ)।

२३१।४ सुभद; सुभग (वड़, रघु+, परि, राम, पट, नाथ)।

२३१।५ मनु; मन (वड़, जवा, नर); भूलि (राम, पट, नाथ)।

२३३।६ वहु; मुख (राम, पट, नाथ)।

२३३।७ भुज; भुजंग (कुंज÷); भुजग (नाग)।

२३५।२ गुन; कै (रघु−, परि, राम, पट); की (नाथ)।

२३५।३ चित्त; बिचित्र (रघु−); चित्र (राम, जवा, मन÷, उद, पट, नाथ); शुचीत (मन+)।

२३५।७ अंत; मध्य (वड़, परि, मन+, नर, व्रज); मधि (जवा)।

२४१।५ रूप; ✓(कुंज, नाग); भूप (अन्यत्र)।

२४५।८ अवर; ✓(कुंज, राम, जवा, नाग, मन, उद); अपर (अन्यत्र)।

२५४।१ जे; ✓(कुंज, नाग); तव (पट); जव (अन्यत्र)।

२५९।७ प्रेमतन; (कुंज, नाग, पट, नाथ); प्रेमपनु (वड़, जवा, मन); प्रेमपन (अन्यत्र)।

२६६।६ कोहु; मोहु (वड़, परि, मन+, नर); मोह (रघु−)।

२६७।३ **लोभलोलुप;** लोभ लोलु (वड़, उद, नर÷); लोभी लोलुप (कुंज+, मन); लोभु लोलुप (राम); लोभी लोभ (जवा); लोभि लोलप (नर±); लोभु लोलु (व्रज, पट); लोभि लोलुप (नाथ)। **कल;** कलि (वड़, राम, मन÷, पट, नाथ); ⊙ (रघु–, परि, मन+)।

२६७।४ **परम गति;** पर गति (कुंज÷, मन÷); परा गति (रघु–, परि); सुगति जिमि (राम, पट, नाथ); परम पद (जवा+, उद)।

२७२।२ **नयन;** नये (वड़, राम, जवा, उद, नर, व्रज)।

२७४।१० **कथहिँ;** √(कुंज, परि, नाग); × (मन); करहिं (अन्यत्र)।

२७५।६ **खर;** कर (वड़, रघु–, परि, राम, जवा+, मन, पट); वर (नाथ)।

२७७।१० **चरहि;** परहिं (वड़); वरहि (रघु–); होहिं (परि, राम, मन+, पट, नाथ)।

२७८।५ **बड़;** √(कुंज, नाग); अति (अन्यत्र)।

२७८।१० **सकुचि;** तुरत (रघु–, परि); वहुरि (राम, पट, नाथ)।

२८१।६ **सब बंदे;** √(कुंज, नाग÷); संक सब (जवा÷, पट, नाथ); संका सव (अन्यत्र)।

२८३।४ **जय;** √(नाग); जप (कुंज); जन÷, वहु+ (मन); जग (अन्यत्र)।

२८४।७ **मिटै मोर;** चाप मिटै मोर (कुंज+); ¶ (परि); मेटहु मोर (पट)।

२८४।१० **अमात;** समात (रघु–, परि, राम, जवा, नर, पट, नाथ)।

२९२।१० **पंकजमाल;** √(कुंज÷, मन÷, व्रज÷, पट); पंकजमाला (नाग); पंकजवाल (नाथ); पंकजनाल (अन्यत्र)।

२९३।४ **गज;** ⊙ (कुंज÷, रघु÷); करि (वड़, कुंज+व्रज+); गंज (कुंज++); वन (उद, व्रज÷)। **हरि;** अरि (जवा); केहरि (उद)।

२९४।१ **मुनि बोले;** बोले गुरु (वड़, नर, व्रज); बोले÷ (कुंज, रघु); बोले मुनी (रघु+); ¶ (परि); मुनी बोले (नाग); बोले गुर (अन्यत्र)।

२९८।५ **अय इव;** हय इव (कुंज±, रघु, नाग); अगु इव÷, आगिव+ (जवा); अवा इव (नर±); अव इव (पट); अवइ (नाथ)।

२९९।२ **पनव;** पवन (कुंज÷, रघु÷, नाग, नर÷, पट, नाथ); पव÷, गहे+ (जवा); पवँन वनि (उद); √ (नर±)।

३००।२ **घटा;** √(वड़, जवा, व्रज); घय (कुंज÷, रघु÷, नाग); ? (मन÷); घंटा (उद, नर÷); घंट (कुंज+, रघु+, नर±, अन्यत्र)।

३००।४ **विप्र;** वीर (कुंज÷, रघु÷, जवा÷, नाग); मुनि+, √++ (जवा)।

३०५।१ **कल कोपर;** भरि कोपर (वड़, कुंज+); कोपर (कुंज÷, रघु÷, नाग); कोपर भरि (रघु+, परि)।

३०६।१ **सुमन सुर;** सुमम÷, सुमसुर+, √++ (कुंज); सुमन (रघु÷, नाग); सुमन सर (पट)।

३१२।१० **बिदेह सन;** विहस (कुंज÷, रघु÷); विहसी कर (नाग)।

३१४।७ **सुरनारी;** पुरनारी (राम, मन, पट, नाथ); नरनारी (जवा+, व्रज); सुरनानी÷, √± (नाग)।

३१५।५ सुख; √(वड़, कुंज, रघु, जवा÷, नाग, उद, नर÷); शव(मन); सुर (नर±, अन्यत्र)।
३१६।१३ चालि; वाजि (वड़, परि, जवा+, नर±, व्रज); अलि (कुंज+, नाग); वाज (कुंज ++); वालि (रघु+); चाल (राम); ⊙ (जवा÷)।
३२५।२-३ ⊙ (कुंज÷, रघु, बाल, नाग)।
३२५।२० तनय; √(कुंज, रघु, नाग); जन (राम÷); जनक (राम±, अन्यत्र)।
३२६।११ रस; √(कुंज÷, रघु÷); रव (कुंज+); ⊙ (उद÷); कर (कुंज++, उद+, अन्यत्र)।
३४४।७ सफल; सकल (वड़); सुफल (परि, उद, व्रज)।
३४६।६ सकुन; सकुच (कुंज, रघु, जवा÷, नाग, मन+); शगुन (पट)।
३५२।३ पूप; √(कुंज÷, रघु); भूप (अन्यत्र)।
३६०।३ सप्रेम; सनेह (रघु–, परि, जवा); प्रेम (नाग)।
३६०।६ नारी; चारी (राम, मन÷, व्रज, पट, नाथ); च्यारी (उद)।

द्वितीय सोपान (अयोध्याकांड)

श्लो १।१ वामांके; यस्यांके (राजा); यस्याङ्के (परि)।
दो १।७ मनोरथ; मनोहर (रघु)।
३।६ अनुभयेउ; भयेउ (रघु÷, अल)।
६।३ चरम; चमर (अल, मन, पट, नर, नाथ); चर्म (व्रज)।
६।५ बिहित; विंदित (राजा, परि, अल, खोज)।
८।५ कहेउ; (राजा, परि, अल, नर); कहै (उद); कहो (खोज); कहे (अन्यत्र)।
११।६ आजु; काजु (रघु)।
१२।५ बिबुध; विविध (वड़, राजा, रघु, परि, पट); बिवध (उद)।
१४।२ जिन्हहि; जेहि (राजा, परि); जिन्हन्ह÷, √±(राम); जेन्हहि÷, √±(मन); जिनही (उद); जाहि (खोज); जिनहहि (व्रज); जिनहिं (नर)।
१७।७ जर; जल (वड़, नाग, उद, खोज, व्रज, नर); जलु÷, √ ± (राम)।
२०।७ देखउँ; देषहुँ (राजा, परि)।
२२।१ कबुली; कवूलि (वड़, नर±); कठुली ? (राजा÷); कुबुली (बाग÷, खोज÷); कबुलि (नाग); कबुल (मन, नर÷); बाबेली+, बोली++ (खोज); कुटुली (व्रज); कुटील (पट); कबूली (नर++); कटुलि (नाथ)।
२७।६ कुटिलमनि; कुटिलमति (वड़, बाग, नाग, मन+, खोज, व्रज, नर÷, पट, नाथ); कुटल सनि (उद)।
२८।६ मनु; मुनि (बड़, रघु, राम÷, मन, खोज, पट, नाथ); पुनि (व्रज)।
३४।५ सब; फुरि (राजा, परि)।
४१।१० पर; पहं (राजा+); मह (राजा÷, परि, खोज)।

४२।४ **न पाइ अस**; न पाइअ (राजा, रघु, परि); पाइ न (राम)।
४७।७ **अगहु**; अगम (वड़, मन±, खोज, नर±); अगमु (रघु, राम)।
४८।८ **प्रान**; परमु (वड़); परम (रघु, राम)।
७५।२ **जानी**; हानी (वड़, परि, वाग, उद, व्रज, पट, नर, नाथ); नी (रघु)।
७५।४ **फलु सुत**; फल सुत (वड़, नाग, खोज, पट, नर, नाथ); वड़ फलु (राजा, परि); फलु वड़ (राम±); फलु (उद)।
७५।७ **सुपासू**; सुवासू (रघु, नाग, मन, उद, पट, नर, नाथ)।
८०।४ **परितोषे**; परिपोषे (राजा÷, राम±); ✓ (राजा ±); परिवोषे (उद)।
८३।१ **रथ**; अति (वड़, राम÷); ⊙ (रघु÷)।
८४।२ **सफल**; सकल (वड़, वाग, मन, व्रज, नर, नाथ)।
८६।४ **सिंसुपा**; सिंसुपात (रघु, वाग); सिसुपाल (नाग); सिंसुपायँ (उद); शिसुपातु (व्रज); शोशुकाल (पट); सीसुपास (नाथ)।
८६।८ **मधुर मृदु**; मृदुल मधु (वाग, व्रज)। **जानी**; आनी (पट); वानी (नर÷)। **आनी**; पानी (राजा, नाग, पट)।
९१।१ **बिसद**; वसन (रघु, पट)।
९४।२ **सुखदारा**; सुषदातारा (रघु+, राम++, व्रज±); दातारा (राम÷, नाग±, मन, उद, पट, नर, नाथ)।
९५।२ **मगु**; मतु (राजा+, परि); मग (मन); गुनु (उद)।
९८।२ **पितुगृह**; मायिक (बड़); माइक (रघु, राम+, मन, उद, पट, नर, नाथ); ✓÷, ++ (राम)।
९८।१० **मोर**; मोरि (वड़, राजा, परि, राम, नाग, पट, नाथ); मो÷, ✓± (मन)।
९९।८ **जनु**; जिमि (वड़, राजा, परि, वाग, व्रज); वन (नाग÷)। **मूरु**; मूलु (राम); मूर (वाग, मन, व्रज, नर±); मुल (उद, पट, नाथ)।
१००।१ **जीहहिँ**; जिइहहिँ (वड़, राजा, परि); जीवहि (वाग, नाग, मन, व्रज, पट, नाथ)।
१०२।८ **जोइ**; जो (राजा, राम, मन, नाथ÷); जो कछु (परि, वाग, व्रज); प्रभु (पट)।
१०४।८ **बोलि सब**; बोलि तब (वड़, वाग, व्रज)। **बिदा सब**; विदा तव (राजा, परि, पट)।
१०६।३ **सुनि मन**; सुनि मुनि (वाग, व्रज, नाथ÷); मुनि मन (उद+, नर÷)।
१०६।४ **हमारा**; अपारा (राजा÷, परि)।
११०।३ **सबहिँ**; वसहिँ (राजा; राम÷, ++, नाग); स्वसि ÷, स्वहि + (उद); शही (पट)। **बूझत**; पूँछंत (वड़); पुछत (मन, पट, नाथ)।
११०।१८ **सोच**; होंहि (राजा); होंहि (परि); सोचु (राम); सीव (वाग); शीम्र (पट, नाथ)।
११०।२० **तेहिं**; तेंइ (राजा); तेइ (परि); तव (वाग, व्रज); तिन्ह (उद); ते (पट); तिहिं (नर)।
११३।९ **तृन**; तरु (वाग; व्रज, पट)।
११४।१० **पर**; वर (राजा, परि, राम, नाग, मन÷, उद, नर); चर (पट, नाथ)।

११५।६ हम; सम (रघु)।
११५।७ मानब्र; मानवि (वड़, रघु, राम, नाथ); मानिव (उद, नर÷)।
११८।८ तरुबर; तरुतर (परि, पट, नर, नाथ); तरुग्ररी (नाग); तरुवरु (मन)।
११९।३ बरनी; चरनी (रघु, बाग, उद)।
११९।६ अैक; ऐक (रघु, राम, पट, नाथ); एक (वड़, परि, बाग, व्रज, नर)।
१२०।२ कहहिँ; कहइ (राजा, परि); कहति (बाग, व्रज); कहत (नाग)। मृदु; बर (राजा, परि, नाग, उद, पट, नर, नाथ)।
१२७।१० मन; उर (वड़); हिय (राजा, परि, नर)।
१२८।७ बहु; वरु (रघु)।
१२९।१ कोह; मोह (राजा, परि); क्रोध (वाल); कोध÷, √± (मन); क्रोहु (उद)।
१३०।६ लउ; उर (राजा, परि, उद); मनु (बाग); लय (खोज); मन (व्रज); लौ (पट, नर); लव (नाथ)। रहहु; बसहु (बाग, खोज, व्रज)।
१३५।७ भल; जल (राजा, परि); भलि (बाग, नाथ); सब (नाग, खोज)।
१३६।५ रघुनायकु; मुनिनायकु (बाग, व्रज)।
१३६।६ बिधि; बन (बाग, व्रज); बहु (मन); बिव÷, बिध+(उद)।
१३६।७ बिबुध; बिबिध (राजा, परि, खोज÷); √ (खोज±)।
१३९।६ फर; फल (राजा, नाग, मन, उद)।
१४७।२ तेहि तेहि; जेहि तेहि (वड़, परि, राम, मन, उद, खोज, पट, नाथ); जिहिं तिहिं (नर)।
१४७।५ भूमितल; भमि तन (रघु, बाग)।
१५३।१० सीँचेउ; सींचत (राजा, परि); तीचेउ (खोज÷); सीच (नर)।
१५५।२ करि; धरि (वड़); भरि (राम, नाग, मन÷, पट, नर); भली (मन+); मरि (उद, नाथ); भल (खोज)। सँवारा; सुधारा (उद)।
१५६।३ कहेहु; कहेउ (राजा, परि, उद); कहहु (खोज, पट, नाथ)।
१६०।४ करहू; कहहू (रघु)।
१६३।७ रघुबर; रघुकुल (वड़, राम, मन, उद, पट, नर, नाथ)।
१६६।२ बिबेकपर; बिबेकमय (वड़, राजा, परि); बिबेक बर (मन±)।
१६८।२ चवइ; चुग्रइ (वड़); बमइ (रघु); ववइ (बाग); चुवै (नर)। हिमु; मुह (राम÷, नाथ); √(राम ±); विम÷, √± (नर)।
१६९।१ बिहित; विदित (राजा)।
१७३।६ पालहिँ; पालिहि (राजा, रघु, राम, नाग, मन); पालेहि (उद)।
१७४।३ बेदबिहित; बेदबिदित (राजा, राम ±, खोज); बेदबिहत (उद)।
१७४।७ परम; √(राजा, रघु, नाग); सरस (वड़); प्रेम÷, पेम ±± (राम); मरस (राम ±, अन्यत्र)।
१७५।३ सुरपुर; सुरपति (राजा, रघु, परि, पट)।
१७५।६ पुरजन; परिजन (वड़, राजा, मन, खोज, पट, नर, नाथ); परजन (उद)।

१७६।३ मन; मुनि (रघु, वाग); मनु (राम, पट); मनि (उद); सुनि (व्रज)।
१७७।६ सुअ; √(राजा, रघु÷, नाग, मन÷); सुतअन (उद); सुत÷, सुता +(खोज); सुव÷, सुवन+ (नर); सुअन (नर++, अन्यत्र)।
१७८।२ रसा; राज (राजा+)।
१७६।१ पावर; √(राम, मन, नर, पट, नाथ); पावव (नाग÷); पावन (नाग ±, अन्यत्र)।
१७६।१० कौन; काह (राजा, परि); कौनु (नाग)।
१८०।३ रायराजु सबही; राय रजायसु सब (राजा, परि); रामराज सबही (उद, नर)।
१८१।१ करबदर; करबदनु (नाग); कर अदत ±, √÷, ±± (मन); करबदन (उद); करिबदनन (पट)।
१८१।६ वस; वर (वड़, राम, अल, नाग, उद, खोज, पट, नर); वड (नाथ)।
१८३।२ बिष; √(वड़, रघु, परि, राम, नाग); ⊙ (राजा); दुष (अन्यत्र)।
१८३।६ पाँवरु; पावर (अल, पट, नर, नाथ); पावन (खोज); पावइ (व्रज)।
१८६।१ चहत; चलत (राजा, राम+, वाग, मन÷, उद, खोज, व्रज, नाथ); चले (अल); √(मन±); चला (पट)।
१८६।६ सबहि; सकल (राजा, परि); सचीव (पट); सचिवं (नाथ)।
१८६।५ करिहउँ; करिहहु (राजा, परि, अल, नाग); करिहुउ (वाग)। धवलिहउँ; धवलिहहु (राजा, परि, अल, नाग)।
१६०।७ जोहारे; √(वड़, राजा, रघु, परि, राम, नाग); जोहारहि (अन्यत्र)।
१६३।८ जाना; नाना (रघु, राम, अल)।
१६३।१० पावन; पांवर (रघु, राजा, वाग, अल, नाग)।
१६४।३ कुसल; सकल (रघु, राम÷); सुकुल+, सकुल++ (राम); सुगम (अल)।
१६७।२ सुरसेवा; गुरसेवा (रघु, परि, राम+, वाग, नाग+, मन ±, खोज, व्रज, नर+)।
१६७।६ सखहि; सबहि (राजा, रघु, नाग÷, मन÷, उद)।
१६७।६ सिंसुपा; सीसुपात (अल); सीयपा (उद); सिसुपात (खोज); सिय (व्रज); ससपा÷, √+(नर); सीअ पाऐ (नाथ)। तरु; तरुतर (राजा, रघु, वाग, व्रज)।
१६७।१० कीन्हेउ; कीन्हे (वड़, रघु, राम, नर)।
१६८।५ बिलीना; √(राजा, रघु, अल, नाग+); बीहीना (पट); मलीना (अन्यत्र)।
१६८।१० पबि; पति (राजा, रघु÷, परि, नाग)।
१६६।८ सारद; सादर (राजा, परि, अल, नाग, उद); सरद (पट)।
२००।१० सादर; सदा (वाग); सावन (अल); साद (उद); सदार (व्रज); शारद (पट)।
२०२।८ गरहिँ; (वड़, राजा, परि); रहि (नाग÷); करहिं (अन्यत्र)।
२१३।४ जेहि; (राजा, परि, वाग, खोज, व्रज); जो (वड़, नाथ); जे (अन्यत्र)।
२१३।७ सपनेहुँ सुरपुर; ? (राजा, परि, राम±, वाग, व्रज)।
२१७।३ करिअ; करिय (वड़, नर); करइ (राजा, परि)।
२१७।६ रघुबरभगत; रघुवर भरत (रघु, मन, खोज, पट)।

२१८।५ **भगत अभगत;** भरत भगत (रघु); भगत भगत (वाग, व्रज); रघुपति भगत (मन, उद, नर); भगति अभगति (खोज); रघुपती भगती (पट, नाथ)। **हृदय;** भगती (मन, उद, पट, नर); भगत (नाथ)।

२२२।५ **रानिहि;** रामहि (रघु)।

२२४।६ **समेत;** समीप (राजा, परि)।

२२८।७ **उपचरा;** उपचार (वड़, परि, नाग, मन, खोज, पट, नाथ); उपचर (वाग)।

२२८।६ **अनुग;** √(राजा, रघु); अनुज (अन्यत्र)।

२३०।७ **साधुसभा जेहिं;** साधुसमाजहि (वड़); साधुसमाजेहिं (नाग); साधुसभा जिहि (उद, नर); साधुसभा जेन्ह (खोज); साधुसभा तीन्ह (पट)।

२३६।४ **अबिचल;** अबिरल (राजा, परि, पट); अबिछल (खोज)।

२३९।४ **बस;** वर (वड़, परि, राम, नाग, मन, नर, नाथ)।

२४७।४ **राम;** मातु (रघु, वाग, उद)।

२४९।७ **देवसरि;** देवधुनि (राजा, परि, राम, नाग, मन, पट, नर, नाथ)।

२५१।६ **सुठि;** सुचि (राजा, परि)।

२६३।२ **जनि;** जिय (परि); जीनी (मन); जिन (उद); कत (पट); जधि (नर÷)।

२६४।२ **बनत उपाय करत;** करत उपाउ बनत (वड़, रघु, वाग, उद, व्रज, पट)।

२७०।१ **लोग सोक;** लोक सोक (राजा, परि, मन, खोज, नर, नाथ); सोक लोक (पट)।

२७१।२ **पुरजन;** परिजन (राजा, परि, पट); परजन (मन); बचन÷, √± (नाथ)।

२७५।४ **आवा;** पावा (रघु, वाग, उद, पट)।

२७५।६ **सोक;** सोच (राजा, परि, राम÷, नाग, मन, नर÷); सींधु (नाथ)।

२७७।२ **गुर;** गुरु (वड़); पुर (रघु, वाग, मन, उद, व्रज)।

२८१।८ **अवधि;** √(वड़, राजा, परि, राम, खोज, नर); अवध (अन्यत्र)।

२८२।१ **बिबुधसरि;** देवसरि (राजा, परि, नाग, मन, खोज, पट, नर, नाथ); बुधसरि (उद)।

२८३।२ **मत;** ⊙ (रघु÷, वाग, उद, व्रज); मरत÷, √± (खोज)।

२८६।३ **जिति;** √(राजा, परि); जिमि (अन्यत्र)।

२९१।१० **संकट;** संकटु (वड़); संकत (राजा, राम+); संकर (वाग, खोज÷, व्रज)।

२९३।४ **साधु;** सहित (राजा, परि, पट)।

२९८।५ **समाज;** समान (परि, मन+, नर+); समाजु (नाथ)।

३०१।६ **मुनिगन;** मुनिजन (राजा, परि); ⊙ (पट)।

३०६।८ **पारु;** ⊙ (रघु÷, वाग, उद, व्रज)। **जेहिं;** जेहि बिधि (वाग, मन÷, व्रज)।

३०७।३ **मुनिथल;** सुचिथल (राजा, परि); सुनिथल (वाग, नाग÷)। **सरि सर;** ? (राजा, परि); सरस (नाथ)।

३०८।७ **दोष;** राम (राजा, परि)।

३१०।७ **फूलि फलि;** फूलि फल (रघु, परि, वाग, उद, व्रज); फुल फुले (मन÷); फुल फल (मन+, पट, नाथ)। **तृन;** ⊙ (रघु÷, वाग, मन÷, उद, व्रज, पट); मै+, रह्यौ++ (मन)।

३११।६ **दोउ भाई;** रघुराई (वाग, मन, व्रज, पट, नाथ)।
३१२।३ **सभा;** सपा (रघु, परि); शवै (मन); सव (उद); शा (पट)।
३१२।७ **सबहिँ सहेउ;** ? (राजा, परि); कहेउ शकल (मन); सवैहि सहेउ÷, सवै सहेउ+ (खोज); शहो शोक (पट)।
३१४।७ **पुरजन;** परिजन (राजा, परि, नाग, खोज, पट, नाथ); पुरीं जन (मन)। **रजहि;** जरहि (वाग, व्रज)।
३१५।५ **जामिक;** यामिक (वड़); जामनि (रघु); जामिनी (वाग); जामीनी÷, जामीन± (मन); जामिनि (उद)।
३१८।६ **पुरजन परिजन;** ? (रघु, वाग, मन, उद)।
३२२।३ **वर;** वय (राजा, परि); रवि (नाग); पर (खोज÷)। **बिनय;** पवन (नाग)।
३२४।१ **मुख;** सुष (रघु)।
३२४।१० **चहुँ;** वहुँ (वड़, व्रज); वहु (राम, वाग, मन, उद, नर, नाथ); शव (पट)।
३२५।१२ **से;** ⊙ (रघु, वाग, उद, व्रज)।

तृतीय सोपान (अरण्यकांड)

दो १।१ **पुरनर;** पुरजन (वड़, नाथ±); पूरन (अल, राय, मन, पट, नाथ÷)।
१।३ **राम;** रुचिर (वाल, अल, मन, पट)।
२।१ **भाजि;** भागि (वाल, अल, मन, व्रज, पट)।
२।३ **मन;** जिय (राय); तेही (मन)।
२।६ **सुधा;** साधु (राय)।
२।१३ **कर्म;** धर्म्म (रघु, राम÷); ✓(राम±)।
२।१४ **आरत;** आतुर (वाल, अल, मन÷, पट); आरतु (मन±)।
३।१ **श्रुति;** अति (रघु, राय, नाथ)।
५।८ **जड़ धन;** सड धन (रघु); बंधन (राय); जड तन (पट); सठ धन (नाथ)।
७।३ **श्री;** सिय (अल); शीघ्र (मन, पट, नाथ); सीय (व्रज)।
७।४ **बन गिरि;** ? (वड़, मन++); सर गिरि (वाल); वन (मन÷)। **बर;** सव (व्रज)।
७।१० **धन्य जनम;** धन्य जन्म (वड़, परि, वाल, मन, नाथ); धन्य धन्य (अल); जन्म जन्म (पट)।
९।३ **सब;** ✓(रघु, राय); हीघ्र (मन); निज (अन्यत्र)।
१०।१ **सिष्य;** सष्य÷, ✓±(राम); सीष (अल, मन, पट, नाथ)।
१०।१० **भवानी;** वपानी (राय)।
१०।१७ **जाग न;** मुनिग्र (रघु÷); जान न (रघु,±, वाल, पट); ग्यान न (मन÷); ज्ञान (राय, उद, व्रज, नाथ)।
१०।१८ **राम दुरावा;** प्रभु जो दुरावा (वाल); वदन देपावा (पट)।

११।८ **राज**; ✓(रघु, वाल, राय); माल (राम÷); वाल (राम±, अन्यत्र)।
११।१० **जन**; सुर (वड़, परि, राम, मन, व्रज, नाथ); ⊙ (उद); जन ते (पट)।
११।१५ **भुज**; वल (राम÷, अल, मन÷, पट, नाथ); ✓(राम±)।
बल; धन÷, ✓± (राम); भुज (पट)।
११।२२ **राम**; रघुपति (रघु, राय)।
११।२४ **झूठ**; रूंढ (रघु÷); ? (मन÷); हुं रुढ (उद)।
का; श्रौ (अल); ⊙(उद)। **साचा**; काचा (उद)।
११।२६ **येह काम**; ✓(रघु); निहकाम (परि, मन÷); निष्काम (राम); ईहकाम (पट); यह काम (अन्यत्र)।
१२।१ **रमानिवासा**; रामनिवासा (वड़, रघु, वाल, अल, राय÷); रानेवासा÷, ✓±(मन)।
१२।११ **वर**; पर (परि, राम, व्रज, पट)।
१२।१४ **महँ**; मो (रघु); ⊙(वाल, राय); भै (अल, मन÷); म्ह (मन±); सव (व्रज)।
बैठे; वैठे प्रभु (वाल); वैठे सबे (राय); वैठि करि (व्रज)।
१३।२ **जानहु**; जानत (वाल, अल, पट)।
१३।१० **श्री**; सिय (वड़, अल); शी (मन); सीअ (नाथ)।
१३।१६ **सैँ**; सौँ (वड़, परि, व्रज); कहँ (वाल, अल, पट); शन (मन)। **दृढ़ाइ**; ✓(रघु, राय); वढ़ाए (वाल); अकुलाइ (अल); दृछाइ (मन); वढ़ाइ (अन्यत्र)।
१४।७ **सो**; सोइ (वड़, परि, राम, मन, उद, व्रज, नाथ)।
१४।९ **जीवहि**; जीव (राम, मन, उद, व्रज, पट, नाथ); जीव कहि (अल)।
१६।६ **धर्म**; कर्म (राम, व्रज, नाथ); कम (मन)।
१७।७ **मधुर**; ✓(रघु, राय); वहुरि (वाल); वहुती (मन÷); कहत (नाथ); वहुत (मन±, अन्यत्र)।
१७।१५ **व्यसनी धन**; विसनी धन (वाल); विसनी निधन (अल); ब्यसनी गति (राय); वीश्वनीधान÷, बीश्वनीधन±(मन); बेशानी धनी (पट); विसनि निधन (नाथ)।
सुभगति; भग्त (अल); सुभगा (राय); सुभति (उद÷)।
१७।१६ **गुनानी**; गुमानी (वड़, राम, राय+, उद, व्रज, नाथ); गुनानानी (अल)।
१८।४ **बरन**; ✓(रघु); निकर (अन्यत्र)।
२०।१ **बहु**; निज (रघु)।
२०।६ **अपार**; प्रकार (वड़, परि, राम, अल); अपारा (मन); प्रचारी (नाथ)।
२३।६ **जीति रन**; जीति नर (परि); रिपु तौं (अल)।
२३।१० **वृंद**; कंद (वाल, अल, पट); चंद (नाथ)।
२४।५ **रचेउ**; ✓(रघु, राय); कीन्ह (मन); रचा (अन्यत्र)।
२६।४ **भानसगुनी**; मानसगुनी (वड़÷, राम, राय, उद, व्रज, नाथ); अमासगुनी (अल); मासगुना (मन)।
२६।५ **ताकिसि**; ताकेसि (वड़, परि, वाल, अल, व्रज, पट, नाथ); तासु÷, ताके+(राय)।

२७।१८ प्रभु; सुर (मन, व्रज, नाथ)। गुन; मुनि (व्रज)।
२८।३ संकट; कष्ट (रघु)।
२८।५ बोला; वोली (मन+, व्रज); बोलीं (नाथ)। मन; मति (मन+,व्रज)। डोला; डोली (मन+, व्रज, नाथ)।
२८।१० रह; हर (मन÷, व्रज, पट, नाथ); √(मन±)। तन; वल (परि)। बल; लव (परि, अल, व्रज)।
२८।११ सुहाई; सुनाई (वड़, बाल, राय+, व्रज, पट); √÷, ± ±(राय)।
२८।१६ रिसाना; लजाना (परि, राम, वाल, अल, पट)।
२९।१ जगदेक; √(राम); जगदैक (रघु, राय); जग एक (व्रज); जगदैग्र (पट); जगदेव (अन्यत्र)। बीर; बीरु (वड़); देव (व्रज)।
२९।५ पुरोडास; पुरोडाश (वड़); पूरोडास (वाल); पुरोडाभ (अल); पुडाराशी (मन÷); वुडारास (व्रज); पुराराउ÷, पुरुवस+(नाथ)।
२९।१४ जरठ जटायू; जठर जटायू (वाल, पट); जाशु शुजप वल÷, जरठ जटाउ+(मन); जरह जटायु (उद); जठरजाउ÷, जठर जाटाउ± (नाथ)।
३०।२० मुख; सुख (परि, राम, उद, नाथ); ⊙ (पट)।
३१।१ धरि; धर (रघु); गहि (वाल, पट)। भीरा; पीरा (वाल, मन÷); भी (व्रज÷)।
३२।३ गुनप्रेरक; प्रेरक (रघु, राय, उद)।
३३।४ खोजन; खोजत (वड़, परि, राम, अल, व्रज, पट, नाथ)।
३६।२ दृढ़ाई; वढ़ाई (परि, वाल, पट); देषाइ (मन)।
४०।७ कुसुमित; मुकुलित (मन, व्रज, नाथ); मुकलीस (पट)।
४१।२ सुंदर बर तरु; सुंदर वर अति तरु (रघु); सुंदर तरु बर (परि, राम); सुंदर वर तरुअरि (अल); सुंदर बर तरु अति (राय); सुंदरी तरी वर (मन); तरवर सुंदर (व्रज); शुंदर तरु वटु (पट); परम सुंदर तरु (नाथ)।
४२।१ परम उदार; ? (परि, राम); सरोरुह उदार (अल); उदार नाम (मन); उदार सहज (व्रज); उदाश शामी (पट); उदार स्वामि (नाथ)।
४४।५ देति; दई (परि, राम); दिऐ (वाल); देह (अल); देत (राय); ⊙(पट)। दुख; सुख (परि, राम, अल, मन); मुख (वाल)। मंदा; कंदा (पट, नाथ)।
४५।६ जातें; जिन्ह तें (वड़, परि, राम); जित तें (व्रज); जा के (पट)।
४५।९ भगतिपथ; वरमगति (वड़, परि, राम, मन, व्रज); भगतिप्रद (राय); परमपद (पट); परम पंथ (नाथ)।
४६।४ मुदिता; मुदित (वाल, अल, मन÷); मुनिता (उद); उपजत (पट, नाथ)।
४६।१० कृपाल; कृपाल पालक (रघु, राय)।
४६।१२ रए; नऐ (अल); गए÷, √± (राय); भऐ (पट); रहे (नाथ)।
४६।१५ जुवती; जुवतिजन (वाल, मन+); जुवति रस (राय); जुवति तन (व्रज)।

चतुर्थ सोपान (किष्किंधाकांड)

मं ३।४ **मन;** मति (प्रह, नाथ)।
दो ३।४ **पति;** पितु (नाग, मन, पट, नाथ)।
५।४ **विलपाता;** विलषाता (रघु, परि, नाग)।
५।६ **तेहिं;** तेइ (वड़); सो (वाल); तेन्ह (नाग); पट (मन); तव (पट)। **दीन्हा;** चीन्हा (वाल); दीना (उद, व्रज)।
५।१० **मोहि कहहु;** मोहि कहौ (वड़); मोहि कहु (रघु); मोही कहु सव (उद); शो मोही कहु (पट); कहहु सषा (प्रह)।
७।७ **बनाई;** सुनाइ (नाग, मन±, व्रज); शुहाइ (मन÷)।
७।१३ **बालीबध की;** वालि बधव इन्ह (वड़, राम, वाल, नाग, मन, उद, व्रज, नाथ); वाली वधव की (परि); वाली वधै कह (पट); वालि वधव एन्ह (प्रह)।
७।२० **सपने;** सपनेहु (उद, प्रह, नाथ)।
७।२४ **अस;** गुन (नाग, मन)।
६।११ **राम;** राम मन÷, राम मम+(मन)। **सन;** सकल (रघु+); पृय (नाग); ⊙(मन); सदन (पट); प्रिंय (प्रह)।
१२।१२ **कछु;** कछुक (वड़, परि, बाल, नाग, मन, व्रज)।
१४।२ **रह न;** रहत (वड़, अल, नाग, उद); हरन (वाल); रहती (मन); रही (व्रज, पट); रहप (प्रह)।
१५।८ **मोह;** मोद (रघ)।
१५।१० **तृन;** अंन्न÷, अन्न+(रघु)। **जिय;** ✓(रघु, व्रज); हि(अल); जीते(पट); हिय (अन्यत्र)।
१५।१३ **चल मारुत;** बह मारुत (वड़, राम); मारुत वस (बाल); मारुत वह (अल); चले मारुत÷, ++, चलें मारुत+ (नाग); मारुत बहत (मन); मारुत (उद); वल मारुत (व्रज, प्रह)।
१५।१४ **उपजें;** जनमे (वाल अल, मन, पट, नाथ); उपनें (उद)। **सद्धर्म;** स्वधर्म्म (वाल); सैं धर्म (अल); के धर्म (नाग); को ध्रम (मन); सधर्म (उद, नाथ); को धर्म (व्रज); कै धर्म (पट); सतधर्म (प्रह)।
१६।२ **कृत;** ऋत (रघु, व्रज); रितु (परि)।
१६।७ **असि;** अति (वड़, नाग, मन, प्रह); अस (राम, उद, व्रज, पट, नाथ); ससि (अल)।
१६।१० **जिमि;** जसि (रघु); जिम (व्रज)।
१७।५ **अति;** नहि (वाल); तन (अल); ⊙ (व्रज÷); रती (पट); जल (नाथ)।
१७।८ **द्विजद्रोह;** द्विजद्वेष (वाल); द्विजदोष (अल); द्विजवधे (मन)।
२४।४ **मरन;** तजन (नाग); तजइ (मन)।
२४।६ **दीख;** देषा (वाल, पट, नाथ)। **जाइ;** जाए तहँ (बाल); तहा (प्रह)। **उपबन;** सर्वग्य (पट)। **बर सर;** सर (रघु); 7 (परि, राम); वरस (नाग); सरस रवि

(उद); सर सर÷, √±(व्रज); तव (पट); वरस रवि (प्रह)। **बिगसित;** विकसित (परि, वाल); विकसति (उद); विगसत (व्रज); उडही तहा (पट)। **बहु;** वहु तह (रघु); ⊙ (वाल)। **कंज;** कुंज (नाग, मन÷, उद)।

२५।७ **कमल पद;** ˥' (रघु, उद); कमल (अल); जुगल पद (नाग, प्रह)।

२६।७ **भरि;** वह (परि, राम, अल, नाग, नाथ); वहे (प्रह)।

२६।६ **किमि;** नहि (राम, अल, व्रज, नाथ)।

२६।१५ **सुख;** √(रघु, परि, व्रज); मत÷, सत+(नाग); अश (पट); सव (अन्यत्र)।

२८।७ **ब्रह्म;** राम (अल, मन)।

२९।३ **अपार;** अगाध (वाल); अपराध (अल, मन÷, नाथ); अपी÷ √± (प्रह)।

२९।५ **उमा;** √(रघु, मन+, पट, प्रह, नाथ); गरुड (अन्यत्र)।

२९।७ **बल;** ववल÷, √+(वाल); लव (अल); तन (मन)।

३०।३ **रिछेस;** √(रघु); रीछपति (अन्यत्र)।

३०।१८ **त्रिसिरारि;** √(रघु, राम+, वाल, अल); त्रिसरारि (उद); त्रिपुरारि (अन्यत्र)।

३०।१९ **नीलोपल;** √(रघु÷, राम±, वाल) नीलोतल (अल); नीलोत्वाल (मन); नीलोजल (नाथ); नीलोत्पल (अन्यत्र)।

पंचम सोपान (सुंदरकांड)

मं श्लो १।१ **निर्वाण;** गिर्वाण (वड़); गीर्वाण (राम, नाग, पट, नाथ)।

२।२ **निर्भरां;** निर्भरि (दुलही); नीर्भरो (पट)।

३।१ **स्वर्ण;** हेम (दुलही)।

३।२ **वरदूतं;** प्रियभक्तं (दुलही)।

दो १।८ **एही;** योही (रघु); तेही (परि, मन, नाथ); तैसिहि (वाल); ताही (पट)।

२।८ **ठएऊ;** वयऊ (वड़); कएेउ (अल); करेउ (राय)।

२।९ **दून;** दुगुन (वाल, अल, राय, नाग, व्रज, पट, नाथ)।

२।१३ **सत्रु;** तुम्ह (मन, पट, नाथ)।

३।४ **सोइ;** सो (रघु, परि, मन)।

३।८ **धाइ;** कूदि (परि, वाल); जाइ (राम÷, अल); √(राम±); धाऐ (पट)।

३।१२ **सुंदरायतना;** सुंदरायततन (अल); सुंदराऐतन (मन÷, उद); √(मन±); सुंदराईत अति (व्रज); सुंदराजातन (पट); सुंदरतयना÷, सुंदराअत अती+(नाथ)।

४।१ **रूप;** देह (अल, व्रज)।

४।४ **वमत;** वमन (रघु, अल, राय, काशी, व्रज)।

८।७ **महु;** मन (परि, अल, राय, उद, पट, नाथ) मई (व्रज)।

८।९ **राम;** भए (राय, पट)। **कमल पद;** चरन महुँ (वड़, नाग, काशी); ˥ (दुलही, उद); चरण मह (राम); चरन चित (नाथ)।

९।११ **काढ़ि असि;** कै कठिन (अल); कठीन अती (मन); काढि अस (उद); कढि असि (व्रज); ⊙ (पट, नाथ)।

१०।१ कठिन; काढि (अल, राय+, मन, व्रज, पट, नाथ); काठि (राय÷)।
१०।३ दाम; सदा (राय, मन)। भुज; मम (बाल, अल)।
१०।४ प्रवान; प्रमान (बड़, परि, बाल, अल, राय, व्रज, पट, नाथ)।
१०।५ संजातं; संतापं (बाल, राय, व्रज); संतापा (पट)।
१०।६/१ √; शोता रानी तौ अश मन धीरा (पट)।
निसित बहसि; निसि तव असि (राम, बाल, नाग, मन+); निसत बहसत (उद); निसत बहसि (व्रज); नीसि तव अस (नाथ)।
१२।११ जनि; तनु (राम±); तन (नाग, काशी); जीनी÷, ही+(मन); नीज (पट); कत (नाथ)।
१३।७ सुहाई; सुनाई (परि, बाल, अल, राय, काशी, पट); जुडाइ (मन)।
१४।१ बाढ़ी; गाढ़ी (नाग)। ठाढ़ी; बाढो (दुलही, नाग, पट); गाढी (बाल); काढी (नाथ)।
१५।४ जे हित; जेहि तरु (बड़, परि, राय, नाथ±); × (अल); जेहि तर (राम, मन, काशी); जेहि तक (व्रज); जेही तुरु (नाथ÷)। रहे; × (अल); तर रहत (राय); रहिउ (व्रज); रहेउ (पट); रहैं (नाथ)।
१५।५ घटि; घटि नहि (रघु+, परि, काशी, नाथ); कटि (बाल); घाटि (अल); बढि (राय); घाटि न (व्रज)।
१६।८ बलबीरा; रनधीरा (अल, नाथ); बलधीरा (मन)।
१७।८ भारी; धारी (रघु, मन, उद, काशी)।
२२।६ असुर; अचर (दुलही, रघु, परि, अल, उद, पट)। खाई; साँई (राम±, बाल, अल); जाइ (व्रज)।
२३।१० रघुनायक; रघुनायकहि (राय, मन, काशी, व्रज, पट, नाथ)।
२४।४ प्रगट; सकल (बाल, अल); नीकट (पट)।
२४।५ हरहु; हनहुँ÷, हनहु±(राय); हतहु (मन, व्रज, पट)।
२४।६ पठइअ; पठवहु (अल, व्रज, पट)।
२४।११ बाँधि पुनि; बांधहु (अल, मन); बांध कै पुनी (नाथ)।
२८।१ मुनि निसिचरनारी; रजनीचरनारी (बड़); रजनीस्चर भारी (अल); शुनी नीश्चर नारी (पट); स्व नीस्चर नारी (नाथ)।
२८।५ जनु; जिमि (बड़, दुलही, राम, बाल, नाग)।
२८।७ संमत; संवत (बड़); सहित (बाल, राय, काशी+, व्रज, पट, नाथ); सबन्ह (अल); समेत (नाग); शमत्र÷, शह+? (मन); ? (काशी÷)। मधुफल; मधुरफल (बाल, अल, राय, नाग, मन, काशी+, व्रज, पट, नाथ); फलु (उद); मधफल (काशी÷)।
२८।८ बरजइ; बरजन (दुलही, परि, अल, उद, व्रज, पट, नाथ); बरिजइ (नाग)।
२९।१ कि; न (अल, काशी, व्रज); शो (मन); को (पट)।
२९।३ प्रेम; प्रीति (राम, अल, नाग, नाथ)।

२९।८ जाई; आई (वाल, अल, नाथ)।
३०।९ दिवस निसि; राति दिनु (वड़, राम, वाल, अल, नाग, व्रज, नाथ)।
३१।४ हौं; मोहि (नाग, मन, व्रज, पट, नाथ)।
३१।७ तनु; तन (वाल, मन, काशी, व्रज); प्रान (राय); सम (अल, पट)।
३३।९ प्रभुताई; मनुसाई (वाल, पट, नाथ)।
३३।११ प्रभाव; प्रताप (वड़, वाल, राय, काशी, व्रज, नाथ)।
३४।८ बहु; सुर (वाल, पट)। सुर; सव (वाल)।
४५।५ छवि; मन (वड़, दुलही, राम, वाल, नाग, व्रज, पट, नाथ)।
४७।४ बसत; बसति (दुलही, राम±, नाग, काशी)।
४७।८ आवा; पावा (वाल, राय, व्रज, नाथ)।
४९।४ गह; ✓(दुलही, रघु, उद, पट); गहि (अन्यत्र)।
५४।८ कठिन; विकट (वड़, वाल)।
५४।९ अंगद गद; ✓(दुलही, राम, राय±, नाग, व्रज+, काशी); अंगदा (मन÷); अंगद (उद, व्रज÷); अंगदधिमुष (राय÷); अंगदादि (राय++, मन±, अन्यत्र)।
५४।१० निसठ सठ; कुमुद गव (वड़, रघु, परि, मन, उद, काशी)।
५६।३ कृपा; कीपाल (राम÷, मन)।
५६।७ लगि; ✓(वड़, रघु, परि, राय, मन, उद); लही (पट); जग (अन्यत्र)।
५६।१४ सरानल; सरासन (नाग, राय, काशी, नाथ); सरान (उद); सरन अनल; (व्रज); शरन अव (पट)।

षष्ठ सोपान (लंकाकांड)

मं दो [यह दोहा वड़, परि और राम में श्लोकों के अनंतर है।]
परमानु; परवाण (वड़); परमान (रघु, वाल); परवानु (राम); परिमान (मया); परवान; (मन, उद, व्रज, पट, नाथ)।
मं श्लो १।२ योगेंद्रं; योगींद्रं (वड़, रघु, परि, राम, मन, व्रज, पट, नाथ)।
१।४ कंदावदातं; कुन्दावदंतं (राम); कुंदावदातं (मया÷); कुद्यदातं (पट)।
२।४ शंकरं मन्मथारिं; कंदर्पहं शंकरम् (रघु+, परि); श्रीशंकरं शंकरं (पट)।
दो १।११ कछु; ✓(राम, वाल, व्रज); एक (अन्यत्र)।
१।१५ गिरिपादप; तरु सैल गन (रघु, परि, नाग, मन÷, उद); जे प्रवत (पट)।
२।१ तें; तेहि (वाल, मन÷); शो (मन+), तेह (व्रज); ⊙ (पट)।
३।१ मम लोक; हरिलोक (रघु, परि, नाग, उद); ? (व्रज,); भवसागर (नाथ)।
३।५ जिय; मन (वड़, वाल, व्रज, पट, नाथ)।
३।९ कपिन्ह; कपि (वड़, रघु, नाग, उद)।
४।९ प्रभु आयसु पाई; कछु बरनि न जाई (वड़, रघु, परि, नाग, उद)।
५।५ अरु; अन (वड़, परि, पट, नाथ); अनु (रघु+, राम, मन); अ (रघु÷, नाग

उद) ×(मया, अल)। **कुरितु;** √(राम, वाल, व्रज); ऋतुहि (वड़); ×(मया अल); रितु (अन्यत्र)। **कालगति;** अकालगति (रघु+, परि); ×(मया, अल)।

६।१ **निज विकलता विचारि;** √(परि, राम, वाल, पट, नाथ); व्याकुलता निज समुझि (अन्यत्र)।

६।९ **जिव;** जिय (रघु, वाल, मन); गति (पट, नाथ)।

७।९ **नयन नीर;** √(राम, वाल, व्रज, नाथ); लोचन वारि (अन्यत्र)।

७।१० **रघुनाथहिं;** √(राम, वाल, पट, नाथ); रघुनाथपद (वड़); रघुनाथ कहुं (व्रज); रघुवीरपद (अन्यत्र)। **अचल होइ अहिवात;** √(वड़, राम, वाल, व्रज, पट, नाथ); मम अहिवात न जात (अन्यत्र)।

८।१० **सब के बचन;** वचन सवहि के (वड़, रघु, नाग, मन, उद); तात बचन सुनहु मम (व्रज, पट)।

१०।८ **गुनगन;** गंध्रप (वड़); गंधर्व (रघु, नाग); गंध्रब (मन÷, उद)।

१०।११ **सोच न;** न मन कछु (वड़, मन, व्रज); न कछु मन; (रघु, परि, वाल, नाग, उद); कछु नहि (नाथ)।

११।२ **सिखर एक उतंग अति;** सैल श्रृंग एक सुंदर; (वड़, रघु, परि, नाग, मन, उद)। **परम रम्य;** अति उतंग (वड़, रघु, परि, नाग, मन, उद)।

११।९ **कृपा रूप गुन;** करुणासील गुन (वड़, रघु, नाग, मन, उद); क्रीपासींधु (पट)।

११।१० **धन्य ते नर एहिं ध्यान जे;** ते नर धन्य जे ध्यान एहि (व्रड़, रघु, नाग, मन, उद); धन्य ते नर ऐह धरनी मह (पट)।

१२।११ **हनुमंत;** मारुतसुत (वड़, रघु, नाग, मन, उद)। **प्रिय;** निज (वड़÷, रघु+, परि, व्रज, पट)।

१२।१४ **अवलोकि प्रभु;** विलोकि प्रभु (वड़, मन, व्रज, नाथ); बिलोकि पुनि (रघु, नाग, उद); वीलोकी कै (पट)।

१३।४ **उपर;** √(राम, वाल, व्रज, नाथ); रुचि (उद); ऐक (पट); रुचिर (अन्यत्र)। **देख;** केर (वाल, मन); करै (पट)।

१३।७ **मधुर;** √(राम, वाल, नाथ); वरस (व्रज); ⊙ (पट); सरस (अन्यत्र)।

१३।१० **सब कें देखत महि परे;** देषत सब कें परे महि (रघु, नाग, मन, उद)।

१४।४ **परें;** √(राम, नाथ); गिरें (बाल, पट); षसे (अन्यत्र)।

१४।८ **हठ मन;** √(राम, उद); मन उर (बड़÷); हठ उर (परि); जीव हठ (पट); ? (अन्यत्र)।

१५।१० **मनुज बास सचराचर;** प्रीती करहु रघुनाथ सै (पट)।

१५।१० **सचराचर;** चर अचर मथ (रघु, नाग, मन÷, उद)।

१६।२ **कवि;** सब (राम, नाथ)।

१६।६ **विधि;** मिस (वड़, रघु, नाग+); मिसे (नाग÷); मिसि (मन, उद, व्रज)। **कहेहु;** कहहु (बड़); कहिहि (रघु, मन÷); कहिहु (मन+); कहहि (उद)।

१६।६ करत विनोद बहु; जल्पेसि सकल निसि (वड़, रघु, नाग, मन, उद); करत बीनोद नीसी (पट)। प्रगट; भएं (वड़, रघु, नाग, मन+, उद); भएेउ (मन÷)।
१६।१० लंकपति; सुलंकपति (रघु, परि, नाग, मन÷, उद)।
१६।१२ सत; शिव (राम, वाल); सव÷, सम+(मन); तस (उद)।
१७।१ प्रात जागे; विचार किन्ह (नाग)।
१७।३ उरबासी; गुनरासी (वड़, रघु, नाग, मन); अनुरागी÷, अनुरासी+(उद)।
१७।३।२ √; सत्यसंध प्रभु सब उरबासीं (वड़, रघु, नाग, मन, उद)।
१७।८ सन; सँ (रघु, नाग, उद, पट)।
१७।६ उठेउ; चलेउ (वाल, मन)।
१८।३ सो; ⊙ (वड़, राम, नाथ)।
१८।५ उठाई; उआई (रघु, नाग, मन÷, उद)।
१६।१० सुमिरि मन; सुमरि उर (वड़, पट); सभारि उर (रघु, नाग, मन); पसंरि उर (उद)।
२०।३ पूजेहु; पूजे (रघु, राम, नाग, व्रज, पद)।
२०।४ सब राजा; सुर राजा (वड़, रघु, नाग, मन, उद); भुवि राजा (वाल)।
२०।१० आरत गिरा सुनत; सुनतहि आरत बचन (वड़, रघु, नाग, मन, उद)।
२१।३ ही; है (वाल, मन+, व्रज, पट); नहि (नाग, नाथ); तुम्ह शो (मन÷)।
२१।४ रहा; हा (वड़, रघु, परि, राम÷, वाल, मन+++, उद); हौं÷, अह+, √++ (मन); हहा (व्रज); कहा (पट); अहा (नाथ)।
२१।१२ वधिर न; बहिर न (रघु, परि, नाग, उद, पट); वाधी नर (मन÷)।
२२।४ सब; √(राम, वाल, व्रज, नाथ); मैं (अन्यत्र)। मैँ; सव (वड़, रघु, परि, नाग, मन, उद)।
२२।६ देखी; देषेउँ (वड़, परि, मन); देषिउं (रघु, नाग, उद); देषत (पट)।
२२।८ महूँ; हमहुं (परि, राम, वाल, नाथ); अवही (पट)।
२३।३ अनुज; √(परि, राम, वाल, पट, नाथ); वंधु (अन्यत्र)।
२३।४ बूढ़ा; मूढा (रघु, नाग, उद)।
२३।६ सुनत वचन कह; √(राम, वाल, मन+, नाथ); अश शुनी पुनी कह (पट); सुनि हसि बोलेउ (अन्यत्र)।
२३।८ सुनि अस बचन सत्य; को अस झूठ सुनै (रघु, परि, नाग); को अस मुढ सुनै (मन÷); को अस रुढ सुनै (उद); शुनी अश वचन झुठ (पट)।
२३।११ सत्य नगरु कपि जारेउ; अब जानेउं पुर दहेउ कपि (वड़, रघु, परि, नाग, उद); अब जानेउ कपी दहेउ पुर (मन)।
२३।१२ फिरि न गएउ सुग्रीव पहिं; गएउ न फिरि निज नाथ पहि (वड़, रघु, परि, नाग, मन, उद)।
२४।१२ कहु; √(राम, वाल, मन÷, पट, नाथ); सुनु (अन्यत्र)।
२४।१५ जिमि; जनु (मया, मन); जीव (पट)।
२५।३ पूजेउँ अमित बार; (राम, वाल, पट, नाथ); अमित वार पूजेउ (अन्यत्र)।

२७।३ वृथा; मृषा (वड़, मन, पट); मुधा (रघु, परि, मया+, नाग, उद); सुधा (मया÷); त्रिथा (नाथ)। अस होइहि; √(वड़, राम, पट, नाथ); ๅ (अन्यत्र)।
२७।५ सम; √(वड़, राम, पट, नाथ); इव (अन्यत्र)।
२८।२ सब; √(राम, पट); शठ (वाल, नाथ); जड (अन्यत्र)।
२८।१० अति हरष बहु; √(राम, वाल, पट, नाथ); महुं वार बहु (अन्यत्र)। बार; √(राम, वाल, पट, नाथ); हरषित (अन्यत्र)। गौरीस; √(राम, वाल, पट, नाथ); गिरीस (अन्यत्र)।
२९।३ जरठ; जठर (राम÷, वाल, मया, पट, नाथ)।
२९।६ निज मुख निज गुन; निज गुन निज मुख (वड़, मन, व्रज)।
२९।१० इंद्रजालि; √(राम, वाल, पट, नाथ); वाजीगर (अन्यत्र)।
२९।१२ कहावहिँ; √(राम, वाल, मन+, पट, नाथ); सराहिअहि (अन्यत्र)।
३०।३ अस; √(राम, वाल, पट, नाथ); इमि (अन्यत्र)।
३०।१० तव जुवतिन्ह; √(राम, बाल, पट, नाथ); मंदोदरी (अन्यत्र)।
३१।१ नहि कछु; √(राम, वाल, पट, नाथ); ๅ (अन्यत्र)।
३१।७ अधम; √(राम, वाल, पट, नाथ); तुरत (मया); पुत (मन÷); पोच (नाग, उद); पोत (अन्यत्र)।
३१।८ बल प्रताप बुधि तेज; √(राम, वाल, पट, नाथ); बुधि वल तेज प्रताप (अन्यत्र)।
३१।९ जानि; √(राम, बाल, पट, नाथ); विचारि (अन्यत्र)।
३१।१० निसि; √(राम, वाल, मन+, पट, नाथ); अनु (अन्यत्र)।
३२।५ सँभारि उठा दसकंधर; √(राम, वाल, पट, नाथ); दसानन उठेउ सभारी (अन्यत्र)। अतिसुंदर; √(राम, वाल, पट, नाथ); देषी कपी भागे (मन÷); षट चारी (मन±, अन्यत्र)।
३२।६ तेहि लै; बहु कर (वड़, रघु, परि, मया, नाग, उद)। सिरन्हि; करन्हि (रघु, परि, नाग, मन÷, व्रज); रन्हि÷, √+(मया)।
३२।११ तरकि पवनसुत कर गहेउ; कूदि गहे कर पवनसुत (रघु, परि, नाग, मन, उद, व्रज)।
३२।१३-१४ √; √(राम, पट, नाथ); ⊙ (बाल); उहां कहत दसकंध रिसाई धरि मारहु कपि भजि जन जाई (अन्यत्र)।
३३।२/१ √; √(राम, बाल, मन+, पट, नाथ); महिअ कीस करि फेरि दोहाई (अन्यत्र)।
३३।६ खल; √(राम, बाल, पट, नाथ); निसि (अन्यत्र)।
३४।३ तव; √(वड़, राम, बाल, नाथ); इह (व्रज); तुव (पट); यह (अन्यत्र)।
३४।८ समुझि रामप्रताप; √(राम, बाल, पट); रामप्रताप समुझि (मन); सुमिरि राम प्रताप (नाथ); रामप्रताप सुमिरि (अन्यत्र)।
३५।१ कपि के परचारे; √(राम, बाल, पट); जुवराज प्रचारे (अन्यत्र)।
३५।१५ पुलक सरीर नयन जल; √(राम, वाल, पट, नाथ); सजल सुलोचन पुलक तन (अन्यत्र)।
३५।१६ दसकंधर; √(राम, बाल, पट, नाथ); दसमौलि तव (अन्यत्र)।
३५।१७ रावनहि; √(राम, बाल, पटे, नाथ÷) रावंनहि तब (नाथ+); निसाचरहि (अन्यत्र)।

३६।३ केर यह; √(राम, वाल); क ग्रैसन (ग्रल); केर ग्रस (ग्रन्यत्र)।
३६।६ सकल पुर; √(राम, वाल, पट, नाथ); नगरु सवु (ग्रन्यत्र)।
३६।८ जनि; √(राम, वाल, पट, नाथ); जीनी (मन); पति (उद); मति (ग्रन्यत्र)।
३६।१० भूपाला; √(राम, वाल, पट, नाथ); महिपाला (ग्रन्यत्र)। अतुल; √(राम, वाल, पट, नाथ); गर्व (ग्रल); विपुल (ग्रन्यत्र)।
३७।१० रघुनाथ; √(राम, वाल, पट, नाथ); रघुपति (वड़); × (मया); रघुपतिहि (ग्रन्यत्र)
३८।५ कौतुक अति; √(राम, वाल); कौतुक एक (पट, नाथ); ႑ (ग्रन्यत्र)।
३८।१२ तेहि परिहरि गुन आए; √(राम, वाल, पट, नाथ); आए गुन तजि रावनहि (ग्रन्यत्र)।
३९।११ जय लछिमन; √(राम, वाल, पट, नाथ); भ्राता सहित (ग्रन्यत्र)।
३९।१२ सिंघनाद; √(वड़, राम, वाल, पट, नाथ); केहरिनाद (ग्रन्यत्र)।
४०।८ परसु; √(वड़, राम, वाल, पट, नाथ); परिघ (ग्रन्यत्र)। परिघ; √(वड़, राम, वाल, मन+, पट, नाथ); परसु (ग्रन्यत्र)।
४१।६ गर्जहिँ; तर्जहि (रघु, मया, ग्रल, नाग, मन, उद, व्रज)। तर्जहिँ; गर्जहि (रघु, मया, ग्रल, नाग, मन, उद, व्रज।)
४१।१३ निसिचर गहि; गहि रजनिचर (वड़, रघु, मया, नाग, मन, उद); गहि निसिचर (व्रज)।
४२।१ सुभट; निकट (रघु, मया, ग्रल, नाग, मन, उद, व्रज)।
४२।३ निसाचर; तमीचर (वड़, नाग, व्रज); तिमीर (रघु); तीमीनीशीचर (मन÷); तमचर (उद)।
४२।४ वालक आतुर; आरत वालक (वड़, रघु, मया, नाग, मन, व्रज); वालक आरत (ग्रल); आरत व्याकुल भा (उद); ႑ (नाथ)।
४२।६ तेहि; √(परि, राम, नाथ); तेइँ (वाल); ते (पट); जव (ग्रन्यत्र)।
४२।७ सो मैं हतव; √(परि, राम, वाल, पट, नाथ); तेहि मारिहौं (ग्रन्यत्र)।
४२।९ डेराने; सकाने (रघु, मया, नाग, उद, व्रज); रीशाने (मन)। चले; फिरे (रघु, मया, नाग, मन÷, उद, व्रज±); फिरि (व्रज÷)। सुभट; वीर (रघु, मया, नाग, मन÷, उद, व्रज); सकल (ग्रल)।
४२।१२ त्रिसूलन्हि; √(परि, राम, वाल, मन+, पट, नाथ); प्रचंडन्हि (ग्रन्यत्र)।
४३।३ विकल; √(परि, राम, ग्रल, पट, नाथ); ⊙ (वाल); विचल (ग्रन्यत्र)।
४३।६ सुना; सुनेउ कि (वड़, रघु, नाग, मन÷, उद); सुनेतउ (मया÷); सुना की (ग्रल); सुनेउ (मया+, मन+, नाथ); सुनेऊ (व्रज)।
४३।१० रन; √(परि, राम, वाल); गएउ (पट, नाथ); चढ़ा (ग्रन्यत्र)। कपि खेल; वघमेल (पट); वगमेल (नाथ)।
४४।२ द्वौ; √(परि, राम); दोउ (वाल, मन+, पट, नाथ); तव (मन÷, ग्रन्यत्र)।
४४।७ गर्जि; √(परि, राम, वाल, पट, नाथ); कूदि (ग्रन्यत्र)।
४४।९ सोँ मर्दहिँ; √(परि, राम, वाल, पट, नाथ); सव मर्दहि (वड़, ग्रल); सन मर्दि करि (ग्रन्यत्र)।

४४।१० ते; तेइ (रघु, मया, नाग, मन, व्रज)।
४५।६ अस प्रभु सुनि; √(परि, राम, नाथ); अस प्रभु पुनि (वाल); अस प्रभु (अल); अश प्रभु शुजीय (पट); सुनि अस प्रभु (अन्यत्र)। न; जानि (अल); ⊙ (पट)।
४५।१० बिगतश्रम; √(परि, राम, वाल, पट, नाथ); प्रयास विनु (अन्यत्र)।
४६।६ लरत; √(राम, वाल, पट, नाथ); रहि (रघु÷); भिरहि (व्रज) लरहि (रघु+, अन्यत्र)।
४६।७ महाबीर निसिचर; वीर तमीचर (वड़, रघु, मया, उद, व्रज); विचरत निसिचर (नाग, मन)। सब अति; √(वड़, रघु, मया, नाग, उद, व्रज); शम अधी÷, शभ अति+ (मन)।
४६।८ कौतुक करत; √(परि, राम, वाल, अल, पट, नाथ); विविध प्रकार (अन्यत्र)। लरत; भिरत (वड़, रघु, नाग, मन, उद); फिरत (मया); करत (व्रज)।
४६।१३ देखइ; √(राम±, वाल, मन+); देषहि (परि, राम÷, पट, नाथ); देखत (अल, व्रज); देष तव (मन÷, अन्यत्र)।
४७।१ सकल; महु सव (वड़); यह सवु (रघु, नाग); एह सचु÷, एह सवु+ (मया); यह सव (मन, उद); इह सव (व्रज)। रघुनायक; राम विभु (वड़, रघु, नाग); रामु जव (मया); राम प्रभु (मन, उद, व्रज)।
४७।४ संसय; दुष सव (रघु, मया, अल, नाग, मन, उद); सव दुष (व्रज)।
४७।५ हरषि; √(परि, राम, वाल, नाथ); वेगि (वड़); कपि (व्रज); ⊙ (पट); कोपि (अन्यत्र)।
४७।६ कछु मारे कछु घायल; √(परि, राम, पट, नाथ); मारे कछु घायल कछु (वाल); कछु घायल कछु रन परे (अन्यत्र)।
४७।१० भालु बलीमुख; √(परि, राम, वाल, नाथ); मर्कट भालु कपि (व्रज); भालु कपीमुष (पट); मर्कट भालु भट (अन्यत्र)।
४८।३ सचिव; √(परि, राम, वाल, पट, नाथ); बीर (व्रज); सुभट (अन्यत्र)।
४८।१२ सिव बिरंचि जेहि सेवहिँ; जेहि सेवहि शिव कमलभव (वड़, रघु, परि, मया, नाग, मन÷, उद); जेहि सेवहिं सिव सकल भव (अल); जा कहुं सेवहि कमल भव (व्रज)।
४९।४ कृपानिधाना; √(परि, राम, वाल, व्रज, पट, नाथ); श्रीभगवाना (अन्यत्र)।
४९।१६ उतरयो; √(परि, राम); उतरे (वाल); उतरेउ (पट, नाथ); उतरि (अन्यत्र)। वीरु दुर्ग तें; √(परि, राम, पट, नाथ); बानर दुर्ग ते (वाल); दुर्ग ते बीर बर (अन्यत्र)।
५०।४ क्रोध; कोपि (वड़, मन, उद, व्रज); कोप (रघु, मया, अल, नाग)।
५०।७ जहँ तहँ भागि चले; √(परि, राम, बाल, पट, नाथ); भागे भय व्याकुल (अन्यत्र)।
५०।९ दस दस सर सब मारेसि; √(परि, राम, बाल, नाथ); दस दस शर प्रभु मारेशी (पट); मारेसि दस दस बिसिष सब (अन्यत्र)।
५०।१० करि गर्जा; √(परि, राम, वाल, पट, नाथ); गर्जत भए (अन्यत्र)। बलधीर; √(परि, राम, अल, पट, नाथ); महीधर (अन्यत्र)।
५१।२ सैल एक; √(परि, राम, वाल, पट, नाथ); राम समीप (अन्यत्र)।
५१।७ प्रताप; प्रभाउ (रघु, मया, अल, नाग, मन÷, उद, व्रज)।

५१।१० निसिचर; √(परि, राम, बाल, पट, नाथ); रजनीस्चर (अल); रजनिचर (अन्यत्र)।
५२।६ मागि; मागेउ (बड़, रघु, नाग, मन÷, उद, व्रज); मगिउ÷, मागउ+(मया); ⊙ (अल); मांगिउ (मन+)।
५२।१० क्रुद्ध होइ;√(राम, बाल, पट, नाथ); सकोप अति (अन्यत्र)।
५३।६ रुधिर गाड़ भरि भरि जम्यो; √(परि, राम, बाल, अल, पट, नाथ); जम्यो गाड़ भरि भरि रुधिरु (अन्यत्र)।
५३।१० जनु; √(राम, बाल, अल, पट, नाथ); जिडि (उद); जिमि (अन्यत्र)।
५४।१० जगदाधार; जगदाधारन (अल)। सेष; √(परि, राम, बाल, मन+, पट); ⊙ (अल); सो (नाथ); अनंत (अन्यत्र)। उठइ; उठै न (रघु, व्रज, पट); उठइ डारि (बाल); उदै (मया); उठइ बहुरि (नाथ)।
५५।६ रामपदारबिंद सिरु;√(परि, राम, बाल, पट, नाथ); रघुपति चरन सरोज सिरु (अन्यत्र)।
५६।५ मृषा; √(बड़, परि, राम, बाल, नाथ); सब मीथ्या (अल); वृथा (अन्यत्र)।
५६।७ मैं तैं मोर मूढ़ता; √(राम, बाल, पट, नाथ); अहंकार ममता सब (अल); अहंकार ममता मद (अन्यत्र)।
५८।२ कपि; √(राम, बाल, पट, नाथ); प्रभु (अन्यत्र)।
५८।३ कपि; सो (बड़, रघु, मया, नाग, मन, उद, व्रज)।
५८।१० सायक मारेउ; सर कपि मारेउ (बड़); सर तकि मारेउ कपि (रघु, मया÷, मन÷, नाग, उद); सर तकि मारेउ (मया+, मन+, व्रज)।
५९।२ तब; √(राम, बाल, पट, नाथ); उठि (अन्यत्र)।
६०।२ समास; संछेप (रघु, मया, नाग, मन, उद, व्रज)।
६०।८ प्रभाव; प्रताप (बाल, अल, व्रज, पट, नाथ)।
६०।६ प्रभु; √(राम, बाल, पट, नाथ); गोसाइँ (अन्यत्र)।
६०।१० √; √(राम, बाल, पट, नाथ); भरत हरषि तब आएसु दएऊ। पद सिरु नाइं चलत कपि भएऊ (अन्यत्र)।
६०।१२ मन महु जात सराहत; √(परि, राम, बाल, पट); जात सराहत मनहि मन (अन्यत्र)।
६१।१६ प्रभुप्रलाप; √(परि, राम, पट, नाथ); प्रभुविलाप (अन्यत्र)।
६२।६ आवा; √(परि, राम, बाल, पट, नाथ); गएऊ (अन्यत्र)। विविध जतन करि ताहि जगावा;√(परि, राम, बाल, पट, नाथ); करि बहु जतन जगावत भएऊ (अन्यत्र):
६३।७ अंक; नयन (बड़, रघु, नाग, मन, उद)।
६३।६ सुमिरत; √(परि, राम, बाल); शुमरी तव (पट); सुमिन तव÷, सुमिर तव+(नाथ); सुमिरि मन (अन्यत्र)।
६४।३ आएउ; √(राम, बाल, मन, पट); आवा (नाथ); गएऊ (अन्यत्र)।
६४।३/२ √; पद गहि नाम कहत अस भयऊ (बड़, अल, मन); पद गहि नामु कहत निज भएऊ (रघु, मया, नाग, व्रज); पद गहि नाम निज कहत भएऊ (उद)।
६४।६ तैं; √(राम, बाल, अल, पट, नाथ); तुम्ह (अन्यत्र)।

६५।१ चला; √(वड़, राम, वाल, पट, नाथ); फिरा (अन्यत्र)।
६५।११ मुरुछित; √(राम, वाल, पट, नाथ); मुर्छेहनि (अल); घाय वस (अन्यत्र)।
६६।५ सुग्रीवहु; √(राम, वाल, पट, नाथ); कपिराजहु (अन्यत्र)।
६६।७ गहि भूमि; √(राम, बाल, पट); तेहि धरनि (परि); गहि धरनि (मया, अल, नाथ); धरि धरनि (अन्यत्र)।
६६।८/२ √; √(राम, वाल, अल, पट, नाथ); जय जय कारुनीक भगवाना (अन्यत्र)।
६६।९ काटे जिय; √(परि, वाल, पट, नाथ); काटे सो (वड़); काटेसि जिय (राम); काटेउ सो (अल); काटे सोइ (अन्यत्र)।
६६।१२ वार; √(परि, राम, वाल, पट, नाथ); बार सो (वड़); वार जो (अन्यत्र)।
६७।६ सब; √(वड़, राम, वाल, पट, नाथ); रन (अन्यत्र)।
६७।९ सुग्रीव बिभीषन अनुज; √ (राम, बाल, अल, पट, नाथ); सौमित्रि कपीस तुम्ह सकल (अन्यत्र)।
६८।१ साजि; √(परि, राम, वाल, पट, नाथ); विसिष (अन्यत्र)। अरिदल दलन; √(राम, वाल, पट, नाथ); मृगपतिठवनि (अन्यत्र)।
६८।४ जहँ तहँ; √(राम); जहाँ तहाँ (वाल, अल, व्रज, पट, नाथ); अति जव (अन्यत्र)। बिपुल; √(राम, अल, व्रज, पट, नाथ); ⊙(वाल); निसित (अन्यत्र)।
६८।७ जलद; √(राम, बाल, अल, व्रज, पट, नाथ); घनद (मया); वनद (अन्यत्र)।
६८।१० रघुबीर निषंग; √(राम, वाल, अल, पट, नाथ); रघुपति के त्रोन (अन्यत्र)।
६९।१ हति; √(राम, बाल, नाथ); हनी (वड़); हते (अल, नाग, मन); हरी (पट); हती (अन्यत्र)। छन; √(राम, वाल, पट); निमिषि (अल, नाग, मन); निमष (उद, व्रज); छिनु (नाथ); निमिष (अन्यत्र)। माझ; √(राम); माह(वाल, पट, नाथ); मह (अल, मन, व्रज); मुहुं (नाग); महु (अन्यत्र)।
६९।२ भा अति; √(राम, बाल, अल, नाथ); भए (उद); भा बल (पट); भएउ (अन्यत्र)। क्रुद्ध; क्रोध (अल, मन, उद, पट, नाथ)। महा; √(राम, बाल, अल, पट, नाथ); दारुन (अन्यत्र)।
६९।६ जिमि; जनु (रघु, परि, मया, नाग, मन, उद, व्रज)।
६९।८ कपि; √(राम, बाल, अल, पट, नाथ); भट (अन्यत्र)।
६९।९ महानाद करि गर्जा; √(राम, बाल, पट, नाथ); गर्जत धाएउ नाद करि (अल); गर्जत धाएउ बेग अति (अन्यत्र)।
७०।१३ घोर अति; √(परि, राम, बाल, अल, पट, नाथ); अती घोर तब (मन); अति घोर तर (अन्यत्र)।
७०।१४ त्रासित; √(परि, राम, वाल, अल, पट, नाथ); त्रसित सब (अन्यत्र)।
७१।३ मुख सन्मुख; सन्मुख सो (रघु); सन्मुख (व्रज)।
७१।९ सुर; √(राम, बाल, पट, नाथ); नभ (अन्यत्र)। अस्तुति करहिँ सुमन बहु; √(राम, बाल, पट, नाथ); अस्तुति करहिं सुमन (अल); जय जय करि प्रसून सुर (अन्यत्र)।

७।११२/१ √; बेगि हतौहु षलहि मुनिबर कह गए (रघु, नाग, मन+); ⊙ (अल); बेगि हतहु खल मुनि कहि गएउ (मया, व्रज); बेगि हतहु षलहि मुनि जनकहि गऐ (मन÷); कहि विमल जस मनिबर गए (उद)।

७।११७ मलाकर; √(राम, पट); मलायक (वाल); मलायतन (अन्यत्र)।

७२।३ सुकृत; √(राम, वाल, पट, नाथ); धर्म (अन्यत्र)।

७२।१२ मायामय; √(वड़, राम, पट, नाथ); मग्रा धरि (अल); मग्रा रची (मन); माया रचित (अन्यत्र)। गएउ; पुनि गयउ (वाल)।

७२।१३ अट्टहास करि; √(राम, वाल, नाथ); अपर हास करि (अल); प्रलऐंकाल जीमी (मन); व्रींद हाश करी (पट); प्रलयपयोद जिमि (अन्यत्र)।

७३।३ दस दिसि रहे बान नभ; √(राम); दिशि दिशि रहे बाँन नभ (वाल); दहं दिस नभ वानन्ह नभ (अल); दह दीश रहे वान नभ (पट); दह दिस रहेउ बांन नभ (नाथ); रहे दसहु दिसि सायक (अन्यत्र)।

७३।४ सुनिअ धुनि; √(राम, वाल, पट, नाथ); मारु सुनि (वड़, अल); सुनहि कपि (अन्यत्र)।

७३।१४ गिरिजा जासु; √(राम, वाल, पट, नाथ); षगपति जाकर (अन्यत्र)।

७३।१५ सो कि बंध तर आवै; √(राम, वाल, पट, नाथ); सो प्रभु आव कि बंधन (नाग, मन); सो प्रभु आव कि बंध तर (अन्यत्र)।

७४।५ सठ; √(राम, वाल, मया, अल, पट, नाथ); जड (अन्यत्र)। अधम; √(राम, बाल, अल, पट, नाथ); पतित (अन्यत्र)।

७४।६ तरल; तिव्र (रघु, परि, मन+); तिग्म (मया, नाग, उद); तोवर (अल); तीग (मन÷); तग्य (व्रज)।

७४।७ भूमि; √(वड़, राम±, पट, नाथ); ⊙ (राम÷); धरनि (अन्यत्र)।

७४।११-१२ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); पन्नगारि षाए सकल छन महुं ब्याल वरूथ भए विगत माया तुरत हरषे वानर जूथ (अन्यत्र)।

७५।३ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); सो सुधि पाइ विभीषनु कहई सुनु प्रभु समाचार अस अहई (अन्यत्र)।

७५।५ पुनि; √(राम, बाल); रथ÷, रप+ (मया); सो (पट); रिपु (अन्यत्र)।

७५।१० सुग्रीव; √(राम, वाल, पट, नाथ); कपिराज (अन्यत्र)।

७५।१५ रघुपति चरन नाइ सिरु; √(राम, वाल, पट, नाथ); वंदि रामपद कमल जुग (अन्यत्र)।

७५।१६ सुभट; रिखभ (रघु, परि)।

७६।२ कीन्ह कपिन्ह सब; √(राम, वाल, पट, नाथ); तब कीसन्ह कृत (अन्यत्र)।

७६।१४ √; एहि पापिहि मैं बहुत षेलावा अब बध उचित कपिन्ह भय पावा (वड़, रघु, परि, अल, उद, व्रज)।

७६।१८ धन्य तव जननी; सक्रजित मातु तव (वड़, रघु, परि, अल, उद, व्रज)।

७७।३ श्रीरघुनाथ; श्रीरघुवीर (रघु, परि, अल, उद, व्रज)।

७७।६ दसकंठ बिबिध; √(राम); दसकंधर विविध (वाल, पट); दसकंध विविधि (नाथ); लंकेस अनेक (अन्यत्र)।
७७।१० जगत; √(राम, वाल, पट, नाथ); प्रचंड (अल); प्रपंच (अन्यत्र)।
७८।१२ बोलहिँ; √(राम, वाल, पट, नाथ); रोवहि (अन्यत्र)।
७६।७ मरुत; पवनु (रघु, परि, मया, अल, नाग, मन, उद, व्रज)।
७६।१६ रामहि; √(वाल, पट); रामहित (राम, नाथ); रघुबीर (अल); रघुपतिहि (अन्यत्र)।
८०।६ सम जम; संजम (वड़, वाल, मन+, व्रज, नाथ); सम दम (अल, पट)।
८०।१६ दसकंधर; √(राम, वाल, पट, नाथ); दसकंध भट (अल); दसकंठ भट (अन्यत्र)।
८१।१७ बिचलत देखेसि; √(राम, वाल, पट, नाथ); बिचल बिलोकि तेहि (अन्यत्र)।
८१।१८ रथ चढ़ि चलेउ दसानन; √(राम, वाल, पट, नाथ); चलेउ दसानन कोपि तब (अन्यत्र)।
८२।१३ निज दल बिकल देखि; √(राम, वाल, नाथ); नीज दल बीकल बीलोकी (पट); बिचल देषि अनीक (अन्यत्र)। कटि कसि; √(राम); अति कटि (वाल); कटी (पट); कपि कसि (नाथ); निज कटि (अन्यत्र)।
८२।१४ क्रुद्ध होइ; √(राम, वाल, पट); सकोप (नाग); क्रोध करि (नाथ); सरोष तव (अन्यत्र)।
८३।१३ देखि; √(राम, वाल, पट, नाथ); देषित (अन्यत्र)।
८३।१४ कपिहि हन्यो तेहिं; √(राम, वाल, पट, नाथ); तेहिं उर महुं हतेउ (अन्यत्र)।
८४।८/१ √; √(राम, बाल, पट, नाथ); धरि सर चाप चलत पुनि भए (अन्यत्र)।
८४।८/२ सन्मुख; √(राम, वाल, पट, नाथ); समीप (अन्यत्र)।
८४।१४ रामबिरोधी बिजय चह; √(राम,वाल, पट, नाथ); जय चाहत रघुपतिबिमुष (अन्यत्र)।
८५।३ नाथ; √(राम, वाल, पट, नाथ); देव (अन्यत्र)।
८५।४ अंगद; अंग (रघु, राम)।
८५।१३ जज्ञ; √(राम, वाल, पट, नाथ); मष (अन्यत्र)।
८५।१४ निसाचर; √(राम, वाल, पट, नाथ); लंकपति (अन्यत्र)।
८६।५ अस्तुति; √(राम, बाल, पट, नाथ); बिनती (अन्यत्र)।
८६।१५ सोभा देखि हरषि सुर; √(राम, बाल, पट, नाथ); हरषे देव बिलोकि छबि (अन्यत्र)।
८६।१६ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); जय जय प्रभु गुन ज्ञान बल धाम हरन महि भार (अन्यत्र)।
८८।१२ भटन्ह ढहावहीँ; √(राम, वाल); भट रन गावही (पट); भटन्हि जगावही (नाथ); सुरपुर पावहीँ (अन्यत्र)।
८८।१३ √; √(राम, बाल, पट, नाथ); निसिचरबरूथ बिमर्दि गर्जहिं भालु कपि दर्पित भए (अन्यत्र)।
८८।१५ रावन हृदय बिचारा; √(राम, वाल, पट); रावन हींदंऐ सोष भौ (नाथ); हृदय बिचारेउ दसवदन (अन्यत्र)।
८९।७/२ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); सब काहूँ मानी करि साची (अन्यत्र)।

८९।८/२ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); वहु अंगद लछिमन कपि धनी (अन्यत्र)।
८९।९ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); वहु वालिसुत लछिमन कपीस विलोकि मर्कट अपडरे (अन्यत्र)।
८९।१२ मर्कट; √(राम, वाल, पट, नाथ); वनचर (व्रज); वानर (अन्यत्र)।
९०।२ धावा; √(राम, वाल, नाथ); आवा (अन्यत्र)।
९०।४ लोकप; लोकपाल (राम, वाल, मन); लोक प्रजा (व्रज); लोकप देव (पट); लोकपति (नाथ)।
९०।५ विराध; √(राम, वाल, पट, नाथ); कवंध (अन्यत्र)।
९०।९ विहसि बचन कह; √(राम, वाल, पट, नाथ); कहेउ विहसि अस (मया); कहेउ विहसि तव (अन्यत्र)।
९०।१५ विहसा; √(राम, वाल, पट, नाथ); विहसि कह (अन्यत्र)।
९१।३ पावकसर; √(राम, वाल, पट, नाथ); अनलवान (अन्यत्र)।
९१।४ चलाई; √(राम, वाल, पट, नाथ); पठाई (अन्यत्र)।
९१।१३ तानेउ चाप; √(राम, वाल, पट, नाथ); तानि सरासन (अन्यत्र)।
९३।४ दिनकर; √(राम, वाल, मन, पट, नाथ); दिनमनि (अन्यत्र)।
९३।८ सुग्रीव; √(राम, वाल, मन, पट, नाथ); हनुमान (अन्यत्र)।
९३।१० बेधे; भेदे (रघु, परि, मया, नाग, मन÷, पट)।
९३।११ कर; √(राम, वाल, पट, नाथ); गहि (अन्यत्र)। **गहि**; √(राम, वाल, नाथ); वहु (मन); ⊙ (पट); कर (अन्यत्र)।
९३।१२ दसकंठ क्रुद्ध होइ; √(राम, वाल, पट, नाथ); रावन अति कोप करि (अन्यत्र)।
९४।१ अति घोरा; √(राम, वाल, पट, नाथ); षर धारा (अन्यत्र)। **भंजन पन मोरा**; √ (राम, वाल, पट, नाथ); हर विरिंचु सभारा (अन्यत्र)।
९४।१२ दर्पित; √(राम, वाल, पट, नाथ); गर्जित (व्रज); गर्वित (अन्यत्र)।
९४।१४/१ सो अब भिरत काल ज्यों; √(राम, वाल, पट, नाथ); भिरत सो काल समान अब (अन्यत्र)।
९५।४ कपि; √(राम, वाल, पट, नाथ); तेहि (अन्यत्र)।
९५।१३/१ तब रघुबीर पचारे; √(राम, वाल, पट, नाथ); रामप्रताप सभारि तव (व्रज); राम पचारे वीर तव (अन्यत्र)।
९५।१४ देखि; √(राम, वाल, पट, नाथ); विलोकि (अन्यत्र)।
९६।३ जहँ तहँ भजे भालु अरु; √(राम, वाल, पट, नाथ); भागे भालु बिकट भट (अन्यत्र)।
९६।४ भागे बानर; √(राम, वाल, पट, नाथ); चले वलीमुख (अन्यत्र)।
९६।१४ सारंग; √(राम, वाल, पट); सरासन (नाथ); विसिषासन (अन्यत्र)।
९७।५ अस्तुति करत देव तेहिं; √(राम); अस्तुति करत देवतन्हि (वाल, पट, नाथ); करत प्रसंसा सुर तेहि (अन्यत्र)।
९७।१३ रावन; √(राम, वाल, पट, नाथ); लंकेस (अन्यत्र)।
९७।१४ वहुत बढ़े पुनि जिमि तीरथ; √(राम, वाल, पट, नाथ); भए बहोरि जिमि कर्म मूढ़ (अन्यत्र)।

९८।३/२ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); दुविद कपीस पनस वलसीला (अन्यत्र)।
९८।७/१ √; √(राम) रुधिर देषि विषाद जिग्र भारी (वाल); शो देषे बीषाद अती भारी (पट); रुधिर देषि विषाद अति भारी (नाथ); रुधिरु विलोकि सकोप सुरारी (अन्यत्र)।
९८।२० मुरुछा विगत; √(राम, वाल, पट, नाथ); गै मुरुछा तव (अन्यत्र)।
१००।३ सिराति न राती; √(वाल, पट, नाथ); सिराती÷, न राति सिराती±(राम); विहाति न राती (अन्यत्र)।
१०१।२५ ता के गुन गन कछु कहे; √(राम, वाल, पट, नाथ); कहे तासु गुन गन कछुक (अन्यत्र)।
१०१।२६ जिमि निज वल अनुरूप तें; √(राम, वाल, पट, नाथ); निज पौरुष अनुसार जिमि (अन्यत्र)।
१०२।१ √; काटेसिर पुनि होहिं अपारा भोग करत जिमि वाढहि मारा (√राम, वाल, पट)।
१०२।५ पियूष; √(राम, वाल, पट, नाथ); सुधा (अन्यत्र)।
१०२।७ असुभ; √(वड़, राम, वाल, पट, नाथ); असगुन (अन्यत्र)। लागे; √(वड़, राम, वाल, पट, नाथ); जगे (मया); लगे (अन्यत्र)।
१०२।११ रुदहिं; √(राम, वाल, नाथ); श्रवहि (अन्यत्र)।
१०२।१३ नभ सुर; √(राम, वाल, पट, नाथ); सुर सुनि (नाग); सुमुति (उद); सुर मुनि (अन्यत्र)।
१०२।१५ खैंचि सरासन स्रवन; √(राम, वाल, पट, नाथ); आकरषेउ धनु कान (अन्यत्र)।
१०३।६ धरनि परेउ; √(राम, वाल, पट, नाथ); परेउ वीरु (अन्यत्र)।
१०३।१४ सुमन बरषहिं हरष संकुल; √(राम, वाल, पट, नाथ); सिद्ध मुनि गंधर्व हरषे (अन्यत्र)।
१०३।२१ भालु कीस सव हरषे; √(राम, वाल, पट, नाथ); हरषे वानर भालु कपि (मया); हरषे वानर भालु सव (अन्यत्र)।
१०४।३ कच नहि बपुष; √(राम, बाल, पट, नाथ); चिकुर न सरीर (अन्यत्र)।
१०४।१६ जोगिबृंद दुर्लभ; √(वड़, राम, वाल, पट, नाथ); सुर दुर्लभ जो परम (व्रज); मुनि दुर्लभ जो परम (अन्यत्र)।
१०५।४ देखी; √(राम, वाल, पट, नाथ); विलोकि (अन्यत्र)।
१०५।५ बिलोकि; √(राम, बाल, पट); देषिअति (नाथ); देषत (अन्यत्र)। तब प्रभु अनुजहि; √(राम, बाल, पट, नाथ); राम अनुज कहु (अन्यत्र)।
१०५।६ तेहि बहु बिधि; √(राम, वाल, पट, नाथ); जाइ ताहि (अन्यत्र)।
१०५।९ मंदोदरी आदि; √(राम, बाल); मदोदरी आदि रानी (पट); मंदोदरि त्रिया आदि (नाथ); मयतनयादिक नारि (अन्यत्र)।
१०५।१० रघुपति; √(राम, वाल, पट, नाथ); रघुवीर (अन्यत्र)।
१०६।६ सारि; √(राम, बाल, पट, नाथ); कीन्ह (अन्यत्र)।
१०६।१३ प्रभु के बचन श्रवन सुनि; √(राम, बाल, पट, नाथ); सुनत राम के बचन मृदु (अन्यत्र)।

१०६।१४ सिर नावहिँ; √(राम, वाल, पट, नाथ); विलोकि मुष (अन्यत्र)।
१०७।४ पुनि; √(राम, वाल, पट); ⊙(नाथ); तिन्ह (अन्यत्र)।
१०७।१४ कोसलपति; √(राम, वाल, पट, नाथ); रघुवंसमनि (अन्यत्र)।
१०८।३ संदेसु भानुकुल; √(राम, वाल, व्रज, पट, नाथ); वानी पतंगकुल (अन्यत्र)।
१०८।६/२ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); सादर तिन्ह सीतहि अन्हवावा (अन्यत्र)।
१०८।७ बहु प्रकार; √(राम, वाल, पट, नाथ); दिव्य वसन (अन्यत्र)।
१०८।१२ रघुनाथ; √(राम, नाथ); रघुवीर (अन्यत्र)।
१०८।१५ करुनानिधि; √(राम, वाल, पट, नाथ); करुनायतन (अन्यत्र)।
१०९।५ पावक प्रगटि; √(राम, वाल, नाथ); पावक प्रवल (पट); प्रगटि कृसानु (अन्यत्र)।
१०९।६ पावक प्रबल देखि; √(राम, बाल, पट); पावक प्रगट देषि (नाथ); प्रवल अनल विलोकि (अन्यत्र)।
१०९।१३ √; √(राम, वाल, पट, नाथ); तव अनल भूसुर रूप कर गहि सत्य श्री श्रुति विदित जो (अन्यत्र)।
१०९।१७ सुर; √(राम, वाल, पट, नाथ); विवुध (अन्यत्र)।
१०९।१८ सुरवधू; √(राम, वाल, पट, नाथ); अपछरा (अन्यत्र)।
१०९।१९ जनकसुता; √(राम, वाल, पट, नाथ); श्रीजानकी (अन्यत्र)।
१०९।२० देखि; √(राम, वाल, पट, नाथ); देषत (अन्यत्र)।
११०।९ यह खल मलिन सदा; √(राम, वाल, नाथ); ⊙(पट); रावनु पाप मूल (अन्यत्र)।
११०।१०/१ √; √(राम, वाल, नाथ); ⊙(पट); सोउ कृपाल तव धाम सिधावा (अन्यत्र)।
११०।१४ अति सप्रेम; √ (राम, वाल, पट, नाथ); अति सने प्रेम (उद); अतिसय प्रेम (अन्यत्र)। तन पुलकि विधि; √ (राम+); तन पुलकित (राम÷, वाल, पट) सरोज वीथी (मन+); सरोजभव (मन÷, अन्यत्र)।
१११।१४ सुधा; √ (राम, नाथ); सुधा (वाल, पट); महा (अन्यत्र)।
१११।२३ चतुरानन; √ (राम, वाल, पट, नाथ); विधि भाति वहु (अन्यत्र)।
१११।२४ सोभासिंधु विलोकत; √ (राम, वाल, पट, नाथ); वदनु विलोकत राम कर (अन्यत्र)।
११२।२ बंदन; √ (राम, वाल, पट, नाथ); प्रनामु (अन्यत्र)।
११२।४ सलिल; सरीर (रघु, नाग, मन÷, उद, व्रज); सजल (मया, अल)।
११२।१० सोभा देखि; √ (राम, वाल, पट, नाथ); छवि विलोकि (अन्यत्र)।
११४।३ खगेस; √ (परि, राम, वाल, पट); सुरेस (नाथ); षगपति (अन्यत्र)।
११४।७।२ √; √ (राम, वाल, पट, नाथ); गए ब्रह्मपद तजि सरीर रन (अन्यत्र)।
११४।१२ प्रभु; √ (राम, पट, नाथ); प्रभुहि (वाल); रामहि (अल); राम (अन्यत्र)।
११५।११ कृपासिंधु मैँ आउब; √ (राम, वाल, पट, नाथ); तव मैं आउव सुनहु प्रभु (अन्यत्र)।
११६।७ अवधपुर; √ (वड़, राम, मन, पट, नाथ); अवध प्रभु (अन्यत्र)।
११६।८ मृदु; अति (मया); प्रभु (उद, व्रज, पट)।

११६।१० भरत दसा सुमिरत; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); दसा भरत कै सुमिरि (अन्यत्र)।
११६।११ गात; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); सरीर (अन्यत्र)।
११६।१३ बीते अवधि जाउँ जौ; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); जौ जैहौं बीते अवधि (अन्यत्र)।
११६।१४ सुमिरत अनुजप्रीति; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); प्रीति भरत कै समुझि (अन्यत्र)। प्रभु; मोहि (वढ़÷); अति (नाथ)।
११६।१६ पाइहहु; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); सिधाइहहु (अन्यत्र)।
११८।२ सब; ✓ (राम, बाल, पट, नाथ); प्रभु (अन्यत्र)।
११८।१२ सहित चले बिनय बिबिध बिधि; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); समेत तव चले विनय वहु (अन्यत्र)।
११८।१३ ✓; ✓ (राम, बाल, पट, नाथ); जामवंत कपिराज नल अंगदादि हनुमान (अन्यत्र)।
११९।१२ इहाँ सेतु बाँध्यो अरु; ✓ (राम, वाल); इहा शींधु बाधेउ अरु (पट); इहां सेतबंधु कीअ अरु (नाथ); यह देषु सुंदर सेतु जह (अन्यत्र)।
११९।१३ कृपानिधि; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); क्रीपातनऐ (मन); कृपायतन (अन्यत्र)।
११९।१४ कृपासिंधु; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); करुनासिंधु (अन्यत्र)।
१२०।१ तुरत; ✓ (राम, पट); तुरित (वाल, नाथ); सपदि (अन्यत्र)।
१२०।१० ✓; ✓ (राम, बाल, नाथ); ⊙ (पट); तव रघुनायक श्री सहित अवधहि कीन्ह प्रनामु (अन्यत्र)।
१२०।११ नयन तन पुलकित; ✓ (राम, वाल); ⊙ (पट); नऐन पुलकित तन (नाथ); विलोचन पुलक तन (अन्यत्र)।
१२०।१२ पुनि; ✓ (राम, बाल, पट, नाथ); वहुरि (अन्यत्र)।
१२०।१३ सहित विप्रन्ह कहुँ; ✓ (राम, वाल, पट, नाथ); समेत महीसुरन्ह (अन्यत्र)।
१२१।६ प्रभु; ✓ (राम, बाल, पट, नाथ); हरि (अन्यत्र)।
१२१।२१ रघुबीर के; ✓ (राम, वाल, नाथ); रघुवीर की (पट); रघुपति (अन्यत्र)। जे सुनहिं; ✓ (राम, पट, नाथ); जो सुनहिं (बाल); सुनहि जे सदा (अन्यत्र)।

सप्तम सोपान (उत्तरकांड)

दो २।५ पुर; प्रभु (राम, वलि, वाल, नाग, मन, व्रज, नाथ); गुन (पट)।
२।१२ काह; कहा (वलि, बाल, उद, व्रज, पट, नाथ)।
२।२० सद्गुनसिंधु; सदगुनपाथ (रघु±, व्रज)।
४।१ मनोहर; सुधाकर (नाग, मन)।
४।४ सरिस प्रिय मोहि न; पुरी सम प्रिय नहि (राम, नाग, मन,); सरिस मोहि प्रिय नहि (व्रज); पुरी शम प्रीय न (पट); पुरिस्म प्रिअ नहिं (नाथ)।
५।३ गहे; धरे (राम, नाग, मन, पट, नाथ); गाहे (उद); गहेउ (व्रज)।
५।१३ बूझत; पूछत (बाल, पट, नाथ)।
६।१७ पुनि पुनि; पुनि (रघु, राम, वाल, नाग, उद, व्रज); वहुरी (पट)।

८।५ लागन; ✓ (रघु, परि); लागहु (अन्यत्र)। कुसल; ✓ (रघु, परि, उद); सबन्हि (नाथ); सकल (अन्यत्र)।

८।६ सब; सभ (राम, नाग); मन (वाल, व्रज)।

८।१३ वर; ✓ (रघु, परि, नाग); नर (अन्यत्र)।

९।१ सजि निज; सजि सजि (वाल, नाथ); शजी धरे (पट)।

९।१२ नाक; गगन (राम, वलि, मन, नाथ)।

९।१३ भगवान; रघुनाथ (पट, नाथ)।

१०।२ हरि; प्रभु हरि (परि); प्रभु (वाल, व्रज, पट)।

१०।४ बसिष्ठ द्विज; वसिष्ट हित (नाग, मन÷); वश्ठही तव (मन±); वशीश्ट ओप (पट)। सुभदाई; समुदाई (राम); शुषदाइ (पट); स्मुंदाइ (नाथ)।

१०।९ सिरु नाइ; हरपाइ (राम, नाग, मन, नाथ)।

११।६ सकहिँ न गाई; कहि न सिराई (नाग, मन)।

११।८ कोटि छवि छाजे; कोटि छवि लाजे (परि, व्रज, पट); देखि शत लाजे (राम, नाग, मन, नाथ); कोटि छवि राजे (वलि)।

११।११ सोभति; सोभित (वलि, वाल, मन, व्रज, पट, नाथ)।

११।१२ मातु; सासु (वड़, व्रज, पट)।

१२।१४ मुनिमन; सुरमन (राम, नाग, मन)।

१३।१ ✓; जय सर्गुन रूप अनूप भूप वीचार वीवुध सिरोमने (रघु); जय सगुन निर्गुन रूप भूप अनूप रूप सिरोमनि (वलि); जय सगुन निर्गुन रूप अनूप भूप सिरोमने (वाल, पट); जय सगुन निगुने रूप अनुप सिरोमने (उद); जय सगुन निर्गुन रूप अनूपम भूपं सकल शिरोमने (व्रज); जऐ सगुन निर्गुन रूप भूप अनुप राम सीरोमने (नाथ)।

१३।३ संसारभार; संभारि कर (रघु); संसार (नाथ÷)।

१३।२५ बेदन्ह; देवन्ह (वाल, पट)।

१५।१२ तिन्ह; निसि (वलि, वाल, उद, पट); निशि तिन (व्रज)।

१९।७ भाँति; वहु भाति (वलि, नाग, मन); भाँति भाँति (उद); बहुतति (व्रज); बहु विधि (पट, नाथ)।

२२।१० जीतहु; जितहु (वड़, रघु, परि, उद, पट); जिनहु (वलि); जीतेहु (मन, व्रज)। सुनिअ अस; ✓ (राम); सुनि अस (नाग, मन, नाथ); अस जग मुनि (व्रज); अस सुनिअ जग (अन्यत्र)।

२३।११ जेतनेहिँ; तेज तेहि (वाल); जितनहि (वलि); जतनेहि (नाग, मन); जित तेही (उद); जीतनहि (व्रज); तेज नेही (पट); तेज नहि (नाथ)।

२४।९ रमा; राम (वाल, व्रज, पट)।

२६।७ गृह होहिँ; होहिं वेद (रघु, परि)।

२७।१३ गृह; रुचिर (व्रज)। प्रति रचि; गृह प्रति (वड़, राम, वलि, नाग, मन, नाथ); गृह (वाल); ग्रह प्रति रचि (उद); गृह गृह (व्रज); ग्रीह जो (पट)। लिखे; रचे (व्रज, पट)।

२८।६ **निरखहिं**; √(रघु, परि); देषैं (वलि, पट); देखहिं (अन्यत्र)।
२८।६ **चारु**; चिर (वड़); चार (रघु÷); रुचिर (राम, नाग, मन, व्रज, नाथ)।
२९।४ **जिन्ह**; √(वड़, रघु, परि); तेन्ह (मन); तिन्ह (अन्यत्र)। **कीँ**; √(रघु); को (परि); की (नाग, उद); के (अन्यत्र)।
३३।६ **संत पंथ**; संत संग (परि, राम, नाग, मन, नाथ)।
३३।१० **सव**; सद (राम, वलि, वाल, नाग, मन, नाथ)।
३४।३ **जय जय गुनसागर**; जय गुननीधी सागर (रघु); जै गुनसागर (पट)।
३५।२ **कामधुक धेनु**; काम सुरधेनु (वड़, राम, नाग, मन, नाथ)।
४२।६ **अतिसय**; सुर अति (रघु)।
४३।२ **सदसि अनुज मुनि**; गुर मुनि अरु द्विज (राम, नाग, मन, पट, नाथ)।
४७।१ **सबन्हि**; परम (वलि)। **कृपाधाम**; कृपानिधान (नाग, मन÷, व्रज, पट)।
४७।८ **निज**; √(रघु, परि); निज निज (अन्यत्र)। **सुआएसु**;√(रघु, परि); आयसु (अन्यत्र)।
४८।२ **चरनोदक**; √(रघु, परि); पादोदक (अन्यत्र)।
४८।१० **सम आन**; समान (वड़, वाल, मन, व्रज, नाथ÷)।
५२।१० **कृपाल मैँ**; कृपायतन (राम, नाग, मन, पट, नाथ); कृपाल मई (वलि); कृपालय (व्रज)।
५३।६ **रामचरित**; √(रघु, परि, उद); रामचरन (अन्यत्र)।
५७।६ **ताला**; काला (परि, नाग, मन÷, उद, व्रज); तास (वलि); ×ला (मन+); साला (पट)।
५८।८ **अवतरा**; √(वड़, रघु); अवतार (अन्यत्र)।
६०।२ **उर**; अति (नाग, मन); अस (पट, नाथ)।
६१।२ **बिनीत**; बिनती (राम, बलि, वाल, नाग, व्रज, पट); विनति (उद, नाथ)।
६२।१२ **भगत**; √(वड़, रघु, परि, मन); भगति (अन्यत्र)।
६३।४ **बृद्ध बृद्ध**; बृंद बुद्ध (वाल); बृंद बृंद (उद)।
६४।३ **पूग**; पुंज (वड़, राम, व्रज, नाथ); भूष (बलि)।
६७।१ **सिधाए**; √(रघु, परि, उद); दिसि धाए (अन्यत्र)।
६८।१२ **संदोह**; सो मोह (रघु)।
७२।३ **गुनधामा**; बलधामा (राम, वलि, नाग, मन, पट, नाथ)।
७६।१ **सेवक**; सेवत (रघु, परि)।
७७।६ **चरित होति मोहि**; मोहि होति अति (राम, नाग, मन, पट, नाथ); चरित होत मन (अल)।
७८।१ **आवत**; √(रघु, परि, नाग, मन, पट, नाथ); आनत (अन्यत्र)।
७८।८ **सुधा**; दुबिध (वलि); दूध (अल); मृषा (नाग); मीथ्या (मन); बुधी (उद+); पिधा (व्रज÷); दुग्ध (पट); दुगुधा (नाथ)।
८१।८ **उदारा**; अपारा (राम, अल, नाग, पट); प्रकारा (मन); अदारा (नाथ)।

८।१२ **समीर;** शरीर (रघु, परि, वलि, वाल, मन÷, उद, व्रज)।

८४।१ **जाना;** नाना (वड़+, रघु, नाग, मन, उद, व्रज); ⊙ (वड़÷)

८४।२ **सब;** तव (रघु–, परि); वर (वाल)।

८६।३ **संसारा;** परिवारा (रघु–, परि)।

८६।७ **जेहि गति मोरि न;** भक्ति मोरि नहि (रघु–, परि); जेहि भगति मोरि न (नाग, मन); जेही मती मोरी न (पट, नाथ)।

८६।९ **जीवहु;** जीवन (वड़, परि, वलि, अल, व्रज); जीवन्ह (वाल, उद, पट, नाथ)। **मोहि;** मम (वड़, वाल); सम (अल)।

८७।५ **अयाना;** सयाना (रघु–, वलि)।

८७।७ **मोर उपाया;** मम उपजाया (रघु–, परि)। **दाया;** माया (वाल, पट)।

८७।१० **सर्वभाव;** भक्ति भाव (रघु–, परि)।

८८।१ **सुमिरेसु भजेसु;** सुमिरि स्वरूप (रघु–, परि)।

९०।१० **जीव;** मन (रघु–, परि)। **लह;** लहहि (रघु–, परि); लहे (वलि); लहै (अल, उद)।

९०।१२ **रघुबीर;** रणधीर (रघु–, परि, नाथ)।

९१।४ **सिव;** मुनि (रघु–, उद, व्रज)।

९२।६ **रामु निगम;** निगमागम (रघु–, परि, अल)।]

९२।१२ **सुनि;** ते (रघु–, परि)।

९२।१६ **सीतारवन;** सीतापतिहि (रघु–, परि); सीतावरहि (अल)।

९३।२ **श्रीरघुपति;** श्रीरघुवर (रघु–, परि, वलि); श्रीरघुपतीही (पट)।

९३।६ **प्रसंसि;** प्रसंसेउ (रघु–, परि); प्रसंस्यौ (वलि)।

९३।११ **बूझौं;** पूछौ (रघु–, परि, पट, नाथ); बूझेउ (अल)।

९४।६ **मुधा;** मृषा (वड़, रघु–, परि, वलि+, नाग, मन, व्रज+); मीथ्या (अल); मुगधा (उद, व्रज÷)। **सोउ;** सो (रघु–, परि; वलि, अल, उद, व्रज, नाथ)।

९५।१ **परम;** सहित (रघु–, परि, वलि, अल, मन)।

९८।१ **रत सब;** व्रतरत (वड़, वाल, अल); रत व्रत (रघु–, परि); रत नर (वलि); व्रत रति (उद); व्रत (व्रज)।

९८।१० **जोगी;** तापस (रघु÷, परि, उद, व्रज)।

९८।११ **मान्य तेइ;** मान्य वहु (रघु–, परि); मान्यता (वलि); मानता (अल, उद, व्रज); मान अती (नाथ)।

९९।३ **देव;** वेद (रघु–, परि, नाग, उद, व्रज)।

९९।८ **धर्म;** ज्ञान (रघु–, परि)।

९९।९ **कहहिं;** करहिं (अल, नाग, मन)।

९९।१० **लागि;** कारन (रघु–, परि); लागे (वलि); लागि ते (नाग, मन)।

१००।३ **तिन्हहूँ;** औरनि (रघु–, परि); औरहि (अल); औरन्ह (उद); औरन (व्रज)।

१००।११ **कलि;** सकल (रघु–, परि, पट, नाथ); सव (अल)।

१०१।४/२ ✓; अबला नहि डीठ परी जब लो (रघु–, परि); अबला मन दीष नही जब लो (अल); अबलान न डीठ परी जब लों (उद, व्रज)।

१०१।६ गुनदूषक; गुण दूषन (रघु–, परि)।

१०१।१२ मद; सव (रघु–, परि)।

१०१।१४ धरनी; धरनि पर (बड़, रघु–, परि, नाग, मन, व्रज+); धरनि जल (बलि); धरनि मह (अल)।

१०२।८ अचार; विचार (बड़, रघु–, परि, उद, व्रज÷)।

१०२।११ काल कलि; कराल मल (रघु–, परि)। अवगुन; गुन (रघु–, परि)।

१०२।१२ गुनौ बहुत कलिजुग कर; गुन बड तौ कलिकाल के (रघु–, परि)।

१०२।१३ कृतजुग त्रेता द्वापर; कृत त्रेता द्वापर महुँ (बड़, बाल, अल, उद, व्रज); कृत त्रेता द्वापर समै (रघु–, परि); कृत त्रेता द्वापरहु मह (बलि); कृत जुग त्रेता द्वापरहुं (नाग, मन)।

१०२।१४ सो कलि हरि; सो कलि विषे (रघु–, परि); सु कलि हरी (बलि); सो कलि मह हरि (अल); कलजुग हरी (पट); कलिजुग महु हरि (नाथ)।

१०३।८ कर; जुग (रघु–, उद, व्रज); कौ (बलि)।

१०४।५ कलिप्रभाव; कलि सुभाउ (रघु–, परि)।

१०४।७ कालधर्म; ✓(राम, बाल, नाग, नाथ); कलि अधर्म (अल); कलधम्र÷, कल अधर्म+(मन); कालभर्म (पट); कालकर्म (अन्यत्र)। अति; रति (रघु–, परि)।

१०६।१२/२✓; नृपकिरीट पुनि नयनन परई (रघु–, परि, उद, व्रज); पुनि नृप मौलि किरीटनि परई (बलि)।

१०६।१३ खगपति अस; षग षगपति (रघु–, परि)।

१०६।१४ सन; सँग (रघु–, परि, उद); सैं (अल, पट)।

१०६।१६ सो; गुर (रघु–); गुरु (परि)।

१०७।२ चित; उर (बड़, रघु–, परि, उद, व्रज)।

१०७।१२ स्वर; गिरा (बड़, रघु–, परि, बलि, बाल, उद, व्रज); सरस (नाथ)।

१०८।२० पुनि; ⊙ (रघु–, परि)। बर; वर बर (बड़); अब बर (रघु–, परि, उद, व्रज); माग सो (बाल); बर तैं (अल); ⊙ (बलि, पट); वर अब (नाथ)।

१०८।२२ भगति देइ प्रभु; पद्म भक्ति दृढ (रघु–, परि); भक्ति देहु प्रभु (बलि, पट)।

१०८।२४ करिअ प्रभु; कीजिये (रघु–, परि)।

१०९।२ इति; तव (रघु–, परि); इमि (अल); इव (उद, व्रज); अश (पट)।

१०९।१३ मम; ✓(बड़, राम, बाल, नाग, उद, व्रज); सम (अन्यत्र)।

१०९।१७ इति; तव (रघु–, परि)।

१०९।१९ काल; कालहि (बलि); बहु (अल)। बिंधि; सुबिंध्य (रघु–); सुबिंधि (परि); विंध (बाल); विधि (अल, उद, व्रज); विंद (मन+); बेवीधी (पट); बिबिधि (नाथ)। गिरि; ग्रीह (मन÷); वीवी (पट, नाथ)।

१०९।२३ राखी; असीस (रघु–, परि); साषी (अल)।

११०।४ **सकल**; सदा (रघु–, परि)।
११०।१७ **रामचरन**; रामचरित (रघु–, परि, नाग)। **मनु लाग**; अनुराग (रघु–, परि, उद, व्रज, पट); उर लाग (अल)।
१११।१२ **अगुन निरूपा**; निर्गुन रूपा (रघु–, परि)।
१११।१९ **क्रोध कि द्वतबुद्धि बिनु**; द्वैतबुद्धि विनु क्रोध किमि (रघु–, परि); क्रोधवंत द्वैतबुधि कै (अल)।
११२।६ **रहै**; करहि (रघु–,); रहहि (वलि, उद, व्रज, पट)।
११२।१० **कि पिसुनता सम**; √(राम, बाल); क्रीपीनिता राम(अल); कि विना तामस (अन्यत्र)।
११२।१९ **जे रामचरन**; राम के चरण (रघु–); जो रामचरन (अल, पट, नाथ)।
११३।३ **बच क्रम मोहि निज**; क्रम बचन मोहि (रघु–, परि, वलि, अल, नाथ)। **जन**; निज (अल, नाथ)।
११३।६ **तब**; मोहि (रघु–, परि, वलि, बाल, पट, नाथ); दीढ (अल)।
११३।७ **मुनि**; पुनि (रघु–, उद)।
११३।८ **सो**; जो (रघु–)।
११३।९ **तब**; सब (रघु–, परि, वलि, अल, उद, व्रज)।
११३।१९ **तुम्ह बसब पुनि**; तुम्ह बसहु गे (रघु–, परि); तुम बसब तुम (वलि÷); पुनि बसब तुम (वलि±, बाल, अल); तुम बसब सु पुनि (उद); तुम बसो पुनि (व्रज)।
११४।६ **बच**; √(बड़, रघु–, परि, राम, बाल); बचन (अन्यत्र)।
११५।१८ **बिषयाबस**; बिषया बिबश (बड़); जो बिषयबस (रघु–, परि); बीषैबस (अल)।
११७।६ **सुहाई**; लवाई (रघु–, परि); सोहाई (बाल, अल, पट)।
११७।११ **पाइ**; धेनु (रघु–, परि)।
११७।१६ **सुभग सु**; सुपरम (रघु–, परि, उद, व्रज)।
११७।१९ **बिज्ञानरूपिनी**; बिज्ञाननिरूपनी (बड़, वलि, नाथ); बिग्यानस्वरूपिणी (रघु–); बिज्ञानसरूपिनी (परि); बिग्याननीरूपम (अल); बीग्यान रुपी नीज (मन+)।
११८।२ **भेद**; देह (रघु–, परि, मन)।
११८।५ **सोई**; कोई (रघु–, परि, उद, व्रज, पट)।
११८।१२ **ते**; तेहि (रघु–, परि)। **हठि**; हठ (रघु–, परि, उद, व्रज, नाथ)।
११८।१३ **सो प्रभंजन**; सु प्रभंजन (रघु–, परि, बलि)।
११८।१४ **सो प्रकासा**; सु प्रकासा (रघु–, वलि); प्रकासा (बाल, नाथ)।
११८।१६ **बारि**; करै (रघु–, परि, उद, व्रज); बारिं (वलि)।
११८।१७ **बिबिध**; सुबिबिधि (रघु–, परि, व्रज)। **बिधि**; ⊙ (नाग, उद)।
१२०।५ **प्रबल**; अचल (रघु–, परि, अल)।
१२०।१० **तेइ**; ते (रघु–, अल, पट, नाथ)। **सुजतन**; सो जतन (रघु–, वलि); सुभ जतन (अल)।
१२०।२१ **काढ़हिं**; काढिये (रघु–, परि)।
१२१।४ **सुख**; दुष (बड़, अल, पट, नाथ)।
१२१।६ **कराला**; कृपाला (रघु–, परि, मन÷); रसाल (वलि); √(मन±)।

१२१।१२ ते; जिमि (रघु–, परि); नहि (राम÷, बाल, पट); √(राम±); दे जे (नाग, मन); ⊙(उद); तेही÷,√± (व्रज)।

१२१।१३ जग नाहीँ; कहु नाहीँ (बड़, रघु–, परि); कछु नाहीँ (वलि, वाल, अल, उद, व्रज)।

१२१।२० उदय; हृदय (रघु–, परि)।

१२१।३४ जरनि सोइ; जरहि सो (रघु–); जरनि सो (वाल, उद)।

१२२।१ जग; जड (रघु–, परि)।

१२२।५ सब; भव (नाग, मन, पट, नाथ)।

१२२।८ नहिं; सत (रघु–, परि, उद, व्रज)।

१२२।१८ रविहि; ससिहि (रघु–,परि); विहि (नाग); बीह (पट)।

१२३।१२ रघुनायक; रघुनाथ कर (बड़, अल, व्रज+); रघुवीर के (रघु–, परि); रघुनाथ के (वलि); रघुनाथ क (उद, व्रज÷)।

१२४।६ घोर; ताप (रघु–, परि)।

१२५।५ कोउ; को (रघु–)।

१२७।७ सोइ; सो (रघु–, परि, उद, व्रज)।

१२८।१ करि; मै (रघु–, परि, अल); कै (पट)।

१२८।३ सठही; जे शठहिँ (बड़); जे सठ (रघु–, परि); शठ÷,√± (राम); सब हिठ (उद, व्रज÷); सबहि (व्रज+)।

१२८।६ तेइ; ते (रघु–, परि, अल, उद, पट, नाथ)।

१२९।१ समनि; हरन÷, हरनि+ (रघु–); समन (परि, उद, नाथ); सवन (व्रज)।

१२९।७ गिरा; वचन (रघु–); अतिहिं (अल)।

१३०।७ बड़ बाना; बर बाना (रघु–, परि); भगवाना÷, प्रभ्रवाना+ (मन)।

१३०।११ खस; सब (रघु–); षग (राम±, नाग, मन, पट, नाथ); पस्व (उद); ⊙ (व्रज÷)।

१३०।१५ धरे; धरै (बड़, रघु–, परि, बलि, अल)।

१३०।१६ श्री रघुबर; श्री रघुपति (बड़, रघु–, बलि, वाल, अल, उद, व्रज)। हरे; हरै (वड़, रघु–, परि, वलि, अल)।

१३०।२४ रघुनाथ; रघुबंस (रघु–)।

श्लो १/२ प्राप्त्यै तु; प्राप्त्यैव (बड़); प्राप्तौ तु (रघु–, राम, वाल); प्रा× (अल); प्राथैव (नाग, मन); प्राप्तै तु (उद, व्रज); प्राजै तु (पट); प्रापै तुं (नाथ)।

१/३ तद्रघुनाथनामनिरतं; तद्रघुनाथनामनिरतः (बड़, रघु–, उद, व्रज); तद्रघुनाथनामनिरत (राम, नाग); तद्रघुनाथनामनिरता (वाल)।

१/४ भाषाबद्धमिदं; भाषाबंधमिदं (रघु–, उद, व्रज, पट); भाषाबंधिमिदं (अल); भाषा बव्वांमिमदं (नाथ)। मानसं; मानसः (अल, नाथ)।

२/३ ये; जे (वाल, नाग, मन, पट, नाथ); ज (अल); ते (उद, व्रज)।

---

(२) बढ़ोतरी

प्रथम सोपान (बालकांड)

श्लो ३V विनाप्यर्थैः समर्थो हि दातुमर्थचतुष्टयं
मंगलायतनं तन्मे वाल्ये यद्रामभाषितं ।। (उद)
७V जासु नाम जपु जानि मंगलमय मंगलकरन ।
द्रवहु सकल गुन खानि बंदौं प्रथम बिद्याधरन ।। (नर)
दोहा १ श्री सतगुर गनेस विधि हरि हर सीअ भवानि ।
बंदौं अमृत सरोज वर सदा जोरि जुग पानि ।।
सोरठा १ जौ चित चाहहु राम कस न सेवहु पद संभु को ।
तौ पावहु बिस्राम रामभजन तें भव तरिअ ।। (नाथ)
दो ४।२V सुनत कहत पर अघ न अघाहीं । जे पृथु सेष सरिस जग माहीं ।। (उद)
१०।१४V सोरठा। सकल सुमंगल मूल प्रथम पचीसी प्रेममय ।
सुनत समनि सब सूल संसय सोच विमोचनी ।। (उद)
१२।११V वेद कहहिं अस हहिं रघुराई । चहिअ भगति रति नहि चतुराई ।।
(बाल) ; १३।४V (जवा)
१४।११V तनु विचित्र कायर वचन अहि अहार मन घोर ।
तुलसी हरि भये पंछधर ता तें सबु कह मोर ।। (उद)
१५।१३V गुर गौरीस चरन चितु लाई । जासु कृपा गति मति पति पाई ।।
सादर सुमिरि सीय रघुराऊ । सेवक सिसु पितु मातु सुभाऊ ।।
हरषि हिये हनुमानहि आनी । कहउँ राम गुन ग्राम बखानी ।। (उद)
१७।२V दोहा। भरत लखन रिपुसुदन पद बंदि कहौं कर जोरि ।
अपने सील सुभाव गुन समुझि सुधारवि मोरि ।। (उद)
१७।१२V सारद निगम नवौं नित तोही । रघुपतिभगति देहु दृढ़ मोही ।। (बाल, उद)
१८।३V यह वर मैं मागौं कर जोरी । सव मिलि करहु विमल मति मोरी ।।
अग जग जीव जंतु जग माहीं । किएँ विरुद्ध भक्ति सुख नाहीं ।।
सब सन सुहृद दीनता प्रीती । श्रुति कह यह संतन्ह कै रीती ।।
दोहा। अच्छर अरथ न जानौं नहि गुन ज्ञान उपाय ।
रामचरित कछु वरनौं सव मिलि होहु सहाय ।। (बाल, उद)
१८।५V विनय सुनहु सब होहु कृपाला । भंजहु विषम विपति भवजाला ।। (बाल, उद)
२८।१३V प्रभु प्रताप महिमा जिय जासू । मोरि ऊँचि रुचि रूचिहि तासू ।। (उद)
३५।७V वकता संकरु सुकवि सुवानी । श्रोता मुनिगन मुख्य भवानी ।।
रामभगति मनि उमा भवानी । सिया राम जसु कलिमलहानी ।।

सुजसु बिसद वर हित सव दूषन । वकता सेष गंग विधु भूषन ।।
सुनहि गौरिथलु गिरि कैलासू । सभा पयोनिधि वीचि विलासू ।।(उद)
३५।१०V सुनत सपेम सुपंथ चढ़ावन । भगति विराग विवेक बढ़ावन ।।
मानस सरवर रामचरित कौ । जनकु राम सिय प्रीति सरित को ।।(उद)
३७।१७V तप जप साधन सम जम जूथा । ते विचित्र मृग विहग वरूथा ।।
अति उछाहु नित नव रितुराजू । अकथ अनूपम सकल समाजू ।।(उद)
३९।१३V तीरथ सतक पुनीत पचीसी । ते सव संगम सुनद नदी सी ।।(उद)
४३।१०V दोहा । भरद्वाज जिमि प्रस्न किय जागवलिक मुनि पाइ ।
प्रथम मुख्य संवाद सोइ कहिहौं हेतु बुझाइ ।।
(रघु, परि, जवा+, व्रज) ; ३०।१०V(उद)
७७।१०V तव रिषि तुरत गौरि पहँ गयऊ । देखि दसा मुनि विस्मै भयऊ ।।(कुंज+)
१०९।३V छल विहीन सुनि सिव मन भाई । अति प्रिय जानि प्रीति उर छाई ।।(पट, नाथ)
१४६।१०Vनील सरोज वदन छविसीवा । (उद)
१७०।७V नृप सूकर सन मंत्र दिढ़ाई । अव तौ मीत सबै वनि आई ।।(नाथ)
१७४।१०Vजो करि कपट छलै जग काहू । देइहि ईसु अधम गति ताहू ।।
विप्रवचन सुनि नृप अकुलाना । उठिपुनि विनय कीन्ह विधि नाना ।।
पुनि पुनि पद गहि कहै भुआला । श्राप अनुग्रह करहु कृपाला ।।
जव तुम्ह होव निसाचर जाई । ब्रह्मवंस तामस तनु पाई ।।
अजर अमर अतुलित प्रभुताई । जग विख्यात वीर दोउ भाई ।।
होइहि जवहि पराभव चारी । तव तुम्ह सेउब देव पुरारी ।।
सिवप्रसाद वर पाइ वहोरी । होइहि सब जग प्रभुता तोरी ।।
मिलिहहिं तोहि तव सनतकुमारा । तव तुम्ह संमुख्व श्राप हमारा ।।
दोहा । पूछिउ तुम निस्तार निज सादर सुनहु नरेस ।
सव परिवार उधार तव होइहि मुनि उपदेस ।। (जवा+, व्रज)
१७७।३V नाथ कृपा करि करहु पसाऊ । समर पराभव होउ न काऊ ।।(व्रज)
१९३।८V अकथ कथा कछु कहि न सिराई । खगपति जन्म लीन्ह रघुराई ।।(नाथ)
१९९।१३Vजेहि सुख लागि संभु तप करहीं । राज छाँडि नृप कानन चरहीं ।।
जेहि सुख चाह सनक सनकादी । जेहि जाचत परमारथवादी ।।
जेहि सुरूप मानसहि भुसुंडी । जेहि जप निस दिन सहस सुतुंडी ।।(नाथ)
१९९।१५V अंग मनोहर बरनऊँ एक रहे छवि लाय ।
उपमा देत न बनय कछु देखत हृदय जुड़ाय ।। (जवा)
२०४।४V चारौ वेद सहस श्रुति गाई । (नाथ)
२२०।८V नखसिख सुभग अंग सुठि नीको । मन क्रम बचन सजीवन जी को ।।(नाथ)
२२१।८V सारदादि सुर मुनि बलिहारी । लोचन के लोचन सुखकारी ।।(नाथ)
२२८।८V अति हरषित तनदसा बिसारी । गदगद गिरा बिबस भइ भारी ।।(नाथ)

२३४।८^{V} पिता कीन्ह पनु निपट कठोरा । अति भयभीत होत मन मोरा ।।(नाथ)
२४२।८^{V} कहा कहिअ कहि जात सो नाहीँ । रखा लखा जिन्ह तिन्ह उर माहीँ ।।(नाथ)
२५६।८^{V} सुनु गिरिजा तेहि अवसरु आए । सुर नर मुनि गन गँधरब जाए ।।
देव दनुज धरि मनुजसरीरा । त्रिअन्हि समेत सकल बर बीरा ।।(नाथ)
२८४।८^{V} देखा गुनि तब हृदै विचारा । निसचै भये राम औतारा ।।
हाथ जोरि करि असतुति कीन्हा । आसिरवाद बिबिधि विधि दीन्हा ।।(जवा)
२९५।८^{V} एहु सुधि प्रिअ पुरवासिन्हि पाए । परम रंकु जनु नवनिधि छाए ।।(नाथ)
३०४।८^{V} देखि अलौकिक वास सुहावा । हरखे अमर अमित सुख पावा ।।(नाथ)
३०८।६^{V} पाएन्ह परत भरत उर लाए । रिपुसूदनहि भेंटि बैठाए ।।
पुनि रघुवर पूछी कुसलाता । आनँदमगन भए दोउ भ्राता ।।(पट)
दोहा । मिले सवनि रघुवंसमनि विधवत कीन्ह प्रवोध ।
पुरवासिनी जहाँ लगि सव कर लीन्हेंउ सोध ।।
नगर लोग सभ भए सुखारी । चारु चंद एक ठौरु निहारी ।।(पट)
३०८।१०^{V} दोहा । मिले सवनि रघुवंसमनि विधिवत दीन्ह प्रवोध ।
पुरवासी निज द्वार गे संकर हरि विधि बोध ।। (कुंज+)
३१७।५^{V} राम मुदित मुनिवर उर लाए । किए पुन्य सव ते फल पाए ।।(पट)
३२६।३/१^{V} कुंकुम अगर सुवासित वोरे । (मन)
३६१।१२^{V} छंद । सुनु गाइ कहीँ गिरीसकन्या धन्य अधिकारी सही ।
नित प्रीति नूतन सुनत हरिगुन भक्ति अनुपम तैँ लही ।
रघुवीरपद अनुराग जल लोभागि वेगि बुझावई ।
येह जानि तुलसीदास मन क्रम वचन हरिगुन गावई ।।
सोरठा । कठिन काल मलग्रसित मन साधन कछु न होइ ।
यह विचारि विस्वास करि हरि सुमिरै बुध सोइ ।।
मन हरिपद अनुरागु करहि त्यागु नाना कपट ।
महामोह निसि जागु सोवत वीते काल वहु ।। (रघु–, वाल, नाग)

द्वितीय सोपान (अयोध्याकांड)

२।७^{V} लागि श्रवन जनु कहति बुढ़ाई । रामहि राज देन हीँ आई ।।(वाल, मन, व्रज)
३।६^{V} गुनसागर नागर श्रुति गाए । वड़े भाग मोरे गृह आए ।।
जेठे राम जगत हितकारी । सकल सराहहिँ पुर नर नारी ।।
(वाल, नाग, उद, खोज, व्रज)
४।५^{V} भरत राम सन आयसु मागी । पंछिम गे मातुल हित लागी ।।
करहु विचार न लावहु वारा । अव मुनि भा पन चौथ हमारा ।।(वाल, नाग)
६।१०^{V} सुनि सुमंत्र मन अति हरषाना । जीवन जन्म सफल करि माना ।।
जहँ तहँ धावन कोटि पठाए । मंगल द्रव्य सकल लै आए ।।

कनककलस सजि धरे दुआरे । गज रथ तुरग अनेक सँवारे ॥
बहु विधि बाँधे वंदनवारा । ध्वज पताक मनि बसन अपारा ॥
बना नगर नहि बरना जाई । सकल लोक सोभा पुर छाई ॥
(बाल, उद, खोज, व्रज)

७।१v मुनि मन इंछा करै न पावा । सो सुमंत्र पहिलेहि लै आवा ॥
(बाल, उद, खोज, व्रज)

८।५v बार बार गनपतिहि निहोरा । कीजै सफल मनोरथ मोरा ॥
भूपहृदय प्रभु प्रेरहु जाई । मति दिढ़ होउ जो मन महँ आई ॥
जो कछु इंछा हरिमन माहीं । सो पै होउ आन कछु नाहीं ॥
(बाल, उद, खोज, व्रज)

८।७v करहिं कुतूहल बिबिधि बिधाना । जाइ न बरनि सुमंगल गाना ॥ (नाथ)

१३।१०v का सोअसि सोहाग अभिमानी । निकट जहाँ भय तूँ न डेरानी ॥
(बाल, नाग, उद, खोज, व्रज)

१५।८v अति प्रिय वचन सुनाए मोही । कहु मंथरा देउँ का तोही ॥
(बाल, नाग, खोज); १५।१०v (उद)

१५।१०v सुनत वचन मंथरा रिसानी । बोली वचन कपट छल सानी ॥ (बाल, नाग)

२०।४v वचन सुनत अतिसय भय मानी । दुष्टसंग तें मति बौरानी ॥
धर्म निरत गुन ग्यान गभीरा । दुष्टसंग मति रहै न थीरा ॥
(बाल, नाग, खोज, व्रज)

२७।१०v देहु तौ जिअउँ तजउँ न तु प्राना । वचन सुनत भूपति मुसुकाना ॥ (बाल, नाग, खोज)

२९।४v संभ्रम मुरुछि परा नृप कैसें । काटें पंख परा खग जैसें ॥
(बाल नाग, उद, खोज, व्रज)

२९।६v अति ब्याकुल तन बिगलित केसा । करि धीरजु पुनि उठे नरेसा ॥
आगें सोइ बाघिनि जिमि ठाढ़ी । पुनि पुनि स्वास लेति अति गाढ़ी ॥
(बाल, नाग, उद, खोज)

२९।८v गएउ सहमि सुनि वचन कठोरा । मृगी देखि जनु दौ चहुँ वोरा ॥ (खोज)

३१।५v अब का कुमति बसी जिअ तोरें । अब लगु कहसि राम प्रिय मोरें ॥
(बाल, नाग, खोज, व्रज, नर)

३१।८v तव सुत राज करौ सुनु रानी । राम रहहुँ गृह कहु यह बानी ॥
(बाल, नाग, खोज, व्रज)

तुम्ह जनि सोचु करहु मन माही । बचन मोरि सुत्य मिथ्या नाही ॥ (नाथ)

३१।१०v बिनु रघुपति मम जीवन नाही । प्रिआ बिचारि देखु मन माही ॥
(बाल, नाग, खोज); ३१।५v (उद)

३३।३v जद्यपि नृप अति कीन्ह निहोरा । मानै नहि अति हृदय कठोरा ॥
(बाल, नाग, खोज, व्रज); ३३।४v (उद)

३५।८^{V} दीन्ह दान फिरि मागसि राजा। परिहरि लोक बेद कै लाजा ॥
होत प्रात सुत बनहि न जाई। चौथेपन नृप सुजस नसाई ॥
(बाल, नाग, उद, खोज)

३७।८^{V} कबहि उगै रबि होइ बिहाना। देखिअ नयनन्ह कृपानिधाना ॥
गज आरूढ़ अनुज श्री संगा। सोभा तन सत कोटि अनंगा ॥
करत मनोरथ निसा सिरानी। प्रात प्रगट जागे मुनि ज्ञानी ॥
(बाल, नाग, उद, खोज)
तबहि बसिष्ठ सुमंत बोलाए। हृदय हरष आतुर चलि आए ॥
(बाल, उद, खोज); ३७।१०^{V} (नाग)

४०।४^{V} चरन नाइ सिर दोउ कर जोरी। बोले बचन सुधा जनु बोरी ॥
(बाल, नाग, उद, खोज)

५८।८^{V} औरौ देव दनुज जग माहीं। जेहि न सीअ प्रिअ को जग आहीं ॥ (नाथ)

६४।४^{V} तजि सकोचु गुन निपट निदानू। नहि सुख लहै बनज बिनु भानू ॥ (मन)

६६।३^{V} कहहु दुख समउ प्रान प । (खोज)

१६८।८^{V} छंद। मन बचन कर्म कृपायतन कर दास मैं सुनु मातु री।
उर बसत राम सुजान जानत प्रीति अरु छल चातुरी।
अस कहत लोचन बहत जल तन पुलक नख लेखत मही।
हिय लाय लिये बहोरि जननी जानि प्रभुपद रति सही ॥ (राम÷, बाल, उद)
संत सुर गुरू भूसुर मारे। गोबध पातक लागु हमारे ॥ (नाथ)

१७२।७^{V} दसरथ सम न भएउ जग माहीं। अहहि न होइहहि होनउ नाहीं ॥ (नाथ)

१८४।७^{V} कहु खगेस अस कौन अभागी। छाड़ि रामपद बिषरस मागी ॥ (नाथ)

२१२।८^{V} सकल अमिअ करतलगत मोरे। पुरउब नाथ अनुग्रह तोरे ॥

२१९।७^{V} पुरजन प्रेम न कछु कहि जाई। एहु प्रसंगु जानहिं मुनिराई ॥ (नाथ)

२२०।८^{V} जेही गाउँ नगर मगु माहीं। कहहिं परसपर देखि सिहाहीं ॥ (नाथ)

२५५।८^{V} सेवा करौं सीय रघुनाथा। होइ किंकर पुरवौं बन साथा ॥
धन्य निषाद भाग अधिकाई। जा कहँ प्रभु लिए संग लगाई ॥ (खोज)

२७८।८^{V} भा सुख जीव सकल सिव पूजा। राम ध्यान पद और न दूजा ॥ (पट)

२९६।८^{V} सत्य सुकृत अलि मंजुलमूला। रसना अमिअ मधुप रस भूला ॥ (नाथ)

तृतीय सोपान (अरण्यकांड)

[सिरनाम^{V}]

दोहा। धरमधुरंधर रामप्रिअ ब्रह्मचर्ज ब्रत धीर।
रटत रहत निसि बासर राम राम रघुबीर ॥
उमा जाहि रघुनाथ प्रिअ ताहि कि बिषै सोहाहि।
हंस दैवबस कुसर परि कबहुँ कि संबुक खाहि ॥

पुरबासी वस प्रभु अवधि मगु चित वस लइलीन ।
जथा नवजाद पंख खग जननी जनक अधीन ॥ (मन)

१।१०V विनु पराध प्रभु हतै न काहू । अवसर परे ग्रसै ससि राहू ॥
जव प्रभु लिन्ह धनु सीक क वाना । क्रोध जानि भा अनल समाना ॥
(रघु, राय, व्रज, नाथ)

२।८V दोहा । जिमि जिमि भाजत सक्रसुत व्याकुल अति दुख दीन ।
तिमि तिमि धावत रामसर पाछें परम प्रबीन ॥
(रघु, परि, राय, व्रज, नाथ)

वचहि उरग बरु ग्रसे खगेसा । रघुपतिसर छुटि वचव अदेसा ॥ (रघु, राय, नाथ)

२।९V दूरिहि तें कहि प्रभुप्रभुताई । भजे जात वहु विधि समुझाई ॥
(रघु, परि, राय, नाथ)

४।२६V जनम जनम प्रभु तव पद कंजा । वढ़ी प्रेम चकोर जिमि चंदा ॥
देखि राम मुनि विनय प्रनामा । विविध भाँति पाएउ विस्रामा ॥
(रघु, राय, व्रज, नाथ)

५।१V जे सिय सकल लोक सुखदाता । अखिल कोटि ब्रह्मांड कि माता ॥
तेउ पाइ मुनिवर मुनिभामिनि । सुखी भईं कुमुदिनि जिमि जामिनि॥
(रघु, राय, व्रज, नाथ)

५।३V जाहि निरखि दुख दूरि पराहीं । गरुड़ जानि जिमि पन्नग जाहीं ॥
दोहा । असे बसन विचित्र सुठि दिए सीय कहुँ आनि ।
सनमानी प्रिय वचन कहि प्रीति नं जाइ बखानि ॥
(रघु, राय, व्रज, नाथ)

५।११V दोहा । उत्तम मध्यम नीच लघु सकल कहउँ समुझाइ ।
आगे सुनहिं तें भव तरहिं सुनहु सीय चितु लाइ ॥
(रघु परि, राय, मन, व्रज, नाथ)

६।१८V दोहा । मुनिहु कि अस्तुति कीन्ह प्रभु दीन्ह सुभंग बरदान ।
सुमनवृष्टि नभ संकुल जय जय कृपानिधान ॥
(रघु, व्रज); ६।१४V (राय, नाथ)

७।५V आश्रम बिपुल देखि मग माहीं । देवसदन तेंहि पटतर नाहीं ॥
वहु तड़ाग सुंदरि अबराईं । भाँति भाँति सब मुनिन्ह लगाईं ॥
तेंहि दिन तहँ प्रभु कीन्ह निवासा । सकल मुनिन्ह मिलि कीन्ह सुपासा॥
दोहा । आनि सुआसन मुदित मन पूजि पहुनई कीन्ह ।
कंद मूल फल अमिअ सम आनि राम कहुँ दीन्ह ॥
अनुज सीय सह भोजनु कीन्हा । जो जेहि भाव सुभग बरु दीन्हा ॥
होत प्रभात मुनिन्ह सिरु नावा । आसिरबाद सबन्हि सन पावा ॥
सुमिरि उमा सिव सिद्धि गनेसा । पुनि प्रभु चले सुनहु उरगेसा ॥
वन अनेक सुंदर गिरि नाना । नाघत चले जाहिं भगवाना ॥ (रघु, राय)

७६/१^v । गर्जत घोर कठोर रिसाता ॥
रूप भयंकर मानहु काला । बेगवंत धाएउ जिमि व्याला ॥
गगनदेव मुनि किंनर नाना । तेहिं छन हृदय हारि कछु माना ॥
तुरतहि सो सीतहि लै चलेऊ । रामहृदय कछु विस्मै भएऊ ॥
समुझा हृदय केकई करनी । कहा अनुज सन बहु विधि बरनी ॥
बहुरि लखन रघुवरहि प्रबोधा । पाँच बान छाड़ा करि क्रोधा ॥

। छंदु ।

भये क्रुद्ध लखनु सँधानि धनु सर मारि तेहि व्याकुल कियो ।
पुनि उठा निसिचर राखि सीतहि सूल लै छाड़त भयो ।
जनु कालदंड कराल धावा विकल सब खग मृग भए ।
धनु तानि श्रीरघुवंसमनि पुनि मारि तन झर्झर किए ॥

दोहा। बहुरि एक सर मारा परा धरनि धुनि माथ ।
उठेउ प्रबल पुनि गर्जेउ चलेउ जहाँ रघुनाथ ॥

असेइ कहत निसाचर धावा । अब नहि बचहु तुम्हहि मैं खावा ॥
आव प्रबल येहि विधि जनु भूधर । होइहि काह कहहिं व्याकुल सुर ॥
तासु तेज तें मरुत ससाना । टूटहिं तरु उड़ाइ पाषाना ॥
जीव जंतु जहँ लगु रहे जेते । व्याकुल भाजि चले तहँ तेते ॥
उरग समान जोरि सर साता । (रघु, राय)
७७^v तासु अस्ति गाड़ेउ प्रभु धरनी । देवन्ह मुदित दुंदभी हनी ॥
सीता आइ चरन लपटानी । अनुज सहित तब चले भवानी ॥
इहाँ सक्र जहँ मुनि सरभंगा । आएउ सकल देव निज संगा ॥
गए कहन प्रभु देन सिखावन । दिसि बल भेद बसत जहँ रावन ॥

दोहा। सुरपतिसंसय तम सम रघुपतितेज दिनेस ।
रावनजीवन निसि सम वीतें छुटहिं कलेस ॥

सुनासीर प्रभु तेहि छन देखा । तेजनिधान सुभ्र अति बेषा ॥
तुरग चारि बल मरुत समाना । रथ रवि सम नहि जाइ बखाना ॥
छिति न परस अंतरहित रहई । स्वेत छत्र चामर सिर ढरई ॥
अनुजहि प्रियहि कहा समुझाई । सुरपति महिमा गुन प्रभुताई ॥
जेहि कारन बासव तहँ आए । सो कछु बचन कहै नहि पाए ॥
वीचहि सुनि आइब प्रभु केरा । कहि सारथिहि तुरत रथ फेरा ॥
दूरिहि तें करि प्रभुहि प्रनामा । हरषि सुरेस गएउ निज धामा ॥ (रघु, राय)
१०।८^v छंदु। सोउ प्रिय अति पातकी जिन्ह कबहुँ प्रभु सुमिरन करचो ।
ते आजु मैं निज नयन देखिहीं पुरित पुलकित हिय भरचो ॥
जे पद सरोज अनेक मुनि करि ध्यान कबहुँक पावहीं ।
ते राम श्रीरघुबंसमनि प्रभु प्रेम तें सुखु मानहीं ॥

दोहा। पन्नगारि सुनु प्रेम सम भजन न दूसर आन।
येंह विचारि मुनि पुनि पुनि करत राम गुन गान॥ (रघु, राय)
१०।१६[V] सोरठा। रामु सुसाहिवु संत सेवक दुख दारिद दवन।
मुनि सन प्रभु कह हंत उठु उठु द्विज मम प्रान सम॥ (रघु, राय)
११।२०[V] सोरठा। मायावस जस जीव रहहिँ विवस संतत मगन।
तिमि लागहुँ प्रिय राम करुनाकर सुंदर सुखद॥ (रघु, राय)
११।२१[V] रामभगति तजि चह कल्याना। सो नर अधम सूकाल समाना॥(रघु, राय)
१२।१[V] पुनि प्रनाम करि जुग कर जोरी। सुनहु नाथ कछु विनती मोरी॥(रघु, राय)
१२।३[V] चले जात मगु तव पद कंजा। देखिहौँ सुनु बिराध मद गंजा॥(रघु, राय)
१२।५[V] आश्रम देखि महा सुचि सुंदर। सरित सरोवर हरषित भूधर॥
बनचर जलचर जीव जहाँ तेँ। बैर न करहिँ प्रीति सबहीँ तेँ॥
दोहा। तरु बहु विधि विहंग मय बोलत बिविध प्रकार।
बसहिँ सिद्ध मुनि तप करहिँ महिमा गुन आगार॥ (रघु, राय)
१२।१५[V] पाइ सुथल जल हरषित मीना। पारसु पाइ सुखी जिमि दीना॥
प्रभुहि निरखि सुख भा एहि भाँती। चातक जिमि पाए जल स्वाती॥(रघु, राय)
१३।३[V] दिजद्रोही न बचहि मुनिराई। जिमि पंकजवन हिम रितु पाई॥(रघु, राय)
१३।५[V] सोरठा। भृकुटी निरखत नाथ (तव) रहत सदा पद कमल तर।
जिन्ह डारे निज उदर (महुँ) बिबिध बिधाता सिद्ध हर॥
अति कराल सब पर जगु जाना। अवरौ कहौ सुनिय भगवाना॥(रघु, राय)
१३।१३[V] सोरठा। जेहि जीव पर तव मया रहत तुम्हहि संतत बिवस।
तिन्हहु कि महि मन जान सेवक तुम्ह कहुँ प्रानप्रिय॥ (रघु, राय)
१३।१५[V] गोदावरी नदी तहँ बहई। चारिहु जुग प्रसिद्ध सो अहई॥(रघु, राय)
१३।१८[V] दिब्य लता द्रुम प्रभुमन भाए। निरखि राम ते उभय सुहाए॥
लखन राम सिय चरन निहारी। कानन अघ गा भा सुखकारी॥(रघु, राय)
१७।१[V] नाथ सुने गत मम संदेहा। भएउ ज्ञान उपजेउ नव नेहा॥
अनुजवचन सुनि प्रभुमन भाए। हरषि राम निज हृदय लगाए॥(रघु, परि, राय)
१७।६[V] दोहा। अधम निसाचरि कुटिल अति चली करन उपहास।
सुनु खगेस भावी प्रबल होइ चह निसिचरनास॥ (रघु, राय)
१७।१४[V] दोहा। केहरि सम नहि करिवर लवा कि बाज समान।
प्रभु सेवक इमि जानहु मानहु बचन प्रमान॥ (रघु, राय)
१७।१९[V] बिथुरे कच दसनन विकराला। भृकुटी कुटिल करन लगि गाला॥(रघु, राय)
१७।२०[V] अनुज राममन की गति जानी। उठे रिसाइ तब सुनहु भवानी॥(रघु, राय)
१८।१[V] स्याम घटा देखत घन केरी। तहँ बासवधनु मनहु उए री॥(रघ, राय)
१८।३[V] चौदह सहस सुभट सँग लीन्हे। जिन्ह सपनेहु रन पीठि न दीन्हे॥(रघु, राय)
१८।६[V] दोहा। निज निज बल सब मिलि कहहिं एकहि एक सुनाइ।

वाजन लगेउ जुझाऊ हरषु न हृदय समाइ ॥ (रघु, राय)

१८।९v कोउ कह सुनिय सत्य हम कहहीं । कानन फिरहिं बीर कोउ अहहीं ॥
एकें कहा मष्ट भै रहहू । खर के आगे अस जनि कहहू ॥
बहु विधि कहत बचन रनवीरा । आए सकल जहाँ रघुवीरा ॥ (रघु, राय)

१८।११v घेरि रहे निसिचरसमुदाई । दंडक खग मृग चले पराई ॥ (रघु, राय)

१९।७v दोहा । भए कालवस मूढ़ सव जानहिं नहि रघुवीर ।
मसकफक की मेरु डर सुनहु गरुड़ मतिधीर ॥ (रघु, राय)

१९।८v आजु भएउ वड़भाग हमारा । तोहरे प्रभु अस कीन्ह विचारा ॥ (रघु, राय)

१९।१३v समर माँह कर जो पछतावा । सो नर कवहुँ की सुभ गति पावा ॥ (नाथ)

२०।३v एक एक को न सँभार । करै तात भ्रात पुकार ॥
कोउ कहै खर का कीन्ह । जो जुद्ध इन्ह सन लीन्ह ॥
जाको वान अतिहि कराल । असै आइ मानहु काल ॥ (रघु, राय)

२०।५v दोहा । उमा एक निज प्रभुहि वस पुनि उन्ह के वड़भाग ।
तरन चहहिं प्रभुसर लगे विना जोग जप जाग ॥ (रघु, राय)

२२।८v सोरठा । अति सुकुमारि पिआरि पटतर जोगु न आहि कोउ ।
मैं मन दीख विचारि जहाँ रहै तेहि सम न कोउ ॥
अजहु जाइ देखव तुम्ह जवहीं । होइहहु विकल तासु वस तवहीं ॥
जीवनमुक्त लोक वस ताकें । दसमुख सुनु सुंदरि असि जाकें ॥ (रघु, राय)

२२।१०v विनु पराध असि हाल हमारी । अपराधी किमि बचहि सुरारी ॥ (रघु, राय)

२२।१२v भएउ सोच मन नहि विश्रामा । वीतहि पल मानहु सत जामा ॥ (रघु, राय)

२३।७v रथ अनूप जोरे खर चारी । वेगवंत इमि जिमि उरगारी ॥
छंद । उरगारि सम अति वेगु वरनत जाइ नहि उपमा कही ।
सिर छत्र सोभित स्याम घन जनु चवर सेत विराजही ।
एहि भाँति नाघत सरित सैल अनेक वापी सोहहीं ।
वन बाग उपवन वाटिका सुचि नगर मुनिमन मोहहीं ॥
दोहा । वहु तड़ाग सुचि विहग मृग वोलत विविध प्रकार ।
एहि विधि आएउ सिंधु तट सत जोजन विस्तार ॥
सुंदर जीव बिबिध विधि जाती । करहिं कोलाहल दिनु अरु राती ॥
कूदहिं ते गर्जहिं घन नाई । महावली वल वरनि न जाई ॥
कनकवालु सुंदर सुखदाई । वैठहिं सकल जंतु तहँ जाई ॥
तेहि पर दिब्य लता द्रुम लागे । जेहि देखत मुनिमन अनुरागे ॥
गुहा विविध विधि रहहि बनाई । वरनत सारदमति सकुचाई ॥
चाहिय जहाँ रिषिन्ह कर वासा । तहाँ निसाचर करहिं नेवासा ॥
दसमुख देखि सकल सकुचाने । जे जड़ जीव सजीव पराने ॥ (रघु, राय)

२४।७v नवनि नीच कै अंतहुँ घाता । संत पुरान निगम मत माता ॥ (नाथ)

२५।१०^v रा अस नाम सुनत दसकंधर । रहत प्रान नहि मम उर अंतर ।। (रघु, राय)
२६।१४^v सीता लखन सहित रघुराई । जेहि वन बसहिं मुनिन्ह सुखदाई ।। (रघु, राय)
२७।६^v दोहा। अस कहि चले तहाँ प्रभु जहाँ कपटमृग नीच ।
देव हरष बिस्मै विवस (जिमि) चातक वरषा वीच ।। (रघु, राय)
२८।४^v सौंपि गये मोहि रघुपति थाती । जौ तजि जाउँ तोषु नहि छाती ।।
येहि जिय जानि सुनहु मम माता । पूछत कहव कवनि मैं बाता ।। (रघु, राय)
२८।५^v चहुँ दिसि रेख खचाइ अहीसा । बारंबार नाइ पद सीसा ।। (रघु, राय)
२८।६^v चितवहिं लखन सीय फिरि कैसें । तजत बंछ निज मातुहि जैसें ।।
दोहा। एक डरत डर राम की दुसरे सीय अकेलि ।
लखन तेज तन हत भयो जिमि डाढ़ी दव वेलि ।। (रघु, राय)
२८।१०^v करि अनेक विधि छल चतुराई । मागेउ भीख दसानन जाई ।।
अतिथि जानि सिय कंद मूल फल । देन लगी तेहि कीन्ह बहुरि छल ।।
कह दसमुख सुनु सुंदरि वानी । वाँधी भीख न लेउँ सयानी ।।
विधिगति वाम कालकठिनाई । रेख नाघि सिय बाहेर आई ।।
दोहा। विस्वभरनि अघदल दलनि करनि सकल सुरकाज ।
जाना नहि तेहि समय (मह) दससीस कपट के साज ।। (रघु, राय)
२८।१५^v वायस कर चह खगपतिसमता । सिंधु समान होइ किमि सरिता ।।
खरि कि होइ सुरधेनु समाना । जाहि भवन निज सुनु अज्ञाना ।। (रघु, राय)
२९।३^v कैकेइ के मन जो कछु रहेऊ । सो विधि आजु मोहि दुख दएऊ ।।
पंचवटी के खग मृग जाती । दुखी भए जलचर बहु भाती ।। (रघु, राय)
२९।६^v दोहा। बहु विधि करति विलाप नभ लिएँ जात दससीस ।
डरत न खल बर पाइ भल जो दीन्हो अज ईस ।। (रघु, राय)
२९।८^v अहह प्रथम तनु मम बल नाही । तदपि जाइ देखौं बल ताही ।। (रघु, राय)
२९।१४^v दोहा। मम भुज बल नहि जानत आवत तपन्ह सहाइ ।
समर चढ़े तौ येहि हतौं जियत न निज थल जाइ।। (रघु, राय)
२९।१९^v दसमुख उठि कृत सरसंधाना । गीध आइ काटेउ धनु बाना ।। (रघु, राय)
२९।२०^v दोहा। जेहि रावन निज वस किए मुनिगन सिद्ध सुरेस ।
तेहि रावन सन समर कर धीर बीर ग्रिद्धेस ।।
सुस्त भए पुनि उठि सो धावा । मारै गीध न सन्मुख आवा ।।
कीन्हेसि बहु जब जुद्ध खगेसा । थकित भएउ तव जरठ गिधेसा ।। (रघु, राय)
२९।२२^v मन महु गीध परम सुख माना । रामकाज मम लागेउ प्राना ।। (रघु, राय)
२९।२८^v उहाँ विधाता मन अनुमाना । सुरपति बोलि मंत्र अस ठाना ।।
तात जनकतनया पहि जाहू । सुधि न पाव जिमि निसिचरनाहू ।।
अस कहि बिधि सुंदर हबि आनी । सौंपि बहुरि बोले मृदु बानी ।।
एहि भच्छन कृत छुधा न प्यासा । बरष सहस एह संसय नासा ।।

सो प्रसाद लेइ आएसु पाई । चलेउ हृदय सुमिरत रघुराई ॥
कछु बासव माया निज मोई । रच्छक रहे गये तहँ सोई ॥
तदपि डरत सीता पहिं आएउ । करि प्रनाम निज नाम सुनाएउ ॥
निस्चय जानि सुरेस सुजाना । पिता जनक दसरथ सम माना ॥
करि परितोष दूरि करि सोका । हविषि खवाइ गयउ निज लोका ॥(रघु, राय)
३०।३ᵛ अहह तात भल कीन्हेहु नाहीं । सीय बिना मम जीवनु नाहीं ॥
येहि तें कवनि विपति बड़ि भाई । छोड़ेहु सीय काननहि आई ॥
३०।६ᵛ दोहा। कानन रहेउ तड़ाग इव चक चकई सिय राम ।
रावन निसि बिछुरन भएउ (सुख) बीते चारिउ जाम ॥
परदुख हरन सो कस दुख ताही । भा बिषाद तेन्हहुँ मन माहीं ॥(रघु, राय)
३०।१५ᵛ दोहा। फनि मनिहीन (दीन) मीनु जिमि त्यागत सीतल बारि ।
तिमि ब्याकुल भए लखन तहँ रघुवरदसा निहारि ॥ (रघु, राय)
धरि उर धीर बुझावहिं रामहि । तजहिं न सोक अधिक सुख धामहि ॥
३०।१७ᵛ सरबर अमित नदी गिरि खोहा । बहु बिधि लखन राम तहँ जोहा ॥
सोच हृदय कछु कहि नहि आवा । टूट धनुष सर आगे पावा ॥
कहुँ कहुँ सोनित देखिय कैसे । सावन जल भा डंबर जैसे ॥
कहत राम लछिमनहि बुझाई । काहूँ कीन्ह जुद्ध एहि ठाई ॥(रघु, राय)
३४।२ᵛ दुष्टौ धेनु दुहिअ सुनु भाई । साधु रासभी दुही जाई ॥
बचन ज्ञान रत सुद्र कपाली । ग्रहहिं न तास बचन मतिसाली ॥
जउ जुठार हवि स्वान कि कागा । तेहि पर बुध न करहिं अनुरागा ॥(उद).
३६।६ᵛ दोहा। सब प्रकार तव भाग बड़ मम चरनन्हि अनुरागु ।
तव महिमा जेहि उर बसिहि तासु परम जग भागु ॥
बचन सुनत सबरी हरषानी । पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई ॥(रघु, राय, मन)
बिहसी चरन कमल लपटानी । सुनि सुबचन हरष कहुँ पाई ॥(राय, मन)
३६।११/१ᵛ मुनिवर विपुल रहे जहँ छाई ।
रिषि मतंग महिमा गुन भारी । जीव चराचर रहत सुखारी ॥
बैर न कर काहू सन कोऊ । जा सनु बैर प्रीति कर सोऊ ॥
सिखर सुहावन कानन फूले । खग मृग जीव जंतु अनुकूले ॥
। करहु सफल स्रम सब कर जाई ॥(रघु, राय, मन)

चतुर्थ सोपान (किष्किंधाकांड)

१।१२ᵛ हसि बोले रघुवंसकुमारा । विधि को लिखा को मेटै पारा ॥(नाग, ब्रज+, ग्रह)
४।१ᵛ विनै बहोरि जोरि जुग पानी । प्रेम सुधा सानी मृदु बानी ॥(ब्रज)
६।१ᵛ दुंदुभि दैत्य महा बलवाना । बधे बालि तेहि कृपानिधाना ॥(ब्रज)
६।७ᵛ मैं निज मन तब कीन्ह बिचारा । खल बल दनुज बालि कह मारा ॥(नाग)

७।२९^V सोइ रघुबीर हृदय महँ आनहु । मोहहि छाड़ि कहा मम मानहु ।।(रघु, प्रह)
८।१^V वालि दीख सुग्रीवहि ठाढ़ा । हृदय क्रोध वहु विधि पुनि वाढ़ा ।।(रघु, व्रज+)
८।४^V तव रघुवीर कहा समुझाई । लखि नहि परहु लरत द्वौ भाई ।।(व्रज)
९।६^V सुनु खल तेई किए कुकर्मा । परिहरि लोक बेद कर धर्मा ।।(व्रज, पट)
९।१०^V राम कहा जव सत्य वुझाई । तव सकुचान रहा सिरु नाई ।।
छिनु एक वहुरि वचन नहि खोलसि । तव पुनि उमा वचन अस वोलेसि ।।(नाथ)
११।२^V पुनि पुनि तासु सीस उर धरई । वदन विलोकि हृदय मह नई ।।
मैं पति तुम्हहि वहुत समुझावा । कालवस्य कछु मनहि न आवा ।।
अंगद कह कछु कहइ न पाएहु । वीचहि सुरपुर प्रान पठाएहु ।।(रघु,नाग, प्रह,नाथ)
१२।१०^V गिरि सुमेर अत्यादिक जेते । करहिं बड़ाइ गुहा गिरि तेते ।।(नाथ)
२७।८^V जो रघुपतिचरनन चित लावै । तेहि सम आन न धन्य कहावै ।।(रघु, व्रज, पट, प्रह)
२७।९^V तेहि देखि सब चले पराई । ठाढ़े कीन्ह ते सपथ देवाई ।।(रघु, व्रज, पट)
२८।३^V जिमि जिमि मैं रवि निकट उड़ाऊँ । तिमि तिमि मैं ब्याकुल होइ जाऊँ ।।(रघु, व्रज, पट, प्रह)
२८।९^V यह कहि मुनि आस्रम निज गयऊ । तेहि छिन हृदय ग्यान कछु भयऊ ।।
सदा राम कर सुमिरन करऊँ । येहि विधि मगु जोवत मैं रहऊँ ।।
(रघु, नाग, मन, व्रज, पट, प्रह)
२९।१^V जो कोइ करै राम कर काजू । तेहि सम धन्य आन नहि आजू ।।
(रघु, मन, व्रज, पट, प्रह, नाथ)
३०।१^V नाहि त जलधि सपदि कै धावौं । दसमुख वाँधि तुरत लै आवौं ।।(प्रह, नाथ)
३०।११^V एहि ते अधिक सिखावनु नाही । बेगि करहु तुम्ह धरि मन माही ।।(प्रह)

पंचम सोपान (सुंदरकांड)

श्लो ३^V सोरठा । सुनहु उमा मन लाइ द्रिढ़ आसन कै स्रवन करु ।
रामचरित सुखदाइ सुंदरकांड विचित्र अति ।।(नाथ)
१।९^V दोहा । भूधर काढ़ा छिग तव कपि सौं कहा बुझाय ।
अवलंबन छिन एक कै लंका देखहु जाय ।।(नाथ)
१९।९^V ब्रह्मफाँस सर निज कर लीना । ताहि बिलोकि कपि अहि अहीना ।।(नाथ)
२५।९^V उठु रनिवास बिकल तजि सेजा । अति भौ प्रवल अनल कै तेजा ।।
छंद । अति अनल तेज प्रचंड ब्यापित सोह ज्यौं घन दामिनी ।
धुम छाइ रह चहु वोर नभ महि बिसरि ब्याकुल भामिनी ।
जरु नगर कंचन सगर संपति सकृत दसमुख मन भयो ।
तजि सिंघासन बसन आसन अति कोप भै कहनै लयो ।
निकट पयोधि अगाध जलनिधि बेगि आनहु नीर सो ।
देहु डारि प्रचारि अगिनि पर भवन राखहु बीर सो ।

तपहीन मति अति दीन भाषत वचन कोइ न मानई ।
दसमुख अति गर्व कोप भा निकट मृत्यु न जानई ।
तालुका अति विकल दह दिस करत नग्र पुकारई ।
अति आरत गृह पुकारत छूटत अनल फुलझारई ।
अनल व्यापित किरिनि भान सहस प्रकार होइ जारई ।
निसरु गज मद परु अलान पद अगुमन परु सो मारई ।
चिकरि महि गहि दसन दै रहि विकल दहुँ दिस भाजहीं ।
धाव क्रोधित मरुत वेग सो [प्र]लय जिमि घन गाजहीं ।
तनु दँत ताल विसाल सोभित धरति नभ धुम वाढ़हीं ।
जरु न[गर] संभारु अंबर तनै जरत न काढ़हीं ।
तुरै टापि अकुलाइ हींसहिं पटउ डोरि न टूटहीं ।
जाहि वाट तेंहि हाट लागहिं लुक समान सो छूटहीं ।
प्रवल प्रचंड महिखंड पूरो मरुत चहुँ वोर तर्जहीं ।
लहलहाहि अग्नि हहाहि न भगै कपि सकोप भै गर्जहीं ॥ (अल)

३०।१०V दोहा। वारि वारि पुर वारि कै वारि वारि गंभीर ।
जनकवारि द्रिगवारि को वारिन गा रघुवीर ॥ (काशी, नाथ)

३०।१०V चौपाई। चलती वार कहेसि मोहि टेरी । सुधि कराइहु सुक्रसुत केरी ॥
(व्रज, ३१।११V काशी)

३३।१०V चौपाई। सुनि कपिवचनं वहुत सुख माना। मन क्रम बचन दास निज जाना ॥ (व्रज)

३८।८V अपजस मृत्यु वरावरि दोऊ । नासकाल रुचि ता कहँ सोऊ ॥ (राय)

५४।८V छंद। अमितादि गज जूथादि वल अति सुभट रन गाढ़े घने ।
स्यामादि मुख अरुनादि मुख गौरादि वरनन्हि को गने ।
चरनादि आयुध मुष्टिका नख दंत कर धर भूधरा ।
एहि भाँति प्रवल प्रताप रघुपति दीख हो दसकंधरा ॥ (दुलही+)

षष्ठ सोपान (लंकाकांड)

२।१V वाँधेउ सेत नील नल नागर । राम सुजस तिहु लोक उजागर ॥ (पट)

३।११।V ['हनुमन्नाटक' (७।१६) के 'ये मज्जन्ति' का भ्रष्ट पाठ] (पट)

१७।६/१V पद पंकज उर महँ [सो] धरेऊ । रोम रोम पुलकित तन भएऊ ॥ (पट)

१७।१२V चरन वंदि अस बचन कहि भयो हरष मन तेहि ॥ (पट)

२१।५V ['श्रीरामरामजनकात्मजा' का भ्रष्ट पाठ] (पट)

२४।१६V वहु प्रकार मुनि ताहि सिखावा । गएउ सो पुर फिरि लाज न आवा ॥ (मया, नाग)

२६।१०V दोहा। तव जुवतिन्ह समेत सठ जनकसुता लै जावँ ।
और मंत्र निज संत सुनु चौपट करि तुव गावँ ॥ (पट, नाथ)

२६।१०^{v} जरहिं पतंग मोहवस अपने । ताहि न गनिअ सूर निसि सपने ।।(नाथ)
४१।७^{v} रामप्रताप सहज रन बाँके । सो कि रहत भट रोकें का के ।।(नाथ)
४६।११/१^{v}काहु न सूझै आपु परारा । मारु खाहु सब करहिं पुकारा ।।(मया, नाग, मंत्र)
६२।६^{v} चले जगावन महा सुभट्टा । देखत जलद सजल घनघट्टा ।।
जोजन दस लेहि भौन क द्वारा । सोवै वीर नीद विकरारा ।।
पैठो वीर भौन सब जाई । मानहु काल परा जनु आई ।।
तनस्रम जलदघटा निसि कारी । छूटत साँस जनु प्रलयबआरी ।।
अंधकाल छूटत होइ स्वासा । मुदगर दीन्ह रंध सो नासा ।।
लगे सो जतन करै बहु नाना । जागत नाहि बीर बलवाना ।।
छंद। जब न जागै करै लागै (जतन तब) करत कोटि उपाइ सो ।
गजजूथ गीरि बरूथ मानहु दयो ते तन चिन्हाइ सो ।
चितकार करि संभारि बल धरि देत तब गहि दंत सो ।
भुज जुगल फेरि अँगेरि दीठो विडरि भजु भट मंत सो ।
भरि नैन देखि कै सैन कीन्हो विकल नीद ते सोइ गयो ।
भट डरत अति मन करत भय (तन) पुनि भौन सो पैठन लयो ।
लगे जगावन विविध भावन निरखि अति ब्याकुल भयो ।
करि करि समाजा आनि बाजा स्रवन निकट[तट?]बाजन लयो ।
बहु बाज ताल म्रिदंग झालि सो हहाकार महि पुरि रही ।
नहि जाग वीर सरीर मर्दहिं बज्र मुदगर कर गही ।
धरि धीर तन मन बीर करि सब हृदै देखु विचारि सो ।
बहु भेरि स्रोन चहूँ फेरि दै कै अरु निसान जुझारि सो ।
नर नारि सुर गंधर्ब कन्या कर सुरस झनकारि सो ।
स्रवन सबद अवाज परि गै उठा जागि सुरारि सो ।
सुनु भवानी सुमति बानी यह न दैतकलापु सो ।
जगत च्रखन विलंबु लागै कठिन ब्रह्मसरापु सो ।।
दोहा। उठि बैठा निसिचर[···] जनु सुमेरु संजीव ।
आयो सब समीप चलि नाइ माथ बलसीव ।। (अल)
६४।६^{v} अपत अजामिल सो गति पावा । सुर नर मुनि मन जो सुख भावा ।।(नाथ)
६७।८^{v} तबहिं राम धनु सर संधाने । कहि प्रिअ बचन सबहि सन्माने ।।(नाथ)
७१।३^{v} देखि महाभट अति बलवाना । खलदल मलन सुधारेउ बाना ।।
करि अति क्रोध बान प्रभु छाटा । कुओ जंघ केदलि सम काटा ।।
काटे जाँघ न मानै हारी । टूटन्हि दौरै बदन पसारी ।।
जत कपि अगुमन रीछन्ह पावै । जस बक मीन पेट धरि नावै ।।
तेहि सरूप सोइ करै गरासा । मानहु काल धाव लै फाँसा ।।
रनमद अंध नैन नहि सूझा । निकट मृत्यु कछु हिए न बूझा ।।

धावै प्रलयकाल सम घट्टा । मर्दै भट धरि धीर सुभट्टा ।।
जस मँगर पंकजवन चरई । तस रन नितंत दानौ करई ।।
मुख वाए धावै चहुँ पासा । जत पावै तत करै गरासा ।।
देखि बहुत राकस के कर्मा । अब एहि हतौं कपिन्ह भौ भर्मा ।।
करि विचार मन कीन्ह तिवाना । सो अब लेउँ हतौं जेइ बाना ।।(अल)
७६।४v सनमुख भए जुद्ध कर आई । आगे देखि पिता कर भाई ।।
देखत रोस भयो दोउ नैना । लागा कहन क्रोध सैं वैना ।।
सुनहु बिभीषन बचन हमारा । तुम्ह राकसकुल भएहु कुठारा ।।
भै तैं सरन राम कै लीन्हा । अधम अधीन काज तैं कीन्हा ।।
बोरेहु बंस नाम बेवहारा । निंद्य लजावन जनम तोहारा ।।
चीन्हि समर रन करतेहु जूझी । घर कर भेद कहै नहि बूझी ।।
कहै बिभीषन सुनु जड़ चोरा । राज करै कर एह मुख तोरा ।।
जब कछु कहा नीति धै ग्याना । तब होइ साथ तहूँ बौराना ।।
अब तोहि भई ग्यान कै डीठी । बूझि परी तो कहँ तब मीठी ।।
दोहा। तेहि दिन गएउ राज तुव जब उपजी एह बात ।
देखत तोहि सभा महँ रावन मारी लात ।।
सुनत बचन क्रोधातुर धावा । चाँद राहु जनु ग्रासै आवा ।।
डोली मेदनि डगेउ सुमेरू । करि जत दाप चाँप धरि फेरू ।।
देखि बहुत दानौ कर कोपा । बीभीषन आगे पग रोपा ।।
वानफोंक दै कीन्ह सो ठाना । लागे इंद्रजीत उर वाना ।।
लागत वान क्रोध तन जारा । लै मुदगर कीन्हेसि प्रहारा ।।
दोसर घाव कै कहूँ ताका । एहि आँतर लछिमन दिअ हाँका ।।
दिव्य वान मारेउ रिसिआई । मुदगर कर तें गौ उड़िआई ।।
पुनि कर दानौ लीन्हो वाना । करि अति रोस घाव वलवाना ।।
पुनि दानौ किहु लघु संधाना । माझ लिलाट लाग दुइ वाना ।।
छंद। लघु वान धनु संधानु कर धरि हनै दैत प्रचारि कै ।
बहु करै घाव न दाव पावहिं विकल करै सो मारि कै ।
सर चंड अति परचंड धावहिं लगत सर अस राजहीं ।
अस देखि बीर अधीर होखहिं उड़तगन जिमि भाजहीं ।।
दोहा। महाबीर रावनसुत कीन्हेसि लघु संधान ।
कपिदल आगे होत जत सभ उर लागे बान ।।
भौ सरसिथिल महाबल खेता । गै तनपीर भयो कपि चेता ।।
नाना भूधर बिटप प्रहारहिं । बहु बल करि कै क्रोध सँमारहिं ।। (अल)
७६।१०v बीभीषन मन कीन्ह तिवाना । बोला मंत्र लागि सो काना ।।
बरप्रसाद एकर एह हाला । ब्रह्मदत्त कर लेहु कराला ।।

एहि तें नास होइ जग धारा । आन बान सौं मरै न मारा ॥
सुनि मति चित्त बिभीषन आना । चाँप चढ़ाइ लीन्ह सो बाना ॥ (अल)
७६।१२V तव त्रिसूल डारेसि लछिमन पर । काटि कीन्ह दसकंठ धरनि धर ॥
सिखर एक पुनि सो लेइ धायो । राम अनुज सोउ काटि खसायो ॥
दोहा। आयुध विविध छाड़ि तहँ रज सम कृत फनि ईस।
हरष बिवस कपि रिंछ सब विबुध सहित सुर ईस॥
विविधायुध सो छाड़ै लागा । रन कारन छूटै जिमि नागा ॥
राम अनुज सर सिंघ समाना । उमा ग्रसत छूटिहि अभिमाना ॥ (मया, नाग, मन)
७६।१५V देखिअ जिमि रवि तेज समाना । फुकरत मनहु ब्याल अनुमाना ॥ (मया, नाग, मन)
V कनकपौंख सर तीछन धारा । मानहु बीजुछटा उजिआरा ॥
जोति उदित धरु राकस बाना । सहस किरनि विस्तर जनु भाना ॥ (अल)
७६।१६V छंद। लगत बान भौ प्रान बेकल करी अति मेदनि परे ।
नहि परत सीस फनीस डोलु गिरि लोलु सागर खरभरे ।
गिरत बीर न धीर बाँधहिं जातुधान सब भजि चले ।
गरजि कीस अहीस वर्नहिं भलेह सामी खलभले ॥ (अल)
७६।१६/१V सीस भुजा काटेउ नृप नागा । घन समान सो गर्ज अभागा ॥
सीस परेउ धरनी जब हुई । भुजा दाहिनी नभ सो गई ॥ (मया, नाग, मन)
७६।१८V जब नीप्रान भएउ घननादा । मारुतसुत कीन्हो मरजादा ॥ (अल)
V जो जम कहँ दंडक जमदंडा । हरिद्रोही सुत समर प्रचंडा ॥
महिमा अमित महा बलसीवा । जासु प्रभाउ अभय दसग्रीवा ॥
भुजबल सुरनायक बस कीन्हे । चौदह भुअन जीति जसु लीन्हे ॥
रिपु तरु लखन मूल खनि गंजेउ । जिमि गज कमल नाल गहि भंजेउ ॥
जिमि बासव गहि कुलिस कराला । कीन्ह बिघट गिरिपच्छ बिसाला ॥
रन सागर मह परेउ सरीरा । तरै दारु जिमि रुधिर सुनीरा ॥
दंत बिकट मुख परम भयावन । चिकुर कपिस चख असुभ डेरावन ॥
रसना लाल रंग जनु जावक । दव की सिखा सोह जिमि पावक ॥
पाइ सुआएसु रिषय कपीसा । कर गहि लीन्ह दुअन कर सीसा ॥
दोहा। करि श्रम मारेउ महारिपु राम अनुज रनधीर ।
निडर सुमन बरषहिं बिबुध कहि जयगिरा गभीर॥ (मया, नाग, मन)
७७।५V नाइ माथ कपिराज बिभीषन । जानि कै पुछउ मानि कुलपूजन ॥
मधुरा वचन बिभीषन भाषा । कुललज्जा प्रताप प्रभु राखा ॥
नाथ सों भएउ सिध सब काजा । बल तोरा रजनीचरराजा ॥
वर दलमलि प्रभु माया धारी । लंछन हतो बीर परचारी ॥
सुनि कपि रिंछ महाबल गाजा । रावन स्रवन सो परी अवाजा ॥ (अल)
७७।६V दमकि बीस भुजा महि मारी । सकुचि सेष फन रहे सँभारी ॥

कर सों खर्ग पुहमि मो डाला । अरु जिन्ह अत्र जितो दिगपाला ।। (अल)
v दुखित हृदय नयन भरि आवा । जनु सिरमनि अहिराजु गवावा ।।
हा सुत संतत अज्ञाकारी । करि विलाप दसकंठ पुकारी ।।
सक्र आदि जीतेंहु सब देवा । सुर मुनि नाग करहिं सब सेवा ।।
दूसर रहेंउ न भुजबल दापा । स्वर्ग भूमितल तपेंउ प्रतापा ।।
एहि विधि करि विलाप लंकेसा । भएउ तेजहत सुनु उरगेसा ।। (मया, नाग, मन)
८१।६v एकन्ह एक मर्दि महि पारहिं । रामक्रिपा सब सैंन सँघारहिं ।। (मन)
८३।३v देखि दसानन बोलेंउ बैंना । रीसन्ह बीस अरुन भौ नैंना ।। (अल)
९८।१५v केंहि विधि मरिहि विस्व उर घाता । (मया)
९९।१२v प्रभु क्रीड़त एह मनहिं विचारी । कोंउ न जान एह केलि खरारी ।। (नाथ)
१०१।२१v लैं डारु दसमुख सेन पर अति कोपि ते परलैं करे ।। (मन)
१०५।१७v सुनत विभीषन वचन क्रिपाला । म्रितक समिप आए तेंहि काला ।। (नाथ)
१०८।९v संग लिए त्रिजटा निसिचरी । चली राम पहि सुमिरत हरी ।। (रघु, परि)
११४।१२v नंदी चढ़े महागन संगा । सोभित मानु गौरि अरधंगा ।।
झलक गंग सिर चंद्र लिलारा । नील कंठ छवि गरल कि धारा ।।
कर खप्पर सिर नर उर माला । अहिकुलपति स्रुति गरे बिसाला ।।
तीन नयन पिंगल सिर जटा । स्वेति बिभूति देह अति छटा ।।
डिमि डिमि डिमि डवरू कर वाजे । सृंगि गरे मृगछाल विराजे ।।
तरुन अरुन अंबुज सम चरना । नखदुति भगत हृदय तम हरना ।।
मनिमय भूति भुषन त्रिपुरारी । आनन सरदचंद छवि हारी ।।
एहि विधि सोह कामरिपु कैंसे । धरे सरीर सांतरसु जैंसे ।।
दोहा। नासि लंकपतिसयन सब बैंठे कोसलधीस ।
सँग चारन गंधर्व गन आएउ तहँ गौरीस ।। (मया, नाग, मन)

सप्तम सोपान (उत्तरकांड)

४।१२v दोहा। सधन चोर मग मुदित मन धनी गही ज्यों फेट ।
तिमि सुग्रीव बिभीषनहि भई भरत सों भेट ।। (व्रज)
२५।४v करहिं सकल सुर दुर्लभ सेवा । नाना रूप सकल मुनि देवा ।। (पट)
२६।१०v जहाँ त्रिप[ति] श्रीराम विराजा । सकल मुनिन्ह कैं आव समाजा ।। (पट)
५९।८v मन क्रम वचन सुनेंहु उपदेसा । तब तव मेटिहि सकल कलेसा ।। (नाथ)
७५।७v नटक्रित बिकट करत रघुराया । लखि न परत मोंहि निर्मित माया ।। (नाथ)
८१।५v अवधपुरी प्रति प्रति निज रूपा । देखेंउ रूप अनेक अनूपा ।। (पट)
८३।८v अति विनीत सुनत [हि] मम बानी । कीन्हि क्रिपा सो सुनहु भवानी ।। (नाथ)
९०।७v बिनु संतोष कि समता आवै । बिना ग्यान नहि मारग पावै ।। (नाथ)
९१।८v महिरज सरिस कहहिं स्रुति संता । कोटि जतन नहि पावहिं अंता ।। (नाथ)

६६।८^V दोहा। वड़े भक्त जे जगतगुर उपदेसहिं सब काहु [काउ]।
सर्वस हम कहुँ अर्पि द्यो लेउँ जन्म कर ताउ ॥ (व्रज)
१०८।३/१^V नमामी सदासीवरूपं निरीहं। (अल)
१०८।३/२^V महाकालकालं पतीसं गौरीसं। (अल)
१०८।४/१^V सदा ध्यानजोगं सुजोगी दयालं। (अल)
१०८।४/२^V उदासी कपाली न माया न मोहं। (अल)
१०८।८/१^V जटाजूटसोभा वृषानं युरालं। (अल)
१०८।८/२^V सदा ग्यान बुधी दिनाकार स्वामी। (अल)
१०८।१०/१^V प्रभावं विभावं गदाधार स्वामी। (अल)
१०८।१३/१^V भजामी गृजाधीस लीलाट इंदू। (अल)
१०८।१३/२^V सुरारी नृपाईस भग्ती वराना। (अल)
१०८।१५/१^V न जानामि ग्यानं [...] भावं न दूजा। (अल)
१०८।१५/२^V प्रसन्नं वदन्नं मयामोह भूल्यं। (अल)
१०८।१६/१^V चरंनं सरंनं सदा संभुध्यानं। (अल)
१०८।१६/२^V नमामी उमापति पादा सुदंभो। (अल)
१२०।१५^V खल कामादि निकट नहि जाई। वसै भग्ति जा के उर आई*॥ (अल)
१२२।१२^V औरौ भए एक तें एका। सुर नर मुनि इत्यादि अनेका ॥ (नाथ)
१२२।१३^V किए जोग तप ज्ञान विरागा। मिलहिं न रघुपति विनु अनुरागा†॥ (व्रज+)

* मिलाइए ७।१२०।६ से। † मिलाइए ७।६२।१ से।

(३) अभावसूचक सारणी

प्रथम सोपान (बालकांड)

श्लो	२।१-२	उद ।
	३।१	नाथ ।
	५।१-२, ६।१-४	उद ।
	७।१/२	पट ।
मंसो	५।१	उद ।
	५।२	उद; ÷, √± पट ।
दो	२।५-६	उद ।
	३।१३-१४	उद ।
	४।८	उद, पट ।
	४।९-११	उद ।
	५।३-४	उद ।
	६।३	जवा ÷ ।
	७।१७-२०	उद ।
	८।४-५	उद ।
	८।८-१४	उद ।
	९।१२-१३	उद ।
	१०।१-९	उद ।
	१०।१५-१६	उद ।
	११।१-११	उद ।
	१२।५-९/२	उद ।
	१२।१०/१	वड़ ÷ ।
	१२।१०-१४	उद ।
	१३।१-५	उद ।
	१३।१८-१२	उद ।
	१४।१-६	उद ।
	१४।११/२	कुंज ÷, √± ।
	१४।१३-१६	उद ।
	१४।१९-२१	उद ।
	१४।२२-२३	वड़ ÷, उद ।
	१४।२४	उद ।
	१५।१-२	उद ।
	१५।५-१३	नर ।
	१६।१-३	नर ।
	१६।४-५	उद, नर ।
	१६।६-८	नर ।
	१६।९-१०	उद, नर ।
	१७।१-२	नर ।
	१७।३-६	उद, नर ।
	१७।७-८	नर ।
	१७।९-१०	उद, नर ।
	१७।११-१२	नर ।
	१८।१-२	उद ।
	१८।४	उद ।
	१८।५	व्रज ।
	१८।६	उद ।
	१८।११-१२	उद ।
	२०।६/२	जवा ÷ ।
	२३।९	जवा ÷ ।
	२४।४	जवा ।
	२७।२	नाथ ।
	२८।१४-१५	पट, नाथ ÷ ।
	२९।८	पट, नाथ ÷ ।
	२९।११-१२	उद ।
	३०।११-१२	उद ।
	३१।१-६	उद ।
	३१।४/१	मन ÷ ।
	३१।५/२	मन ÷ ।
	३१।६	मन ।

* संक्षिप्त होने से सारणी में 'वाल' के अभाव वाल और अयोध्या कांड में नहीं रखे गए ।

३१।८	जवा÷ ।
३२।१२/२-१३/१	पट ।
३३।१–८	उद ।
३४।१–२	उद ।
३५।८	उद ।
३५।९/१	जवा ।
३६।५	उद ।
३६।६	उद, पट ।
३७।२	उद ।
३७।९–१०	उद ।
३७।१२–१३	उद ।
३७।१४	उद, पट, नाथ÷ ।
३७।१५	उद ।
३८।१–११	उद ।
३९।१	उद, नाथ ÷।
३९।२–८	उद।
३९।९	जवा÷ ।
४३।११–१२	रघु–, जवा, उद ।
४४।७/२	उद ।
४६।२/२	उद ।
४६।३	उद ।
४६।६/२	जवा÷ ।
५५।४/२	वड़÷ ।
५८।७	वड़, राम÷,++,जवा÷, नाग, नर, पट, नाथ।
६१।१–२	राम ÷ ।
६६।७–८/१	उद ।
६७।५–६/१	नाग ।
६९।१–२/१	उद ।
७३।३/१	उद ।
७८।३	उद ।
८६।७/२–८/१	पट, नाथ ।
८७।७/२	रघु– ÷ ।
९७।६/२	नाग, उद÷ ।
९९।२	वड़÷ ।
१०५।७	पट ।
१०८।६–७	पट ।
११२।७	उद ।
११९।८	नाथ ।
१२७।१/२	जवा÷ ।
१३२।६/२	उद, व्रज÷ ।
१३५।८/२	जवा÷ ।
१३६।५	पट, नाथ÷ ।
१३६।८/२	उद, व्रज÷ ।
१४०।७	पट ।
१४१।४/२–७/१	जवा÷ ।
१४४।१	जवा ।
१४७।३/२	उद ।
१४७।५–१०,	
१४८।१–४	पट ।
१४८।७–८	राम÷ ।
१४९।५–६/१	नाग ।
१४९।५/१	पट÷ ।
१५०।३–४/१	÷, √±रघु ।
१५५।३	पट ।
१५६।५/२	जवा ।
१५८।१–३	['नृपति' से 'भानु' तक] कुंज÷ ।
१६२।९–१०	व्रज÷ ।
१७०।२	नाथ ।
१७४।१–२	उद ।
१७८।४	जवा÷ ।
१७८।११–१२	नाथ÷ ।
१८२।१६–१७	पट, नाथ÷ ।
१८६।७	राम ÷,जवा ÷, नाथ÷।
१८६।८	राम ÷, नाथ ÷ ।
१८८।४	नाग ।
१८८।५	नाथ÷।
१९६।३	जवा÷ ।
१९६।५	पट ।

२०।१/२–२	नाग÷ ।
२०४।३/१	पट÷, नाथ ।
२०५।६/२–७	नाग ।
२०८।२/२	उद, व्रज÷ ।
२०८।३	नाग÷ ।
२२५।५–६/१	नाग÷ ।
२२५।६/२	नाग ।
२२५।७/२–८/१	पट÷ ।
२२७।२/२	÷, √±राम ।
२२८।६	पट, नाथ ।
२२९।१०/२	नाग÷ ।
२३०।१/१	नाग÷ ।
२३२।१०	उद ।
२३३।१/१	उद, व्रज÷ ।
२३४।७/२–८/१	पट ।
२४०।६	रघु– ।
२४६।२/२	उद ।
२४७।८	उद ।
२४७।९	['येहिं' से 'लंछि' तक] उद ।
२५७।६/२	जवा÷ ।
२६१।४/२	व्रज÷ ।
२६२।७	रघु– ।
२६४।२–५	जवा ।
२६४।६	रघु– ।
२६४।८	पट ।
२६६।८	पट ।
२७०।१०	नाग÷ ।
२७२।५	जवा÷ ।
२७४।१/२–२/१	÷, √±रघु– ।
२७४।८	वड़ ।
२७६।८	उद ।
२७९।१–१०	पट ।
२७९।४/२–५	जवा÷ ।
२८२।७	रघु– ।
२८३।७/२	नाग ।
२८९।२	मन ।
२९१।५/२–६/१	नाग ।
२९४।२	नाग ।
२९७।२/२	उद ।
२९७।४/२–५/१	पट ।
३०२।१	कुंज÷ ।
३०४।६/१	जवा÷ ।
३०४।६/२	उद ।
३०४।७	उद ।
३०८।६–७	जवा ।
३०९।४/२	पट ।
३११।१–२	पट ।
३१७।६	पट ।
३२०।७–३२१।८	पट ।
३२३।५/२	उद ।
३२३।६/२	उद ।
३२४।८	जवा ।
३२६।४	मन÷ ।
३२६।५/१	मन ।
३२७।४	राम÷ ।
३२७।६	पट÷ ।
३३०।२/२–३/१	÷,√±नाग ।
३३०।५–६/१	उद ।
३३१।६	मन ।
३३४।७	पट ।
३३५।३	['नयन' के 'यन' से 'चारीं' तक] रघु÷ ।
३३५।४	['को' से 'नयन' के पहले 'न' तक] रघु÷ ।
३३७।४	व्रज ।
३३९।२	व्रज ।
३४३।९–३४४।८	पट ।
३४५।९–१०	['विपुल' के 'पुल' से 'चारि' तक] नाग÷ ।
३४६।७–८	['सजहिं' से 'कल' तक]नाग ।

३४७।२-३	÷, √±राम।	३५८।२/२	नाग।
३४७।४	जवा।	३६०।२/२-३/१	जवा।
३५२।७-३५३।६	पट।	३६१।१-३/१	['कथा' से 'भएऊ' तक]
३५५।३	नर।		उद।
३५५।४	मन।	३६१।२/२	नाग।

द्वितीय सोपान (अयोध्याकांड)

मंश्लो १-३	अल।	६१।४	÷, √±नाग।
दो २।२	राजा, अल।	६१।५/१	['येहि' से 'नहि' तक] ÷,
३।३	÷, √±वाग।		√± नाग।
५।३	राजा, राम+, अल।	७१।७-७२।२	नाग।
६।१	['उ' से 'पानी' तक]	७२।६/२	व्रज।
	÷, √±रघु।	७९।५/२	नाग।
६।२	['औषध' से 'कहे' तक]	८७।७	['गयेऊ' से 'भयेऊ' तक]
	÷, √± रघु।		÷, √±रघु।
२०।४	राजा, राम+ ।	८७।८	['सुमिरत' से 'स्रमु' तक]
२४।७/२	खोज÷।		÷, √± रघु।
२७।६	राजा÷, राम+।	९३।४/२-५	÷, √± पट।
२९।५	रघु।	१०१।६-७	पट।
३१।५	पट, नाथ।	१०४।४/२-५	व्रज।
३५।१०	['तोहिं' के 'हिं' से 'मोर' तक]	१०८।५	वाग।
	÷, √± नाग।	१०९।२-३/१	÷, √± नाग।
३६।१	÷, √± नाग।	११२।८	पट।
३६।३	['वध' से 'प्रभुताई' तक]	११३।२/२-३।१	राजा÷।
	व्रज।	११६।१-१०	पट।
३६।४	व्रज।	१२२।३	वाग, व्रज।
३६।५/१	['तोर' से 'मोर' तक]	१२४।४/१	÷, √± राम।
	व्रज।	१२८।५	पट।
४५।१-२	÷, √±राम।	१३२।१०	['मुनि' के 'नि' से 'समेत'
५२।२/२	उद।		तक] नाग÷।
५३।७/२	उद।	१३३।१	नाग÷।
५७।६	रघु।	१३३।२/१	['प्रनामु' तक] नाग÷।
५९।४/२	व्रज।		
६१।३/२	['हमार' के 'मार' से 'रहहू' तक]	१३३।५	÷, √±पट।
	÷, √±नाग।	१४०।२-३/१	नाग÷।

१४३।२/२–३	नाग।	२३१।१–७	व्रज।
१४५।२–३	÷, √±राम।	२३१।८	वाग, व्रज।
१५०।३/२	उद।	२३२।२	पट।
१५२।७–८।१	खोज÷।	२३३।५	व्रज।
१६२।३/२–४।१	खोज÷।	२३३।७	व्रज।
१६२।४/२	खोज÷;÷, √± पट।	२३४।१–८	व्रज।
१६२।५/१	÷, √±पट।	२३५।८	व्रज।
१६७।७	नाथ।	२३७।५	व्रज।
१७३।४	÷, √±राम।	२३७।८	व्रज।
१७६।१/२–२	व्रज।	२३९।३/२–४	खोज÷।
१८०।४/२–५/१	नाथ।	२३९।६	व्रज।
१८०।८	नाथ।	२४०।४	व्रज।
१८३।१/२–२/१	राजा।	२४१।७	व्रज।
१८४।३	अल	२४२।१–१०	पट।
१८६।८/२	व्रज।	२४३।७–८/१	उद।
१८९।४/२	÷, √± खोज।	२४४।८	व्रज।
१९९।६	अल।	२४६।२	व्रज।
२००।७/२	उद।	२४७।२–३	व्रज।
२०१।८	नाग÷।	२४८।१–५	व्रज।
२०४।१–१०	पट।	२४८।६	व्रज, पट।
२१३।१–१०	पट।	२४८।७–८	व्रज।
२१४।७	पट।	२४९।१–१०	व्रज।
२१५।७	÷, √±राजा।	२५०।१–७	पट।
२१७।२	राजा।	२५०।८	व्रज, पट।
२१७।८	पट।	२५०।९–१४	पट।
२१९।४–५	व्रज।	२५१।२–३	उद, पट।
२२१।१–८	व्रज।	२५१।५	व्रज।
२२३।१–८	व्रज।	२५२।१–२	व्रज।
२२४।१	नाग÷।	२५२।३	उद, व्रज।
२२४।२	रघु, मन, नर।	२५२।४–५	व्रज।
२२७।६	पट।	२५२।६/२	खोज÷।
२२८।७	['मोरा' से 'थोरा' तक] व्रज।	२५२।६	व्रज।
		२५२।७–८	व्रज।
२२८।८	['कहँ' से 'साथ' तक] व्रज।	२५३।५	व्रज।
		२५४।७	व्रज।

२५५।२/२–३	राजा।
२५५।४/१	राजा।
२५५।४	पट।
२५७।५/२–६।१	व्रज।
२५८।१	व्रज।
२५८।७	व्रज।
२५९।२	व्रज।
२६०।३–४	व्रज।
२६२।४–५।१	उद।
२६३।७	['तासु' के सु' से 'संकोचू' तक] ÷, √± रघु।
२६३।८/१	['ता' से 'आयसु' के आय तक]÷, √± रघु।
२६४।७–१०	व्रज।
२६५।१/२	व्रज।
२६५।२/२–३	व्रज।
२६५।६	व्रज।
२६६।३–५	व्रज।
२६७।३	व्रज।
२७०।१–२७५।८	व्रज।
२७८।५/२–६।१	राजा, परि।
२८१।१–८	व्रज।
२८१।२/१	खोज÷।
२८४।१/२	नाग÷।
२८४।५	व्रज।
२८५।४/२	व्रज।
२८५।५/२	व्रज।
२८५।६/२	व्रज।
२८५।७/२	व्रज।
२८६।१–२८७।८	व्रज।
२९०।६/२–७/१	राजा, राम+।
२९१।२	व्रज।
२९१।५/२–६	खोज÷।
२९२।५	व्रज।
२९२।८	व्रज।
२९३।२–३	व्रज।
२९५।२	रघु, बाग, नाग, मन, उद, व्रज।
२९६।१	व्रज।
२९६।२	उद, व्रज।
२९६।३	['सोक' से 'जग' तक] उद।
२९६।३–४	व्रज।
२९६/५	उद, व्रज,।
२९६।६	['छमब' से 'बचन' तक] उद।
२९६।६–८	व्रज।
२९७।३–४	व्रज।
२९७।६/२	व्रज।
२९८।५	व्रज।
२९८।८	व्रज।
२९९।१–८	व्रज।
३०३।५–६	व्रज।
३०४।१–८	व्रज।
३०४।१०	उद।
३०५।१/१	उद।
३०५।४	व्रज।
३०८।१–८	व्रज।
३११।८	व्रज।
३१२।३/१	÷, √± राम।
३१२।४	व्रज।
३१३।२	व्रज।
३१५।५	व्रज।
३१६।१–८	व्रज।
३१७।३	व्रज।
३१९।३	व्रज।
३२०।५	व्रज।
३२०।७	व्रज।
३२१।४	व्रज।
३२१।९–३२२।६	पट।

३२२।७	व्रज, पट।
३२२।८	पट।
३२३।५	मन।
३२४/३	व्रज।
३२४।४/२–५	उद।
३२४।७	रघु, वाग, मन, उद, व्रज।

तृतीय सोपान (अरण्यकांड)

मं श्लो १।१–४	वाल, मन।
२।१–४	मन।
मं सो १।१–२	पट।
दो १।९–१०	वाल, मन, पट।
४।१४	व्रज।
६।८	नाथ।
६।१५–१८	राय, नाथ।
८।४/२–५/१	÷, √± राम।
९।४–६	['अस्तुति' से 'मुनिन्ह' तक]÷, √± रघु।
११।१५/२–१६/१	अल, पट।
१३।२–३/१	व्रज।
१७।१	नाथ।
२१।९–१०/१	उद।
२४।९–१०	पट।
२९।१७/२–१९/१	पट।
२९।१९	नाथ।
२९।२७–२८	व्रज।
३०।१०/२–११/१	पट।
३०।१३/२–१५/१	पट।
३२।१०	अल, पट।
३२।११–१३	अल।
३८।१३–३९।६	नाथ।
३९।७–८	व्रज, नाथ।
३९।११–१२	वाल।
४०।३/२–४/१	अल।
४२।३	पट, नाथ।
४५।११	['चरन' से 'गेह' तक] उद।
४६।१	['निज' से 'अधिक' तक] उद।

चतुर्थ सोपान (किष्किंधाकांड)

मं श्लो—मं सो	पट।
२।७	परि।
३।२–३	मन।
७।१०–११/१	उद।
१२।१०–१३।८	पट।
१५।१०/२–११	व्रज।
१५।१५–१६	पट।
१६।३/२–४/१	व्रज÷।
१८।१	पट।
१९।८/२–१०	['जहँ' से 'देखि' तक] ÷, √± रघु।
२१।२	पट।
२३।४	मन।
२३।५/२–६	नाग।
२३।७	बाल, अल, मन, उद, पट।
२३।८	मन।
२४।७	पट।
२५।३–४/१	नाग।
२६।२	वड़, वाल, मन÷, उद, पट।
२६।६–८	वड़, वाल, मन, उद, पट।
२६।९	वड़, वाल, नाग, मन, उद, पट।
२७।३–४	वड़, बाल, अल, मन, उद।

२७।५	नाग।	३०।११-२०	पट।
२७।६	बड़, वाल, अल, मन, उद।	३०।३/१	मन÷।
२६।४	परि।	३०।४/१	मन।
२६।५	नाथ÷।		

पंचम सोपान (सुंदरकांड)

मं श्लो १।४	पट, नाथ।	३६।११-१२	मन, व्रज÷।
दो ३।१७	पट।	४२।६	राय।
३।१६	पट।	४२।७/२-८/१	पट।
३।२०-२१	राम÷।	४८।६-८	['नहिं' के 'हिं' से 'प्रिय' के 'प्रि' तक] दुलही÷।
२२।१/२	नाग।		
२२।१	नाथ।	४८।८/२	बड़÷।
२६।३/१	राय।	५०।६/१	÷, √± राम।
२८।५	पट, नाथ÷।	५४।१-१०	पट।
३२।७	पट।	५६।६	वाल, राय।
३५।७/२	उद।	५६।१०/२	उद।
३६।४	वाल।	५७।५-६	बड़÷।
३७।६-११	पट।	५८।२-५६।१	पट।
३६।७/२	नाग।	५६।८	व्रज÷।

षष्ठ सोपान (लंकाकांड)

दो १।१०-११	पट।	३३।६	वाल।
७।४	पट।	३४।११-१४	वाल।
८।७	पट।	३४।१५-१६	रघु, परि, नाग, उद, व्रज।
६।८-६	वाल, व्रज÷ पट,।	३५।५	पट।
१३।३/२	राम÷।	३५।१३	वाल।
१३।११-१२	व्रज÷।	३६।१-२	वाल।
१५।११-१२	रघु-, नाग, मन, उद, व्रज÷।	३६।४	वाल।
१६।११-१२	पट।	३६।५-६/१	उद।
१६।६	पट।	३६।३	वाल।
२२।११-१२	पट।	३६।७	बड़, रघु, अल, नाग, मन÷, उद, व्रज।
२३।१३-२४।८	वाल, पट।		
२६।३	पट।	४०।३	मया÷।
२६।८	पट।	४०।६-१०	वाल।
३२।१०	मन÷।	४१।६-१०	['धरि' से 'झपटहिं' तक] मया।
३२।१३	वाल।		

४३।२/२–३/१	वाल।
४६।११	वाल।
४६।६–१४	वाल।
५२।६–५३/८	अल।
५५।४	व्रज÷।
५५।५/२–६	उद।
५७।७/२–१०	मया÷।
५६।२/१–४/१	['भरतु' से 'मलीन' तक] व्रज÷।
६१।३	मया।
६१।४/१	÷√± मया।
६१।६–१८	वाल।
६२।१२	पट।
६८।१–२	वड़।
६६।५	अल।
७०।१	मया, नाग, मन।
७०।२–५	वाल।
७०।६	अल।
७१।११/२–१२/१	अल।
७२।५	वाल।
७२।१०–११	वाल, अल।
७३।१/२–२/१	अल।
७३।७/१	अल।
७३।११–१२	वाल।
७३।११–१२/१	उद।
७४।१–२	वाल, पट।
७४।७–८	वाल।
७४।१०/१	मया।
७४।१३–१४	वाल, अल, पट, नाथ।
७५।७/२–८	पट।
७५।८	वाल।
७५।६	वड़, रघु, वाल, मया, अल, नाग, मन, उद, व्रज।
७५।६/२	पट।
७५।११–१४	वाल, पट।
७६।६–१०	वाल, पट।
७६।७/२–८	उद।
७६।११–१२	वाल, अल, पट।
७६।१३	वाल, मया, अल, नाग, मन, पट।
७७।१	मया, नाग, मन।
७६।२–६	वाल, पट।
७६।२/२–३	उद।
८०।३/२	अल।
८०।११	नाथ।
८०।१५	अल।
८१।४/२	मन।
८१।१०–११	वाल।
८६।३–४	वाल, पट।
८७।५–६/१	नाथ।
८८।६–१०	मन।
८६।३	पट।
८६।४	वड़, रघु, मया, नाग, मन, उद।
६८।११–१२/१	['करि' से 'बीरा' तक] व्रज÷।
६६।७–११	वाल, पट।
१००।१५–१६	['मारि' से 'कीन्ह' तक] मया÷।
१०१।४/२–५	मया।
१०१।८–६	पट।
१०१।१४/२–१५/१	मया, पट।
१०१।१५/२–१७	['कटकटहिं' से 'कोसलराज' तक] उद।
१०१।१६	राम÷।
१०१।२२	मन।
१०३।१०	पट।
१०४।१२	व्रज÷।
१०४।१५–१६	वाल।

१०५।४-५ ['करत' से 'अनुजहिं' के 'अनु' तक] मया÷ ।
१०७।४/२-५/१ नाथ ।
१०७।१०-११ मया ।
११०।८/२-१०/१ पट ।
१११।१४/२-१५ मया÷ ।
१११।१७/२-१९/१ पट ।
१११।१९/२-२०/१ मया÷, अल, पट ।
१११।२०/२ मया÷ ।
११३।२/२ मया ।
११३।४ मया, नाग, मन ।
११५।७/२ मया÷ ।
११९।१० पट ।
१२०।९-११ पट ।

सप्तम सोपान (उत्तरकांड)

श्लो १-३ व्रज ।
दो १।८ [चतुर्थ चरण मात्र] पट ।
३।१५-१६ व्रज÷ ।
१२।७-८ व्रज÷ ।
१२।१३-१४ ['दिनकर' से 'मुकुटांगदादि' तक] उद ।
१६।८ पट ।
१७।५-६ ÷, √±राम ।
२०।६-७ बाल ।
२२।४ पट ।
२३।७ पट, नाथ ।
२५।३-५ उद ।
२९।१ व्रज, पट ।
३०।५-६ रघु ।
३०।६/२-७/१ पट ।
३२।८ पट ।
३३।२-५ ['रघुपति' से 'देखि' तक] उद ।
३३।६/२ राम ÷, व्रज÷, पट ।
३३।७/१ व्रज, पट ।
३४।५/२-७/१ नाग ।
३५।४ वलि ।
३६।८-३७/५ व्रज÷, पट ।
३९।६ व्रज÷ ।
४०।१-८ व्रज÷ ।
४२।५-६ राम÷ ।
४३।५-६/१ व्रज÷ ।
४४।१ वलि÷ ।
४४।२ वलि ।
४७।४-५ मन÷ ।
५१।७ वलि ।
५२।७/२-८/१ व्रज÷ ।
५२।१२/१ उद ।
५२।१२/२-१३ नाग, उद ।
५३।३ व्रज÷, वलि ।
५३।४/१ व्रज÷ ।
५४।३ उद ।
५४।५ बलि ।
५४।५/२-६/१ व्रज÷ ।
५७।१० व्रज÷ ।
६२।८ ÷, √±राम ।
६२।१३-१४ नाग ।
६३।११-१२ नाग ।
६४।३/२ उद ।
६४।४/२ उद ।
६५।४/२-५ रघु÷ ।
६६।५ बलि ।
६६।९-६७/७ पट ।
६८।१-८ व्रज÷ ।
७१।१ व्रज÷ ।
७१।२/२-३/१ व्रज ÷ ।
७१।१०-११ बड़÷ ।

७३।५-६	व्रज÷।	११४।१४	नाग।
७५।६-१०	अल, व्रज।	११४।१९-२०	अल।
७६।८	व्रज÷।	११७।५/२-६/१	अल।
७९।३	अल।	११७।२१-२२	पट।
८०।१/२-२/१	अल।	११८।७/२-९	['वुद्धिहि' के 'हि' से 'वुद्धि' तक] नाग।
८१।११-१२	पट।		
८२।११-१२	व्रज÷।	११९।३	अल।
८३।७-८	अल।	१२०।४-६/१	['आवा' से 'नहि' तक] नाग।
८८।३	पट।		
८९।६	अल।	१२०।५/२-६/१	अल।
९१।२	अल।	१२१।१४	अल।
९४।४	वलि।	१२१।२९/२ -३१/१	['उपजहिं' के 'पजहिं' से 'तीनिउ' तक] नाग।
९४।११-१२	अल।		
९५।७	अल।	१२२।१५	वलि।
९६।६	अल।	१२२।२४-२५	अल, नाग।
९८।१-८	व्रज÷।	१२५।५	वाल।
१०३।२-३	अल।	१२५।१३-१४	रघु-।
१०६।१२/१	वाल।	१२६।३/२-४/१	अल।
११०।७	पट।	१२७।७-८	पट, नाथ।
११२।५	अल।	[अंत के दोनों] श्लोक	वलि।
११२।११-१३	व्रज÷।	श्लो १।३-४	मन।
११२।१५	व्रज÷।		

---

(४) प्रक्षेप

प्रथम सोपान (बालकांड)

कलिधर्म प्रसंग

३३।१०→प्र (४३।१०^V जवा, ३३।१०^V उद)

रेवा तीर सुदेस सुगामा। बसइ बिप्र एक संकर नामा ॥
धरमसील सुचि साधुसुभाऊ। भूलि कुमग पग धरइ न काऊ ॥
सुत बिनीत पतिपूजक नारी। गृहसमाज सब साज सुखारी ॥
रेवा मज्जनु सज्जनसेवा। प्रिय गुर अतिथि पितर महिदेवा ॥ ४
सुजनसिरोमनि गुन गन गेहू। सिवसेवक हरिचरन सनेहू ॥
सुनइ निगम आगम बिधि नाना। रामायन इतिहास पुराना ॥
लोक चतुर परलोक सयाना। जीवनु धनु हरि हर गुन गाना ॥
आश्रम बरन धरम जुगधरमा। करम बिकरम सुकरम सुधरमा ॥ ८
दोहा। ज्ञान बिराग उपासना करम अनेक प्रकार।
संकर सादर धरम सब सुने बारही बार ॥ १ ॥
मुनिप्रनीत नृपमनि मनु बानी। नरक सरग अपबरग कहानी ॥
सब हित धरमरहस्य घनेरे। पुन्य प्रबंध बिमल बहुतेरे ॥
सुकबि सुभाषित सरल सुहाए। सुने सकल जहँ तहँ सचु पाए ॥
जुगप्रसंग कलिकाल प्रभाऊ। सुनि सुनि सोच भूमिसुरराऊ ॥ ४
मति अनुहारि कहइ कबि सोई। कलि कुचालि जग प्रगट न गोई ॥
कलिमल मलिन सकल नर नारी। बरन धरम नहिं आश्रम चारी ॥
नीच निरंकुस निठुर नृपाला। सचिव स्वारथी क्रूर कराला ॥
राजा सरिस प्रजाउ अभागी। दुसह दुरित दुख दारिद दागी ॥ ८
दोहा। दंभ सहित कलिधरम सब छल समेत बेवहार।
स्वारथ सहित सनेह सब रुचि अनुहरत अचार ॥ २ ॥
बिप्र सुमारग पाउ न देहीं। बेचहिं बेद धरम दुहि लेहीं ॥
हरिहर परिहरि पूजहिं प्रेता। सभा सुबेष कुचालिनिकेता ॥
बोलत कोकिल करतब कागा। बित हित होम सोम जप जागा ॥
कहत करत षट करम सुजाना। सेवा करि करि लेहिं कुदाना ॥ ४
पूजत पढ़त नहात प्रबीना। छल मलीन मनु धन आधीना ॥
बासर सोमप राति सुरापी। पर अपकार परायन पापी ॥

→प्र प्रक्षेपसूचक चिह्न।

कलि एहि बिधि बुध विप्र विगोए । मूढ़ विसेषि मुढ़ाइहि खोए ॥
परहिं कूप जहँ दिन दिठिआरे । केहि अवलंबहिं अंध विचारे ॥ ८
दोहा । धरम सुतीरथ मंत्र सुर मय महिदेव विचारि ।
ते छलि कलि किए प्रथम बस जो गोहारि सो धारि ॥ ३ ॥
छत्री छलमय कलि मलमूला । बंचक विप्र बेदप्रतिकूला ॥
अपने धरम न सपनेहुँ चलहीं । समर सिआर सूर छल मलहीं ॥
नीच विचारु नीच ब्यवहारा । नीच जीविका नीच अचारा ॥
छत्रजाति अभिमान भलेहीं । करम मलेछजाति जस लेहीं ॥ ४
सूर सहाय सवल जग जेई । छत्र सुजाति कहावत तेई ॥
तीसर वरन बिसेषि बिबाकी । सब करि जीवत जीवनि जाकी ॥
मूल सुद्ध नहि सूद सुजाती । सकल वरन संकर उतपाती ॥
आश्रम मध्य मुख्य संन्यासू । तहाँ कीन्ह कलिकाल निवासू ॥ ८
दोहा । बचन विवेक विराग मय मानस कलिमल खानि ।
मुंडित मुंड कषाय पट दंड कमंडल पानि ॥ ४ ॥
पिसुन कलहप्रिय पातक पीना । सम जम नियम दया दम हीना ॥
ब्रह्म कहावहिं ब्रह्मनिरूपी । जगबंचक वित हित वहुरूपी ॥
वासर साधहिं जोगसमाधी । भोगपरायन राति उपाधी ॥
बोलनि बेष हंस वग करनी । पंडित विहित जती गति वरनी ॥ ४
परम मूढ़ परमारथवादी । परमहंस वहु वेष विषादी ॥
पढ़े विप्र बिगरहिं जति होता । परमहंस पथ पाप निसोता ॥
आस्रमु नहिं कलि काननवासी । कुटिल कुटीचर कलिमल रासी ॥
वटु ब्रत रहित सकल गुन खाली । पढ़ि गुनि गुरकुल करहिं कुचाली ॥ ८
दोहा । निलज निरंकुस निठुर सठ पाठु थोर बड़ गालु ।
आस्रम वरन विगोइ सव गलगाजत कलिकालु ॥ ५ ॥
गृही गृहास्रमधरम विहीना । धरनि धाम धन सोच मलीना ॥
सुर गुर पितर अतिथि अपबादी । स्वारथरत परमारथबादी ॥
कपटी कौल कुमारगगामी । कुधन कुधाम कुभामिनिस्वामी ॥
कुमति कुसील कुजीवन जीअहिं । सुरसरि तीर कूपजल पीअहिं ॥ ४
करहिं अधरम करम मन बानी । चलहिं वामपथ ज्ञानगुमानी ॥
अवगुन अघ न अघाहिं अमापी । चहहिं सुकृतफल पावँर पापी ॥
आस्रम वरन सुधरम मलिन से । जग सर कलि हिम हये नलिन से ॥
थोर वहुत कहुँ कहुँ कोइ कोई । आस्रमु द्वितिय वरन पहिलोई ॥ ८
दोहा । सकल धरम विपरीत कलि कलपित कोटि कुपंथ ।
पुन्य पराइ पहार वन दुरे पुरान सुग्रंथ ॥ ६ ॥
निज निज धरम बिमुख सब लोगा । भोगहीन हत रोग बियोगा ॥

छमाछीन पटु पीन प्रकोपू । दिन दिन असुभ उदउ सुभ लोपू ॥
सत्य सनेह सील सुख वीते । सम दम दान दया जन रीते ॥
धरम पंचविध कलिमल भाँडे । सवहिं वजाइ वेदपथ छाँडे ॥ ४
करम कलाप उपासन ज्ञाना । जप तप तीरथ व्रत वहु दाना ॥
वित हित सकल सदंभ सहेतू । छल मल निधि कलि कपटनिकेतू ॥
कलि उतपात होहिं वहुतेरे । भूमिकंप निरघात घनेरे ॥
उलकपात दिगदाह विसाला । निसि सुरेसधनु केतु कराला ॥ ८
दोहा । काई सुरसरि विमल जल मूरति मलिन सुथान ।
फूलहिं फलहिं कुसमय तरु सूचक असुभ निदान ॥ ७ ॥
तिन्ह कर फल दुख दुरित दुकाला । विविध व्याधि वस प्रजा विहाला ॥
ईति भीति महि कृषी मलीना । फरहिं कुविटप सुतरु फलहीना ॥
घटहिं सुवस्तु सुनाज सुजोगा । वढ़हिं कुवस्तु कदन्न कुजोगा ॥
विद्या वनिज कृषी सेवकाई । निपट थोर फलु श्रमु अधिकाई ॥ ४
अन्न पान फल रस लघु स्वादा । पाठ थोर वड़ बाद बिंबादा ॥
धेनु थोर पय पय घृतु थोरा । अवल साधुजन खल वरजोरा ॥
सुमन मंत्र औषध गुन लोपे । कपट मंत्र बिष कलिमल रोपे ॥
वरिसहिं ऊसर सालि सुखाहीं । उलटी रीति सकल कलि माहीं ॥ ८
दोहा । गोंड़ गुआर गँवार नृप जमन महा महिपाल ।
साम न दाम न भेद कलि केवल दंड कराल ॥ ८ ॥
चोर चार लघु लंपट लोभी । सचिव सभासद मल महि छोभी ॥
राज सरिस सब राजसमाजी । प्रजा विकल बड़ राज बिराजी ॥
देस उजारि नरेस प्रतापा । जरहिं जीव जग तीनिहुँ तापा ॥
भपति बँचक प्रजा अभागी । प्रजा जरहि अवनिप अघ आगी ॥ ४
प्रजा रोंझ मृग विहग समाजा । राजा बिषम बाघ वृक बाजा ॥
महिप मदित सुनि प्रजा अकाजू । प्रजा कहहिं कब जाइहि राजू ॥
राजउ प्रजउ परसपर खोटे । जग जनमहिं करि कलिमलु मोटे ॥
सुख हित करहिं कुचालि कलेसा । सहहिं दुसह दुख देस बिदेसा ॥ ८
दोहा । प्रीति सगाई सकल गुन बनिज उपाय अनेक ।
कल बल छल कलिमल मलिन डहकत एकहि एक ॥ ९ ॥
बनिक महाजन साहु सुनामा । बोलनि दाहिनि करनी बामा ॥
उभय वरद हर करहिं किसाना । जोतहिं गोमग सर सुरथाना ॥
बाँधि बरद मुहु दावरि देहीं । तेहि अघ सब निसिचर हरि लेहीं ॥
धरनि धाम धन धरम बिहीना । प्रिय परिजन अपमान मलीना ॥ ४
असन वसन विनु बंधु वियोगी । कुमति कुसाज कुरूप कुरोगी ॥
कलही कुटिल कठिन कटुवादी । फिरहिं विकल विललात बिषादी ॥

नींद भूख आलस बस कीन्हे । सुख सदगुन कलिमल हरि लीन्हे ॥
आरत अघी अनाथ अभागी । सब नर नारि जरहिं जठरागी ॥ ८
दोहा । ठाकुर कूर कुसचिव बस पुरुष नारि आधीन ।
गुर वित हित सब सिष्यवस मूरुख विवस प्रवीन ॥ १० ॥
धनी कुलीन धनी गुनसागर । धनी साधु सब भाँति उजागर ॥
विबुध बेद गुर विप्र विरोधी । धनी पूजिअहि पापपयोधी ॥
विनु धन गुनिगन गरहिं गलानी । सहहिं निरादर घर घर मानी ॥
धन हित कहहिं दिवस कर राती । नीचहि नवहिं वड़े सब भाँती ॥ ४
साधु सुजाति सुसील सुजाना । बिनु धन जन दुख दोष निधाना ॥
कलि केवल धनमूल भलाई । वुधि विबेक बल विनय वड़ाई ॥
प्रीति सहेतु अकारन कोही । सब पितु मातु बंधु गुर द्रोही ॥
पिसुन पाँच पंडित छलवादी । बकता लावर कवि अपबादी ॥ ८
दोहा । चोर चतुर वटपार भट प्रभु प्रिय भड़ुवा भंड ।
सब भंछक परमारथी कलि सुपंथ पाषंड ॥ ११ ॥
सब कवि कोविद कलानिकेता । साधक सिद्ध सधरम सचेता ॥
हम सब भाँति बड़े सब छोटे । हम विनु खोरि खरे सब खोटे ॥
सकल कहहिं हम सरिस न दूजा । को केहि मानइ को केहि पूजा ॥
लोक बेद मरजाद विसारी । सब नर नारि जथारुचिकारी ॥ ४
बकता सब कोइ सुनइ सुवानी । सब जाचक जग कोउ न दानी ॥
सब सिखवहिं जग सुनइ न कोऊ । गुर सिख अंध बधिर सम सोऊ ॥
सुत पितु मातु हाथ बिनु ब्याहे । पुनि रिपु होहिं नारिमुहु चाहे ॥
तियवस तनय बसहिं ससुरारी । परिहरि लोकलाज कुल गारी ॥ ८
दोहा । कामचारिनी करकसा घर घर नारि प्रधान ।
तिय गुन सील बिहीन सब दूषन दुरित निधान ॥ १२ ॥
विधवा बहुत सुभागिनि थोरी । कठिन करम मन बोलत भोरी ॥
विधवा भूषन वसन विसेषी । सौभागिनि सिहाहिं सुनि देखी ॥
हिंदू तुरुक उभय कलि जीते । निज निज करम धरम बिपरीते ॥
गृही दरिद्र जती धनवाना । नागर कूर गँवार सुजाना ॥ ४
सूद्र पुरानिक विप्र किसाना । जुवा जरठगुन जरठ जुवाना ॥
विप्र चरम असि सर धनु धारी । पुस्तक पानि नीच नर नारी ॥
विप्र कछोटी पहिरि नहाहीं । सूद्र सदरभ निमज्जन जाहीं ॥
जाति पाँति बहु भेद अचारा । एक बरन सब किए बिचारा ॥ ८

। छंद ।

सब एक बरन विचार कीन्हे कौल कुलि कलिमल मई ।
बहु वेष बहु मत सैव साकट सौर सुरसेवा नई ।

सब जाति जती जमाति जोरहिँ जटिल भूत भयावने ।
अति रोष दोष निधान मानी खान पान अपावने ॥
सोरठा । कलि पाषंड प्रचार प्रबल पाप पामर पतित ।
तुलसी उभय अधार रामनाम सुरसरित जल ॥ १३ ॥
सभा सराहिय सोइ बिसेषी । स्रवन अगम कह आँखिन्हि देखी ॥
करि प्रपंच पचवै परथाती । सो बड़ धीर तासु बड़ि छाती ॥
कौड़ी कारन कहहिँ कुसाखी । रिनिआँ धनिक मरन अभिलाषी ॥
सठ सुमती साहसी जुवारा । जीवन थोर दुरास अपारा ॥
साँचि बात जेहि सभा बखानी । हँसहि लोग बड़ बूबक जानी ॥
जहाँ होहिँ जप जाग पुराना । बिरति बिबेक बिबेचन नाना ॥
कथा कीरतन साधुसमाजा । तहँ बिसेषि कलिकालु बिराजा ॥
दोहा । सुरसदननि तीरथ पुरनि निपट कुचालि कुसाज ।
मनहुँ मवासे मारि कलि राजत सहित समाज ॥ १४ ॥
बेचहिँ गाइ बेसाहहिँ छेरी । दोहगा सुतिय सोहागिन चेरी ॥
पर पुर घर सुरघर सर सेतू । दूरि करहिँ निज कीरत्ति हेतू ॥
हरि परग्रंथ करहिँ निज ग्रंथा । चहहिँ सुजसु सुख चलहिँ कुपंथा ॥
काटहिँ सुरतरु बवहिँ धतूरे । निज घरबरहिँ बतावहिँ घूरे ॥
भलि कबिनास कहहिँ गत गंगा । तुलसिहिँ हँसहिँ सराहहिँ भंगा ॥
गुर पितु मातु साधु सिख पेली । तीरथ चलहिँ समाज सकेली ॥
सुथल सुतीरथ बन सुरथाना । तहाँ तुरक कलि करहिँ मसाना ॥
प्रीति प्रतीति न काहु कि काहू । सब ठग चोर महाजन साहू ॥
दोहा । मंदिर मूरति मलिन कलि थान प्रधान बिचारि ।
ते सब सादर पूजिअहिँ फलहिँ भगति अनुहारि ॥ १५ ॥
बिष्नु भगति महिमा अधिकाई । चहुँ जुग बड़ि चहुँ बेद बड़ाई ॥
काल करम गुन प्रकृति सुभाऊ । भगति समीप जाहिँ नहिँ काऊ ॥
करमकदंब ज्ञान बिज्ञाना । तप जप जोग उपासन नाना ॥
भगति अनुग्रह जा पर होई । सो बड़ सबल सद्यफल सोई ॥
पंछपात नहि कहँउ सुभाऊ । लोक बेद बड़ भगतिप्रभाऊ ॥
आपु बिमल कलिकाल मलीना । अस बिचारि हरिभगति प्रबीना ॥
अलख अनूप निरूपि न जाई । रही सुथल लघु रूप समाई ॥
बस भागवत सुग्रंथ सयानी । जिमि माधुरी रसालस मानी ॥
दोहा । तुलसीकानन साधुमन गुरुपद प्रेम प्रनाम ।
भरतचरित सुरसरित जल रामभगति बिश्राम ॥ १६ ॥
अमल भगतिथल अगम अनेका । लखहिँ बिमल जन बिमल बिबेका ॥
भगत बिसेष भगति बिश्रामा । ते थोरे जग जलधि ललामा ॥

भगतिनिवास भगतजन देखी । कलिहिं सकुच संताप विसेषी ॥
भगति भानु कलि कलुष उलूका । सोच बिलोकत लोचनहू का ॥ ४
भगतिवास सब सूक समाना । वाम देत कलि कपट सयाना ॥
रामभगत कहुँ कहुँ दुइ चारी । अनघ अमान अमल अविकारी ॥
ते महिमंडल मंगलरूपा । प्रीति रामपद अचल अनूपा ॥
तिन्ह कहँ कलि कृतजुग सम साजू । सुकृतिन्ह सुखद जथा जमराजू ॥ ८
दोहा । जो हरिभगत कहाइ जग वित हित करत कुफेर ।
दंभ कपट पाषंड भट पठइ किये कलि जेर ॥ १७ ॥
ते कलिवस बहु नाचहिं नाचा । भूलि न बोलहिं सपनेहु साँचा ॥
तिलक विचित्र मनोहर माला । बसन विभूषन वचन रसाला ॥
मिलत मधुर गावत मृदु बानी । करम कठिन नहिं जात बखानी ॥
गूढ़ गरब अघ अवगुन गरुए । रामपेम परमारथ हरुए ॥ ४
देव पितर महिदेव विरोधी । मोह लोभ वस लंपट क्रोधी ॥
ज्ञान विराग सुनत जरि मरहीं । आश्रम वरन धरम परिहरहीं ॥
तजि सुकरम कुलरीति सुहाई । कलपि कुपंथ कुचालि चलाई ॥
खान पान कर थोर विचारू । एकादसी विसेष अहारू ॥ ८
दोहा । वड़े भाग तजे जगतगुर उपदेसहिं सब काहु ।
सरबस गुरहि समर्पि अव लेहु जनम कर लाहु ॥ १८ ॥
हिंदू तुरुक नारि नर हीजा । सब कहुँ देहिं सुमंत्र सबीजा ॥
बेचि नीच हरिनाम नगीना । लोलुप लेहिं विषय कटु पीना ॥
वेद पुरान भागवत गीता । पढ़ि गुनि कहहिं अरथ बिपरीता ॥
सधन सनारि धनी बस होई । पुरुषारथु परमारथु सोई ॥ ४
बेष बचन हरिभगति विराजा । हिय हुलसत कलि सहित समाजा ॥
संकर नाम सुनत मरि जाहीं । सेवत जवन सुजनम सिराहीं ॥
वित हित अंग बंग मग वासी । बित विनु चाइ लगावहिं कासी ॥
दोहा । उपदेसक आचरनु अस पढ़हिं सुनहिं सदग्रंथ । ८
तिन्ह उपदेसे नारि नर काहे न चलहिं कुपंथ ॥ १९ ॥
जे गुर बड़े नीच उपदेसे । काल पाइ पछिताहिं ठगे से ॥
गुर गुन दिये न अव गथु गाँठी । खाइ बेचि तमहंडी टाठी ॥
विनु वित भगति न भगत सोहाहीं । सब संताप सोच मन माहीं ॥
वहुत उपाय किये धनु लागी । दिन दिन दूनि दुरासइ वागी ॥ ४
सुमति न सुनिय न स्वामि सखाऊ । विनु बित सब हित मीत बटाऊ ॥
होइ न कृषी वनिज वनि सेवा । गए कुदेस भए गुरदेवा ॥
अँचई उभय लोक गति घोरी । विष्नु सधरम तजे तिनु तोरी ॥
सिष्य कहाइ बड़े गुर केरे । करि छल दंभ कपट बहुतेरे ॥ ८

दोहा । जेहि विधि डहके आपु गुर सहस भाँति सोइ रीति ।
करि प्रपंच वंचत सवहि डरत न करत अनीति ॥ २० ॥
सधन सधरम नारि नर भोरे । लोक वेद गति सामुझि थोरे ॥
ते करि सिष्य सकल अपनाए । कलपि भगतिमय वचन सुनाए ॥
गुर विमूढ़ सिख निपट कुमेधा । जुरा समाज वाम भये वेधा ॥
सोइ विधि कहहिं जाहि जोइ भावा । सोइ निषेध जोइ नहि होइ आवा ॥
आपु गए गुर गए विगारे । वातुल वानर वीछी मारे ॥
सो वरनिअ कुचालि केहि भाँती । एक पाँति जेवहिं सव जाती ॥
कोरि चमार गोड़ गुरदेवा । तिन्ह कइ करहिं महीसुर सेवा ॥
भजहिं जवहि तजि जाति जनेऊ । तव सराहि सिख करिअहिं तेऊ ॥
दोहा । साखी सवदी दोहरा कहि कहनी उपखान ।
भगति निरूपत भगत कलि निंदहिं वेद पुरान ॥ २१ ॥
नाम सुनाम वाम पथ गामी । कायर कूर कुतरकी कामी ॥
सकल सुमारग निंदक मंदा । कुलकुठारि तिय नरकुल वंदा ॥
कलि पाषंड प्रचंड प्रचारा । संड भंड सव विधि व्यवहारा ॥
भगत कहाइ अछाइ अनेरे । देखत कोमल करम करेरे ॥
भगत नारि नर भगति विहीना । दंभ निधान प्रपंच प्रवीना ॥
लोकहु वेद भगतिपथ मोटा । जिन्ह कै लिए लाग सोउ खोटा ॥
तिन्ह के करतव किमि कहि जाहीं । एकहि आँक भलाई नाहीं ॥
कहत सकल कलिकाल कुचाली । वाढ़इ कथा होइ सिरु खाली ॥
दोहा । तेहि तें कही सहेतु कलि कथा समास समेत ।
सुनि सदंभ सठ सकुचिहहिं होइहहिं सुजन सचेत ॥ २२ ॥
कलिगुन कहउँ सुमति अनुहारी । सुनेउँ अनुभएउँ ते दुउ चारी ॥
कलिजुग मानसपातक नाहीं । पुन्य पुनीत मनोरथ माहीं ॥
बांछिक पाप जाहिं पछिताने । सिव सुमिरत सुरसरित नहाने ॥
कायिक कलुष कठिन कलिकाला । सद्य फलहिं परिनाम कराला ॥
पुनि संसरगदोषु कलि थोरा । करतहि कहँ गति घोर कठोरा ॥
करत जो संगु समान सलोभा । जानव हठि करि ता सम सोभा ॥
हरि संकरहि भाय भजि भोरे । पावहिं सुजन सुफल श्रम थोरे ॥
जो छलु छाँडि धरमरत होई । फलइ सुसाधन सिद्ध रसोई ॥
दोहा । अन्नदान सव जग्य मय निरुपधि धरमनिधान ।
तप तीरथ सुरसरिता दरसन मज्जन पान ॥ २३ ॥
कलि केवल परमारथ हेतू । रामनाम भवसागर सेतू ॥
साधन नामु सिद्धि फलु नामू । जिहि न प्रतीति ताहि बिधि वामू ॥
कृतजुग जो गति जोगसमाधी । त्रेता करम धरम निरुपाधी ॥

द्वापर हरिपद पूजि सप्रीती । पावहिं परगति नर जगु जीती ॥ ४
कलि जपि नाम सरुचि बिस्वासा । सो फलु सुलभ सबहिं अनयासा ॥
ते सुकृती सुचि साधु सुजाना । सदगुनसागर सीलनिधाना ॥
जे हरिनाम जपहिं दिन राती । प्रीति प्रतीति समेत सुभाँती ॥
राममहातमु चहुँ जुग भारी । कलि बिसेषि दायक फल चारी ॥ ८
दोहा । जथा भूमि सब बीजमय नखतनिवासु अकास ।
रामनाम सब धरम मय जानत तुलसीदास ॥ २४ ॥
यह बिस्वासु जासु जिय नाहीं । जानब जारजात जग माहीं ॥
धरम छीन कलि पातक पीना । जथा ढोलधुनि सुनिअ न बीना ॥
बिच बिच होइहि कलिहुँ भलाई । पुन्यसील पुहुमीपति पाई ॥
चहुँ जुग काल भूप अनुहारी । होइ अमंगल मंगलकारी ॥ ४
नृप आधीन काल गुन दोषा । लोक वेद मत नाहिन धोखा ॥
भये वेनु महिषादि कुराजा । पुन्यकाल कलिकालु बिराजा ॥
बिक्रमादि अवनिप कलि जाए । कृत त्रेता सम धरम चलाए ॥
कालचालि महिपाल अधीना । कहत पुराविद नीतिप्रवीना ॥ ८
दोहा । जथा अमल पावनु पवनु पाइ कुसंग सुसंग ।
कहिअ कुवास सुवास तिमि काल महीस प्रसंग ॥ २५ ॥
संकर कालचालि सुनि देखी । दिन दिन बढ़त बिषाद बिसेषी ॥
बिप्रजनमु गृहभारु बिसाला । करमभूमि कलिकालु कराला ॥
सबहि भाँति सबु संघटु पोचा । सुमिरि संभु सिव संकरु सोचा ॥
कृस तनु नीद भख भइ थोरी । गृहकृत करत होति मति भोरी ॥ ४
जागत बागत सोवत सपने । सुमिरि सिवहि सोचत मन अपने ॥
बिनु श्रम अमर अगम तनु लाधा । गयेउ जाय परलोक न साधा ॥
खेलत खात बालपन बीता । भये तरुन तरुनी मनु जीता ॥
बढ़त बयस अति बढ़त दुरासा । बुधि बिबेक बलु तेजु हरासा ॥ ८
दोहा । हम हमार अबिचारु बड़ भूरि भार धरि सीस ।
हठि सठ परबस भयउ जिमि कीर कोस कृमि कीस ॥
सोरठा । कहि संकर मति संत वेद पुरान बिचारि सब ।
भजउ जानकीकंत तब छूटै संसारभय ॥ १२
अब बिनवौं मन तोहि होहि रामपद कमल रत ।
अपथ न प्रेरहि मोहि सुनहि सिखावनु परम हित ॥ २६ ॥

सीताप्राकट्य प्रसंग

१८२।१९→प्र (१८१।१०^{v} जवा, १८३।३^{v} नाग, १८२।१९^{v} नर, १८२।१७^{v} व्रज)

नारद मिले कहिसि मुसकाई । देव कहा मुनिदेव दिखाई ॥
सुनत अनखु नारदहि न भावा । सेत दीप तेहि तुरत पठावा ॥

सागर उतरि पार सो गयऊ । नारिबृंद तहँ देखत भयऊ ॥
तिन सन कहिसि पतिन पैं जाहू । कहिहु कि आएउ निसिचरनाहू ॥ ४
तब मैं तिन्हहि जीति संग्रामा । लै जैहौं तुम कहँ निज धामा ॥
सुनत वचन इक जरठ रिसानी । धाइ चरन गहि गगन उड़ानी ॥
गई दूरि धरि धरि झकझोरा । डारेसि सिंधु मध्य अति जोरा ॥
दोहा । गयो पताल अचेत होइ मरै न विप्रप्रसाद । ८
सावधान उठि गर्जि पुनि हिये न हरष विषाद ॥ १ ॥
जीतिसि नाग नगर सब भारी । गयो बहुरि. बलिलोक सुरारी ॥
वावन रावन आवत जाना । किए देवरिषि सन अभिमाना ॥
खेलत हुते नगर सिसु नाना । निज बल तिन्हहिं दीन्ह भगवाना ॥
जाइ धरा तिन्ह पुर लै आए । नगर नारि नर देखन धाए ॥ ४
वीस वाहु दसकंधर जाही । विधि यह गढ़नि कहाँ कै आही ॥
राखेन्हि वाँधि खिझावहिं भारी । नामु न कहै सहै वरु गारी ॥
वामन दीख वहुत सकुचाना । तब छोड़ाइ दिय कृपानिधाना ॥
चला तुरंत निसाचरनाहा । लाज संक कछु नहिं मन माहा ॥ ८
दोहा । वालक वल हिय सुमरि कै चला बहुरि पछिताइ ।
.... निसंक धावन जाइ ॥ २ ॥
तब तुरंत पंपापुर आवा । बालि नाम कपिपति जेहि ठावा ॥
देखा जाइ सरोवर सोभा । जेहि मन महामुनिन कर छोभा ॥
तहाँ कपीस करै निज ध्याना । आदर सौं संध्या सनमाना ॥
जाइ ठाढ़ तहँ भा रजनीसा । ठोका बाहु गरजि भुज बीसा ॥ ४
तब कपीस चितवा मुसुकाई । ध्यान के अवसर रिस बिसराई ॥
तब रावनु बोला करि क्रोधा । बकध्यानी कपि सठ सुनु बोधा ॥

। दोहा ।

मोहिं जीते विनु समर सुनु ना करु ध्यान कपीस ।
अंजलि देन न पावहु सपथ करौं अज ईस ॥ ३ ॥ ८
तब बाली बोला बिहसाई । बलु तुम्हार असइ है भाई ॥
रबि अंजलि मैं देउँ सप्रीती । ठाढ़ होहु जाएहु मोहि जीती ॥
तब निसिचरपति उठा रिसाई । दै कपि जुद्ध छाड़ि कदराई ॥
तब कपीसपति मनहिं बिचारा । सिव बलु दीन्ह मरिहि नहिं मारा ॥ ४
दसकंधर घर जाहु विचारी । अजय तुम्हारि जानि भुज भारी ॥
बहुत भाँति बाली समुझावा । कवनिहुँ भाँति बोधु नहिं आवा ॥
तब सकोप होइ उठा कपीसा । धरि तिहि काख चापि दससीसा ॥
अंजुलि दीन्हि रबिहि मन जानी । अचवा सात दीप कर पानी ॥ ८
जपेउ आदिसंकर मन जानी । तेहि खन संध्या बंदि सिरानी ॥

दोहा । आवा घरहि कपीस तब काख रहा लंकेस ।
इहि विधि बीते मास षट पावै बहुत कलेस ॥ ४ ॥
बाहुप्रसेतु कखरि महँ जामा । अधिक बास ता कहँ भइ धामा ॥
कलमलाइ रिस दसनन्ह काटा । कपि कर जीव मनहुँ भ्रम छाटा ॥
एक दिवस रवि अंजुलि साजा । काख तें निकरि महाधुनि गाजा ॥
सो पुनि धरि कपीस तब बाँधा । लै आवा अंगद के राँधा ॥ ४
बीस भुजा दससीसु सुधारा । चरन छुऔ धरि पुनि उर मारा ॥
धरि समेटि झालरि सम कीन्हा । बाँधि सेज पर सोभा दीन्हा ॥
अंगद खेल लात सिर मारी । किलकिलाइ किलकै किलकारी ॥
दोहा । तारा चीन्हेंउ रावनहि तिहि छिन दीन छुड़ाइ । ८
जाहु तुरत लंकेस गृह बहुरि धरिहि कपिराइ ॥ ५ ॥
पुनि रावनु आवा तिहि ठाईं । सहसबाहु जहँ रास बनाईं ॥
जलक्रीड़ा करि सँग सब नारी । विविध भाँति सोभा अति भारी ॥
आइ रचा तहँ मंडल रेवा । सुर नर नाग करहिं सब सेवा ॥
जाइ दीख रावन सुख माना । हरष समेत हृदय सकुचाना ॥ ४
तहँ लंकेस जाइ सिव देखा । मनहु बिरंचि रचा बहु रेखा ॥
तुलसीपत्र कमल बहु आना । बिल्वपत्र अमिपुष्प प्रमाना ॥
जाइ तब जलु छोभा दससीसा । थाँभेंउ सँवरि मंत्र गौरीसा ॥
दोहा । जब प्रचंड जलु छोभा बूड़ा सबै समाज । ८
सहसबाहु अति संक मन सकल त्रियन उर लाज ॥ ६ ॥
तब राजा सन बोली नारी । अति सुंदरि सब राजकुँवारी ॥
सुनो नृपति आएउ कोउ गाढ़ा । आकसमात महानदु बाढ़ा ॥
सुनि राजहि भा क्रोध अपारा । जस त्रिनेत्र त्रिपुर अरि जारा ॥
जाइ दीख रावन तहँ ठाढ़ा । जासु मंत्र जनु जलनिधि बाढ़ा ॥ ४
माया प्रबल महा बल भारी । लंकेसुर कहँ धरा पचारी ॥
लै पुनि बाँधि गएउ त्रिय पासा । गढ़नि देख सब परम हुलासा ॥
करि अस्नान पूजि गौरीसा । हयसाला बाँधा दससीसा ॥
दोहा । सुनु भुसुंडि गिरिजा सुनौ अब यह कथा रसाल । ८
लै हयसाला बाँधेनि बीस बाहु दसभाल ॥ ७ ॥
सकल आइ देखहिं नर नारी । मारहिं लात हसैं दै तारी ॥
नामु न कहै रहै सकुचाना । बहु विधि पूछहि नृपति सुजाना ॥
नृत्य करहिं रंभादिक नारी । दसहुँ सीस दस दीपक वारी ॥
कछु बासर इहि भाँति गँवावा । सो पुलस्ति मुनि जाइ छुड़ावा ॥ ४
चला तुरंत महा अभिमानी । सिव की श्राप आइ नियरानी ॥
मारग जात दीख बिबुधारी । अति अनूप सुंदरि बर नारी ॥

चंदन पुहुप पत्र कर थारी । पूजन चली जाहि तिपुरारी ॥
देखि उरबसी मन सकुचानी । तव रावन बोला मृदु बानी ॥ ८
दोहा । निकट जाइ दसकंधर अंक भामिनी लीन्ह ।
पुत्रवधू कुवेर कै नहिँ विचारु कछु कीन्ह ॥ ८ ॥
चीन्हि त्रियहि विसमै उर भयऊ । लंकेसुर लंका कहँ गयऊ ॥
चली उरवसी आई तहाँ । अलकापुरि नल कूवलु जहाँ ॥
समाचार सब पतिहि सुनाए । सुनी कथा मन अति दुख पाए ॥
दीन्ह श्राप करि क्रोध अपारा । रावन बंस होइ खैकारा ॥ ४
चली आप लंका महँ आई । दसकंधर बैठा तिहि ठाई ॥
आगै आइ ठाढ़ि भै श्रापा । तव लंकेसुर अति भै काँपा ॥
सडर कोप चितवति तिहि ओरा । नल कूबल कै श्राप अघोरा ॥
दोहा । श्रापहि अंगीकार करि मन मौ कीन विचार । ८
रिषिनि दंड नहिँ दीन कछु रोषा लंकभुवार ॥ ९ ॥
दूत चारि तहँ पठए भवानी । भरद्वाज मुनि कथा बखानी ॥
आए दूत रिषिनि के गेहा । दीख सवन के भयो सँदेहा ॥
पूछा रिषिय कहाँ पगु धारा । कहहु कुसल लंकेस भुवारा ॥
तात कुसल अव भै बिपरीता । तुम सन मागेसि दंड अभीता ॥ ४
देहु दंडु अस कहेनि रिसाई । की गिरि कंदर जाहु पराई ॥
सुनि अस बचन सबहि दुख पावा । तुरत बेगि इकु पात्र मँगावा ॥
सवन बिचार कीन इकठाई । भरि घट रुधिर रिषिय लै आई ॥
तब तिन कहँ सौंपा मन जानी । तुम सकोप बोले मृदु बानी ॥ ८
दोहा । घट उघरत छय होइहि सकल सहित परिवार ।
लेइ दूत तहँ आए जहँ रह लंकभुवार ॥ १० ॥
आगे आनि धरा घट भारी । देखि सकल लंकापति धारी ॥
बोला बचन आहि का भाई । सकल कथा तिहि नृपहि सुनाई ॥
इहि घट तें लंकाम्पतिनासा । सब दूतन अस बचन प्रकासा ॥
यहु घट लै उत्तर दिसि जाहू । जतन समेत देहु लै काहू ॥ ४
सुनि नृपवचन चले सब ईसा । जनकराइ के बाग पईसा ॥
जहँ घट धरि कै चलै विचारी । तहाँ प्रगट भइ देवकुवारी ॥[v]

---

[v]जब तें दूतन्ह सो विधि करेऊ । जनकनगर महँ सूखा परेऊ ॥
बारह बरष अबरषन भएऊ । नर विनु अन्न सूखि सब गएऊ ॥
नर सब मरहिँ अन्न बिनु भूखा । त्रिन नहिँ हरित सूख बन रूखा ॥
दोहा । जनकराय मुनिवर सकल पंडित बिप्र बोलाय । ४
कहेउ अबरषन भयेउ अब कीजै कहा उपाय ॥ १ ॥

जग जननिहिं बरनै को पारा । राजा जनक तहाँ पगु धारा ॥
कन्या देखि अनूप भवानी । सुता भाँति राजा गृह आनी ॥ ८
नाम जानकी परम पुनीता । नारद आइ कहा तहँ सीता ॥
दोहा । सकल कथा तव जनक सन नारद कहा वखानि ।
सकल सुलंछनि लंछिगुन जगदंबिका सुजानि ॥ ११ ॥V
*कही कथा रिषिराउ सिधाए । बहुरि दूत लंकापुर आए ॥
कहेंनि जाइ असे हम राखी । सो संकर गिरिजा सन भाषी ॥
जागबलिक सन कथा रसाला । साधसंग सुनि परम कृपाला ॥

तव मुनिबरन्ह वेदविधि खोले । सोधि सुमृति निगमागम बोले ॥
जो कंचन हल भूप गढ़ावहु । कपिल वरन जुग वृषभ नधावहु ॥
अपनें हाथ गहहु हल राजा । बरषै वारि होइ सब काजा ॥
सुनि अस भूप मौन होइ रहेंऊ । आनन निरखि मुनिन पुनि कहेंऊ ॥ ४
पर उपकार लागि इह करनी । होइ सुखी नर सज्जन धरनी ॥
वेद संत मुनि कहहिं विचारी । धन्य सो नर जो पर उपकारी ॥
तेहि महँ नृप तुम्ह नर प्रतिपाला । धरमरासि जग तेज बिसाला ॥
पुनि जग जनक नाम तुव नीका । लोकहु वेद विदित की लीका ॥ ८
सुनि मुनिवचन भूप हरखाना । पर उपकार लाग भल माना ॥
करि उपाय सोइ नृप जग हेतू । जोतन लगे आइ करि खेतू ॥
दूतन्ह घट गाड़्यो जेहि ठाईं । धार फार अटकेउ तेहि आई ॥
उमा तुरंत निकसि घट आवा । यह चरित्र केंहु जान न पावा ॥ १२
सोरठा । भइ अति बृष्टि अपार भरद्वाज सादर सुनहु ।
कोउ न मेटनहार करता जो कछु कीन्ह चह ॥ २ ॥
कलस विलोकि भएउ सुख भारी । तत छिन कोउ न सकेउ उघारी ॥
भूप जनक के वंस न रहेंऊ । तिहिं गिरिजा बाचा सब कहेंऊ ॥
जो वाला तौ कन्या मोरी । जौ वालक तौ तनय वहोरी ॥
सुनत बचन उघरेउ घट जबहीं । सुंदरि सीता प्रगटीं तवहीं ॥ ४ (नर)
Vवरखेउ देव सुखी सब भएऊ । राजा जनक दान बहु दएऊ ॥
बरखे विबुध सुमन उर लाई । सब देवन्ह दुंदुभी बजाई ॥
जागवलिक कह कथा रसाला । जाई जगत जानकी बाला ॥
जानकिजन्म भयेउ इहि कारन । जनपालन दानवसंहारन ॥ ४ (नर)

*['जवा' में १८२।५V पर निम्नलिखित पंक्तियों का भी प्रक्षेप है—]
चढ़ें मत्त गज जिमि लघु तरनी । कंपत सुधि सरीर नहि धरनी ॥
दोहा । सप्त दीप नव खंड लगि सप्त पताल अकास ।
कंपमान धरनी धिक सु सरितपतिहि मन त्रास ॥

पुनि पुनि कहा कथा उपदेसा । जग जीता सब लंकनरेसा ॥ ४
चारि ठाव हारे भय त्रासा । सकल देव कीन्हे निज दासा ॥

गंगोत्पत्ति प्रसंग

२१२।१→घ (जवा, मन, २१०।१४[v], उद, नर, व्रज, नाथ) ।

अनुज सहित प्रभु कीन प्रनामा । वहु प्रकार सुख पावा रामा ॥
पुनि सुरसरि उतपति रघुराई । कौसिक कहँ पूछा सिरु नाई ॥
कह मुनि प्रभु तुव कुल इक राजा । नाम सगर तिहुँ लोक बिराजा ॥
तेहि नृप के भामिनि सुकुमारी । एक केसिनि सुमती लघु प्यारी ॥ ४
सब प्रकार संपति गुन भ्राजा । सुत बिहून मन बिस्मै राजा ॥
एक समय भामिनि दोउ साथा । नृप तप हित वन गए रघुनाथा ॥
सघन सुफल तरु सुंदर नाना । भृगु मुनि वस तप तेज निधाना ॥[१v]
दोहा । सहित नारि नृप मुदितमन तहाँ बरष सत एक । ८
कीन्हेँ तप भल देखि भृगु अस्तुति कीन्ह अनेक ॥ १ ॥
आये भृगु तप देखि अपारा । कहा मागु बर बहुत उदारा ॥
कहि निज दुख प्रनाम तिहिं कीन्हा । दै असीस तब मुनिबर दीन्हा ॥
नृपघरनी सन मुनि अस भाषा । लेहु सुवरु जेहि जो अभिलाषा ॥
सुनि मुनि बचन सीसु तिन्ह नावा । देहु नाथ तुम कहँ जो भावा ॥ ४
एकहि एक कहा सुत होना । दुसरिहि सहस साठि गुन लोना ॥
हरषित भयउ सुभग वरु पाई । हाथ जोरि चरनन्हि सिरु नाई ॥
सहित भामिनी अवधहि आवा । हरष सहित कछु दिवस गवावा ॥
जानि घरी सुंदर सुखदाई । नामु केसिनि असमंजस पाई ॥[२v] ८
सुमति प्रसा तुंबरि एक सोई । भे सुत प्रगट कहे मुनि जोई ॥
हरष सहित दय दान नरेसा । पूजि बिप्र गुर गौरि गनेसा ॥
घृतघट सुंदर बिबिध मँगाए । ते सब सुत नृप तिन्ह महु नाए ॥
दोहा । इहि बिधि सकल भए सुत पूजे सब मनकाम । १२
जाहिं दिवस निसि हरषबस सुनहु राम घनस्याम ॥ २ ॥
परिजन सब घर घरनि नरेसू । अति आनँद तन मिटा कलेसू ॥
होइ सुकाम सकल मनचीते । इहि सुख बसत बहुत दिन बीते ॥
सरऊ नदी अवध जो अहई । बिमल सलिल उत्तर दिस बहई ॥

[१v] वन सोभा सब भाँति अनूपा । तहँ बिचरहिं बहु खग मृग रूपा ॥
कंद मूल फल अमिय समाना । सर पंकज बिकसे बिधि नाना ॥
तेहि आस्रम तप कर मुनिराया । हरिपद लीन न ब्यापै माया ॥
और अनेक वसहिं मुनि तहँवा । निज निज आस्रम जा कर जहँवा ॥ ४ (नाथ)
(व्रज)
[२v] प्रगटे सुत जानत सब कोई ।

प्रजा लोग के बालक नाना । नित उठि तहाँ करहिं असनाना ।। ४
असंमंजस तहँ तरनी आनी । तिन्हहि चढ़ाइ बोर निज पानी ।।
भए प्रजा सब परम दुखारी । बालकबध सुनि सुनहु खरारी ।।
सकल गए जहँ बैठ नृपाला । बोले बचन नाइ पद भाला ।।
तुम नृप चह हमही प्रतिपाला । सुत तुम्हार भा सब कर काला ।। ८
तजब देसु अब सुनौ नरेसा । बिना तजे नहिं मिटिहि कलेसा ।।
दोहा । तव सुत कीन्हे पाप बहु मारे बालकबृंद ।
तुम कहँ प्रान समान यह हम कहँ तौ क्रिमि मंद ।। ३ ।।
प्रजागिरा सुनि धीरजु दीन्हा । सुतहि देस तें बाहिर कीन्हा ।।
तासु तनय जगबिदित प्रभाऊ । गुननिधि अंसुमान तिहि नाऊ ।।
बसत हृदै नृप के सो कैसें । फनि मनि मीन सलिल रह जैसें ।।
गए प्रजा सब निज निज धामा । भए निसोच मन कहुँ विश्रामा ।। ४
बहुरि नृपति मन कीन्ह बिचारा । आइ भयउ पन चौथ हमारा ।।
द्विज मंत्री गुर सुतनि बुलाई । होम जग्य बिधि बुधि तव आई ।।
रुचिर बेदिका एक बनाई । पेखत बनै बरनि नहि जाई ।।
मख अरंभ छाँडा तब तुरगा । बेगवंत देखिय जनु उरगा ।। ८
दोहा । सुरपति सुनि मख दारुन मन मह करि अनुमान ।
आइ तुरग तव लीन्हा मरम न कोऊ जान ।। ४ ।।
राखा आनि कपिल मुनि पाहीं । कोउ न जान काहु गम नाहीं ।।[१४]
तिन सब आनि कहा नृप पाहीं । महाराज हम कहत डराहीं ।।
लीन्ह तुरंग कछु जान न कोऊ । कहा करिय कछु आयसु होऊ ।।
सुनत बचन नृप बिस्मय पाए । सकल सुतन कहँ तुरत बुलाए ।। ४
जाहु तुरग तुम देखौ जाई । सकल चले चरनन सिरु नाई ।।
सुरपति सम देखिय बलबीरा । सकल धर्मरत अति रनधीरा ।।
तिन्हहि चलत धरनी अकुलाई । बलिपसु जीव भये सब आई ।।
सुमनबाटिका उपवन बागा । सरित कूप बापिका तड़ागा ।। ८
नगर गाउँ मुनि अस्थल नाना । गिरि कानन कंदर अस्थाना ।।
सोरठा । सोधि न तुरगै पाइ आए सब मिलि भूप पहिं ।
चरनन्हि माथौ नाइ बोले प्रभु कहुँ अस्व नहिं ।। ५ ।।
खोदहु महि सुत फेरि पठाए । चले सकल पूरब दिसि आए ।।
तिन्ह के कर जिमि कुलिस समाना । जोजन भरि खोदहिं बलवाना ।।[१४]

---

[१४]जोगवत रहे जो सुभट सम्राना । लेत तुरंग तिन्हहु नहि जाना ।। (मन, उद, नर, व्रज, नाथ)

[१४]सुनु गिरिजा कछु कारन आना । जो कछु चरित रचा भगवाना । (नाथ)

देखि अतुल बल विबुध डराने । मरिहहिं कहि बिरंचि सनमाने ॥
सोधत महि पताल तब आए । दिग्गज एक देखि सिरु नाए ॥ ४
तेहि पूछा सब कथा सुनाए । बहुरि सकल दच्छिन दिस आए ॥
इहि विधि पुनि दूसर गज देखा । अति उतंग गुन बिमल बिसेषा ॥
ताहू कहँ प्रनामु पुनि कीन्हा । चले सकल पच्छिम मन दीन्हा ॥
तिसरेहि देखि प्रदच्छिन कीन्हा । पुनि उत्तर दिस सोधैं लीन्हा ॥ ८
दिग्गज चौथ निरखि सुख पाए । सकल कपिल मुनि पहिं पुनि आए ॥
खोदिन्ह महि कोउ पारु न पावा । आश्रम चहुँ दिस जलधि सुहावा ॥
दोहा । देखा आइ तुरग तब बाँधा मुनिबर पास ।
बोले बचन सक्रोध तब भा चह सब कर नास ॥६॥ १२
खोदि मही हम चतुरहु कोधा । रे रे दुष्ट बहुत तुहि सोधा ॥
कोउ कह चोर दीख बहु होई । इहि सम छली औरु नहि कोई ॥
सुनत बचन मुनि चितवा जबहीं । भए भसम छन महँ सब तबहीं ॥[१४]
पावक जानि कर धरहिं जो प्रानी । जरहिं न काहे ते अभिमानी ॥ ४
जानि गरल जे संग्रह करहीं । सुनहु राम ते काहे न मरहीं ॥
क्रोधु कीन्ह बिन करे बिचारा । भए सकल तिहि तें जरि छारा ॥
इहाँ नृपति अँसुमान बुलाए । नहि आए सब तिन्हहिं पठाए ॥[१५]
दोहा । दीन्ही नृपति असीस तब अति हित बारहि बार । ८
वेगि फिरहु सुत तुरग लै मेरे प्रान अधार ॥७॥
चला नाइ पद सीस कुमारा । विष्णुभक्त तेहि कुल उजियारा ॥
जहँ कहुँ निरख मुनिन के धामा । पूछि खबरि करि दंड प्रनामा ॥
गौरि गनेसहि पाइ असीसा । चहुँ दिग्गजन नाइ पद सीसा ॥
इहि विधि सोधत मग महँ जाता । मिले गरुड़ सों मति करि ग्राता ॥ ४
चरन परत तब आसिष दएऊ । जरे सकल जेहि बिधि सो कहेऊ ॥
सुनतहि बचन सोच भा भारी । लै खगेस देखा थल चारी ॥
अंसुमान तहँ मंजन कीन्हा । क्रम क्रम सबहि तिलांजुलि दीन्हा ॥
बहुरि गरुड़ बोले सुनु ताता । मैं तुहि कहौं करौ सो बाता ॥ ८
सोरठा । करि सुत सोइ उपाइ गंगा आवै अवनि महँ ।
दरसन तें अघ जाइ मंजनु कीन्हे परम सुख ॥८॥
सहसा सब तरिहहिं एही बिधि । गंगा पाइ परम पावन निधि ॥
सुनि अस बचन हृदय मन भाए । सहित गरुड़ मुनिबर पहिं आए ॥

---

[१४]मुनीनेत्र ज्वाला अति भएऊ । तेजप्रताप सकल जरि गएऊ ॥ (नाथ)
[१५]भौ विलंबु कछु जानि न जाई । तेहि कारन नृप सुतहि बुलाई ॥
दिन समीप जग रहा हमारा । सो करु सुत जेहिं सुजस तुम्हारा ॥ (नाथ)

तब खगेस चरनन सिरु नावा । पुरबकथा नृप केरि सुनावा ॥
आसिष देइ तुरग मुनि दीन्हा । हरषा हृदै गवन तब कीन्हा ॥ ४
नगर समीप गरुड़ पहुँचाई । गए भवन निज तब रघुराई ॥
इहाँ तुरग लै नृप सिरु नाई । ब्याख्या सह सब कथा सुनाई ॥
बिस्मै हरष बिबस नृप भएऊ । कीन्हा याग दान बहु दएऊ ॥
बहु बिधि नृपति राजु तब कीन्हा । प्रजा लोग कहुँ अति सुख दीन्हा ॥ ८
दोहा । मनु कहँ राजु देइ नृप आपु गए सुरधाम ।
सुरसरि बिन आए मही मनु न लहै बिश्राम ॥ ९ ॥
तासु तनय दलीप नृप भएऊ । मनु तप हेत उतर दिसि गएऊ ॥
अतिहि अगम तपु कीन्ह नृपाला । बहु बासर बीते बहु[बस?]काला ॥
कहौ कवन दलीपु नृपु भएऊ । सेवा जास नृपति बहु रहेऊ ॥
जीवत जेहि मुख सुरपति रहई । महिम तासु कबि केहि बिधि कहई ॥ ४
भागीरथ अस सुत भए जासू । पितु समान नित अधिक हुलासू ॥
तिन्हहि समर्पि दीन्ह नृप राजू । आप चला उठि तप के काजू ॥
मन मह करत पंथ अनुमाना । सुरसरि आव तजौं न त प्राना ॥
जिमि तनु मनु दीन्हेउ तिमि देऊँ । फिरि निजु नगर क नामु न लेऊँ ॥[१४] ८
सोरठा । इहि बिधि करत बिचार जाइ कीन्ह नृप परम तप ।
बीते कछु इक काल देह तजी कोउ प्रगट नहि ॥ १० ॥
जेहि सुरसरि लगि तजि तन भूपा । सो तजि मूढ़ पियत जल कूपा ॥
इहाँ भगीरथमन अस भएऊ । पितु न आव बहु दिन चलि गएऊ ॥
काकुथ नाम तनय कर रहेऊ । दीन्हा राज नीति बहु कहेऊ ॥
कहि तब पूर्वकथा सुत पाहा । दीन्हि असीस चला नरनाहा ॥ ४
निकसत नगर सगुन भल पाए । अतिहि निविड़ बन तहँ चलि आए ॥
देखि भगीरथ बन सुख पावा । सुरसरि हित तप कहँ मनु लावा ॥
एक चरन दोउ भुजा उठाए । रबि सनमुख चितवै मनु लाए ॥
बरस सहस बीते इहि भाँती । जात न जाने दिन अरु राती ॥ ८
देखि उग्र तपु अज चलि आए । बोले नृप सन बचन सुहाए ॥
चहहि नृपति सो लै बरदाना । बोले नृप करि अजहि प्रनामा ॥
जो माँगौं सो जानत अहहू । मो सन माँगन कस तुम कहहू ॥
दोहा । तदपि कहौं बरु देहु प्रभु मम संतन कर संग । १२
दूसर माँगौं जोरि कर आवै अवनी गंग ॥ ११ ॥[१५]
एवमस्तु कहि पुनि सो कहई । सुरसरि देउँ राखि को सकई ॥

---

[१४]बारमबार इहै ब्रत ठाना । पुनि हरि प्रेम मगन न्रिप ध्याना ॥(नाथ)
[१५]गंगा कारन एह तपु कीन्हा । देहू नाथ जानि जन दीना ॥(नाथ)

छूटि जाइ पुनि तुरत रसातल । फिरै न बहुरि सुनौ नृप भूतल ॥
तेहि तें कहौं एकु तुहि पाहीं । अति दयाल संकर मन माहीं ॥
संकरु राखिहि सुरसरि आजू । उन्हहिं जपे तव होइहि काजू ॥ ४
अस कहि नृप अंतरहित भए । पुनि भागीरथ सिव पहँ गए ॥
विबुधवरष अंगुष्ठ अधारा । बार बार सिव नामु उचारा ॥
सिव दयाल प्रगटे तब आई । हाथ जोरि नृप बात सुनाई ॥
हम राखब सुरसरि कहँ पासा । बहुरि उमापति गे कयलासा ॥ ८
दोहा । उहाँ देवसरि सिववचन सुनि मन कीन विचारु ।
जाउ रसातल सिव सहित जात न लागइ बार ॥ १२ ॥
अंतर सिव अस रचा उपाई । निज सिर जटा सों आप बनाई ॥
इहाँ भगीरथ अस्तुति कीन्ही । सुनि मृदु गिरा छाँडि बिधि दीन्ही ॥
छूटे सोरु भयो अति भारी । चकित देव अहीस गज चारी ॥
सुरसरि आइ सिवजटा समानी । एक बरस तब रही भुलानी ॥ ४
कौतुक देखि सकल सुर हरखे । कहि कहि जयति सुमन तिन बरखे ॥
पुनि भागीरथ सुमिरन कीन्हा । जटा टारि सिव तब तजि दीन्हा ॥
तेहि तें भई तीनि तब धारा । गइ नभ एक एक पातारा ॥
नभ सो गई अघनि की साँपिनि । देवनि धार नाम मंदाकिनि ॥ ८
सोरठा । दूसरि गई पताल नाम प्रभावति हरन दुख ।
तीसरि भइ सो गंग संतन कहँ करनी सुखद ॥ १३ ॥
आइ भगीरथ तब सिर नाए । बोली सुरसरि बचन सुहाए ॥
बेगवंत तुरंत रथ आनू । तुरग मरुत सुभ्रम जिमि भानू ॥
तिहि रथ चढ़ि चलु नृप मम आगे । चलिहौं मैं तुव पाछे लागे ॥
सुनि नृप तुरत दिब्य रथ आना । चढ़ा हृदय सुमिरत भगवाना ॥ ४
चली अग्र करि नृप सुरसरी । देवन मुदित दुंदुभी करी ॥
चलत तेजु कछु बरनि न जाई । टूटहिं तरु गिरि सिला सुहाई ॥
करहिं कुलाहल जिव बहु जाती । कमठ नक्र झष ब्याल बहु भाँती ॥[१४] ८
मंजन करैं देव मुनि आई । मुनिगन सिद्ध रहे सब छाई ॥[१५]

---

[१४]चले नृपति सो अति उर हरखे । देवन्ह मुदित सुमन बहु बरखे ॥ (नाथ)

[१५] अति परम पुनीता जगतबंदिता प्रगट कीन्ह पद कमल हरी ।
महिमा तिन्ह केरी सब जग हेरी थकेउ लखेउ सिव सीस धरी ।
प्रभु परम कृपाला दीनदयाला (जनप्रतिपाला) भागीरथ कहँ दया करी ।
सुरसरि कहँ दीन्हा जेहि सब चीन्हा जानत मुनि सम दृष्टि भरी । ४
परिवार अपारा अघ की धारा महा बिकल भव माह परी ।
तेहि कारन माँगा पद अनुरागा कीन्ह महातप कस न खरी ।

दोहा । तरपन करहिं विविध विधि हरष न हृदय समाइ ।
दरसन तें जिहि जग तरिहि अस सब मुनी कहाइ ।। १४ ।।
करै जो मंजन जपु मन लाई । तेंहि की महिमा कही न जाई ।।
स्यंदन पर नृप सोहै कैसे । तेजवंत रबि देखिय जैसे ।।
नाक्त सैल सुहावन देसा । पीछे सुरसरि अग्र नरेसा ।।
हरिद्वारे समीप तब आए । तिरथ देखि सुरसरि मन आए ।। ४
तीरथहू मन भा सुख भारी । आइ प्रयाग पहुँची अघहारी ।।
तहँ मंजन कीन्हे दुख जाई । बहुरि देवसरि कासी आई ।।
सो सिवपुरी सहज सुखदाई । बरनि न जाइ मनोहरताई ।।V
तीरथ और विविधि विधि जानी । गई तहाँ यह कहौं वखानी ।। ८
मग लोगन कहँ करहु सनाथा । जाइ चली इहि विधि रघुनाथा ।।

। दोहा ।

मिली सु बहुरि उदधिही (गई) उदधि हृदै हरषान ।
लगेउ सराहन भगिरथहि तुम सम धन्य न आन ।। १५ ।।
कीन्ही असी करै न कोई । तप महिमा कस नहि अस होई ।।
सगरतनय तारे ततकाला । हरषवंत तब भएउ भुआला ।।
अब लौं रहे ज कुल मैं कोऊ । तिन के संग तरे सब वोऊ ।।
सकल सुरन सँग तहाँ विधाता । नृप कहँ आइ कही असि बाता ।। ४
धनि भागीरथ जसु जग जयऊ । तुम समान नृप आन न भयऊ ।।
आपनि सँचि प्रतिग्या कयऊ । सुमृति बेद जीवन सुख दयऊ ।।
गंगासागर सबु कोउ कहई । अघ उलूक देखत रवि डरई ।।
भागिरथी अस नामु कहैहैं । सुर मुनि सिद्ध नाग जसु गैहैं ।। ८
अस कहि विधि निज लोक सिधाए । इहाँ भगीरथ अति सुख पाए ।।

भइ नभ वानी अमृत सानी अब पूरे सब काम हरी ।
राखेउ ब्रिद बाना प्रभु मुसुकाना हरषित भवबंधन छोरी ।। ८
सोरठा । अस प्रभु दीनदयाल हरि राखत जन परन अस ।
भगतबस्य भगवान तुलसी तजि मद राम भजु ।। १ ।। (नाथ)
Vपुनि सुरसरि चलि आई तहाँ । रहे रनवीर रिसेस्वर जहाँ ।।
भागीरथ पुनि कहा प्रचारी । गंगा आवहिं अवनि मझारी ।।
आवत गंग रिषै तब देखा । सोखि गए जल काहुँ न देखा ।।
भागीरथ मन महँ पछताई । सेवा करत बेर नहिं लाई ।।
भए प्रसन्न रिषि कहा बुलाई । माँगसि का तपसा कहु आई ।। ४
माँगउँ रिषि गंगा अब सोई । जा तें पित्रतरन महि होई ।।
जंघा फारि रिषै तब दीन्हा । हर्षि भगीरथ कर गहि लीन्हा ।। (नाथ)

छंद । सुख पाइ अमित बहोरि पूजी सुरसरिहि मनु लाइ कै ।
तब दीन्ह आसिष मुदित गंगा भवन गे सुखु पाइ कै ।
इहि भाँति सुनि गंगाकथा तव राम रिषि चरनन नए । १२
कह दास तुलसी राम लखनहि महामुनि आसिष दए ।V
दोहा । कौसिक आसिष सुधा सम सुनि हरषे रघुनाथ ।
प्रभु सुखु पाइ कहा पुनि वेगि चलिय रिषिनाथ ॥१६॥
राम नाम तें संसय जाई । देह धरे कर यह फलु भाई ॥ १६

द्वितीय सोपान (अयोध्याकांड)

ब्रह्माविनय प्रसंग

१।१०→म (बाल, बाग, नाग, उद, खोज, व्रज)
एक बार जानकी समेता । बैठे प्रभु निज रुचिर निकेता ॥
भुज प्रलंब उर नयन बिसाला । पीत बसन तन स्याम तमाला ॥
कोटि मनोज देखि छबि मोहा । सीताकर चामरबर सोहा ॥
तेहि अवसर नारद तहँ आए । सुरहित लागि बिरंचि पठाए ॥ ४
तेजपुंज तन करतल बीना । हरि गुन गान करत लयलीना ॥
देखि राम सहसा उठि धाए । करि दंडवत हृदय मुनि लाए ॥
सादर निज आसन बैठारे । जनकसुता तब चरन पखारे ॥
तेहि चरनोदक भवन सिचावा । जगपावन हरि सीस चढ़ावा ॥ ८
सुनु मुनि बिषय निरत जे प्रानी । हम सारिखे देह अभिमानी ॥
तिन्ह कहँ सतसंगति तव होई । करै कृपा जा कहँ प्रभु सोई ॥
ता कहँ मुनि नाहिन भव आगे । जेहि बिनु हेतु संत प्रिय लागे ॥
ता तें नारद मैं बड़भागी । जद्यपि गृह कुटुंब अनुरागी ॥ १२
दोहा । सुनि हरिबचन मधुर प्रिय करि बिचार मुनि धीर ।
परम कृपाल लोकहित लागि कहत रघुबीर ॥ १ ॥
कह मुनि तव महिमा रघुराया । मैं जानौं कछु तुम्हरिहि दाया ॥
बचन कहेहु प्राकृत की नाईं । ता तें नहि कछु घट्यो गोसाईं ॥
प्रभु यह तुम्हहिं सदा बनि आई* । निज लघुता जन केरि बड़ाई ॥
सहज सुभाव प्रनत अनुरागी । नरतनु धरेहु दासहित लागी ॥ ४
माया गुन जो ज्ञान अतीता । अजित नाम सो दासन्ह जीता ॥
तेहि प्रभु सम अतिसय कोउ नाही । व्यापक अज समान सब माही ॥

Vदोहा । कौसिक बानी अमिअ सम सुनि हरषे रघुराज ।
प्रभुसंसय सब इमि गए लवा निरखि जिमि बाज ॥(मन, उद, नर, व्रज)
* १।१/१—२।३/१ × (नाग) ।

उदर चराचर मेलि जो सोवा। अस्तनपान लागि सो रोवा ॥
नाम रूप गुन बरन न भेदा। अबिगत अकल नेति कह बेदा ॥ ८
निर्मम मुक्त निरामय जोई। दसरथसुत कहि गाइअ सोई ॥
तप जप जोग जग्य ब्रत दाना। बिमल बिराग ग्यान बिग्याना ॥
करहिँ जतन मुनि पाव न कोई। देखा प्रगट भक्तिवस सोई ॥
हठबस सठ साधन बहु करहीँ। भगतिहीन भवसिंधु न तरहीँ ॥ १२
दोहा। जानि सकहु तौ जानहु निर्गुन सगुन सरूप।
मम हृदि कंज भ्रिंग इव बसहु राम नरभूप ॥ २ ॥
ब्रह्मभवन मैं रहेउँ कृपाला। गावत तव गुन दीनदयाला ॥
असि इंछा उपजी मन माहीँ। देखेउँ चरन बहुत दिन नाहीँ ॥
जद्यपि प्रभु सर्बत्र समाना। सगुनरूप मोरे मन माना ॥
अवध चलत बिरंचि मोहि जाना। कीन्ही बिनय लागि मम काना ॥ ४
प्रभु जानत सब अंतरजामी। भगतबछल बिनती यह स्वामी ॥
जेहि निति लीन्ह मनुज अवतारा। नाथ बेगि सो करिअ सँभारा ॥
सुनत बचन रघुपति मुसुकाने। मुनि अजहूँ बिरंचि भय माने ॥
कहेहु तात ब्रह्महि समुझाई। कछु दिन बीते देखेहु आई ॥ ८
बार बार चरनन्हि सिरु नाई। ब्रह्मानंद न हृदय समाई ॥
रामरूप उर धरि मुनि नारद। चले करत गुनगान बिसारद ॥
तब रघुपति सीतहि समुझावा। चाहत करन सो चरित बनावा ॥
सुरहित लागि सो करिअ उपाई। जाइ अवनि परिहरि ठकुराई ॥ १२
दोहा। जग संभव अस्थिति लय जाकी भृकुटि बिलास।
सो प्रभु जतन बिचारत केहि बिधि निसिचरनास ॥ ३ ॥

तृतीय सोपान (अरण्यकांड)

कबंध-कथा

३७।४→ग (अल)

(कबंध उवाच)

अनुज समेत बचन अनुरागी। कर्मभोग तेहि दरसन लागी ॥
नाम कबंध जो दैत अपारा। बर्नि न जाइ ताको बिस्तारा ॥
दोइ भुजा दुइ दिसा पसारै। जो जिव जंतु परै मुह डारै ॥
म्रिग औ सिंघ बाघ मैमंता। भुज सैं खैंचि लै आव तुरंता ॥ ४
बाघ भालु औरउ नर बंदर। कोटि जंतु धरि लीलै कबंधर ॥
अति अनेक निस्चर संघारै। जोजन डेढ़ लहि भुजा पसारै ॥
दूनौ भुजा पसारे भारी। अनुज सहित सो परे खरारी ॥

भुजा माह प्रभु जाइ समाने । खैंचत प्रभु तव सो मुसुकाने ॥
कह लछुमन एह आहै कौना । प्रभु मुसुकाइ रहे भै मौना ॥
वदन समीप जवहिं प्रभु आए । मुँख पसारि ततछन धाए ॥
छंद । सनमुंख धाए मुंख वाए मनहु ग्रासन चाहई ।
मन जानि अति अनुमानि रघुपति हाँक दै सर गाहई ।
कौन विर धै धीर बोलहि बान कर , धर मारऊँ ।
हौं राम काम तुँ गर्ब भूलहि हृदै तोर धै फारऊँ ॥
दोहा । प्रभु को नाम सुनत खन तब सो भएउ सचेत ।
तेहि खन दानव [बिहसै धन्य तुँ क्रिपानिकेत ॥ १ ॥
विहसत वदन सो वर्नौं काहा । जनु धौलागिरि पर्वत आहा ॥
वोइ करै वहु गंध्रबसाई । रघुपति वहुतै जिय अकुलाई ॥
जव आपन सो कह विरतंता । सुनु प्रभु स्रवन प्रुबज निज मंता ॥
जेहि तें गति, कै आभा भएऊ । प्रभु सैं चरित कहै सब लएऊ ॥
राजपुत्र मैं खेलौं नाथा । वहु वालक रह मोरे साथा ॥
रिषि दुर्वासा तप रह साधे । धरे ध्यान मन पौन सों बाँधे ॥
हौं वालकसँग चला सो आई । तपा रहे जहँ आन [ध्यान?] लगाई ॥
वालक विपुल वुंधि के कहई । अलपवुंधि प्रभुग्यान न अहई ॥
पोवा सर्प एक तहँ पावा । लै कै तासु गीव लपटावा ॥
अरु लपटावहिं धै सौ वारा । धरि कै ग्रीव सों देहिं पछारा ॥
रिषै ध्यान तबहूँ नहि तूरहि । तस बस बालक बहु रस फूलहि ॥
टूटे ध्यान देखु रिष जागी । बाल बिघंस करहिं गिव लागी ॥
अस विधि कै लीखा रह आगा । रिषै पास हम गए सभागा ॥
रिषै कोह कै मारेउ थापा । सिर सैं कंध उदरि गै झापा ॥
दोहा । क्रोधवंत भै स्रापेउ नाम कवंध तोहारि ।
जाएहु सैलमध्य सो दानौभेस खरारि ॥ २ ॥
तव मैं कहा मोंछ कह देवा । पावौं मुक्ति सो कहु रिषि भेवा ॥
तव रिषि कहा बचन सुनि लीजै । जैसे मुक्ति भाव सो कीजै ॥
कतेकौ काल रहेहु बन जाई । झर्ना अस गति बहुत्त लँबाई ॥
जब सो होइहै प्रभु औतारा । तब कै कथा कहौं सुनु बारा ॥
रावन रिपु अस होइ अपारा । लंकापति सो महा जुझारा ॥
देव दनुज औ गंध्रप नागा । सभै बस्य करि रखिहै जागा ॥
प्रिथक प्रिथक सेवा सब करिहै । महादुष्ट जग महँ अवतरिहै ॥
दोहा । तासु उधार करै कहँ प्रभु अवतरिहैं आइ ।
बहुत अगति गति पैहहिं देवन्ह सुख रहाइ ॥ ३ ॥
न्रिप दसरथ कुल होइ औतारू । पितु अग्या बनखंड सिधारू ॥

प्रभूसुभाव जानि नहि जैहै । अगतिन्ह के गति भाव रहैहै ।।
तेंहि कारन विधि रचा बनाई । सभ क उधार करै प्रभु आई ।।
तेंहि सँग होइहि मोंछ जे तोरा । जौ प्रभुचरन मिलव कर जोरा ।। ४
सो अब प्रभु के दरसन पाए । मोंछ भए अब भाग सोहाए ।।
रिषि कै स्राप आइ निअराने । अब मोर भाग बहुत सुख माने ।।
दुर्वासै मोहि दीन्ह सरापा । प्रभुपद देखि मिटा सब पापा ।।
पुर्बिल बात मैं तुमहि सुनाई । जेहि तें अगतिन्ह कै गति पाई ।। ८
अब प्रभु तन मोर कीजै दाहा । जेहि तें मुक्ति होइ नरनाहा ।।
जौ प्रभु देहदाह मोर करिहहु । पाछिल कांति अग्नि सें पैहहु ।।
जो प्रभु मैं कछू बकतीं बैना । सो सब करब औ देखब नैना ।।
जो मैं कहा सत्य सो करिहौ । निस्चर जानि झूठ मन धरिहौ ।। १२
अब प्रभु मोरा कीजै दाहा । जेहिं तें मुकुति होइ नरनाहा ।।
जो कछ असुर कहो बिरतंता । सो प्रभु चरित कीन्ह हरषंता ।।
बंध कवै तहँ गाड़ सँवारी । काठ अनेग दीन्ह तहँ डारी ।।
ताके बीच सो देह समावा । तेंहि पर काठ बहुत कै लावा ।। १६
तव बैसंदर मन संचरेऊ । हर्षवंत भै अस्तुति करेऊ ।।
पाँव परसि कै अग्या माँगी । कौन कर्म प्रभु हम बिनु खागी ।।
दिहु अग्या प्रभु पौन प्रसंगा । तव बैसंदर लाग सो अंगा ।।
जरै काठ बैसंदर बाढ़ा । सोव्रन कांति भै बालक ठाढ़ा ।। २०
अति सुंदर देखत मन मोहा । प्रभु तन देखि भएउ अति छोहा ।।
तव प्रभु सें बोलै कछु बैना । जो मैं कहा देखेहु प्रभु नैना ।।
है बंदर सुग्रीव सो बीरा । तिनहि गै भेंटब पर्वत तीरा ।।
यह प्रभु जनि जानहु है बंदर । करब मइत्री कहै कवंधर ।। २४
औ प्रभु तासौं अनुनै करिहौ । उन्ह सौं चित्त हिए सुध धरिहौ ।।
जो कछु होइहि करिही भै आगे । रिछ बंदर सौं सँग तेंहि लागे ।।
उदयाचल चलाचल भौना । तहँ लेहि प्रभु सीता कौं गौना ।।
जो चित आहि सोइ पै धरिहौ । जौ प्रभुवचन हमारो करिही ।। २८
इहै वचन सुनि भौ मन माना । अग्या भै अब त्तहहु बेवाना ।।
अस अनंद होइ रघुपति कहा । अब इंद्रासन जाइ जो रहा ।।

पंचम सोपान (संदरकांड)

लंकादहन प्रसंग

२५।११→अ (राय)

छंद । कोपेउ हनू आकास तहँ मरुत चल अोनचास ।
परेउ झपि जिमि होइ ग्राह लगि रावनाग्रह दाह ।

ब्याकुल भई रनिवास भजि चली अनिलतरास ।
जैसे रही जेहि भेस लटि बिथुरि छूटे केस । ४
संभरत बनै न चीर खरभर नगर अति भीर ।
तजि माइ भागी पूत बिभ्रमत रछसिनि जूथ ।
पति सौं पुकारहि बीर करि बोक मागहि नीर ।
समुझै न को किहि केर बहु धूमघटा अँधेर । ८
चहुँ ओर पवन ससात वहि चलत अटा अघात ।
आवर्ज रावन देखि नहि अग्नि प्रलय विसेषि ।
जो सेवतौ धरि देह सो किमि जरावै गेह ।
जो करै निर्मल पौरि सो चलै बल चहुँ ओरि । १२
सुनि कह मदोवरि रानि अब निज भई कुलहानि ।
नर कपि निसाचर भच्छ सो प्रलै कर लखि अच्छ ।
तुव नारि तन मतिहीन आसक्त भोग अधीन ।
अब मिटा मम संदेह कपि कीन्ह परम अनेह ।। १६

सोरठा । कह लछिमन कह राम मारि कटक जीत्यौ समर ।
सिय आन्यों जिहि काम करौ सँजुग कारज सबै ।। १ ।।

छंद त्रोटक । निहसंक अति हनिमंत्त किए बहु निसाचर अंत ।
फेरा लगूर प्रचंड गयो कुँभकरन के खंड ।
लाई अगिनि चहुँ ओर निसिचर जरहिँ करि सोर ।
सक कोउ न काहु सम्हारि भागी रुदनु करि नारि । ४
सीचहि निसाचर बारि हाथनि उदधि परचारि ।
द्विज मनहु आहुति देत होइ अग्नि सन्मुख लेत ।
परिवार निसिचर जरत सुर सबै जै जै करत ।
ज्वाला उठत आकूत फटि लूक परै जमदूत । ८
ग्रह मेघनाद के जाइ लागे चहूँ दिस धाइ ।
नैरुक्त की सुधि कीन्ह दूतनि जगावन लीन्ह ।
जागै नही बस स्राप ब्यापै नही तन ताप ।
सहि सक न निसिचर आँच भगि चलै नट ज्यौं नाच । १२
जा कह्यौ रावन पास जरै बंधु मध्य अवास ।
करि थके बहु बल जोर खोलैं न लोचन कोर ।
बहु तेज सहिम्र न जाइ अधजरे पहुँचे आइ ।
दससीस यह सुनि बात अकुलाइ उठा धुनि माथ ।। १६

। सोरठा ।

मेघनाद बहु नाति सुत निसिचर बहु धनुषधर ।
दैत्यमंडली साथ चलि आयो नैरुत्त ग्रह ।। २ ।।

छंद त्रोटक । झर्पे अनिल झर झारि धरि सक न कोउ पग धारि ।
फूटहि फटिक फटि खंभ अरराहि गिरि घर थंभ ।
उड़ि लगहि निसिचरगात कोउ अग्नि नहि समुहात ।
भट आवँ नहि मुख बात भयो क्रोध निसिचरगात । ४
बोल्यो बचन दससीस बाननि हनहु किन कीस ।
कहि पैठि मंदिर धाइ तहँ दीख अनुजहि जाइ ।
सोवत सुमेर ससान चलें स्वास घन घहरान ।
भरि भुज उठावन चाह नहि उठे बहु बल बाहु । ८
गहि पद कठोर निकारि पुनि गह्यौ बहु बल धारि ।
लै चले सुभट उठाइ देखत हनू मुसुकाइ ।
यह दैत्य महा अपार दिग्गज न इहि आकार ।
जोवा सहस दस साथ गहि भुजा कोउ पद माथ । १२
करकत कसमसत कंध लिये जात रावन बंध ।
रावन अनुज करि अग्र लै राख बाहेर नग्र ।
हनुमान फेरि लगूर उड़ि बैठ कोट कगूर ।
देखेउ नगर बहु भाँति कटकटंत कसमसै दाँत ॥ १६
सोरठा । हाटक मनिमय हाट घाट बाट जगमगत सब ।
देखि हनू अस ठाट कहसि कहा यह करौं अब ॥ ३ ॥

। छंद त्रोटक ।

तहँ कूदि परेउ उड़ाइ चहुँ वोर अग्नि लगाइ ।
घर घर पवनसुत जाइ जारत लगूर फिराइ ।
होरी करी सब लंक गर्जत हनू निहसंक ।
निसिचर करत पुंकार तन सिथिल बच बिकरार । ४
त्रिय रावनहि दै गारि जनु होलिकाखिल बारि ।
चहुँ वोर लागी आगि नहि ठौर जहँ बचै भागि ।
फिरि लंक हनू बिलोक मन मह रहे करि सोक ।
करि श्रम त्रिकूटहि जारि अति द्युति कनक उजिआरि । ८
गए बंदि जेहि ग्रह देव करें रामपद की सेव ।
दीन्ही दोहाई राम तब हनू कीन्ह प्रनाम ।
पूछेउ तिन्हहि हनुमान तुम देवरूप सुजान ।
लंका जरी बहु भाति अति द्युति किही बिरताति । १२
यह कनकपुरी त्रिकूट लगें अग्नि गो मल छूटि ।
जों दिष्टि सनि की परे सो स्याम लंका करे ।
सिल खोलि कपि सनि गहा लंका धरी जहँ रहा ।
कपि देखि लंका स्याम पुलकित कह्यौ जै राम ॥ १६

सोरठा । साधुबचन परवान अस्थिति उतपति प्रलय जिहि ।
वहु तन किय हनुमान सुनहु उमा प्रभुताइ प्रभु ॥ ४ ॥

षष्ठ सोपान (लंकाकांड)

१६।१०→३ कपिदलवर्णन प्रसंग (नाग)

दोहा । मंत्रिन्ह सहित लँकेस्वर चढ़ेउ धवरहर जाइ ।
सुक सारन कहँ राजसै देखहु दलसमुदाइ ॥ १ ॥
यह जो सिंहनाद किलिलाई । तरुअर सप्त समान उँचाई ॥
सहस कोटि सत संकु समाना । एहि के सँग बानर परिमाना ॥
रन अजीत औ अति निहसंका । नाद सुने काँपति है लंका ॥
लाग अकास के चूर लँगूरा । जनु महि पावस धनुष अँकूरा ॥
बिसकर्मा के सुत अभिमानी । एन्ह सागर बाँधा अनुमानी ॥
वसहिं तांव्रगिरि कंदर माहीं । गोदावरी बिमल जल पाहीं ॥
अति वल आगे धावहिं बीरा । ए दुइ सेनापति नल नीला ॥
दोहा । पदुम अठारह कपिदल चल एन्ह के भुज छाँह ।
अपने हाथ पुष्प लेइ रघुपति पूजी बाँह ॥ २ ॥
यह जे आवत अचल समाना । चौदह तार ऊँच परिमाना ॥
वास पुलिंदा के तट करई । अंबुद ऊपर एह संचरई ॥
तात कमलकेसरि असि देहा । जनु अकास संध्या कर मेहा ॥
मेदिनि हति. लंगूर भवाई । लंका सौंह चितइ जनु खाई ॥
तारासुवन बालि को जायो । अति जुझार रघुपतिमन भायो ॥
मन महँ जपै राम कर नाऊँ । दिन निसि एकर इहै सुभाऊ ॥
करै वज्र वासव कर भंगा । उदया जेही उग्रइ पतंगा ॥
सेनापति ए सब के आगे । रघुपति कृपा करत बड़भागे ॥
दोहा । पाउ भूमि जौ चापै पन्नग होइ अकाज ।
पाँच पदुम बानर सँग यह अंगद जुवराज ॥ ३ ॥
एह जो सेत लसै तनु रेखा । जनु रूपे कर सृंग सुरेखा ॥
दीर्घ केस दारुन भुजदंडा । पाय चपल पलवंग प्रचंडा ॥
वास करै जलनिधि के तीरा । पान करै गोमति कर नीरा ॥
राजा सुग्रिव कर अधिकारी । सबल व्यूह सय रचै सँवारी ॥
वल औ बुद्धि न एहि समाना । एन्ह कर पुरुषारथ जग जाना ॥
जेहि दिन जन्मेउ वल अधिकाई । चढ़ेउ चूर गोमंत के धाई ॥
चंद्रहि धरै गगन उछरेऊ । सत्तरि जोजन तें फिरि परेऊ ॥

दोहा । बानर पचास कोटि सँग सबु दिन एकै साथ ।
कालहु सैं रन जूझै कुमुद आदि कपिनाथ ॥ ४ ॥ ८
यह देखहु जो घटा सुहाई । जस भर भादौं कर बहुताई ॥
नील बरन सुवेल होइ गएऊ । अवनि अकास एकरस भएऊ ॥
आगे पाछे दस दिसि धावहिं । सिला सृंग तरु तोरत आवहिं ॥
सहस नाग बल संकु समाना । सप्त पदुम एन्ह कर परिमाना ॥ ४
ए रिछवत कासी के वासी । अजर अजीत अचल अविनासी ॥
तिछन दंत नख आयुध धारी । मारहिं गज धरि दंत उपारी ॥
एन्ह रिंछन कर जूथ अपारा । धूम्रकेतु ए पालनिहारा ॥
इन्ह कर जेष्ठ बंधु जमवंता । जन्ह के बल कर आहि न अंता ॥ ८
तीनि लोक सैं जूझै पारैं । संकट परे सुबेल उपारैं ॥
बास कै नरमदा के तीरा । वज्र समान अभेद सरीरा ॥
दोहा । राजा कर यह मंत्री रघुपति कर निज दास ।
कालहु सैं रन जूझै नेकु न लेइ उसाँस ॥ ५ ॥ १२
अब देखहु यह जूथ अपारा । पीत बर्न होइ चलेउ पहारा ॥
बाल अरुन रवि किरिनि सि फूटी । कुंकुम माट दिसा जनु छटी ॥
चौबिस अर्बुद एन्ह कर जूहा । सहस बृंद सैं कोटि समूहा ॥
सिला सृंग जे आगे परईं । पावन्ह मीजि किरिकिरा करईं ॥ ४
कंचनगिरि कँदरा के वासी । एन्ह कर जुथप नाथ अविनासी ॥
अति बल वासव कर हितकारी । सुग्रिव सखा समरभुग्र भारी ॥
पान करहिं गंगा कर नीरा । पर्बतसृंग समान सरीरा ॥
छन छन सिंघनाद जो होई । यह गर्जत आवत है सोई ॥ ८
दोहा । जस तिहु गंड गलित गज बल कर आहि न अंत ।
यह कपिराज केसरी जे कर सुत हनुमंत ॥ ६ ॥
घंटा एक आवत है जूटी । जनु मधुसिंधु चलेउ मिति फूटी ॥
भूमि अकास अचल अब सोने । उत्तर तें जनु दंछिन गवने ॥
येहि महँ जूथप नाथ जे अहहीं । अति बल राजा के सँग रहहीं ॥
कपि के रूप अचल अविनासी । ए दुइ पारियत्र के वासी ॥ ४
अति सुंदर औ समर विपंछा । महाबीर ए गवौ गवंछा ॥
पीवहिं तुंगभद्रा कर नीरा । ए मर्दन मँघ मा दुइ बीरा ॥
हस्ती साठि सहस बल जाही । एहि महँ एक कहौं मैं ताही ॥
भेरी नाद सिंघ कर ठाना । विक्रम सारदूल अनुमाना ॥ ८
दोहा । देवन्ह महँ जस सुरपति तेजन्ह महँ जस भानु ।
पनस नाम एह बानर अतिबल निंज निधानु ॥ ७ ॥
यह जो कमलपत्र असि देहा । जनु कैलास सृंग कै रेहा ॥

लोचन मधु पिंगट अति लोने । कामचारि चितवै चहुँ कोने ॥
लंका सौंहि लँगूर भवाई । गर्जंत आवै बज्र कि नाई ॥
सुरपति के सँग जुद्ध के गएऊ । तब तें कामरूप यह भएऊ ॥ ४
ऐसैं वास बसै जे मिताई । तेहि तें यह देवन्ह कर भाई ॥
सहस कोटि कपि इन्ह के संगा । रात पीत सित [औ] वहु रंगा ॥
दोहा । गिरिबर ढापत आवै ऊड़त आवै रेनु ।
तरनि तेज यह रूधै तारातनय सुखेनु ॥ ८ ॥ ८
एहि कपि कर देखहु तनुफेरा । जनु सपंछ होइ चलेउ सुमेरा ॥
एक वार लंका एन्ह जारी । पुनि गर्जंत आवै एहि पारी ॥
जेहि दिन गर्भ अंजनै जाए । बाल अरुन लीलइ कहँ धाए ॥
तीन सहस जोजन उछरेऊ । उदयाचल ऊपर भै गएऊ ॥ ४
मुहँ की चौह जे बज्र समाना । मारुति नाम धरेउ हनुमाना ॥
कामरूप कोटिन्ह बल एही । काल क दंड कुलिस सम देही ॥
बेगवंत तस गरुड़ उड़ाही । बुद्धिवंत दूसर अस नाही ॥
विद्या पढ़इ दिवाकर पहि जाई । उलटि गति सँमुख रविहि उड़ाई ॥ ८
नाक नाग नर पुर गति कारी । महा अवधि तप तेज पुरारी ॥
वारिधि नाघेउ गोपद जैसे । एहि कपीस सैं जूझव कैसे ॥
दोहा । तेज तरुन इव पावक पवन तें बेग अपार ।
कंधे लिए प्रभु श्रीपति श्रीरघुबंस कुमार ॥ ९ ॥ १२
अतसी वरन कुसुम तनु देखत । धन्य सो जन महिमा जो बिदत ॥
मत्त गयंद सुंड भुजदंडा । धनुष बान असि धरन प्रचंडा ॥
उर विसाल अति उन्नत कंधर । कंबु कंठ रेखा प्रसन्नतर ॥
मुखछवि की उपमा कवि जोहइ । ससि सरोष सम कहे न सोहइ ॥ ४
दसनपाँति की काँति कहै को । ललकत मन पटतरहि लहै को ॥
देखत अधरन की अरुनाई । बिंबाफल बंधूक लजाई ॥
सुकतुंडहिं नासिका लजावइ । थके सुकबि नहि पटतर पावइ ॥
सीस जटा के मुकुट बनाए । भाल बिसाल तिलक अति भाए ॥ ८
दंछिन दिसि लछिमनु रनबीरा । राम बाहु औ प्रान समीरा ॥
दोहा । बाम भाग बिभीषन सिर अभिषेका राज ।
बीजमंत्र सब जानै अब कस करै अकाज ॥ १० ॥
अब देखहु सैन्या यह आई । जस भर भादौं कर मेघवाई ॥
रात पीत औ स्वेत सिआहा । सिलासृंग तरवर कै छाहा ॥
कन्या एक ब्रह्म उपजाई । नयन भूरि औ रूप लोनाई ॥
वाल भाय दिनकर बल दीन्हा । रितु जाने बासव रति कीन्हा ॥ ४
जातक जबर बीर दुइ जाए । देव अंस बानर होइ आए ॥

किहकिंधा इन्ह कर अस्थाना । देव सरिस मधुवन उद्याना ॥
रिछमूक इन्ह कर विश्रामा । चारि मास निवसे जहँ रामा ॥
बालि जेठ बंधु राम रन मारा । एहि सिर सौंपेउ राज क भारा ॥ ८
तारा तासु पाट कै रानी । जे कर सुत अंगद अभिमानी ॥
सवा लाख कपि कोटिकु नाना । सहस कोटि कर संकु समाना ॥
सहस संकु कर अरबुद एका । अरबुद सहस क बृंद बिसेका ॥
सहस बृंद जौ होइ अमाना । महापद्म ते कर परिमाना ॥ १२
असे पदुम अठारह साजा । (एह) विग्रह बढ़ेउ राम के काजा ॥
बीर बसन अरु नयन बिसाला । कंबु कंठ है मोति क माला ॥
दोहा । हस्ती साठि सहस्र बल सदा धर्म कै सींव ।
स्वेत छत्र सिर सोभित यह राजा सुग्रीव ॥ ११ ॥ १६
एहि बिधि सकल देखाएउ सुक सारन कपिजूह ।
गनै न रावन कालबस महा गर्व संबूह ॥

२४।१२]→ प्र **विविध रावण कथा** (मया, नाग)

रावन एकु महा बल गर्वा । जीतन चलेउ सुरासुर सर्वा ॥
सागर उतरि पार सो गएऊ । नारिबृंद सो देखत भएऊ ॥
तेन्ह सन कहेसि पतिन्ह पह जाहू । कहेहु कि आएउ निसिचरनाहू ॥
तब मैं तेन्हहि जीति संग्रामा । लेइ जैहौं तुम्ह कहँ निज धामा ॥ ४
सुनत बचन एक जरठ रिसानी । धाइ चरन गहि गगन उड़ानी ॥
गई हरी धरि धरि झकझोरा । डारेसि सिंधु मध्य अति जोरा ॥
दोहा । गएउ अगाध अचेत होइ मरै न बिप्रप्रसाद ।
सावधान उठि चलेउ पुनि हिय हरषेउ न बिषाद ॥ १ ॥* ८
एक रावन कै कहौं कहानी । जीतै चलेउ ससिहि अभिमानी ॥
गएउ निकट अति सित बहु ब्यापे । कंपित गात बिकल भय ब्यापे ॥

५८।६]→प्र **संजीवनी-मूरि प्रसंग** (अल)

कीन्ह तेज सम प्रलय मरुता । सैल समिप गो पवन को पूता ॥
जाइ निकट जौं देखु पहारा । अति दीरघ साखा बिस्तारा ॥
रस अरु वेद जोजन उँचाई । वत्तिस कोस हेठ चकराई ॥
तेहि ऊपर करु वास गँधर्बा । नाना औषधि रहै जो सर्बा ॥ ४
थरु तहँ रहै सजीवनि मूरी । जा तें साल सक्ति होइ दूरी ॥
तीनि कोटि गँधरब बरिआरा । अरु दुइ तहाँ रहैं सरदारा ॥
देखि कीस जिय अचरज माना । बाँदर कहाँ आव एहि थाना ॥

* मिलाइए 'बालकांड' के 'सीताप्राकट्य' (१।३ से १।९) प्रक्षेप से ।

रे कपि सत कहु आपन नाँऊँ । केहि कारन आएहु मम ठाँऊँ ॥ ८
तव हनिवंत बचन अस भाषा । सत्य देव हम हहिं म्रिगसाखा ॥
किहिंकिधा है देस हमारा । राजा तहँ सुग्रीव भुआरा ॥
राम लछन आहहिं दुइ भाई । अग्या पिता लीन्ह वन आई ॥
दोहा । वालि मारि सुग्रीव कहँ राज दीन्ह रघुनाथ । १२
राजा सहित सबै कपि भए राम के साथ ॥ १ ॥
रावन पाप कीन्ह अति भारी । चोरी हरेसि राम कै नारी ॥
तेंहि लगि जुध्य कीन्ह नरनाहा । लागी सक्ति लछन उर माहा ॥
सक्ति घाव लछुमन रन सोआ । औ रघुनाथ चहत तन खोआ ॥
वैद सुषेन कहा परकारा । जेंहि तें जिअै सकति कर मारा ॥ ४
सो विर्सलकरनी है मूरी । देहु तुरंत पंथ है दूरी ॥
सुरपति जहाँ करहिं बिस्रामा । बानर केर कौनु दहुँ कामा ॥
द्रुद्रू कैसभंन्ह जो भाषा । तव अति भए क्रोध म्रिगसाखा ॥
करि अति क्रोध गरजु हनुमाना । लीन्ह गँधर्ब धनुक गुन बाना ॥ ८
अति प्रचंड करहीं रन जूझा । करि तीवान पवनसुत बूझा ॥
अव का करौं सबै अरुझाना । करत जूझि ऊगै जौं भाना ॥
तौ सब महिमा मिटिहै मोरी । होंइ अकाज अति लागै जोरी ॥
दोहा । मारहिं बान खर्ग सौं कपि उर रोम न टूट । १२
डारेंउ कोपि लगूर कपि इंद्रतेज सम छूट ॥ २ ॥
सुमिरि रामपद भरि बौसाऊ । करि अटहास लगूर बढ़ाऊ ॥
लाग लगूर सवन्ह के साथा । परे मुर्छि धरनी धरि हाथा ॥
फेरि लगूर सवन्ह धै मारा । राखे जिअत दोउ सरदारा ॥
तिनहिं बाँधि कँदरा दिहु डारी । खोजहिं मुरी बीर बल भारी ॥ ४

७७१५→ ३ **सुलोचना सती कथा** (मया, नाग, मन)

प्रभुहि बिलोकि सीस पद नाए । उठे हरषि भाइहि उर लाए ॥
कृपादृष्टि प्रभु अनुजहि हेरे । बिगत घाय कीन्हा कर फेरे ॥
बानविद्ध तनु देखिअ कैसा । कनकतून सरपूरित जैसा ॥
मुखप्रसन्नता देखि लखी सब । रिपुबध कहेउ बिभीषनहू तब ॥ ४
धरेउ सो सीस आनि प्रभु आगे । बानर भालु बिलोकन लागे ॥
प्रभु कौतुकी निरखि सो सीसा । राखन कहेउ कोसलाधीसा ॥
दोहा । प्रभु आयेसु सुनि कीसपति राखेउ जतनु कराइ ।
कटक सहित रघुबंसमनि सोभित दूनौ भाइ ॥ १ ॥ ८
कृपादृष्टि सब कटकु निहारे । भे श्रम रहित राम बैठारे ॥

सुनहु उमा एहि विधि रिपु मारे । सुर मुनिगन सब भए सुखारे ॥
अब सो सुनहु बाहु तेंहि केरी । खग ज्यों लंक गई सरप्रेरी ॥
मेघनाद अंगन मह परी । बानविद्ध सोनित सों भरी ॥ ४
देखति तहाँ सुलोचना बैसी । रति तें रुचिर रूप गुन सै सी ॥
नागसुता दसकंठपतोहू । बासवरिपु तिय छबिमय जोहू ॥
हेम सिंघासन सोहति बाला । सेवहिं विद्याधर तिय माला ॥
पूजहिं बिबिध बिनय करि ताही । सुख प्रमोद को सकै सराही ॥ ८
तहँ पतिभुजा परी पबि भाँती । मनहु सकल सुखतरु की काँती ॥
दोहा । तहँ दस दासी देखि करि स्रोन स्रवत भुजदंड ।
भयेउ समर आचरजमय मनहुँ अखंडल खंड ॥ २ ॥
सुनि करि सकल सखीमुख बैना । तजि सिंघासन उठी सुनैना ॥
पेम सुभाय धकधकी धरकी । सूचक असुभ दहिन भुज फरकी ॥
होत महा हव रावन रामहि । बीरधुरीन मोर पिअ ता महि ॥
सकल सुरासुर सकहिं न जूझी । विधि बामता परै नहि सूझी ॥ ४
इतना कहत गई चलि आपू । पतिभुज लखि करि कोटि बिलापू ॥
कंकन मनिगन भूषन सोई । महाबिटप सम आन न होई ॥
देखति मनहि न आवत तेही । तासु प्रभाउ सुनेउ पहिलेही ॥
नीद नारि भोजन परिहरई । बारह बरष तासु कर मरई ॥ ८
दोहा । करि बिचार मन ठीक दै मैं पतिदैवत नारि ।
भुज कहि मेटहि दुचितई सुनि कर दीन्ह पसारि ॥ ३ ॥
लखि रुख तासु सखी उठि धाई । तुरतहि खोजि खरी लेइ आई ॥
दीन्ह हाथ पर मनि अगनाई । लिखत लखन कीरति रुचिराई ॥
नीद नारि भोजन सत कोटिक । तजे तासु महिमा यह छोटिक ॥
अक्षय अव्यय अज अविनासी । अतुल अमित घट घट के बासी ॥ ४
प्रगटहिं पालहिं पुनि जग हरहीं । त्रिगुन रूप त्रय मूरति करहीं ॥
जो कालहु कर काल भयंकर । बरनत सुजसु सारदा संकर ॥
लीलातनु सुर सेवक हेतू । जासु नाउँ भवसागर सेतू ॥
मुनिमन पुंडरीक जा के घर । बचन बिबेक बिचार बुद्धि पर ॥ ८
दोहा । कोटि कलप बरनत निगम अगम जासु गुनगाथ ।
तम सरीर जड़ जीह बिनु क्यों बरनै लिखि हाथ ॥ ४ ॥
मम सिर गयेउ दरस रघुराई । तव बचनन्हि लखि भुजहिं पठाई ॥
एहि बिधि लिखे सकल भुज बाता । परेउ भूमितल अति बिकलाता ॥
बाँचि सकल भुजलिखित जथारथ । लछिमन राम जानि परमारथ ॥
तीयसुभाय तदपि बहु भाँती । बिलपहिं मिलि सब सखिन्ह कि पाँती ॥ ४
गुनगन साहस सील नाह के । कहि रोवहिं बल बिजय बाह के ॥

जेहि भुजबल सुरनाथ बिगोए । सो प्रभु समरभूमि महु सोए ॥
मनिगन भूषन बसन बिसारहि । महि लोटहि करतल सिर मारहि ॥
मगन बिपति संरीरसुधि नाही । दारुन बिपति कहहि केहि पाही ॥
छनक प्रबोध सखी कोउ करई । बहुरि सोक दावानल जरई ॥
छन छन उठति परति धरनीतल । पुनि पुनि सुनि सराहि पति के बल ॥
दोहा । तेन्ह महु सखी सयानि एक कहि समुझाई बैन ।
सोक छाड़ि पतिदेवता सुरति करिय मन चैन ॥ ५ ॥
सुनि कह सहसानन तनु जाता । सत्य कहा तुम्ह सखी सुमाता ॥
विधिनिरमित दुख मो कहँ लाहू । सुख परिपूरि भुग्रन सब काहू ॥
बिजय राम लछिमन कर आएउ । सुजस सकल मरकट कुल पाएउ ॥
कुलकलंक बड़ लहेउ बिभीषन । कुलकुठार अस सुनेउ न दीख न ॥
छूटि बंदि अब सुरगन केरी । निज निज पुरनि दोहाई फेरी ॥
मुनि पुलस्ति कर भा कुलनासू । अब रवि ससि सुख करहु प्रकासू ॥
तेजवंत पावक परिहरि दुख । बहिहि समीर आजु अपने सुख ॥
सलिल गगनतल निर्मल आजू । सुवस बसिहि सुरनायकराजू ॥
दोहा । जम कुबेरु दिसिपाल सब प्रमुदित सुर नर नाग ।
खाइ अघाइ बिहाइ सुख पाइ सुजग्यबिभाग ॥ ६ ॥
इतना कहि मंदिर महँ आई । देखत मनिगन धनबहुताई ॥
सुरपतिभवन न पटतर ताही । जहँ रिधि सिधि बिधि सहित कमाही ॥
देखत विषय न मन अनुरागेउ । पतिपद नेह निपुन मति पागेउ ॥
दीन्हेउ मनिगन भूषन चीरा । धेनु धरनि गज हाटक हीरा ॥
मनिमय सिबिका रची बनाई । भुज चढ़ाइ पहिराव बनाई ॥
आपुन चढ़त भई पुनि आई । सुरदुर्लभ सुखसदन बिहाई ॥
वीतराग तनु तजेउ बिषयगन । सहस भाँति पतिपद लागेउ मन ॥
सुक सारिका सुलोचन ज्याए । कनकपिंजरन्हि राखि पढ़ाए ॥
ब्याकुल कहहिं कहाँ सूनैना । सुनि धीरजु परिहरें सुजनमना ॥
भए बिकल खग मृग एहि भाँती । अपर दसा कैसे कहि जाती ॥
प्रजा लोग सब तजि सँग लागे । प्रेम उमगि लोचन जल त्यागे ॥
दोहा । बाजन लगे निसान घन ढोल दुंदुभी भेरि ।
पुरजन परिजन संग सब चले पालकी घेरि ॥ ७ ॥
देखि भीर दसकंधदुआरे । सजग भए सब बीर प्रचारे ॥
जानहिं कटक रिपुन्ह की आई । अस्त्र सस्त्र कर धरहु बनाई ॥
धनु चढ़ाइ तरकस कटि बाँधहिं । गहि असि चर्म समर बर काँधहिं ॥
तोमर परसु प्रचंड गदा गहि । रोषत चोखे सूल सक्ति लहि ॥
मारु मारु धरु कहि कहि धावहिं । प्रगट दसाननबिजय सुनावहिं ॥

गरजि तरजि कहि गिरा गभीरा । समर भयंकर निसिचर बीरा ॥
निपटहि निकट पालकी आई । चीन्हि सकल भट रहे लजाई ॥[v]
दोहा । भई रजायसु बेगिही लेहु सो ताहि बोलाइ । ८
द्वारपाल दसकंध कहँ समय सुनाएन्हि जाइ ॥
तेहि अवसरहि सुलोचना गह्यो चरन सिरु नाइ ।
राखि भुजा घननाद की करुनावचन सुनाइ ॥ ८ ॥
तुम्हहि अछत असि हाल हमारी । सुख तजि भई सोक अधिकारी ॥
नभतल मग भुज मम गृह परी । संसय देखि दीन्ह कर खरी ॥
लिखी राम लछिमन महिमा एन्ह । क्रम सो सब विधि कथा कही तिन्ह ॥
ठगि सी रही बाँचि गुनगाथा । जरौं संग जौ पावौं माथा ॥ ४
रन कबंध भुज मम गृह आई । सिर तहँ जहँ नरेस दोउ भाई ॥
करिअ सो जतन मिलै मोहि सीसा । तुम्ह सर्बग्य चराचर ईसा ॥
सुनत कुलिस सम गिरा बहू की । जीवन आस दसानन मूकी ॥
तदपि धीर धरि करत प्रबोधा । कहु कहँ मोहि समान जग जोधा ॥ ८
दोहा । राम लखन सुग्रीव नल नील द्विविद हनुमंत ।
माथ विभीषन रिषभ के आन उपारि तुरंत ॥ ९ ॥
अब तें रहेउ भरोसा भारी । कुंभकरन घननाद सुरारी ॥
हमहु आजु लगि कीन्ह न जूझी । इन्ह सब कै पुरुषारथ बूझी ॥
मुए ते नर बानर के मारे । बात सुनत बड़ि लाज हमारे ॥
गनती कवन बीर महँ एन्ह कै । असि दुरदसा कीन्ह कपि जेन्ह कै ॥ ४
छाँड़ु सोच कुलबधू पतोहू । जानहि तेन्ह समान जनि मोहू ॥
पुत्रि बिलंब करहि धरि चारी । देखहि मोरि भयंकर मारी ॥
आनि सीस सब सत्रुन्ह केरा । बिनु प्रयास लागिहै न बेरा ॥
भोगवहि जनु पुराकृत भोगा । न त कत निसिचर बनचर जोगा ॥ ८
दोहा । मेरु उखारि निहार जे धराधरहि कर बीच ।
ते भट खाए मसकसिसु कालकुटिलता नीच ॥ १० ॥
क्रोधावेस प्रगट बल बोलइ । हृदय सोक तरु अचलु न डोलइ ॥
समाधान नहि मानति सोई । सुनि प्रताप परितोष न होई ॥
नर बानर पुरुषारथ देखत । बड़ पर प्रबल छोट करि लेखत ॥
कूदि सिंधु लंका कपि जारी । लघु करि मानत ताहि सुरारी ॥ ४
कुंभकरन अतिकाय महोदर । मम पति गरेउ ससैन सहोदर ॥
जे रिपु चहै दसानन जीती । देखिअ महामोह कइ रीती ॥
उतरु देउँ तौ पातक होई । का बिवाद अब सरबस खोई ॥

---

[v] देखि जोहारि नागपतिकन्या । सतीसिरोमनि त्रिभुअन धन्या ॥ (मन, नाग)

फिरेंउ राज तौ मोहि न काजू । बिनु पिअ सकल नरक कर साजू ॥ ८
दोहा । तुरतहि उठी सुलोचना गई मयसुता पास ।
पद गहि रोवति सकल कहि प्रगट सोक उपहास ॥ ११ ॥
आदिहि तें सब कथा बखानी । सुनि सुनि रोवहि रावनरानी ॥
कही सुपतिभुज लिखी बहोरी । राम लखन महिमा नहि थोरी ॥
कहेंउ बहुरि दसकंधरक्रोधा । मुएहु बिडंबित कीन्ह सुजोधा ॥
सुनी सुपुत्रवधू की बानी । बोली दुखित मँदोदरि रानी ॥ ४
कहाँ सो मानव सत्य सयानी । सुनी जो नारदमुख की बानी ॥
पीछिलि बात भई सब साँची । अनुभव कीन्ह न एकौ बाँची ॥
देखि न होइ बृथा रिषिभाषित । अपने महामोह मन माखित ॥
आगिलि कथा समास समेता । सुनहि पुत्रि रिषि बरनेंउ जेता ॥ ८
बीरभाव दसकंधर जूझिहि । प्रानहु गए नीति नहि बूझिहि ॥
सीय सोक संकट तें छूटिहि । बानर भालु राजघर लूटिहि ॥
सुरमनि भूषन बसन बिमाना । भोग करिहि बनचरकुल नाना ॥
दोहा । राज बिभीषन पाइहै अमर कलप निरबाहि । १२
भावीबस सुख दुख जगत उपदेसिअ कहु काहि ॥ १२ ॥
मुनिबरबचन कि मोहि प्रतीती । अनुभव सदा हारि अरु जीती ॥
तुहूँ पुत्री परिहरि अब सोका । पतिसँग तुरत साधि परलोका ॥
जाहि राम पह पतिसिर लागी । तजि सकोच किन आनहि मागी ॥
होइ लाजु नहि आजु क भूषन । समयहीन गुनगन गनि दूषन ॥ ४
एकनारि ब्रत रघुपति केरा । लखन सुजस तैं सुना घनेरा ॥
है पुनि ससुर बिभीषन तोरा । बालिसुअन बालक हइ मोरा ॥
जामवंत मंत्री सुग्रीवा । द्विविद मयंद महा बलसीवा ॥
जानिअ ब्रह्मचर्ज हनुमंता । सिवसरूप भयहर भगवंता ॥ ८
सदा नीतिरत राम नरेसा । तहाँ जात कहुँ कवन कलेसा ॥
दोहा । बिदित तोहि पतिभुज लिखित लछिमन राम प्रभाउ ।
महूँ सुरिषिभाषित कहेंउँ अब बिलंब नहि लाउ ॥ १३ ॥
सुनत सासुमुख की हितबानी । जाउँ राम पह एह मन आनी ॥
बार बार चरनन्ह सिरु नाई । चलत भै जहँ लछिमन रघुराई ॥
देखी कटक भालु कपि केरी । सिंधु सुबेल महीधर घेरी ॥
उमगेंउ मनहु महोदधि दूसर । हरित पिंग कपि धूमिल धूसर ॥ ४
लूमलालिमा सकिअ न हेरी । मनहु लपट बड़वानल केरी ॥
गिरि तरु धर भुज सहज भयंकर । जहँ तहँ प्रगट होत जनु जलधर ॥
लछिमन सेस सुअंक सीस धरि । कटक जलधि सोवत राघव हरि ॥
अक्षयबट तहँ बढ़िहि बिभीषन । अस सुकृती श्रुति सुनेंउ न दीखन ॥ ८

दोहा । देखत डरति सुलोचना धीरज धरति बहोरि ।
महाराज रघुबरहि को बिनय सुनाइहि मोरि ॥ १४ ॥
बानर सकल उठे अस बोली । अरिपुर तें आवत यह डोली ॥
जानि परत रावन अब बूझा । भइ मति मेघनाद जब जूझा ॥
हठ तजि सीतहि दीन्ह पठाई । तजहु सोक अब मिटी लराई ॥
जेंहि लगि प्रगट कीन्ह पुर आगी । बाँधेउ सेतु हेतु जेंहि लागी ॥ ४
सो सीता जो बिनु श्रम पाई । जानव बिधि अनुकूल अघाई ॥
बिजय राम सुग्रीवहि आएउ । सुजस बीर बानरकुल पाएउ ॥
बिरह राम लछिमन कर छूटेउ । बिनु कलेस लंका गढ़ टूटेउ ॥
जुग जुग कीरति रहिहि हमारी । कत रन कत हम लघु बनचारी ॥ ८
दोहा । एहि बिधि चारु बिचारु करि दई ठीक मन माहि ।
भएउ काज रघुराज कर बात दूसरी नाहि ॥ १५ ॥
पइठत कटक अतिहि सकुचाई । अनचिन्हार जिमि परघर जाई ॥
आगे जाइ देखि रघुबीरहि । छबिमय स्यामल गौर सरीरहि ॥
मरकत कनक छबिहि जनु निंदत । धन्य सो जन महिमा जो बिंदत ॥
मत्त गयंद सुंड भुजदंडा । धनुक बान असि धरन प्रचंडा ॥ ४
उर बिसाल अति उन्नत कंधर । कंबु कंठ रेखा प्रसन्नतर ॥
मुखछबि की उपमा कवि जोहइ । ससि सरोज सम कहुँ न सोहइ ॥
दसनपाँति की काँति कहै को । ललकत मन पटतरहि लहै को ॥
देखत अधरन की अरुनाई । बिंबाफल बंधूक लजाई ॥ ८
सुकतुंडहि नासिका लजावइ । थके सुकवि नहि पटतर पावइ ॥
दोहा । छबिमय गुनमय तेजमय राम उदधि अवगाह ।
जहाँ न पावहिं पार सुर क्यों बरनिअ करि थाह ॥ १६ ॥
भृकुटी बिकट कपोल सुहाए । सीस जटा के मुकुट बनाए ॥
भाल बिसाल तिलकजुत सोहइ । ध्यानसमै मुनिमानस मोहइ ॥
बलकलबसन तून कटि बाँधे । कर सर सुभग सरासन काँधे ॥
बीरासन आसन मृगछाला । नव पल्लव प्रसून कै माला ॥ ४
चरन सरोज बरनि नहि जाहीं । जहँ मुनि मधुकर सदा लोभाहीं ॥
प्रगट भई जेंहि थल तें गंगा । श्रुति पुरान कह कथाप्रसंगा ॥
नवहिं महेस बिरंचि जाहि कहँ । लोचनगोचर होहिं काहि कहँ ॥
जन आरति भंजन कहँ जो हित । भवसागर तारन कहँ बोहित ॥ ८
दोहा । प्रनतपाल बिरिदावली जिन्ह चरनन्ह कै बानि ।
सोचहरनि संसयदरनि करनि सुमंगलखानि ॥ १७ ॥
कर जोरें अंगद हनुमाना । द्बिबिद मयंद कुमुद बलवाना ॥
जामवंत कपिपति बलसीला । रिषभ सुषेन सहित नल नीला ॥

महावीर बानर सब राजहिं । लखन बिभीषन दुहुँ दिसि भ्राजहिं ॥
मितभाषी सर्बज्ञ सुसेवक । चितवहिं रुख रघुनंदन देव क ॥ ४
सभामध्य सोभित रघुनंदन । कीन्हेसि सफल निरखि निज ईखन ॥
कर दंडवत सीस धरि धरनी । सुचरितकथा बिभीषन बरनी ॥
पुत्रवधू दसकंधर की है । पतिदैवत सुलोचना ती है ॥
मेघनाद की नारि सुसीला । यह गति तव विरोध की लीला ॥ ८
दोहा । मुए ज्ञान पतिभुजहि भा लखि समुझाएसि मोहि ।
महाराज रघुबंसमनि जाचन आइउँ तोहि ॥ १८ ॥
करति प्रनति आदर नहि थोरे । करुनावचन कहति कर जोरे ॥
परसत पदु पावन सोकनसावन प्रनत भई तपपुंज सही ।
देखत रघुनायक जन सुखदायक सन्मुख होइ कर जोरि रही ।
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहि आवै बचन कही । ४
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुग नैनन्हि जलधार बही ।
धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहँ चीन्हा रघुपतिकृपा भगति पाई ।
अति निर्मलि बानी अस्तुति ठानी ज्ञानगम्य जय रघुराई ।
मैं नारि अपावन प्रभु जगपावन रावनरिपु जनसुखदाई । ८
राजीव बिलोचन भवभय मोचन पाहि पाहि सरनहि आई ।
भुज मोहि उपदेसा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना ।
देखेउँ भरि लोचन हरि भवमोचन इहै लाभ संकर जाना ।
बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न बर मागौं आना । १२
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ।
एहि भाँति सुनयना अस्तुति बयना बार बार हरिचरन परी ।
जो अति मन भावा सो बर पावा चरन नाइ महि सीस धरी ॥*
दोहा । अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित कृपाल । १६
तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल ॥ १९ ॥
तुम्ह अंतरजामी भगवाना । प्रभुता आदि अंत अवसाना ॥
करुनावचन सुनत रघुबीरा । पुलक रोम भए सिथिलसरीरा ॥
देउँ जिआइ तोर पति आजू । भूजै लंक कलप सत राजू ॥
छाड़ि सोच अब मन हरषाही । तुरत भवन अपने फिरि जाही ॥ ४
सुनि अस सत्यसंध कै बानी । मन मह बनचरचमू डेरानी ॥
कहि न सकहिं कछु प्रभुरुख देखी । कहा करिहि करतार अलेखी ॥
सीयसोच कर फल नहि होइहि । जौ करि कृपा राम एहि जोइहि ॥
दोहा । राज बिभीषन लंक कर करिहहिं केहि बिधि भाइ । ८
समुझि बयर घननाद जब गही सरासन जाइ ॥ २० ॥

* मिलाइए १।२११/१-१६ से ।

मुखरुख लखि करि कपि सब जाना । प्रनतपाल भगवंत समाना ॥
देखि बहुत रघुबर की छोहू । विनय करति दसकंधपतोहू ॥
तुम्ह उदार दीबे सब लायक । करुनामय देखिअ रघुनायक ॥
महूँ बिचार कीन्ह मन माही । जीवन तें यह मरन सराही ॥ ४
जिति भुजबल लोकप बस कीन्हेसि । चौदह भुअन भोग करि लीन्हेसि ॥
रन तीरथ जाचक विधि कीन्हेसि । प्रान सुधन लछिमनकर दीन्हेसि ॥
अब न उचित बित दै अपहारा । तेंहि पर अधिक जो दरस तुम्हारा ॥
जानिअ महूँ मरब सत साधी । मिलब तुम्हहि जस मिलहि समाधी ॥ ८
दोहा । निर्मल गति अवसर भएउ सुनिअ सत्य रघुबीर ।
तुम्हहि मिले नहि होइ भव जथा सिंधुगत नीर ॥ २१ ॥
मन की जाननिहार सुदेवा । भवसागर तारिहि एहि खेवा ॥
लीन्हेउ रिषभ कपीस बोलाई । मेघनादसिर दीन्ह मगाई ॥
पाइ कृतारथ मानेसि आपू । मिटा बिरहसंभव परितापू ॥
अंचल पोछति मुख कै धूरी । कहि मम प्रान सजीवनि मूरी ॥ ४
देखि कहत संदेह सुग्रीवा । भुज महि लिखइ सो मोहि न सीवा ॥
हसै बदन तउ तिय यह साँची । नतरु निसिचरी माया नाची ॥
कत एह ग्यान मृतकभुज गावै । जो मुनिवर साधनहु न पावै ॥
प्रभु अस कहेउ हसिहि एह सीसा । किए कुतरक न उचित कपीसा ॥ ८
दोहा । सिर सों कहति सुलोचना हसहि बेगि मम नाथ ।
नतरु प्रतीति न मानिहैं लिखा जो तुम्हरे हाथ ॥ २२ ॥
छनकु बिलंबु कीन्ह नहि बोलइ । मृतक सो मुख मुद्रित नहि खोलइ ॥
पुनि पुनि कहत सो नागकुमारी । स्रमित भएहु रन महँ करि मारी ॥
लगेउ लखनसर छोभ बढ़ावहि । प्रभु समीप कत मोहि लजावहि ॥
जो मन बचन करम एह देही । पतिदेवता न आन सनेही ॥ ४
तौ प्रभु सभाबीच सिर बोलइ । रहि जाइहि जग सुजस अमोलइ ॥
जो जनतिउँ तव एह गति साँई । बोलि पठवतिउँ पितहि सहाई ॥
सुनि तियबचन हसेउ हठि सीसा । चउके चकृत भालु भट कीसा ॥
हसेउ ठठाइ बदन सब देखत । बिस्मय भएउ सकल जन पेखत ॥ ८
कुलिस सरिस पुनि सुनि नहि जाई । रहेउ सो बदन बहुरि अरगाई ॥
सकुच कपीसहि तोषेउ नारिहि । बड़ आचरज भएउ बनचारिहि ॥
पूछा कपिपति चरन [पद?] सिरु नाई । कारन कवन हसा सिर साँई ॥
दोहा । सीस नाइ प्रभुचरन महि बहु विधि विनय सुनाइ । १२
आजु क दिन रन परिहरब मम हित कोसलराइ ॥ २३ ॥
बहुरि बिभीषन पदहि नमति सो । रघुबर गुन गन हृदय रमति सो ॥
तुम्ह पितु सम दसकंधर नाईं । एहि कुल की तेंहि लगी बड़ाई ॥

मुनि पुलस्ति परिवार क दीपक । पाएहु फल रघुबीर समीप क ॥
महूँ मोहबस अनभल मानेउँ । ग्यान भए तब गुन पहिचानेउँ ॥ ४
जुग जुग करब अकंटक राजू । सहित सुकीरति सुकृतसमाजू ॥
सुमिरंत तुम्हहि सुजन गति पाइहि । रघुपतिचरित संग करि गाइहि ॥
सुनत बिभीषन मन करुना भरि । प्रगट न करत समय अटकर करि ॥
काल करम गति कहि समुझाएउ । चली तुरत गुर आयसु पाएउ ॥ ८
दोहा । बाहेर करि कपिकटक तेँ फिरे बिभीषन आपु ।
बिसरेउ दसकंधरबयरु होत निरखि संतापु ॥ २४ ॥
सिर चढ़ाइ पालकी चढ़ी सो । रघुपति कृपा प्रभाव बढ़ी सो ॥
हृदय राखि मूरति घनस्यामहि । रसना रटति निरंतर नामहि ॥
सरित सिंधु संगम जहँ पावन । यह सुधि पाइ आइ गए रावन ॥
संग मँदोदरि सब रनिवासू । मनहु सोक रवि कीन्ह प्रकासू ॥ ४
पाइ रजाएसु सेवक धाए । चंदन अगर भार बहु लाए ॥
रचि दृढ़ दारुन्ह चिता बनाई । जनु सुरलोकनिसेनी लाई ॥
करि प्रनाम सब जन परितोषे । धीरज धरि सुमिरत चित चोखे ॥
सिर भुज धरि बैठी करि आसन । भइ जनु जोगसिद्धि कर बासन ॥ ८
दोहा । दीन्ह अगिनि ज्वाला बढ़ी लपट गगन लगि जाइ ।
लखी न काहू जात तेहि सुरपुर पहुँची जाइ ॥ २५ ॥

अहिरावण-कथा प्रसंग

७१२→ ञ (माया, नाग, मन्त्र)

देखि चरित पुनीत सुर गावहिं । बरषि सुमन दुंदुभी बजावहिं ॥
तासु क्रिया करि निसिचरनाहा । भएउ सोचबस अति उर माहा ॥
सचिव आइ सब लगे बुझावन । बादि बिषाद करिअ जिअ रावन ॥
सुत बित नारि बिबिध सुख कैसे । उपजहि घटा जाहि नभ जैसे ॥ ४
तड़ितदमक देखिअ घन माहीं । रहहिं न थिर ते बहुरि छपाहीं ॥
यह जिअ जानि सुनिय दसभाला । बचहि न कोउ जग आए काला ॥
अब प्रभु जतन बिचारहु सोई । रिपु कर नास जवनि बिधि होई ॥
बचन सुनत किछु तेहि सुख माना । काल बिबस जिमि तीरथ ग्याना ॥ ८
दोहा । लागेउ करन बिचार पुनि बहु प्रकार दससीस ।
समुझि हृदय अहिरावनहि आएउ जहँ मृदु ईस ॥ १ ॥
दंड चारि निसि तहँ तब बीती । संध्याबंदनु कीन्ह सप्रीती ॥
लागेउ करन ध्यान दससीसा । बहुरि हरषि जोरेउ कर बीसा ॥
सिवसेवक सो अति अनुरागी । सुनु खगेस तेहि तें बड़भागी ॥
करषनमंत्र जपे दसभाला । अहिरावनचित डोलु पताला ॥ ४

लगेउ करन सो अति अनुमाना । किमि कारन दसमुख अकुताना ॥
निसिचरनाह भुवन बस जा कें । जीतन कहँ न बीर कोउ ता कें ॥
मन क्रम वचन आन नहि सेवी । धरेउ ध्यान उर कामद देवी ॥
चलेउ वहुरि आएँउ सो तहँवा । सिवमंडप दसमुख रह जहँवा ॥ ८
निसिचरपति कहँ तेन्ह सिर नाए । कर गहि सुभ आसन वैठाए ॥
दोहा । अहिरावन तव रावनहि पूछत कुसल सप्रीति ।
प्रथम कहा सो सव कथा भगिनी कीन्हि अनीति ॥ २ ॥
वध खर दूषन जिमि सुधि पाई । मारिच कपटमृग कथा सुनाई ॥
कहेसि वहुरि सीता कर हरना । पवनतनयबल लंकादहना ॥
सेतु बाँधि जिमि प्रभु चलि आएउ । वालितनय संबाद सुनाएउ ॥
अनिप अकंपन अरु अतिकाया । परे समरमहि सुनु अहिराया ॥ ४
तात कुसल अव आइ सिरानी । कटकु निसाचर सकल खुटानी ॥
कुंभकरन घननादी मारे । राम लखन ते मनुज विचारे ॥
आनेउँ बोलि तोहिं निज पासा । करु सोइ जतनु होइ रिपुनासा ॥
सुनत वचन कह केतिक वाता । हरि लेइ जैहौं दूनौ भ्राता ॥ ८
लै पताल देविहि वलि देऊँ । जस पूरन निसिचर महँ लेऊँ ॥
लेइ जव जाएउ जानेहु तवही । रवि सम तेज होइ निसि जवही ॥
दोहा । कहि अस वचन प्रवोध करि सीस नाइ वल भाषि ।
आएउ रघुपतिकटक तव निज देवी उर राखि ॥ ३ ॥ १२
सूझ न कर निसि अति अँधियारी । मर्कटभट जागहिं तहँ भारी ॥
कहहिं जयति जय जयति कृपाला । अति हिय अगमन देखि अकाला ॥
तहँ मारुतसुत रची उपाई । निज लँगूर की कोट वनाई ॥
सो सोभा कछु वरनि न जाई । जनु भुजंगपति रहे तहँ आई ॥ ४
अरु जिमि देखिअ सैल समाना । दरवाजे मुख कृत हनुमाना ॥
देखि हृदय अहिरावन हारा । जिमि रवि उए न तमपैसारा ॥
एकौ जुगुति न मन ठहरानी । कपटवेष तेइँ कीन्ह भवानी ॥
वेष बिभीषन सव अनुहारी । पवनसुअन यह भा छलकारी ॥ ८
दोहा । सहज प्रतापी पवनसुत पुनि सुरपतिपति दास ।
तिन्हहिं निदरि चल्यो राम पहि मूढ़ हृदय नहि त्रास ॥ ४ ॥
मरमु न जानै कछु सुत पवना । रूप विभीषन करि तव गवना ॥
ठाढ़ भएउ वोलेउ सुनु भ्राता । चलेउँ जहाँ कृपाल जनत्राता ॥
मैं रघुपति सन आएसु पाई । संध्या करन गएउँ सुनु भाई ॥
तेहि तें तुरित चलेउँ प्रभु पाहीं । भै विलंव जनि राम रिसाहीं ॥ ४
सत्य वचन कपि निज मन जाना । सुनु खगेस भावी वलवाना ॥
कपटचतुर गति जानि न जाई । पर मनु हरै हरै धनु भाई ॥

आएसु पाइ गएउ सो तहँवा । फनिपति प्रभु दूनौ रह जहँवा ॥
कपिपति जामवंत नल नीला । बालितनय सुषेन बलसीला ॥ ८
दोहा । द्विविद मयंद कपीस गन जे गवाछ कपिबीर ।
सहित बिभीषन अपर भट सोए सब रनबीर ॥ ५ ॥
तहाँ मध्य रावन ससि राहू । एक सँग सोए फनिमनिनाहू ॥
दहिनी दिसि सोवत रघुनाथा । अनुज बाम दिसि तेहि पर हाथा ॥
प्रभुकर उर पर राजत कैसे । जातरूप पर फनिपति जैसे ॥
कपि सब भे जिमि सागर छीरा । तहँ सोए मानहु दोउ बीरा ॥ ४
सुभग बान धनु धरे बनाई । लखन सहित समीप रघुराई ॥
अहिरावन मन किये प्रनामा । देखि राम घन सुंदर स्यामा ॥
ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावहिं । मुनि महेस पूजा मन लावहिं ॥
करहिं बिबिध बिधि जोग बिरागी । रटहिं निरंतर दिनु निसि जागी ॥ ८
सो प्रभु तेइँ देखा भरि लोचन । कृपासिंधु सेवकभय मोचन ॥
बहुरि हृदय अस कीन्ह बिचारा । रावनकाज करौं अनुसारा ॥
कछु निज माया कृत गुनि आई । कवनी भाँति जाहिं दोउ भाई ॥
दोहा । मोहन तें मोहेसि सबहि स्तंभन तें मुख मूदि । १२
भएउ अदृस्य उचाट करि प्रभुहि चलेउ लइ कूदि ॥ ६ ॥
एहि बिधि प्रभुहि गएउ लेइ सोई । नभमारग प्रताप अति सोई ॥
सो प्रकास जब रावन देखा । बचन प्रमान तासु करि लेखा ॥
मन मह हरष करै अति भारी । अहिरावन लै गा असुरारी ॥
लेइ निज लोक गएउ छन माही । सोर भएउ तब कपिदल माही ॥ ४
जागे बानर श्रीहत भारी । देखिअ जिमि सरिता बिनु बारी ॥
अरु देखिअ जिमि निसि बिनु इंदू । तेजहीन बासर जिमि चंदू ॥
रबि बिनु दिन जीवन बिनु देहा । जिमि दीपक बिनु देखिअ गेहा ॥
एकहि एक लगे तब पूछन । कहाँ गए त्रैलोक्यबिभूषन ॥ ८
दोहा । सोधा सबहिन कटकु सब नहिं पाए दोउ बीर ।
भे ब्याकुल सब भालु कपि मनु जलचर बिनु नीर ॥ ७ ॥
सकल कहहिं एहि बिधि का कीन्हा । रघुपति बिना प्रान अब लीन्हा ॥
सोकग्रसित धरि सकहिं न धीरा । कहाँ राम लछिमन बलबीरा ॥
करुना करहिं कपीस अपारा । बनी बात बिधि काह बिगारा ॥
कटक निसाचर सकल सँहारी । रहा एक रिपु रावन भारी ॥ ४
सोउ न रहत प्रभुसर के लागे । भाइहु हम सम कोउ न अभागे ॥
कबहुँक जौ दससीसहि जीतहिं । उत्तरु कवन देब हम सीतहि ॥
यह कहि बिकल मुरुछि महि परेऊ । लागे बज्र सैल जनु गिरेऊ ॥
बीभीषनगति कहि नहि जाई । फेकरत बछ जिमि धेनु लवाई ॥ ८

दोहा । सहित पवनसुत रिच्छपति दुख मन भा बहु भाति ।
खगपति सूझ न कतहु कछु तम अपार तेहि राति ॥ ८ ॥
पवनतनय पुनि कह सब पाही । बिस्मय एक होइ मन माही ॥
कोउ एक आइ बिभीषनभेषा । प्रभु के निकट जात मैं देखा ॥
पूछत बचन कहेसि अति नीका । कपट न जानौं निसिचर जी का ॥
बचन सुनत बोलेउ लंकेसा । अहिरावन लेइ गा अवधेसा ॥ ४
पन्नगलोक बसत है सोई । मम तनु वेष अवर नहि होई ॥
महाबली जानै बहु माया । निस्चय ओहि दससीस पठाया ॥
जेहि बल होइ उहाँ सो जाई । ताहि जीति आनै दोउ भाई ॥
कहै भालुपति सुनु हनुमाना । तव बल तात सकल जगु जाना ॥ ८
वेगि सो जतनु बिचारहु ताता । कृपासिंधु आनहु दोउ भ्राता ॥
दोहा । बिलखि कहेउ कपिपति बहुरि मारुतसुत सुनु तात ।
बिनु रघुपति धिग जीवन पल जुग सै सम जात ॥ ९ ॥
त्रिषित मीन बिनु वारि दुखारी । तैसे हम सब बिना खरारी ॥
रबि बिनु पंकज होइ मलाना । तैसे हम सब भे हनुमाना ॥
सीतासुधि जिमि औषधि आनी । तेहि प्रकार आनहु गुनखानी ॥
यह सुनि बहुरि पवनसुत बोला । चित थिर करहु सैन नहि डोला ॥ ४
भुअन चारि दस तीनिहुँ लोका । अनिहौं प्रभुहि तजहु तुम्ह सोका ॥
तब तें सजग रहेहु सब भाई । लरेहु काल जौ रन चढ़ि आई ॥
एह कहि गर्जि चलेउ हनुमाना । प्रलयसमय के मेघ समाना ॥
चले जात एक तरु तर गएऊ । गीधिनि गीध कहत अस भएऊ ॥ ८
तासु बचन सुनि खग अस कहेऊ । अहिरावन राघव लइ गएऊ ॥
देइहि बलि देविहि सो जाई । बड़े भाग आमिष सो पाई ॥
कवनेहु जतन देव मैं आनी । अस कहि गीध नारि सनमानी ॥
जबहि पवनसुत यह सुधि पाई । चलेउ हृदय सुमिरत रघुराई ॥ १२
तुरत पतालहि तेहि छन गएऊ । अहिरावनपुर प्रबिसत भएऊ ॥
द्वारपाल मकरध्वज कीसा । कपि सन डाटि कहत बहु रीसा ॥
निदरि चलेसि मोहि तोहि डरु नाहीं । जिमि दीपहि न पतंग डेराहीं ॥
मैं मारुतसुत कर हौं बालक । स्वामिभक्त भंजन मुख काल क ॥ १६
सोरठा । सुनत बयन हनुमान बिस्मयबस बोलत भए ।
अरे मूढ़ अग्यान मोरे सुत सपनेहु नहीं ॥ १० ॥
कहत बचन सठ तोहि नहि खोरी । काम बिबस मति कब भै मोरी ॥
मम सुत होहि मूढ़ केहि काजा । एतना कहत तोहि नहि लाजा ॥
केहि प्रकार तैं मम सुत भएसी । निज उतपति मोहि सन किन कहसी ॥
सुनत कहइ मकरध्वज बचना । किहेहु तात जब लंकादहना ॥ ४

तव आएहु चलि जलधि समीपा । भयेउ प्रसेद तुम्हहि कपिदीपा ॥
छूटे प्रसेद सागर महँ चलेऊ । सो झष पियेउ तहाँ मैं भयेऊ ॥
एहि प्रकार तव सुत मैं ताता । गोवौं नहि निज पिता न माता ॥
अहिरावनसेवा मैं करऊँ । प्रभु आएसु एहि द्वारे रहऊँ ॥ ८
दोहा । सत्य वचन हनुमान कहि पूछा पुनि फिरि वात ।
आनेउ राम लखन कहँ काह करत हहि तात ॥ ११ ॥
कहहु तात तेहि अस्थल नाऊँ । जानत हौं मैं निज प्रभु ठाऊँ ॥
यह वृतांत जानत नहि ताता । अस मैं श्रवन सुनेउँ किछु वाता ॥
सीतापति अरु फनिमनिनाथा । सो लेइ आएउ निसिचरनाथा ॥
करत सो अहइ होम दहु आजू । देविहि वलि देइहि नृपराजू ॥ ४
जो कछु निज श्रवनन्हि सुनि पाएउँ । तात तुम्हहि मैं सकल सुनाएउँ ॥
निज प्रभु काज लागि दुख सहहू । मोहि सन सत्य बचन किमि कहहू ॥
जान कहहु पै जान न देऊँ । प्रभु अग्या तजि अपजस लेऊँ ॥
सुनि अस पेलि चलेउ हनुमाना । मकरध्वज रिस करि वलवाना ॥ ८
दोहा । कपि कहँ हनेसि मुष्टिका कपि पुनि मारा ताहि ।
एकहि एक हनै तव वल जुग सम घटि नाहि ॥ १२ ॥
एकुहि एक सकइ नहि पारी । मारुतसुत सुत दोउ भट भारी ॥
सुत कि पूछि सुत बाँधि भवानी । चले बहुरि बिलंब बड़ि जानी ॥
धरि लघु रूप होम गै देखा । जीव सजीव परै नहि लेखा ॥
देवी कर तहँ मंडप रहई । सोनितघट बहु को कहि सकई ॥ ४
विविध भाँति मेवा पकवाना । धरे आनि देवी अस्थाना ॥
मालिनि तहाँ सुमन लेइ आई । सुमनमध्य प्रबिसे कपि जाई ॥
सुमनहु तें अति कृत हलुकाई । सो लेइ सुमन मंडपहि आई ॥
सुमन सकल देवी पर चढ़ेऊ । बिकट रूप तहँ तव कपि भएऊ ॥ ८
दोहा । छुअत चरन देवी तब धरनी गई समाइ ।
वदनु पसारि ठाढ़ भए कपिछबि निरखि न जाइ ॥ १३ ॥
रूप देखि भा आनँद भारी । करहिं बिचार निसाचर झारी ॥
कहहिं कि देवि प्रगट भै आजू । बड़भागी भा निसिचरराजू ॥
करि प्रनाम पुनि पूजा करहीं । जो कछु आव सो कपिमुख भरहीं ॥
रही जो सकल वस्तुसमुदाई । वची न एकौ सब कपि खाई ॥ ४
कपि खेलार भए अनुचर बारा । भा चह निसिचरकुल संघारा ॥
अहिरावन उर भा सुख कैसे । चढ़े काँध होइ बलिपसु जैसे ॥
सवन्हो होम सिद्ध सब जाना । लछिमन राम तुरत तहँ आना ॥
ठाढ़ कीन्ह तहँ प्रभु कहुँ आनी । निसिचर गहे बहु आयुध पानी ॥ ८
धरे गदा कोउ अरु धनु बाना । सक्ति सूल तरवारि कृपाना ॥

दोहा। तोमर मुद्गल परसु असि पास फाँसि अरु बेत।
ओड़न खाँड धनुष सर देखत रहै न चेत ॥ १४॥
मायाबल ते सकल विचछन। अति विकराल सोइ जनु लंछन ॥
एहि विधि सकल बीर तहँ रहहीं। अहिरावन अग्या अनुसरहीं ॥
आएसु पाइ खड्ग तिन्ह काढ़े। मारन कहँ प्रभु पर भए ठाढ़े ॥
कोउ कह राजनीति अनुसरहू। तीनि दंड बिलंब अब करहू ॥ ४
सुनि अस मूढ़ लगे इमि कहई। सुमिरु जो कोउ तोरें कहुँ अहई ॥
नहि त काल पहुँचा अब आई। निसि सपना सम हहु दोउ भाई ॥
कहहिं मूढ़ प्रभु कहँ बहु बानी। कहत सकुच मोहि तहाँ भवानी ॥
दोहा। फनिपति चितवहिं राम कहँ राम निरख अहिराज। ८
प्रभु कर कौतुक कहिअ किमि सुनहु गरुड़ खगराज ॥ १५॥
पुनि दुहुँ बँधु मन कीन्ह विचारा। जपइ सकल जगु नाम हमारा ॥
एहि अवसर कहुँ रह हनुमाना। निकट न आहि बीर बलवाना ॥
अस विचारि केहि सुमिरन करहीं। सो परि होइ जो विधि कछु करहीं ॥
हसि सबन्हौ तव मारन लएऊ। घन समान कपि गर्जत भएऊ ॥ ४
निसिचर सकल त्रसित भये भारी। कहहिं बचन निज हृदय विचारी ॥
अहिरावन भल कीन्ह न काऊ। आनेउ इहाँ मनुज सुरराऊ ॥
तेहि तें देवि क्रुद्ध भइ आजू। अब भा सब कर परम अकाजू ॥
भए तेजहत निसिचर भारी। दुसरे कपि गर्जेउ अति भारी ॥ ८
दोहा। प्रगट रूप करि पवनसुत अट्टहास गंभीर।
अति भयत्रसित निसाचर सुनहु उमा मतिधीर ॥ १६॥
डगमग भे सब इमि अभिमानी। मारुत बह जिमि सायरपानी ॥
तेहि छन कपि लीन्हे दोउ भाई। हतन लगे निसिचरसमुदाई ॥
खड्ग छुड़ाइ लीन्ह हनुमानू। कटन लगे उर सिर भुज जानू ॥
काहुहि नाक श्रवन बिनु कीन्हा। धरि पद डारि अनल महु दीन्हा ॥ ४
निज लंगूर कि बेढ़ बनावा। जेहि तें कोउ भाजै नहि पावा ॥
एहि विधि सब निसिचर संघारे। अहिरावन तव वचन उचारे ॥
रे कपि ढीठ त्रास नहि तोही। अहिरावन मैं जान न मोही ॥
जंबुमालि कहँ जिमि तुम्ह मारा। अरु रावनसुत हतेउ बिचारा ॥ ८
दोहा। कालनेमि सम मैं नहि सुनहि वचन हनुमान।
तीनि लोक मैं विजयजस जानत सकल जहान ॥ १७॥
लेइ असि ताहि पवनसुत मारा। काटेउ सीस अनल महुँ डारा ॥
पूर्नाहुति करि तहँ सो सीसा। तव प्रभु कहँ लेइ चलेऊ कीसा ॥
मकरध्वज तव विनती कीन्हा। बंधन छोरि राज तेहि दीन्हा ॥
इहाँ क राज करहु तुम्ह ताता। सेएहु मम प्रभु दूनी भ्राता ॥ ४

अस कहि कपि निज दल महु आवा । हरषी कटक परम सुख पावा ॥
मृतकसरीर प्रान फिरि आवै । गइ मनि फनिक मनहु फिरि पावै ॥
बिछुरा मिलै बहुरि जिमि आई । इमि सब भए निरखे दोउ भाई ॥
मिले कपीस चरन धरि माथा । पुनि पद धरेउ निसाचरनाथा ॥ ८
दोहा । जामवान अंगद सहित मिले भालु अरु कीस ।
सनमाने प्रिय बचन कहि लखन कोसलाधीस ॥ १८ ॥
बहुरि सबन्हि भेटे हनुमाना । कहहिं तात तुम्ह राखे प्राना ॥
देवन्ह सुमनबृष्टि तब कीन्ही । प्रमुदित हृदय दुंदुभी दीन्ही ॥
अनुज सहित हरखे रघुबीरा । बोले बचन सुनु तनय समीरा ॥
तोहि समान नहि कोउ हितकारी । सुर मुनि सिद्ध जो कोउ तनुधारी ॥ ४
जस तुम्हार त्रिभुअन महँ भयेऊ । सुनि अस बचन चरन कपि परेऊ ॥
नाथ करहु तुम्ह मैं केहि लेखे । तरनिउ चलै अगम जलु पेखे ॥
तैसें सब प्रताप तव नाथा । सुनि असि कपिहि मिले रघुनाथा ॥
कटक सहित हरखे दोउ भाई । तेहिं अवसर सुख कहि किमि जाई ॥ ८
उहाँ दसानन सब सुधि पाई । दूतन्ह कहा खबरि सब जाई ॥
अहिरावन क मरन सुनि काना । भएउ तेजहत अति अकुलाना ॥
बचन बान सम लागे ताही । संभ्रम रहि परेउ महि माही ॥
मुख सुखाइ लोचन जलु बहई । बचनु न आवै पुनि सिर धुनई ॥ १२
दोहा । मयतनया तब आइ करि बहु प्रकार समुझाव ।
मान न मूढ़ कालबस परम क्रोध कहँ पाव ॥ १९ ॥
रावन उर अवरै कछु बसेऊ । मेटि को सकइ जो बिधि निरमयेऊ ॥
प्रभुबिरोध करि चह कल्याना । मूढ़ मोहबस अति अग्याना ॥
कृपासिंधु सेवक भय हारी । तेहि बिरोधि सुख चहत सुरारी ॥

रामचरितमानस के भाषांतर

संस्कृत

अनुवादक—रामू द्विवेद। हस्तलेख। रचनाकाल संवत् १६६२ के पूर्व। प्राप्ति-स्थान—सरस्वतीभंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी; रायल एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता; इंडिया आफिस लाइब्रेरी, लंदन।

फारसी

अनु०—देवीदास कायस्थ। हस्तलेख, सन् १८०४। प्राप्ति०—ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन।

अनु०—मन्नालाल कायस्थ। हस्तलेख, सन् १८८४। प्राप्ति०—मुंशी शिवनाथप्रसाद हनुमानफाटक, वाराणसी।

अनु०—रामसरनसिंह। हस्तलेख, सन् १८८९। प्राप्ति०—मन्नूलाल पुस्तकालय, गया। मुद्रित, सन् १९०२। कानपुर से प्रकाशित।

अनु०—हरलाल रुसवा। मुद्रित, सन् १८८५। लखनऊ से प्रकाशित।

उर्दू

हस्तलेख, सन् १८८५। प्राप्ति०—श्रीकैलाससिंह, ग्राम कथा, उन्नाव।

हस्तलेख। प्राप्ति०—यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, केंब्रिज, इंगलैंड।

अनु०—रामस्वरूप कौशल। मुद्रित, सन् १९२६। लाहौर से प्रकाशित।

अनु०—शंकरदयाल फरहत। मुद्रित, सन् १८६६-१८७७। नवलकिशोर प्रेस से प्रकाशित।

अनु०—जगन्नाथ कुश्तर। मुद्रित, सन् १८६०। कानपुर से तथा नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से प्रकाशित।

अँगरेजी

अनु०—एफ० एस० ग्राउस। मुद्रित। रामनारायणलाल, पुस्तकविक्रेता, इलाहबाद द्वारा प्रकाशित।

अनु०—ए० जी० आटकिंस। मुद्रित। दि हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस, दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

अनु०—डब्ल्यू० डगलस पी० हिल। मुद्रित। आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, लंदन से प्रकाशित।

अनु०—पॉल वाल्टर। हस्तलेख। प्राप्ति०—'कलेक्शन ऑव दि फॉरमर प्रूशियन स्टेट अकदमी, ओरियंटल डिपार्टमेंट, मारबर्क, जर्मनी (पश्चिमी जर्मनी के पुस्तकालय में)।

फ्रेंच

अनु०—चार्लोते वादेविले, यूनिवर्सिटी दे पेरिस। मुद्रित।

जर्मन

संग्रह—ग्रंथों में कुछ स्थलों का अनुवाद। मुद्रित। बर्लिन, १९२५।

संग्रह—ग्रंथों में कतिपय अंशों का अनुवाद। मुद्रित। बैसले, १९५४।

रूसी

अनु०—वारान्निकोव। मुद्रित, सन् १९४८।

नेपाली

अनु०—कुलचंद्र गौतम। मुद्रित, सं० १९९६। ज्ञानमंडल यंत्रालय, वाराणसी से मुद्रित।

गुजराती

अनु०—गिरिजाशंकर मयाशंकर। मुद्रित, सं० २००६। सस्ता साहित्य मुद्रणालय, रायखड, अमदावाद से प्रकाशित।

मराठी

अनुवादक और प्रकाशक—रामचंद्र चिंतामण श्रीखंडे, मंगलवार पेठ, कोल्हापुर।

अनु०—श्रीयादवशंकर जामदार। मुद्रक और प्रकाशक—शंकर नरहर जोशी, चित्रशाला प्रेस, १०२६ सदाशिव पेठ, पूना २।

बँगला

अनु०—सतीशचंद्र दासगुप्त। प्रकाशक—श्रीहेमप्रभादेवी, खादी प्रतिष्ठान, १५ कालिज स्क्वायर, कलकत्ता।

अनु०—श्रीराधिकाप्रसाद वंद्योपाध्याय, भारतधर्म महामंडल, वाराणसी।

असमिया

अमुद्रित

तमिल

मुद्रित

तेलुगु

अनु०—श्रीनिवास शर्मा। प्रकाशक—वाविल्ल रामस्वामि शास्त्रुलु एंड संस, मद्रास।

कन्नड़

संपादक, मुद्रक, प्रकाशक—वेंकटेश तिरको कुलकरणि गल्लगनाक वनकनरम्र, अध्यापक, ट्रेनिंग कालिज, धारवाड़।

अनु०—श्रीदत्तात्रेय कृष्ण भारद्वाज। प्रकाशक—श्रीतुलसीरामायण कार्यालय, बेंगलूर सिटी।

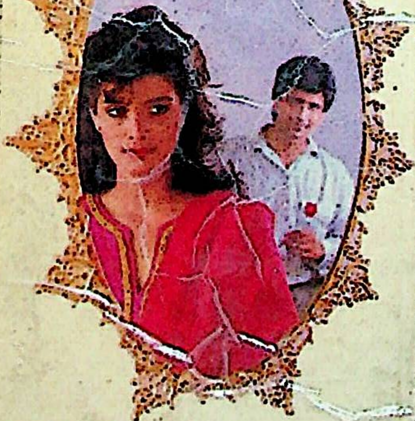
केरली

अनु०—वेल्लिक्कुव्लम् सी० एन० गोपाल कुरुप। प्रकाशक—मलयाल मनोरम कंपनी क्लिप्तम्।

अनु०—काउंगल् नीलकंठ पिल्ल अवरकल। प्रकाशक—के० जी० परमेश्वरन् पिल्ल श्री रामविलास प्रेस, कोल्लम्।







Baidyanath SURAKTA

Herbal blood purifier

निर्देश

हर्बल रक्त शोधक जो कील-मुहासों और त्वचा की अन्य खराबियों को जड़ से दूर करता है, त्वचा को स्वस्थ बनाता है . . . निखार लाता है. इसका स्वाद भी अच्छा है. परहेज-सेवन के दिनों में कम नमक या बिना नमक वाला भोजन कीजिए.

INDICATIONS

A herbal blood purifier that works towards a healthy, glowing skin by attacking the root cause of pimples, acne and other skin problems. It has a pleasant taste.

A salt-restricted or salt-free diet is advised for better results.

DOSE

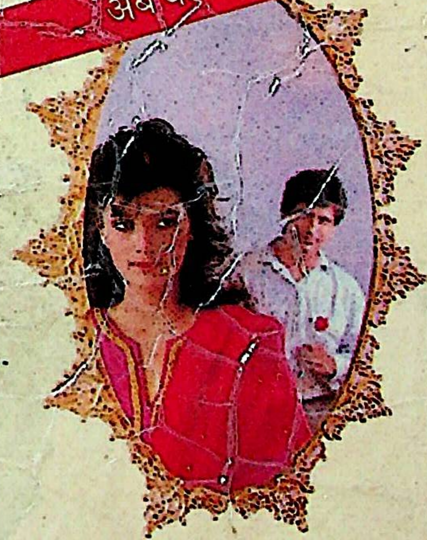
Two to three teaspoonfuls twice a day.

Shake well before use.



Manufactured by
Shree Baidyanath Ayurved Bhawan Ltd.,
SATHARIYA, JAUNPUR (U.P.)
Regd. Office: 1, Gupta Lane, Calcutta-6.





बैद्यनाथ सुरक्ता

हर्बल रक्त शोधक

AYURVEDIC MEDICINE

Each 5 ml contains an aqueous extract of:

Indian Sarsaparilla	1.25gms.
Senna	0.105 gms.
Indian Rhubarb	0.105 gms.
Indian Jalap	0.105 gms.
Myrabolan	0.105 gms.
Cassia Fistula	0.105 gms.
Andrographis Paniculata	42 mg.
Swertia Chirata	42 mg.
Tinospora Cardifolia	42 mg.
Indian Lilac	42 mg.
American Sarsaparilla	42 mg.
Smilax China	42 mg.
Spheranthus Indicus	42 mg.
Indian Madder	42 mg.
Berberis Aristata	42 mg.
Neel Kanthi	42 mg.
Cassia Occidentalis	42 mg.
Acacia Catechu	42 mg.
Bauhinia Tomentosa	42 mg.
Turmeric	42 mg.
Pterocarpus Santalinus	42 mg.

In flavoured syrupy base.

Net Contents: 200 ml.

Mfg. Lic. No A-1765/89